आचार्य श्री वसुनंदी विरचित

रयणकंडो

(प्राकृत सूक्ति कोश)

कृति	:	रयणकंडो
मंगल आशीर्वाद	:	परम पूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानन्द जी मुनिराज(2016-17)
कृतिकार	:	आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
संपादन	:	आर्यिका वर्धस्वनंदनी
प्राप्ति स्थान	:	• श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली, बोलखेड़ा (कामां) राजस्थान
संस्करण	:	प्रथम 1000 (सन् 2017)
संशोधित संस्करण	:	1000 (सन् 2019)
प्रकाशक	:	निर्ग्रंथ ग्रंथमाला समिति
मुद्रक	:	पारस प्रकाशन, दिल्ली मो.: 9811374961, 9818394651, 9811363613 pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

"णाणं पयासओ"

सूर्योदय होने से केवल तमोपुंज का ही अंत नहीं होता अपितु दिव्य प्रकाश का भी उदय होता है। प्रकाश जीवंतता का प्रतीक है, दिवाकर का प्रकाश दिव्यता का द्योतक भी है, उसके माध्यम से प्राणी दिव्यता को प्राप्त करने में समर्थ होता है। प्रकाश को केवलज्ञान का ही प्रतीक नहीं माना अपितु सुख का कारण भी स्वीकार किया गया है। इसीलिए न्याय ग्रन्थों में दीपक को स्वपर प्रकाशी निरूपित करते हुये ज्ञान की महिमा को प्रदर्शित किया है। जिस प्रकार प्रकाश के बिना अंधकार में जीया गया जीवन अनेक दु:ख, क्लेश, अशांति, वैमनस्यता, ईर्ष्या, विद्वेष, चिन्ता आदि विकारों को जन्म देने वाला होता है एवं दुष्कृत्यों का निमित्त कारण बन जाता है, उसी प्रकार चेतना में विद्यमान अंधकार मिथ्यात्व, अज्ञान, असंयम और दु:ख रूप प्रवृत्ति कराने वाला होता है।

बहिर्जगत में विद्यमान तमसावृत्त निशा का निराकरण करने के लिये आदित्य समर्थ होता है। अनेक चंद्रादि ज्योतिर्ग्रह निशा में उदित होकर अपने अस्तित्व का बोध कराते हुये शीतल प्रकाश भी प्रदान करते हैं। चेतना के प्रदेशों पर विद्यमान मिथ्यात्वादि के अंधकार को दूर करने में सूर्यादि अनेक ग्रह भी समर्थ नहीं होते, आत्मप्रदेशों में विद्यमान अंधकार को सम्यक्त्व, सम्यक्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र के तीन रत्न ही तिरोहित

करने में समर्थ होते हैं। इन तीन रत्नों की प्राप्ति सर्वज्ञ, वीतरागी, प्राणी मात्र के लिए हितोपदेशी जिनेन्द्र देव के माध्यम से ही संभव है किन्तु वर्तमान में दुखमा नाम का पंचमकाल उदयावस्था को प्राप्त है अतः भरत, ऐरावत क्षेत्र में केवली भगवान् का यहाँ सद्भाव संभव नहीं है, उनके अभाव में जिनवाणी भव्य प्राणियों के मिथ्यात्वादि अंधकार को दूर करने में समर्थ है।

आ. पद्मनन्दी स्वामी जी ने पद्मनंदीपंचविंशतिका में लिखा है-

सम्प्रत्यस्ति न केवली किल किलौ त्रैलोक्यचूड़ामणि-
स्तद्वाचः परमासतेऽत्र भरत क्षेत्रे जगद्योतिका।
सद्रत्नत्रयधारिणो यतिवरास्तेषां समालम्बनं,
तत्पूजा जिनवाचिपूजनमतः साक्षाज्जिनः पूजितः॥

वर्तमान में इस कलिकाल में तीन लोक के पूज्य केवली प्रभु इस भरत क्षेत्र में साक्षात् नहीं हैं तथापि समस्त भरतक्षेत्र में जगत्प्रकाशिनी केवली प्रभु की वाणी मौजूद है तथा उस वाणी के आधारस्तंभ श्रेष्ठ रत्नत्रयधारी मुनि भी हैं इसीलिए उन मुनि का पूजन तो सरस्वती का पूजन है तथा सरस्वती का पूजन साक्षात् केवली का पूजन है।

जिनवाणी का संवर्धन, संरक्षण एवं संस्थिति वर्तमान में निर्ग्रंथ साधु आदि चतुर्विध संघ से है। निर्ग्रंथ संत आदि आत्मसाधक जिनवाणी की दिव्य देशना के माध्यम से स्वपर का कल्याण करने में संलग्न हैं। जिनवाणी का प्रचार-प्रसार ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी कर्म के क्षयोपशम को वृद्धिंगत करने में भी कारण है तथा अशुभ आयु, अशुभ नाम, नीच गोत्र, असाता वेदनीय एवं अंतराय कर्म के बंधन से बचाने वाला है, आत्मकल्याण के मार्ग में आने वाले विघ्नों को विलुप्त करने वाला है। जिनवाणी के सम्यक् प्रचार-प्रसार से असातावेदनीय को सातावेदनीय में, अशुभ नामकर्म को शुभ नामकर्म में, नीचगोत्र को उच्चगोत्र में संक्रमित भी किया जा सकता है। जिनवाणी के अध्ययन-अध्यापन से शुभास्रव, सातिशय पुण्य का बंध, अशुभ का संवर एवं पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा

होती है।

वर्ष 2016-2017 हम परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनंदी जी गुरुदेव के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के रूप में अनेक धार्मिक अनुष्ठानों के साथ आयोजित कर रहे हैं। इसी श्रृंखला में आचार्य प्रणीत वर्तमान में अनुपलब्ध बहुपयोगी 50 शास्त्रों का प्रकाशन करने का संकल्प निर्ग्रंथ ग्रंथमाला समिति आदि संस्थाओं ने लिया है। उसी क्रम में प्रस्तुत ग्रंथ रयणकंडों आपके श्री करकमलों में स्वपर हित की मंगल भावना से समर्पित है।

हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप प्रस्तुत ग्रंथ के माध्यम से स्व-पर कल्याण की भावना को वृद्धिंगत करते हुए जिनशासन की प्रभावना में भी निमित्त बनेंगे। सुधी पाठकों से सविनय अनुरोध है वे प्रस्तुत ग्रंथ से स्वकीय पात्रता के अनुसार आत्मा को पवित्र करने वाली सतत प्रवाही श्रुत गंगा से श्रुतामृत को ग्रहण कर उसका सदुपयोग ही करें। हंसवत् क्षीरग्राही दृष्टि बनाकर गुणों को ही ग्रहण करें, दोषों का परिमार्जन करने में तत्पर हों। प्रमादवश, अज्ञानतावश हुयी त्रुटियों को या चूक को मूल या चूक समझकर ही विसर्जित कर दें। आप जैसे सुधी पाठक इस ग्रंथ रूपी दधिका में उतरकर नवनीत को ही ग्रहण करें क्योंकि कोई भी ग्वाल या गोपी छाछ ग्रहण करने के उद्देश्य से दधि मंथन नहीं करती। अतः आप भी तदैव प्रवृत्ति करें।

मैं अंतस् की समग्र निष्ठा, भक्ति, समर्पण के साथ सर्वज्ञ देव, श्रुत सिंधु एवं निर्ग्रंथ गुरुओं के चरणों में अनंतशः प्रणाम निवेदित करता हूँ तथा परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी गुरुदेव के पद कमलों में सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति सहित कोटिशः नमन करता हुआ उनके स्वस्थ संयमी जीवन की एवं आत्म ध्यान के संवर्द्धन की भावना करता हूँ।

जिन श्रुताम्बुज चंचरीक
-मुनि प्रज्ञानंद

संपादकीय...

तपस्यभ्यन्तरे बाह्ये, स्थिते द्वादशधा तपः।
स्वाध्यायेन समं नास्ति, न भूतं न भविष्यति॥

108/3 मरण कंडिका॥

बाह्य और अभ्यंतर के भेद से तप बारह प्रकार का है, उसमें स्वाध्याय नाम के अभ्यंतर तप के समान दूसरा तप न है, न था और न रहेगा।

जिनाज्ञा स्वपरोत्तारा, भक्तिर्वात्सल्य वर्द्धनी।
तीर्थप्रवर्तिका साधोर्ज्ञानतः परदेशना॥112॥

स्वाध्याय के द्वारा जिनाज्ञा का पालन, स्वपर उद्धार, भक्ति, वात्सल्य वृद्धि, तीर्थप्रवर्तन, उपदेश इतने गुण प्राप्त होते हैं। अतः स्वाध्याय में सदैव रत रहना चाहिए।

प्राकृत भाषा ही क्यों-भारतीय साहित्य विविधता में एकता के साथ विकसित हुआ है। भारत में विभिन्न भाषाओं और लिपियों का उदय हुआ है। प्राकृत भाषा प्राचीनतम भाषा मानी जाती है। अनादिनिधन णमोकार महामंत्र भी प्राकृत भाषा में ही है। प्राचीन ग्रन्थों का प्राकृत भाषा में होना भी इस भाषा की प्राचीनता को प्रमाणित करता है।

प्राकृत भाषा भारतीय आर्य भाषा परिवार की एक सुसमृद्ध भाषा रही

है। प्राचीन समय से यह लोकभाषा के रूप में भी प्रतिष्ठित रही है। प्राकृत शब्द प्रकृति से ही निकला है अर्थात् जिसमें कोई कृत्रिमता न हो। प्राचीन समय की उसी सरल-सहज भाषा को प्राकृत भाषा का नाम दिया गया। भारतीय लोक-जीवन के बहुआयामी पक्ष, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक परंपराएँ प्राकृत साहित्य में निहित है।

अपनी संस्कृति व सभ्यता को जीवंत रखने के लिए प्राकृत भाषा अत्यंतावश्यक है। परम पूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज का इस भाषा के संवर्द्धन व संरक्षण के लिए विशेष प्रयास रहा और अब अपने गुरु के पदचिह्नों पर बढ़ते हुए परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज ने प्राकृत भाषा में कई ग्रंथों की रचना की।

सूक्तियाँ व इनकी उपयोगिता:-सूक्ति शब्द का संधि विच्छेद करने पर सु+उक्ति प्राप्त होता है जिसका अर्थ अच्छी उक्ति। सूक्ति यानि अच्छे और सुंदर ढंग से कही गई बहुत अच्छी बात। कम शब्दों में अपनी संपूर्ण बात कह देना, एक कला है। गागर में सागर भर देने जैसी होती हैं सूक्तियाँ। ये चिंतन की गहराईयों में से समाधान के मोती प्रदान करती हैं।

ये सूक्तियाँ प्राणी की मानसिकता व विचारों का निर्माण करती हैं तथा अनेक अवसरों व परिस्थितियों में ये किसी सुहृद मित्र की भांति पथ-प्रदर्शन करती हैं जैसे फलों का सार उनका रस, दूध का सार घी होता है उसी प्रकार ज्ञान का सार सूक्त वचन होते हैं। ये वचन जीवन के महत्त्वपूर्ण निर्णयों की पूर्व-पीठिका तैयार करते हैं। संत-साधु-मनीषियों के अनुभव, दर्शन व परिपक्व विचारों से प्राणियों का पथ प्रशस्त होता है।

प्रत्येक सूक्ति अपने साथ बहुत महत्त्वपूर्ण शिक्षा लिए होती है। इस "रयणकंडो" नामक ग्रंथ के अंतर्गत भी 3333 सूक्तियों को रचा गया है। परम पूज्य आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज द्वारा इस दीर्घकाय ग्रंथ की रचना अल्प समय में ही की गई है। इसके अंतर्गत दैनिक

जीवन में उपयोगी कई शीर्षकों पर सूक्तियाँ हैं तो वहीं ज्योतिष, वास्तु, आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक, राजनैतिक जैसे विषयों को भी लिया है।

जैसे-

अण्णाणव्व ण को वि सत्तू।

अज्ञान के समान कोई शत्रु नहीं है।

जोदिससत्थेसु बेदह-लग्ग-रासी य।

ज्योतिष शास्त्रों में 12 राशि और लग्न माने जाते हैं।

आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज:-चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी मुनिराज, महातपस्वी आचार्य श्री पाय सागर जी मुनिराज, आचार्य श्री जयकीर्ति जी मुनिराज, भारत गौरव आचार्य श्री देशभूषण जी मुनिराज, राष्ट्र संत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज इसी गौरवशाली परंपरा के महान् आचार्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज जो कि इस अद्भुत ग्रंथ "रयणकंडो" के कृतिकार हैं।

इनका जन्म 3 अक्टूबर 1967 को श्रीमान् रिखब चंद जी एवं श्रीमती त्रिवेणी बाई के परिवार में धौलपुर के विरौंधा नामक गाँव में हुआ। बी. कॉम तक शिक्षा प्राप्त कर 14 मई 1988 की अल्पायु में दिनेश ने ब्रह्मचर्य व्रत को ग्रहण किया। पुन: 16 नवंबर 1988 को क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की। 11 अक्टूबर 1989 को दिगंबर मुनि दीक्षा अंगीकार की 17 फरवरी 2002 को राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज ने इन्हें उपाध्याय पद, 1 अप्रैल 2009 को एलाचार्य पद तथा 3 जनवरी 2015 को आचार्य पद प्रदान किया।

राजस्थान की धरती पर जन्म लेने के बाद भी आचार्य गुरुवर बंगाली, कन्नड़, मराठी, शॉर्टहैण्ड, संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, अपभ्रंश, उर्दू आदि भाषाओं में विशारद हैं। आचार्य श्री के द्वारा अभी तक समवसरण-सोहा,

राष्ट्र-शांति-महायज्ञ, अज्ज-सक्किदी, जिण-वयण-सारो, समणायारो, विज्जा-वसु-सावयायारो, अप्प-विहवो, यति-कृति-कर्म, अर्हं सूक्ति कोष, तच्च-सारो, विस्स-पुज्जो दियंबरो, विस्स-धम्मो आदि 40 प्राकृत ग्रंथों की रचना हो चुकी है।

जन-जन में धर्म की, सदाचार की अलख जगाने वाले ये संत अपने संघ के कुशल संचालन, समाज को दिशा निर्देशन, तीर्थों का निर्माण, जीर्णोद्धार, जप, तप करते हुये कब श्रुतक्रीड़ा में निमग्न हो यह अद्भुत सम्पत्ति यहाँ वर्तमान काल में साधना करने वाले साधक व श्रावकों को ही नहीं अपितु भविष्य में जिनशासन की छत्रछाया में रहने वाले भव्यात्माओं को भी सौंपते हैं, यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है।

आचार्य श्री की सौम्यमुद्रा व लेखनी को देख चित्त उन महान् आचार्यों, आचार्य श्री कुंद-कुंद स्वामी, श्री वीरसेन स्वामी की कल्पना करता है जिन्होंने इस ही प्रकार आत्मध्यान के समय में से अमूल्य क्षण ग्रंथ लेखन को प्रदान कर हम सभी पर महती अनुकंपा की। पूर्वाचार्य यदि श्रुत अनुक्रम से हमें प्रदान न करते तो बिना इस दीप्ति के सम्यक्मार्ग का अन्वेषण बहुत कठिन होता।

कई नेत्र साक्षी हैं लेखन के समय वे बिना किसी ग्रंथ के अंतरंग उत्ताल ज्ञान की वीचियों से अल्प समय में ही कई श्लोकों की रचना करते हैं। उस पर भी विनय, लघुता के अतुल्य भंडार यदि उनसे प्रश्न किया जाता है कि इतने कम समय में यह लेखन कैसे संभव है, तब उत्तर एक ही होता है कि "यह मेरा कुछ नहीं है परमपूज्य आचार्य श्री विद्यानन्द जी गुरुदेव की कृपादृष्टि है उन्हीं का आशीर्वाद है।

तब लगता है कि सही कहा जाता है कि वृक्ष पर जितने फल होते हैं वह वृक्ष उतना ही झुकता है और व्यक्ति में जितने गुण होते हैं वह उतना ही नमता है।

प्रस्तुत ग्रंथ 'रयणकंडो' परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज द्वारा रचित एक सूक्ति कोष है। इस ग्रंथ का संपादन करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। आर्यिका वर्चस्व नंदनी माता जी, आर्यिका श्रेयनंदनी

माता जी, आर्यिका सुरम्यनंदनी माता जी एवं आर्यिका यशोनंदनी माता जी का इसमें अविस्मरणीय सहयोग मुझे प्राप्त हुआ। यदि इस पुस्तक के संपादन में कोई त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन संशोधित कर पढ़ें, हंसवत् गुणग्राही दृष्टि से ही इसका अध्ययन करें।

इस ग्रंथ के संपादन में सहयोगी बा. ब्र. डॉ. प्रज्ञा दीदी, संघस्थ त्यागीव्रती एवं मुद्रण व प्रकाशन करने में सहयोगी सभी धर्मस्नेही जनों को पूज्य गुरुदेव का मंगलमय शुभाशीष। गुरुवर श्री की साधना सदा ही वर्द्धमान अवस्था को प्राप्त हो। शताधिक वर्षों तक स्व संयम व ज्ञान की सुगंधि से जन-जन को सुगंधित करते रहें तथा अपने लक्ष्य मोक्ष को शीघ्र ही प्राप्त करें। इन्हीं शुभ भावनाओं के साथ परम पूज्य आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज के चरणों में सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति सहित त्रिकाल नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु!

मेरे पास सब कुछ तुम्हारा, तुम चरणों में अर्पित है।
और तुम्हारी चेतन कृति ही, तुम्हें स्वयं समर्पित है।।

श्री शुभमिति वैशाख कृष्ण 11
वीर निर्वाण संवत् 2543
श्री दि. जैन मंदिर
नोएडा (उत्तर प्रदेश)

ॐ ह्रीं नमः
आर्यिका वर्धस्व नंदनी
22 अप्रैल, 2017

दो शब्द

मनुष्य की भाषा सृष्टि के आरम्भ से ही निरन्तर प्रवाहमान रही है, परन्तु इस प्रवाह के आदि और अन्त के विषय में भाषा हिन्दी विज्ञों की जहाँ तक दृष्टि जाती है उसके आधार पर यही कहा जा सकता है कि ऋग्वेद काल से सदियों पूर्व सिन्धु घाटी में विकसित मानव केन्द्रों की सभ्यता व संस्कृति उच्च कोटि की थी। सिन्धु सभ्यता के नागरिक साहित्यिक पाश से मुक्त जिस जन प्रचलित भाषा का कथ्यरूप से प्रयोग करते थे, वही जन प्रचलित भाषा अपने अनेक प्रादेशिक भाषाओं के रूप में भारत देश की आद्य भाषा मानी जाती थी। इन प्रादेशिक भाषाओं के विविध रूपों के आधार से परिमार्जित रूप में जो साहित्य लिखा गया वह वैदिक साहित्य कहलाया। इस वैदिक साहित्य की भाषा को छान्दस नाम दिया गया। जन प्रचलित भाषा से उद्भूत यह छान्दस ही उस समय की प्रथम साहित्यिक आर्य भाषा बनी।

तदनन्तर उदीच्य प्रदेश गान्धार के शालातुर गाँव में जन्मे तथा तक्षशिला में शिक्षा प्राप्त किये भारतीय संस्कृति के असाधारण विद्वान् पाणिनी ने छान्दस के आधार से तत्कालीन भाषा को व्याकरण द्वारा नियन्त्रित कर एक नयी स्थिर भाषा संस्कृत को जन्म दिया। पाणिनी के बाद इस संस्कृत भाषा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ किन्तु वैदिक साहित्य की छान्दस निरन्तर प्रवाहमान रही। छान्दस में जो जन तत्त्व समाविष्ट

थे वे पाणिनी व्याकरण द्वारा नियन्त्रित नहीं हो सके। फलतः छान्दस का मौलिक विकास प्राकृत में हुआ।

ई. पूर्व छठी शताब्दी में भगवान् महावीर ने सामाजिक क्रान्ति के साथ जन भाषा प्राकृत में अपना धर्मोपदेश दिया। महावीर प्रभु की उस दिव्य ध्वनि को अर्थतः ग्रहण कर उनके गौतम गणधर आदि शिष्यों ने आचारांग, सूत्रकृतांग, स्थानांग आदि द्वादश ग्रंथों की रचना की। गणधरों द्वारा रचित ये ग्रंथ ही श्रुत अर्थात् आगम के नाम से जाने गये। भगवान् महावीर के निर्वाण के दो सौ वर्षों के बाद सम्राट चन्द्रगुप्त के राज्यकाल में मगध में 12 वर्ष तक भीषण अकाल पड़ा। उस समय समस्त श्रुत ज्ञान के अन्तिम उत्तराधिकारी श्रुतकेवली भद्रबाहु हुए। अकाल के समय ये अनेक मुनियों के साथ अपनी मुनिचर्या के निर्वाह हेतु दक्षिण भारत चले गये। उस भीषण अकाल में भगवान् महावीर के गणधरों द्वारा रचित वे बारह मूल ग्रंथ लुप्त हो गये। उनका आंशिक ज्ञान मात्र मुनि परम्परा में ही सुरक्षित रहा। इस आंशिक ज्ञान के आधार पर ही पुनः सर्वप्रथम आचार्य धरसेन के संरक्षण में षट्खण्डागम सूत्र ग्रंथ की रचना सम्पन्न हुई। उसके बाद गुणधर आचार्य के तत्त्वाधान में कषाय पाहुड़ नामक आगम की रचना हुई। इन ग्रन्थों की भाषा को शौरसेनी प्राकृत नाम दिया गया। आगे कुन्दकुन्द आदि आचार्यों ने इस भाषा को सार्वभौमिकता प्रदान की। तभी से यह शौरसेनी प्राकृत दिगम्बर जैन आगम ग्रन्थों की मूल भाषा बन गयी।

आज हमारे लिए यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि शौरसेनी प्राकृत भाषा के उन्नायक सन्त शिरोमणि सिद्धान्त चक्रवर्ती परमपूज्य आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज के परम प्रभावक **शिष्य आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज द्वारा रचित रयणकंडो** नामक ग्रंथ में निहित सूक्तियों का मानव-जीवन को व्यवस्थित करने में अत्यन्त योगदान है। प्रस्तुत ग्रंथ की सूक्तियों को पढ़ने का सुअवसर मुझे परमपूज्य माताजी के संयोग से उस समय मिला जब मैं अकल्पनीय दुःख के सागर में निमग्न थी। इन सूक्तियों ने मुझे उस दुःख को सहन करने के साथ जो

असीम ऊर्जा प्रदान की उसे कभी भी विस्मरण नहीं किया जा सकेगा। मुझे पूरा विश्वास है सूक्तियों रूप इस पुस्तक की सभी पाठकों के जीवन को व्यवस्थित करने में महती भूमिका रहेगी।

'सूक्ति' शब्द का अर्थ है सु + उक्ति (वचन)। जो सुनने में सुन्दर मनोहारी और चमत्कार प्रकट करने के साथ कर्णप्रिय हो, वह सूक्ति कहलाती है। सूक्ति मानव के हजारों वर्षों का निचोड़ होती है। सूक्ति थोड़े शब्दों में अधिक अभिप्राय प्रकट करने वाली होती है। वह कम से कम शब्दों में अधिक और गम्भीर बात कह देती है तथा श्रोता के हृदय पर सीधा प्रभाव डालती है। जिस सत्य का हम किसी भी कहानी, नाटक, उपन्यास के अनेक पन्नों को पढ़ने के बाद अन्वेषण कर पाते हैं, सूक्ति उस सत्य को प्रभावी रूप में थोड़े से शब्दों में प्रकट कर देती है।

प्रस्तुत ग्रंथ की सूक्तियाँ प्राकृत भाषा में लोक जीवन के ताजे रस से सरोबार और लोक शक्ति से समन्वित है। ये सूक्तियाँ मानव जीवन की जटिलता, जड़ता और रूढ़िबद्धता को तोड़कर नवीन चेतना जागृत करने वाला अपूर्व सन्देश लेकर अवतरित हुई हैं। ये लोक जीवन की भाषा प्राकृत के ताजे रस से भरी हुई हैं। ये लोक शक्ति से ओतप्रोत बल, वीर्य, ओज और शक्ति का संपुञ्ज तो है ही साथ में इनमें धर्म, नीति, सत्व और संयम के विजयश्री की पताका भी फहरा रही है। जीवन का कोई ऐसा पक्ष नहीं जो इन सूक्तियों में नहीं आ सका। ये मानव को आन्दोलित करने की विशिष्ट क्षमता के साथ उदात्त मानव मूल्यों को अपनी कोख में छिपाये हुए हैं।

आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज की हम श्रावकों पर असीम अनुकंपा है कि उन्होंने हम सभी के लिए इस ग्रंथ की रचना की है। मैं सभी श्रावकों के साथ आचार्य श्री के चरणों में बार-बार नमोस्तु करती हूँ।

स्नेह लता जैन
सहायक निर्देशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर

अनुक्रमणिका

विषय	पृ. सं
मंगलाचरण	
अंकुर	1
अंतराय	1
अंधकार	1
अंश	2
अग्नि	2
अचौर्य	3
अज्ञान	3
अज्ञानी	4
अणुव्रत	5
अति	5
अतिथि	6
अति भोजन	6
अधम	6
अधिवक्ता	7
अनर्थ	7
अनुकंपा	7
अनुपयोगी	8
अनुप्रेक्षा	8
अनुमान	10
अनुरक्ति	11
अनुशासन	11
अनेकांत	13
अन्न	14
अन्याय	15
अन्यायी	15
अपकीर्ति	15
अपमान	16
अपयश	16
अपराधी	17
अपरिग्रह	17
अप्रमत्त	17
अब्रह्म	18
अभव्य	18
अभिमान	18
अभ्यास	18
अराजकता	19
अरिहंत	20
अर्थ	20
अल्प	22
अवग्रह	22
अवस्था	23
अविद्या	23
अविनय	23
अविनीत	23
अविवेक	24
अव्यवस्था	24
असंतुष्ट	25
असंयम	25
असंयमी	25
असत्य	25
अहंकार	26
अहिंसा	27
आकांक्षा	29
आकृति	29
आकिंचन्य	29
आगम	30
आग्रह	30
आचार्य	30
आत्मज्ञान	31
आत्म प्रशंसक	31
आत्मलीन	31
आत्महित	32
आत्मा	33
आध्यात्म विद्या	37
आनन्द	38
आपत्ति	38
आप्त	39

विषय	पृ. सं
आयु	39
आरोग्य	40
आर्जव	40
आर्त्त	41
आर्य	42
आलस्य	42
आशा	44
आशीर्वाद	45
आश्रम	46
आसक्त	46
आस्तिक्य	46
आहार	47
इच्छा	48
इन्द्रिय	48
इष्टवस्तु	51
ईर्ष्या	52
ईश्वर	53
ईहा	53
उच्चपद	54
उत्सव	54
उत्साह	55
उदार	57
उद्देश्य	58
उद्यम/उद्यमहीन	58
उपकार	62
उपदेश	63
उपयोग	64
उपवास	64
उपशम	64
उपाय	65
उपेक्षा	65
ऋजु	66
ऋषि	66
औषधि	67
कदाचार	68
कन्या	68
कपटी	70
करुणा	71
कर्त्तव्य	71
कर्त्ता	72
कर्म	73
कलत्र	79
कलह	80
कला	80
कल्याण	81
कवि	81
कषाय	82
काम	83
कामदेव	87
कामना	87
काय	88
कायर	88
कायोत्सर्ग	88
कारण	89
कारुण्य	89
कार्य	89
कार्योपरान्त	93
काल	94
काव्य	98
कीर्तन	100
कीर्ति	100
कुजाति	101
कुटिल	101
कुतर्क	101
कुदेश	102
कुपात्र	102
कुपुत्र	103
कुमार्ग	103
कुल	104
कुलीन	107

विषय	पृ. सं
कुशल	107
कृतघ्न	107
कृतज्ञ	108
कृति	109
कृपण	109
कृश	110
कृषक	110
कृषि	111
केवलज्ञान	112
क्रिया	113
क्रोध	113
क्रोधी	114
क्षणभंगुर	115
क्षत्रिय	116
क्षुद्र	116
क्षुधा	116
क्षुभित	117
क्षमा	117
गंधोदक	119
गंभीरता	119
गति	119
गन्तव्य	120
गर्हा	120
गीत	120
गुण	120
गुणी	124
गुप्ति	127
गुरु	127
गुरुभक्ति	136
गृह	136
गृहिणी	138
गृहस्थ	139
गौ (गाय)	140
चक्रवर्ती	141
चतुर	141
चारित्र	142
चिंतन	142
चिंता	143
चित्त	144
चित्रकला	148
चेष्टा	148
चेहरा	148
चोरी	149
जनक	149
जननी (माता)	150
जन्म	152
जन्मभूमि	152
जमाता	153
जल	153
जाति	154
जाया	154
जितेन्द्रिय	154
जिन	155
जिनधर्म	156
जिनवचन	156
जीव	157
जीवन	159
जीविका	161
जीवित	161
जुआ	161
जैन	162
ज्ञान	163
ज्ञानी	166
ज्योतिष	172
णमोकार	179
तटस्थ	180
तत्त्व	180
तप	182
तपस्वी	185
तर्क	186

विषय	पृ. सं
तीर्थ	186
तीर्थंकर	187
तृष्णा	188
तेज	190
तेजस्वी	191
त्रस	191
त्याग	191
दंभ	192
दया	193
दरिद्रता	195
दर्शनावरणीय कर्म	196
दांत	196
दाता	197
दान	197
दाम्पत्य	201
दास	201
दिगम्बर	201
दीक्षा	203
दीक्षित	204
दीनवृत्ति	204
दीपक	205
दीर्घसूत्री	205
दु:ख	205
दुर्जन	208
दुर्बल	209
दुर्बुद्धि	210
दुर्भाग्य	210
दुर्लभ	210
दुष्कर्म	211
दुष्ट	211
दूध	215
दूरदर्शिता	215
दृष्टि	215
देव	215
देश	218
देह (शरीर)	218
दोष	219
द्वेष	221
धन	221
धनी	227
धर्म	227
धर्मात्मा	232
धारणा	233
धीर	233
धीरत्व	234
धृष्ट	234
धैर्य	235
ध्यान	235
नम्रता	235
नय	236
नर	236
नरक	236
नाटक	237
नायक	237
निंदनीय	238
निंदा/निंदक	238
नि:कांक्ष	238
नि:शंक	239
निक्षेप	239
निद्रा	239
निमित्त	240
नियति	240
नियम	241
नियोग	241
निरक्षर	241
निरामय	242
निरीह	242
निर्गुण	242
निर्ग्रन्थ	243
निर्णय	244

विषय	पृ. सं
निर्दयी	244
निर्धन	245
निर्बल	245
निर्भीक	245
निर्मल	245
निर्वाण	246
निर्वेग	247
निश्चय	247
निष्क्रिय	248
निष्ठा	248
निस्पृह	248
निस्सार	249
नीच	249
नीति	250
न्यायप्रिय	250
पगदण्डी	250
पण्डित	251
पति	253
पत्नी	253
पथ्य	254
परमात्मा	254
परमेष्ठी	255
परस्पर सहयोग	255
पराक्रम	257
पराधीन	257
पराभव	258
परिग्रह	258
परिवर्तन	260
परिश्रम	260
परोक्ष	261
परोपकार	261
परोपदेश	262
पर्याय	262
पात्र	262
पाप	264
पापी	266
पाषाण	268
पृथ्वी	268
पुण्य	270
पुत्र	276
पुद्गल	277
पुरातन	278
पुरुष	278
पुरुषार्थ	280
पुरोहित	283
पूजक	283
पूजा	284
पूज्य	285
पूर्ण	285
प्रकृति	285
प्रगल्भ	286
प्रजा	286
प्रज्ञा	286
प्रति-उपकार	288
प्रतिज्ञा	289
प्रतिष्ठा	290
प्रत्यक्ष	290
प्रत्याख्यान	290
प्रभावना	291
प्रभु	291
प्रभुता	292
प्रमाण	292
प्रमाद	293
प्रमेय	294
प्रयोजन	295
प्रवचन	295
प्रवासी	296
प्रशंसा	296
प्रशम	296
प्रसन्नता	297

विषय	पृ. सं
प्राज्ञ	297
प्राण	297
प्रिय	299
प्रीति	300
प्रार्थना	301
प्रेम	302
बंध	306
बंधु	307
बल	307
बसंत	308
बुद्धि	310
बुभुक्षु	312
ब्रह्मचर्य	313
ब्राह्मण	313
भक्त/भक्ति	313
भगवान्	315
भयभीत	315
भवन	315
भवितव्यता	316
भव्य	317
भाग्य (विधि)	317
भार	319
भारत	320
भार्या	322
भाव	323
भावना	324
भाषण	324
भाषा	325
भीरुता	326
भृत्य	327
भेदनीति	328
भोग	329
भोजन	330
भ्राता	332
मंगल	333
मंत्री मण्डल	334
मति	335
मधु-मांस-मद्य	336
मन	337
मनस्वी	339
मनुष्य भव	339
महात्मा	340
महापुरुष	340
महाव्रत	348
मातृभूमि	349
मात्सर्य	349
मान	349
माया	351
मायाचारी	351
मार्ग	351
मित्र	352
मिथ्यात्व	354
मिथ्यादृष्टि	355
मुमुक्षु	355
मूर्ख/मूढ़	355
मूर्च्छा	359
मूलगुण	359
मृत्यु	359
मृदु	361
मेघ	362
मैत्री	364
मोक्ष	365
मोह/मोही	368
मौन	371
यत्न	373
यश	374
याचक	376
योग	377
योगी	378
योद्धा	380

विषय	पृ. सं
यौवन	381
रक्षा/संरक्षण	382
रत्न	383
रत्नत्रय	385
रम्य	386
रसना	387
राग	387
राग-द्वेष	389
राजधर्म	389
राजा	390
राज्य	397
रात्रि भोजन	397
रासायनिक पदार्थ	398
रूप	398
रोग	399
रोगी	400
लक्षण	400
लक्ष्मी	402
लक्ष्य	403
लघु	403
लेश्या	404
लोकतन्त्र	405
लोभ	405
लोभी	406
वंदना	407
वक्ता	407
वचन	408
वर	410
वस्तु	411
वाचाल	412
वाणी	412
वात्सल्य	413
वासना	413
वास्तुशास्त्र	414
विद्या	415
विधाता	420
विनय/विनयी	421
विनाश	422
वियोग	423
विरह	423
विरोध	423
विवेक	424
विवेकी	425
विश्वस्थ जन	425
विष	426
विषय	426
विषयासक्त	429
विषाद	429
वीतराग/वीतरागी	430
वृक्ष	430
वृद्ध/वृद्धावस्था	430
वेदना	432
वेदनीय कर्म	432
वैभव	433
वैय्यावृत्ति	433
वैराग्य	434
व्यय	435
व्यर्थ	435
व्यवहार	436
व्यसन	436
व्रत	437
व्रती	438
शक्ति/समर्थ	438
शक्तिहीन	439
शत्रु	440
शराबी	441
शांति	441
शास्त्र	443
शिक्षा	444
शिव	446

विषय	पृ. सं
शिष्य	447
शील	447
शुद्ध	450
शुभ	450
शूरवीर	451
शोक	451
शोभा	452
श्रद्धा	453
श्रम	453
श्रमण	453
श्रावक	454
श्रीमान	454
श्रृंगार	455
श्रेयस्कर	455
संकल्प	456
संक्लेशता	456
संगति	457
संगीत	459
संतति	459
सन्तोष/संतोषी	460
संयम/संयमी	461
संयोग	463
संवर	464
संवेग	464
संसार	465
संस्कार	468
संस्कृति	468
सच्चरित्र/चरित्र	469
सज्जन	469
सत्य	479
सदाचार/सदाचारी	480
सभ्य	481
समता	481
समाज	483
समाधि	483
समिति	484
समृद्धि	484
सम्मान	484
सम्यक्त्व	484
सम्यग्ज्ञान/सम्यग्ज्ञानी	485
सम्यग्दृष्टि	486
सहिष्णु	486
साधु	486
सामायिक	487
सावद्य	488
सिद्ध	488
सुकथा/जिनकथा	488
सुख	489
सुबुद्धि	491
सूर्य	491
सेनापति	492
सेवा	492
सौन्दर्य	492
स्तवन	492
स्त्री	493
स्मृति	495
स्याद्वाद	495
स्वपरघाती	495
स्वभाव (प्रकृति)	495
स्वरूप	497
स्वाधीनता	497
स्वाध्याय	498
स्वार्थ/स्वार्थी	499
हिंसक	500
हित	501
हीनता/हीन	501
हेतु	501
हेयोपादेय	502

मंगलाचरण

वीयरायिं जिणं देवं, अणंत-णाण-संजुदं।
संलीणं णिय-अप्पम्मि, भत्तीए पणमामि हं।।1।।

मैं (आचार्य वसुनंदी) वीतरागी, अनंत ज्ञान से संयुक्त व निजात्मा में लीन जिनेन्द्र देव को भक्ति से नमस्कार करता हूँ।

I (Acharya Vasunandi) bow to jinendra Deva who is dispassionate , endowed with infinite knowledge and absorbed in own soul.

णमित्ता धम्म-सत्थं च, सिया-अंकेण संजुदं।।
जिणसासण-थंभोव्व-कुंदकुंदाइयं तहा।।2।।

विज्जाणंदं महासाहुं, मम हिअय-वासिदं।
वोच्छे रयणकंडं हं, भव्वाणं सुह-कारणं।।3।।

स्यात् चिह्न से संयुक्त धर्म शास्त्रों को जिनशासन के स्तंभ के समान कुंदकुंदादि आचार्यों को तथा मेरे हृदय में वास करने वाले महासाधु श्री विद्यानंद आचार्य को नमस्कार करके मैं (आचार्य वसुनंदी) भव्यों के सुख के लिए 'रयणकंडो' कहता हूँ।

After bowing to religious scriptures, endowed with relatisism, Acharya Kundkund and other Acharya who are like pillar of jinshasan and Acharya vidhyanand ji who dwells in my heart, I (Acharya Vasunandi) Say 'Rayankando' for the peace of accomplishable souls.

रयणकंडो

अंकुर

1. **बीयेण विणा णो अंकुरो।**

बीज के बिना अंकुर नहीं होता है।

There can be no sprout without the seed.

अंतराय

2. **कस्सिं कज्जे फले वा विज्जमाणं विग्घं अंतरायो।**

किसी भी कार्य या फल में विद्यमान विघ्न अंतराय कहलाता है।

Obstacle in any work or its fruition is called obstructive karma.

3. **अणंत-सत्ति-घादगो अंतरायो।**

अनन्तशक्ति का घात करने वाला अंतराय है।

Destructor of infinite power is obstructive Karma.

अंधकार

4. **अंधयारो पयास-विणासगो।**

अंधकार प्रकाश का विनाशक है।

Darkness is the destroyer of light.

5. **मोहाइ - अंधयारो हु महाहिसावो।**

मोहादि अंधकार ही महा अभिशाप है।

Worldly infatuation's darkness is dire curse.

6. **अविज्जा हि सघणो तमो।**

अविद्या ही सघन अंधकार है।

Ignorance is dense darkness.

7. **अंधारे गजो वि पडदि कूवे।**

अंधकार में हाथी भी कूप में गिरता है।

Even an elephant falls down in the well, in darkness.

8. **दिवायरो पडणयाले अंधयारो सहजो हु आगच्छदि।**

दिवाकर के पतन काल में अंधकार सहज ही आ जाता है।

When the sun is in its decline, darkness naturally sets in.

9. **जलिद-दीवो जत्थ ण तमो तत्थ।**

जिस स्थान पर प्रज्ज्वलित दीपक होता है उस स्थान पर अंधकार नहीं रहता।

Where there is aflame lamp, there is no darkness.

अंश

10. **अंसीए अंसो अभिण्णो।**

अंशी से अंश अभिन्न है।

Part cannot be seperated from the whole.

अग्नि

11. **दहदि तिणग्गीए तूलं, णो जलहि-जलं।**

तृणों की अग्नि से रुई जल सकती है, समुद्र का पानी नहीं।

Grass fire can burn cotton, but not the ocean.

12. **अग्गि-संजोगेण जलं वि किंचि उण्णं होदि।**

अग्नि के संयोग से जल भी किञ्चित् गर्म होता है।

Water also gets a little hot when comes in contact with fire means it does't leave its original nature.

13. **तिव्वतिणग्गी वि णो सुस्सदि वारिहिं।**

तृणों की अग्नि यदि तीव्र भी हो जाए तब भी समुद्र को नहीं सुखा सकती है।

If grass fire becomes very intense then it cannot dry the ocean.

14. **चंदनं वि देदि तावं तिव्वग्गि-जोगेण।**

तीव्र अग्नि के संयोग से चंदन भी ताप देता है।

When in contact with intense fire, sandal wood also gives heat.

15. **अग्गीए सह लोहो वि सहदि ताडणं।**

अग्नि के साथ लोहा भी ताड़न सहता है।

In contact with fire, iron also has to endure beatings

अचौर्य

16. **अदत्तगहण-वज्जणं अचोरिअं।**

अदत्त ग्रहण परित्याग ही अचौर्य व्रत है।

Not receiving a thing without being given is nonstealing vow.

अज्ञान

17. **अण्णाणं हि महा तमो।**

अज्ञान महान् अंधकार है।

Ignorance is utter darkness.

18. **अण्णाणेण उप्पज्जदि पावं।**

अज्ञान से पाप उत्पन्न होता है।

Sin proceed from ignorance.

19. **अण्णाणं हि भवदुक्ख-मूलं।**

अज्ञान ही भवदु:ख का मूल है।

Ignorance is the root of worldly pains.

20. **अण्णाणव्व ण को वि सत्तू।**

अज्ञान के समान कोई शत्रु नहीं है।

There is no enemy like ignorance.

21. **अण्णाणं णत्थि जत्थ णाणी-दाणी-संजमी-जोदिसविदो-सव्वोवयारी य।**

जिस स्थान पर ज्ञानी पुरुष, दानी, संयमी साधक, ज्योतिषविद् और सर्वोपकारी रहते हैं उस स्थान पर अज्ञान नहीं रहता।

Where learned men, donors, self-restrained, devotees, astrologers and benevolent people live, there can be no ignorance.

22. **अण्णाणेण होदि लोए गुण-णिंदा वि।**

अज्ञानता से लोक में गुणों की भी निंदा होती है।

Virtues are also censured in the world because of ignorance.

अज्ञानी

23. **सण्णाण-विहीणो अण्णाणी।**

सद्ज्ञान से हीन अज्ञानी है।

A person without right knowledge is an ignorant man.

24. **विसय-कसायासत्तो अण्णाणी।**

विषय कषायों में आसक्त अज्ञानी है।

A person engrossed in worldly pleasures & passions is ignorant.

25. **अण्णाणी हु पसुव्व।**

अज्ञानी निश्चय से पशु समान है।

An ignorant man is like an animal.

26. **बलिट्ठे वि अण्णाणी दुहं लहदि सया।**

अज्ञानी बलवान् (होते हुए) भी सदा दुःख पाता है।

An ignorant person always gets sorrows inspite of being strong.

27. **अण्णाणी हु अदिबालो।**

अज्ञानी निश्चय से अतिबाल है।

Ignorant is precisely an infant.

अणुव्रत

28. **जावज्जीवं थूल-पावुज्झणं अणुव्वदं।**

यावज्जीवन स्थूल पापों का परित्याग अणुव्रत है।

Giving up major sins for whole life is small vow (Anu Vrat).

अति

29. **अदि इदि-कारणं।**

अति इति का कारण है।

Generally, excess is the cause of end.

30. **अदि दोसगेहं सय।**

अति सदा दोषों का घर है।

Excess is always the home of vices.

31. **चंदणादु वि उप्पज्जदि अग्गी अदि-घासेण।**

अति घर्षण (रगड़) से चंदन में भी अग्नि उत्पन्न हो जाती है।

Extreme friction produces fire even in sandal wood.

32. **अदिपरिययेण हु अवण्णा।**

अतिपरिचय से अवज्ञा होती है।

Disregard happens from excessive introduction.

33. **अदिभारेण सीददि।**

अतिभार से पुरुष दु:खी होता है।

Man becomes sad because of too much responsibilities.

अतिथि

34. **परमदेवो पाव-मोअगो हु अदिही।**

अतिथि निश्चय से परमदेव और पापमोचक है।

Guest is supreme god and surely sin releaser.

35. **णिग्गंथदिही हु पुण्ण-देवो।**

निर्ग्रन्थ अतिथि ही सम्पूर्ण देव हैं।

Digamber guests (saints) are complete God.

36. **दियंबरो अदिही हु भगवंतो।**

दिगम्बर अतिथि निश्चय रूप से भगवान् हैं।

Digamber saints are God in true sense.

37. **अब्भागयो संमाणणीयो।**

अभ्यागत सम्माननीय है।

A guest is always honourable.

अति भोजन

38. **अदिभोयण-गिद्धो उअर-सत्तू।**

अतिभोजन गृद्ध अपने पेट का शत्रु है।

A voracious eater is the enemy of his own stomach.

अधम

39. **णो आयरदि णाणं अहमो।**

जो ज्ञान का आदर नहीं करता है वह ही अधम है।

One who doesn't respect knowledge is a base person.

अधिवक्ता

40. **अहिवत्ता णायमंदिर-रक्खगो।**

अधिवक्ता न्याय मंदिर का रक्षक है।

Lawyer is the protector of the temple of justice.

अनर्थ

41. **अणत्थो हि पाव-कारणं।**

अनर्थ ही पाप का कारण है।

Unethical act is the cause of sin.

42. **को पालदि अणत्थ-मूलं?**

अनर्थ के मूल को कौन पालता है?

Who nourishes the root of evil?

अनुकंपा

43. **जीवा पडि अवहावणं अणुकंपा।**

जीवों के प्रति दया करना अनुकम्पा है।

Being compassionate towards all creatures is Anukampa.

44. **परदया-भावो हि अणुकंपा।**

दूसरों पर दयावृत्ति का भाव ही अनुकम्पा है।

Being kind to others is compassion.

45. **मुणिचित्ते विज्जदे अकारणमणुकंपा।**

मुनियों के चित्त में अकारण अनुकम्पा रहती है।

Non-causal compassion remains in the heart of saints.

46. **अकारण-अणुकंपा महापुण्ण-कारणं।**

अकारण अनुकम्पा महापुण्य का कारण है।

Non-causal compassion is the cause of great blessing.

अनुपयोगी

47. **अणुवजुत्तं वत्थुं परिच्चायं।**

अनुपयोगी वस्तु त्याज्य है।

Useless thing is worth abandoning.

अनुप्रेक्षा

48. **पज्जवट्ठियेण दव्वमणिच्चं चिंतणमिणं अणिच्चणुवेक्खा।**

पर्यायार्थिक नय की अपेक्षा सभी द्रव्य अनित्य हैं यह चिन्तन ही अनित्यानुप्रेक्षा है।

From mode point of view all substances are mortal, thinking this is Anitya anupreksha (perishable contemplation).

49. **णो सरणं संसारे चिंतणमिणं असरणणुवेक्खा।**

संसार में शरण नहीं है यह चिंतन अशरणानुप्रेक्षा है।

There is no protector in the world, thinking this is Asharana anupreksha (helplessness or Unprotectiveness).

50. **जीवस्स संसारपरिब्भमण-कारण-चिंतणं संसारणुवेक्खा।**

जीव के संसार परिभ्रमण के कारणों का चिंतन करना संसारानुप्रेक्षा है।

Meditating upon causes of transmigration of worldly beings is Sansaar anupreksha (transmigration contemplation).

51. **जीवो एगो तिक्काले चिंतणमिणं एगत्तणुवेक्खा।**

तीनों कालों में जीव एक होता है यह चिन्तन एकत्वानुप्रेक्षा है।

Soul is one in three periods, thinking this is Ekatva anupreksha (singularity contemplation).

52. **अप्पसुद्धसरूवं विणा परभावा जीवादो सया भिण्णा चिंतणमिणं अण्णत्तणुवेक्खा।**

आत्मा के शुद्ध स्वभाव के बिना परभाव जीव से सदा भिन्न हैं यह चिंतन अन्यत्वानुप्रेक्षा है।

Except of pure nature, all alien qualities are different from soul, thinking this is anyatva Anuperksha (Seperateness contemplation).

53. **भव-कारणं मलकूवो देहो चिंतणमिणं असुइ-अणुवेक्खा।**

देह संसार का कारण व मल का कूप है यह चिंतन अशुचि अनुप्रेक्षा है।

Body is the cause of transmigration and is the well of excrement, thinking this is Ashuchi anupreksha (the impureness of the body).

54. **कम्मागमदार-जोगादि-कारण-चिंतणं आसवणुवेक्खा।**

कर्मागमन के द्वार, योगादि कारणों का चिंतन आस्रवानुप्रेक्षा है।

Thinking over gate of karmas or cause of yogas etc. is Ashrava anupreksha (influx contemplation).

55. **कम्मणिरोह-हेदु-चिंतणं संवरणुवेक्खा।**

कर्मनिरोध के हेतुओं का चिंतन संवरानुप्रेक्षा है।

Thinking over the causes of stopping karmas is Sanvar anuperksha (stoppage contemplation).

56. **एगदेस-कम्मक्खय-कारण-चिंतणं णिज्जरणुवेक्खा।**

एकदेश कर्म क्षय के कारण का चिंतन निर्जरानुप्रेक्षा है।

Reflecting on causes of shedding karmas partially is Nirjara anupreksha (Disintegration contemplation).

57. **जत्थ जीवो जम्मदि मरदि सो लोगो, तस्स चिंतणं लोगणुवेक्खा।**

जिस क्षेत्र में जीव जन्मता-मरता है वह लोक है, उस क्षेत्र का (लोक का) चिंतन लोकानुप्रेक्षा है।

Area in which living beings take birth and dead is called universe and reflecting on universe is lok anupreksha (universe contemplation).

58. **अप्प-सुद्धसहाव-चिंतणं धम्मणुवेक्खा।**

आत्मा के शुद्ध स्वभाव का चिंतन धर्मानुप्रेक्षा है।

Meditating over pure nature of soul is Dharma anupreksha (the truth promulgated by lord jina).

59. **बोहिलाहो सुद्ध-अप्पुवलद्धी वा महा दुल्लहा चिंतणमिणं बोहिदुल्लहणुवेक्खा।**

बोधिलाभ अथवा शुद्ध आत्मोपलब्धि महादुर्लभ है ऐसा चिंतन करना बोधिदुर्लभ अनुप्रेक्षा है।

Gain of self enlightment or pure self attainment is very difficult, thinking this is Bodhi Durlabh anupreksha (difficult enlightment).

60. **पुणपुण तच्चपेक्खणं अणुवेक्खा।**

पुनः पुनः तत्त्वप्रेक्षण अनुप्रेक्षा है।

Thinking of real state again and again is contemplation.

61. **अणुवेक्खा वि भावणा।**

अनुप्रेक्षा भी भावना है।

Contemplation is also feeling.

अनुमान

62. **धूमेण अग्गि-णाणं अणुमाणं।**

धूम से अग्नि का ज्ञान अनुमान है।

Assuming fire on seeing smoke is inference.

63. **सीयणिलेण को ण जाणदि समीवे जलं।**

ठण्डी वायु से कौन नहीं जानता कि समीप में जल है।

Who doesn't know that water is nearer by cool air?

64. **अणुमाणं वि सण्णाणं।**

अनुमान ज्ञान भी सम्यग्ज्ञान है।

Inference knowledge is also right knowledge.

अनुरक्ति

65. **परदव्वेसुं अदिलीणत्तं हु अणुरत्ती।**

परद्रव्यों में अतिलीनता ही अनुरक्ति है।

Being engrossed in alien substances is attachment or predilection.

66. **दुच्चयो दढबंध-रायो।**

दृढ़ निबन्धन राग कठिनता से त्यागने योग्य होता है।

Strong affection is very difficult to give up.

67. **वियारहीणो तिव्वाणुरायी।**

तीव्रानुरागी विचारहीन होता है।

Extremely affectionate person is thoughtless.

68. **बद्धमूलणुराय-चागणं दुल्लहं।**

बद्धमूल अनुराग त्यागना दुर्लभ है।

It is difficult to give up bonded affection.

अनुशासन

69. **अणुसासणं महापुरिस-लक्खणं।**

अनुशासन महापुरुष का लक्षण है।

Discipline is the symptom of a great man.

70. **अणुसासणं धम्म-पोसगं।**

अनुशासन धर्म का पोषक होता है।

Discipline nourishes religion.

71. **अणुसासणं ववहार-धम्म-पाणो।**

अनुशासन व्यवहार-धर्म का प्राण है।

Discipline is the vitality of practical religion.

72. **अणुसासणं सस्सद सुह-रज्ज-पहो।**

अनुशासन शाश्वत सुख का राजपथ है।

Discipline is a high way of eternal bliss.

73. **जहा णो णीरं विणा सरिदा तहेव अणुसासणं विणा रज्जं।**

जैसे जल के बिना नदी नहीं होती उसी प्रकार अनुशासन के बिना राज्य।

As there is no river without water similarly kingdom without disciple.

74. **जह रयणजुत्त-रयणागारो तहेव अणुसासण-जुत्त-सासणं।**

जैसे समुद्र रत्नों से युक्त होता है उसी प्रकार अनुशासन युक्त शासन।

As ocean is endowed with gems similarly rule with discipline.

75. **सासगो वि होज्ज अणुसासण-बद्धो।**

शासक भी अनुशासन बद्ध होना चाहिए।

Ruler should also be disciplined.

76. **सुसक्किदणुसासणं विज्जदे भारहे।**

भारत में सुसंस्कृत अनुशासन विद्यमान है।

There is cultivated discipline in India.

77. **सज्जणा करेज्ज मिदु-अणुसासणं।**

सज्जन मृदु अनुशासन करे।

Soften discipline should be done by gentle man.

78. **दुट्ठाणं होज्ज कक्कसणुसासणं होज्ज।**

दुष्टों के लिए कर्कस अनुशासन होना चाहिए।

Discipline should be harsh for scoundrels.

79. **अणुसासणहीणस्स को मण्णदि सासणं?**

अनुशासनहीन का शासन कौन मानता है।

Who follows the discipline of non- disciplined?

80. **अणुसासणं मूलाहारोव्व सिक्खाखेत्ते।**

शिक्षा के क्षेत्र में अनुशासन मूलाधार के समान है।

Discipline is like a foundation in area of education.

81. **जह सिक्खगो अणुसासगो तह विज्जत्थी वि।**

जैसे शिक्षक अनुशासक होता है वैसे ही विद्यार्थी भी।

As there are teachers similarly students.

82. **जिणसासणे अप्पाणुसासणं पहाणं।**

जिनशासन में आत्मानुशासन प्रधान है।

Discipline on soul is prime in jinshasan.

83. **अणुसासणं सेदू समण-सावयाणं।**

श्रमण और श्रावकों का सेतू अनुशासन है।

Bridge of ascetics and layman is discipline.

अनेकांत

84. **अणेग-सम्मेगंतो हु अणेगंतो।**

अनेक सम्यक् एकान्त ही अनेकान्त है।

Many real one sided views is relative pluralism.

85. **पत्तेय-वत्थुम्मि विज्जमाणा अणेग-धम्मा हु अणेगंतो।**

प्रत्येक वस्तु में अनेक धर्म विद्यमान रहते हैं वही अनेकांत है।

Many religions exist in everything, this is relative pluralism.

86. **सव्ववत्थूणि अणेगंतरूवा, अणेगंतो वि णेगंतरूवो।**

सभी वस्तुएँ अनेकान्तरूप हैं वह अनेकान्त भी एकान्त रूप नहीं है।

All things are relatively plural and even that pluralism is not holistically singular.

अन्न

87. **जत्थ बहु-अण्णाणि थोवा भक्खगा तत्थेव समिद्धी।**

जहाँ अन्न बहुत हो और खाने वाले कम, वहाँ ही समृद्धि है।

Where there is plenty of grain and less consumers, there is prosperity.

88. **जत्थ ण कयावि खयदि अण्णं तं संपण्णं गेहं।**

जहाँ कभी भी अन्न क्षीण नहीं होता वह सम्पन्न घर है।

The home in which grain never lessens is a prosperous home.

89. **अण्णं वि गोरसव्व पुट्ठिदं।**

अन्न भी गौरस के समान पुष्टिदायक है।

Grain is also nutritious like cow products.

90. **अण्णं हु विदिय-पाणो सज्जणाणं।**

सज्जनों के लिए अन्न द्वितीय प्राण है।

Food is second vital (life) breath for virtuous people.

91. **सव्वभोयणेसु अण्णं परमं।**

सभी भोज्यपदार्थों में अन्न परमभोजन है।

Grain is the supreme food in all eatables.

92. **जीरणण्णं हु पसंसणीयं।**

पचा हुआ अन्न ही प्रशंसनीय है।

Only digested food is praiseworthy.

93. **णो साहणा अण्णं विणा।**

अन्न के बिना साधना नहीं होती।

Penance cannot be done without meal.

अन्याय

94. **धम्म-विवरिय-मग्गो अण्णायो।**

धर्म से विपरीत मार्ग अन्याय है।

Opposite path from religion is injustice.

95. **अण्णायं सोढुं असमत्थो वीरो।**

अन्याय सहने में जो असमर्थ है वह वीर है।

One who is unable to tolerate injustice is brave.

96. **अण्णायज्जिदं दुहकरं।**

अन्याय से कुछ भी अर्जित निश्चित रूप से दु:खकारी है।

Anything earned by injustice, causes pain.

97. **अविस्ससणीयमण्णायज्जिद-धणं।**

अन्याय से अर्जित धन अविश्वसनीय है।

Money earned by injustice is not trustworthy.

अन्यायी

98. **अण्णायी सवर-घादगो।**

अन्यायी स्व-पर घातक होता है।

An unjust person harms others as well as himself.

99. **अण्णायिणो ण को वि बंधू।**

अन्यायीजन का कोई भी बंधु नहीं है।

No one befriends an unjust preson.

अपकीर्ति

100. **अवकित्ती दुह-कारणं।**

अपकीर्ति दु:ख का कारण है।

Infamy is the cause of pain.

अपमान

101. **अवमाणजणिद-दुक्खेण मरणं वरं।**

अपमान जनित दु:ख से मृत्यु अच्छी है।

Death is better than the pain of insult.

102. **सजणकदवमाणो दुस्सहो।**

अपनों के द्वारा किया गया अपमान निश्चय ही दुस्सह होता है।

Contempt by one's own people is unbearable.

103. **वंचणं अवमाणं च बुद्धिमंता णो पयासेज्जा।**

वंचना और अपमान बुद्धिमानों को प्रकाशित नहीं करना चाहिए।

Wise man shouldn't show deception and disrespect.

104. **अवमाणिदो सल्लजुदो य महादुही।**

अपमानित और शल्ययुक्त महादु:खी होता है।

Dishonoured and stinged person is full of sorrow.

105. **महापुरिसस्स अवमाणो णरइदुक्खादो भयंकरो।**

महापुरुष का अपमान नरक के दु:ख से भयंकर है।

Insult of a greatman is more terrible than facing the pain of hell.

106. **अवमाणो मित्ति-धंसगो।**

अपमान मैत्री का ध्वंसक है।

Dishonour is the destroyer of friendship.

अपयश

107. **अवजसो पच्छण्ण-सत्तू।**

अपयश प्रच्छन्न शत्रु है।

Ignominy is disguised enemy.

अपराधी

108. **अवराह-चागेण विणा णो मुत्ती।**

अपराध त्याग के बिना मुक्ति नहीं है।

There is no emancipation without giving up offence.

109. **अवरद्धिगो सया संकणिज्जो।**

अपराधी सदा शंकनीय होता है।

Guilty is always suspected.

110. **पुण्ण-णिरवराहो ण को वि देहीसुं।**

संसारियों में पूर्ण निरपराधी कोई भी नहीं है।

No worldly soul is completely innocent.

अपरिग्रह

111. **परदव्वेहिं मुच्छाभाव-चागो हि अपरिग्गहो।**

परद्रव्यों से मूर्च्छा भाव का त्याग ही अपरिग्रह है।

Giving up attachment of worldly substances is nonaccumulation.

अप्रमत्त

112. **सया जागरियो अप्पमत्तो।**

जो सदा जागरुक है वह अप्रमत्त है।

One who is always aware is conscious or non-careless.

113. **अप्पमादो उण्णदि-कारणं पमादो विवरीदस्स।**

अप्रमाद उन्नति का कारण है और प्रमाद अवनति का।

Awareness is the cause of progress and carelessness is of downfall.

114. **सया जागरियस्स किं भयं?**

सदा जागरुक के लिए क्या भय?

One who is always alert, has no fear.

अब्रह्म

115. **परवत्थु-समयेसु वा रमण-भावो हु अबंभो।**

परवस्तु में या पर समय में रमण करने का भाव ही निश्चय से अब्रह्म है।

Thinking of Indulging in alien substances or soul is incontinece from ultimate point of view.

116. **कुसील-संसग्गिस्स धण-विहवो मलव्व।**

कुशीलवान् का धन वैभव केवल मल की तरह है।

Wealth of characterless is only like dirt.

अभव्य

117. **अभव्वा ण लहेज्ज जिणपदं कया वि।**

अभव्य जिनपद को कदापि प्राप्त नहीं कर सकते।

Non-potential soul cannot attain jina pad.

अभिमान

118. **अहिमाणो हि पडण-कारणं।**

अभिमान ही पतन का कारण है।

Ego is the cause of downfall.

119. **अहिमाणी णो मण्णदे विणय-मुल्लं।**

अभिमानी विनय का मूल्य नहीं मानता है।

Egoist doesn't recognize the significance of being humble.

अभ्यास

120. **अब्भासदि जम्मि होदि णिउणो तम्मि।**

जो जिस कार्य में अभ्यास करता है उसमें वह निपुण होता है।

A person becomes proficient in the work, he practices.

121. **अणब्भासेण णिप्फला किरिया।**

अनभ्यास से क्रिया निष्फल होती है।

Work become unsuccessful without practice.

122. **अब्भासेण को ण कुसलो।**

अभ्यास से कौन कुशल नहीं होता।

Who doesn't become skilled by practice?

123. **अब्भासेण ण असंभवो किं वि।**

अभ्यास से कुछ भी असंभव नहीं है।

Practice makes things possible.

अराजकता

124. **जत्थ अरायगदा कहिं कुसल-खेमो तत्थ?**

अराजकता जहाँ रहती है वहाँ कुशल क्षेम कहाँ है?

Where anarchy exists, there is no tranquility.

125. **अरायगदा ण कस्स वि सुहदा।**

अराजकता किसी के लिए भी सुखप्रद नहीं है।

Anarchy is not benificial for anyone.

126. **कहिं रक्खा अत्थित्थीण अरायगदाए?**

अराजकता के काल में स्त्री और धन की कहाँ रक्षा होती है?

At the time of anarchy, women and money cannot be protected.

127. **अरायगदाए णस्संति अहियारा कत्तव्वा।**

अराजकता के काल में अधिकार और कर्त्तव्य नष्ट हो जाते हैं।

Duties and rights get destroyed at the time of anarchy.

128. **अरायगदा सव्व-दुह-जणणी।**

अराजकता सर्वदु:खों की जननी है।

Anarchy is the mother of all sorrows.

129. **अरायगदा पडण-पदीगं।**

अराजकता पतन का प्रतीक है।

Anarchy is the symbol of decline.

130. **अरायगदाए असंभवो कल्लाणो।**

अराजकता के काल में कल्याण असंभव है।

Welfare is impossible at the time of anarchy.

131. **अरायगदाए णो को वि णिरापदो रट्ठे।**

अराजकता के समय राष्ट्र में कोई भी निरापद नहीं।

No one is safe in the nation at the time of anarchy.

अरिहंत

132. **अरिहा हु परमगुरू।**

निश्चय से अरिहंत परमेष्ठी परम गुरु हैं।

Arihanta is supreme preceptor.

133. **अरिहा सयल-परमप्पा।**

अरिहंत सकल परमात्मा कहे जाते हैं।

Arihanta is said to be tangible God.

अर्थ

134. **अत्थो अणत्थमूलो।**

अर्थ (धन) अनर्थ का मूल है।

Wealth is the root of improper acts.

135. **अत्थेण वड्ढदि अत्थो।**

अर्थ से अर्थ वृद्धिंगत होता है।

Money increases by money.

136. **अत्थेण अत्थसिद्धी णो परमत्थेण।**

अर्थ से ही अर्थ (प्रयोजन) की सिद्धि होती है, परमार्थ से नहीं।

Purpose get fulfilled by money.

137. **धीमंता ण कुव्वंति पावं अत्थसिद्धीए।**

बुद्धिमान् अर्थ की सिद्धि के लिए पाप नहीं करते।

Wise do not sin for fulfilling their purpose of money.

138. **विचित्ता हि विदूणं अत्थ-परूवणा।**

विद्वानों की अर्थप्ररूपणा विचित्र ही है।

Money presentation of scholars is very strange.

139. **अत्थ-दासो पुरिसो णो पुरिसस्स अत्थो।**

अर्थ का दास पुरुष है पुरुष का दास अर्थ नहीं।

Man is a slave of money, money is not servant of man.

140. **अत्थ-चागेण सदुवजोगेण वा सुहं।**

अर्थ (धन) के सदुपयोग या त्याग से सुख उत्पन्न होता है।

Happiness generates from the good use of money or by giving up money.

141. **अत्थ-पयडी हु परिच्चाया।**

अर्थ की प्रकृति ही त्याज्य है।

Nature of wealth is worth abandoning.

142. **अत्थो सुह-हेदू वि।**

अर्थ सुख का भी हेतु है।

Money is also the cause of happiness.

143. **धम्ममग्गज्जिदो अत्थो जहत्थो।**

धर्ममार्ग से अर्जित यथार्थ धन है।

Money which is earned justly is real money.

144. **उवयारो उवभोगो य अत्थ-महाफलं।**

उपकार और उपभोग अर्थ (धन) के महाफल हैं।

Beneficence and enjoyment are the greatest fruits of wealth.

145. **अत्थासत्ताणं ण को वि गुरू ण बंधू।**

अर्थ में आसक्तों के लिए न कोई गुरु है न बंधु।

There is neither any preceptor nor friend for the people who indulge in wealth.

अल्प

146. **अप्पविज्जा तच्छिंडा।**

अल्पविद्या भयंकर है।

Little knowledge is very dangerous.

147. **अप्पणाणी वि पसंसणीयो मूढेसु।**

मूर्खों में अल्पज्ञानी भी प्रशंसनीय होता है।

Person who has little knowledge is also praised amidst the foolish.

148. **अप्पसत्तिवंताणं लहुकज्जं वि महाणो।**

अल्पशक्ति वालों के लिए लघुकार्य भी महान् है।

Small work is also great for man with little strength.

अवग्रह

149. **दंसणं पच्छा अवग्गहो।**

दर्शन के बाद अवग्रह होता है।

Apprehension comes after perception.

150. **वत्थु-पढमवगाहगं णाणं अवग्गहो।**

वस्तुओं का प्रथम अवगाहक ज्ञान अवग्रह है।

First attained knowledge of things is apperhension.

151. **अवग्गहो वि सुदणाण-हेदू।**

अवग्रह भी श्रुतज्ञान का हेतु है।

Apprehension is also the cause of Scriptural knowledge.

अवस्था

152. **अवत्था हु पवट्टदि सुहं दुहे मित्तं सत्तुम्मि सम्पत्तिं विपत्तीए य।**

अवस्था ही सुख को दुःख में, मित्र को शत्रु में और सम्पत्ति को विपत्ति में प्रवर्तन कराती है।

Only circumstances transformed joy to sorrow, friends to enemy and prosperity to adversity.

अविद्या

153. **अविज्जा विग्घ-मूलं।**

अविद्या विघ्नों का मूल है।

Ignorance is the root of obstacles.

154. **ण कयावि सुहंकरा अविज्जा।**

अविद्या कभी भी सुखकारी नहीं होती।

Ignorance never causes of happiness.

155. **अविज्जा हु महातमो।**

अविद्या ही महा तम है।

Ignorance is dense darkness.

अविनय

156. **अविणयो धंसदि सेयरुक्खं।**

अविनय श्रेयरूपी वृक्ष को नष्ट करती है।

Rudeness cuts the tree of welfare.

अविनीत

157. **अविणीदो महाविज्जं महागुणं ण लहेदि कयावि।**

अविनीत कभी भी महाविद्या और महागुणों को प्राप्त नहीं करता।

Immodest person never gains great knowledge and virtues.

158. **अविणीदो कहं लहेज्ज सुविज्जं?**

अविनीत को सुशिक्षा कैसे प्राप्त हो सकती है?

How can good education be attained by an ill-mannered person?

अविवेक

159. **दुह-रुक्ख-मूलमविवेगो।**

दु:ख वृक्ष का मूल अविवेक है।

Imprudence is the root of the tree of sorrow.

160. **अविवेगो दुहदो अग्गिकुंडव्व।**

अविवेक अग्निकुण्ड के समान दु:खदायक है।

Imprudence is as painful as the fire pit.

अव्यवस्था

161. **अव्ववत्था हु सव्वकज्जेसु पडण-कारणं।**

सभी कार्यों में अव्यवस्था ही पतन का कारण है।

Only disorder is the cause of fall in all works.

162. **उवयारो वि भयंकरो अव्ववत्थिदाण।**

अव्यवस्थित चित्त वालों का उपकार भी भयंकर होता है।

Beneficence is also dangerous in unsettled minds.

163. **अव्ववत्था हु वेफल्लं।**

अव्यवस्था ही विफलता है।

Disorder is failure.

164. **अव्ववत्था दुहंकरी।**

अव्यवस्था दु:खकारी है।

Disorder is sorrowful.

असंतुष्ट

165. **दुक्खं लहंति सव्वदा अतुट्ठा सक्क-चक्की वि।**

असंतुष्ट इन्द्र व चक्रवर्ती भी सर्वदा दु:ख पाते हैं।

Unsatisfied Indra and sovereign king also suffer pains.

असंयम

166. **भवबीयमसंजमो।**

असंयम संसार का बीज है।

Non-restraint is the seed of transmigration.

167. **बहुदुहमग्गो असंजमो।**

असंयम बहुत दु:खों का मार्ग है।

Incontinence is the path of extreme sorrow.

असंयमी

168. **सिला ण तारदि अण्णं तहा असंजमी वि।**

जैसे पत्थर की शिला अन्य शिला को तारने में समर्थ नहीं होती है, वैसे ही असंयमी अन्य व्यक्तियों को तारने में समर्थ नहीं होते।

Just as rock connot carve another rock similarly unrestrained individual can't guide others.

असत्य

169. **अलीय-वयणं भावो वा असच्चं।**

अलीक वचन या भाव असत्य है।

False words and emotions are lies.

170. **असच्च-भाव-वयणेहि वा पाव-बंधणं।**

असत्य भाव व वचनों से पाप बंध होता है।

Inauspicious karmas bind us by false emotions and words.

171. **तच्चणाणी ण भासंति असच्चवयणं कया वि।**

तत्त्वज्ञानी असत्यवचन कभी नहीं कहते हैं।

A knower of reality never lies.

172. **हिदंकरो ण कंखदि मोसभासणं।**

हितकारी (सबका हित चाहने वाला) मिथ्यावचन नहीं बोलना चाहता।

Beneficent person doesn't want to speak untruth.

173. **मूलहीण-रुक्खोव्व मोसभासी धम्मी।**

झूठ बोलने वाला धार्मिक मूलहीन वृक्ष की तरह है।

A pious liar is like a rootless tree.

174. **मोसवयणं हु महाविसो।**

असत्यवचन ही महाविष है।

Lies are like poison.

175. **मोसवयणं घिणिद-मलोव्व।**

असत्यवचन घृणित मल है।

False words are like hated dirt.

176. **हिंसा इव मोसवयणं।**

मिथ्यावचन हिंसा के समान हैं।

Untrue words are like violence.

अहंकार

177. **अहंकारो जीवणुत्थाणे महा रिऊ।**

अहंकार जीवन उत्थान में महा शत्रु है।

Arrogance is the greatest enemy of life's upliftment.

178. **दुग्गदि-कारणं ण थब्भदि णाणी।**

ज्ञानी दुर्गति का कारण-अहंकार नहीं करता।

Learned never adheres to arrogance which is the cause of downfall.

179. **अहंकारजइयो सया सुही।**

अहंकार पर विजय प्राप्त करने वाला सदा सुखी होता है।

He who conquers ego, always remains happy.

180. **णाणीणं वि दुक्करं अहंकार-णासणं।**

ज्ञानियों के लिए भी अहंकार का नाश करना दुष्कर है।

It is very difficult to destroy ego even also for learned men.

181. **अहंकारो अण्णाण-सहोदरो।**

अहंकार अज्ञान का सहोदर है।

Ego is the brother of ignorance.

अहिंसा

182. **तिजोगेण हिंसाभाव-चागो अहिंसा।**

त्रियोग से हिंसा भाव का त्याग ही अहिंसा है।

Giving up violence by three volitions is non-violence.

183. **अहिंसा हि धम्म-मूलो।**

अहिंसा ही धर्म का मूल है।

Non-violence is the root of religion.

184. **सव्व-सावज्ज-विरत्ती हु अहिंसा।**

सर्व सावद्य से विरक्ति ही अहिंसा है।

Detachment from all sinful activities is non-violence.

185. **अहिंसाइ-गुणाकिण्णस्स को वि सुक्किदं दुक्करं ण।**

अहिंसादि गुणों से समाकीर्ण के लिए कोई भी सुकार्य दुष्कर नहीं है।

No work is difficult for him who is endowed with qualities like non-violence etc.

186. **महाधम्मो अहिंसा हि विस्स-रक्खगो।**

महाधर्म अहिंसा ही विश्व की रक्षक है।

Only the great religion, non-violence is the protector of the world.

187. **णिस्संग-दयावंतस्स चित्ते चिट्ठदि अहिंसा।**

नि:संग और दयायुक्त के चित्त में अहिंसा ठहरती है।

Non-violence remains in the heart of those who are detached and merciful.

188. **पाणि-रक्खणं हु महाधम्मो।**

प्राणियों की रक्षा करना ही महाधर्म है।

To protect all creatures is great religion.

189. **अहिंसा-णिद्देसगं हि धम्म-सत्थं।**

अहिंसा का निर्देश करने वाला ही धर्मशास्त्र है।

Only the Instructor for non-violence is religious scripture.

190. **मादुव्व अहिंसा हु सव्व-हिदकारिणी।**

माता के समान अहिंसा निश्चय से सबका हित करने वाली है।

Non-violence shows benevolence to everyone like a mother.

191. **संसार-मरुभूए अहिंसा हु अमिय-सायरो।**

संसार रूपी मरुभूमि में अहिंसा ही अमृत का सागर है।

Non-violence is the sea of nector in this world like desert.

192. **अहिंसा हु सव्व-सेट्ठ-धम्मो।**

अहिंसा ही सर्वश्रेष्ठ धर्म है।

Non-violence is the greatest religion.

193. **अहिंसा-धम्मम्मि हिंसाए किंचि वि ण ठाणं।**

अहिंसा धर्म में हिंसा को किंचित् भी स्थान नहीं है।

There is no place for violence in non-violent reilgion.

आकांक्षा

194. **कंखा हु महा-दुक्खं पुण्णापुण्णा वा।**

आकांक्षा ही महादु:ख है वह पूर्ण हो जाए या अपूर्ण।

Desire is deep sorrow whether it is fulfilled or unfulfilled.

195. **जो जस्स वंछदि तं लहिय णंद-मणुभवदि।**

जो जिसकी वांछा करता है वह उसको प्राप्त कर आनन्द का अनुभव करता है।

One feels happy after getting his desired thing.

196. **णिस्सीम-कंखा णिस्सीम-दुह-हेदू।**

नि:सीम आकांक्षा नि:सीम दु:ख का कारण है।

Endless desire is the cause of endless sorrows.

आकृति

197. **वत्थुणो बहि-आयारो आकिदी।**

वस्तु का बाह्य आकार आकृति है।

Extrinsic form of a thing is shape.

आकिंचन्य

198. **आकिंचणं गुणवड्ढगं।**

आकिंचन्य भाव गुणवर्द्धक है।

Detachment increases one's qualities.

199. **भवणासगं महाधम्मं हु आकिंचणं।**

आकिंचन्य ही संसार का विनाश करने वाला महाधर्म है।

Detachment is supreme religion and destructor

of transmigration.

आगम

200. **सव्वण्हु-भासिदो णिग्गंथ-गुंफिदो हि आगमो।**

सर्वज्ञ द्वारा कथित निर्ग्रन्थों द्वारा ग्रंथित ही आगम कहा गया है।

That which is said by Arihanta and composed by Digamber saints is Agam.

आग्रह

201. **अणग्गहो बुद्धिफलं।**

बुद्धि का फल आग्रह नहीं होना है।

Fruition of knowledge shouldn't be insistence.

202. **गिहो णस्सदि एगं दुरग्गहो बहुत्तं।**

ग्रह एक को नष्ट करता है और दुराग्रह बहुतों को।

Planet destroys one and insistence destroys many people.

आचार्य

203. **सयायार-पालणे णिउणो हु आइरियो।**

सदाचार पालन में निपुण ही आचार्य है।

One who is skilled in good conduct is preceptor.

204. **णिम्मलायारेण आइरियो।**

निर्मल आचार से आचार्य होता है।

One with holy conduct is a preceptor.

205. **आइरियेण लद्धिअ-विज्जा हु सुहंकरा।**

आचार्य से प्राप्त विद्या ही सुखकारी है।

Only the knowledge attained by preceptor is joyful.

आत्मज्ञान

206. **इह पर-लोयम्मि अप्पणाणिणो ण को वि मित्तं ण च सत्तू।**

इह लोक और पर लोक में आत्मज्ञानी का न कोई मित्र है, न कोई शत्रु।

There is neither friend nor enemy in this or any other world of self enlightened.

207. **अप्पणाणं हु अप्पणाणं, तमप्पं वि बहुत्तं।**

आत्मज्ञान ही आत्मज्ञान है, वह आत्मज्ञान अल्प भी बहुत होता है।

Self knowledge is self consciousness. Even a little of self-consciouness is much.

208. **अप्पणाणं हु महालाहो।**

निश्चय से आत्मज्ञान ही महालाभ है।

Self-realisation is great profit from ultimate point of view.

209. **अप्पणाणं भवसायर-तारणाय पोत्तं।**

आत्मज्ञान भवसागर से तारने के लिए नाव है।

Self knowledge is the boat to cross the ocean of this world.

आत्म प्रशंसक

210. **अप्पप्पसंसगो हु णो पसंसणीयो।**

आत्मप्रशंसक निश्चय से प्रशंसनीय नहीं है।

Self-admirer is definitely not praise-worthy.

आत्मलीन

211. **अप्प-सहाव-लीणो णो पस्सदि संसारं।**

आत्म स्वभाव में लीन इस संसार को नहीं देखता।

One who is engrossed in self nature, doesn't

see the world.

212. **अप्पलीणो हु सग-सामी।**

आत्मलीन ही स्व का स्वामी है।

Self-absorbed is his own master.

आत्महित

213. **णिरत्थगं हु पियवयणं जदि णो अप्प-हिदंकरं।**

प्रियवचन यदि आत्महितकारी नहीं हों तो निरर्थक हैं।

If kind words are not self profiting then they are useless.

214. **पढिय सव्व-सत्थाणि जदि अप्पहिद-मग्गं ण रुच्चेज्ज तहा सव्व-णिरत्थगं।**

सम्पूर्ण शास्त्रों को पढ़कर भी यदि आत्महित का मार्ग नहीं रुचता तो सब निरर्थक है।

Even after reading all scriptures, the path of self welfare is not liked then everything is meaningless.

215. **कणगो कणगो य परिच्चायो अप्पहिदेसीणं।**

कनक (सोना) कनक (अनाज) आत्महितैषियों के लिए त्याज्य है।

For the self-interested, gold and grain is worth giving up.

216. **जणसंपक्को बाहदि अप्पहिदमग्गं।**

लौकिक जन का सम्पर्क आत्महित के मार्ग का विरोध करता है।

Living with worldly people is an obstacle in the way of self-welfare.

आत्मा

217. **जो जाणदि अप्पं सो सव्वं।**

जो अपनी आत्मा को जानता है वह सबको जानता है।

A person who knows his own soul, knows everyone.

218. **परत्थादो विरत्तो दु अप्पणाणी।**

पर पदार्थों से विरक्त ही आत्मज्ञानी है।

One who is detached to alien substances is self-knower.

219. **अप्पा हु गुरू अप्पस्स।**

आत्मा ही आत्मा का गुरु है।

The soul is the preceptor of itself.

220. **अप्प-णिंदाए पावं विणस्सदि।**

आत्म निंदा से पाप नष्ट होता है।

To censure oneself destroys sin.

221. **अप्प-पसंसगो ण गारवं लहदे।**

आत्म प्रशंसक गौरव को प्राप्त नहीं होता।

Self admirer doesn't get dignity.

222. **अप्पबोहो महातित्थं णाणी णिमज्जदि तस्सिं।**

आत्मबोध ही महातीर्थ है, ज्ञानी उसमें निमग्न रहता है।

Self-knowledge is the greatest pilgrimage, scholars should remain engrossed in it.

223. **अप्पलाहोव्व ण का वि णिही।**

आत्मलाभ के समान कोई भी निधि नहीं है।

There is no treasure like attainment.

224. **सुद्धप्प-लाहो हु महासुहं।**

शुद्धात्म लाभ ही महासुख है।

Self-consciousness is the greatest pleasure.

225. **अप्पणंत-सत्ति-संपण्णो।**

आत्मा अनन्तशक्ति सम्पन्न है।

Soul is abundantly endowed with infinite power.

226. **अणादिदो अप्पस्स णो को वि णिय-परो।**

अनादि से आत्मा का कोई भी निज-पर नहीं है।

The soul is independent of self and other from beginningless period.

227. **सगप्पा हि सगो।**

अपनी आत्मा ही अपनी है।

Only your soul is yours.

228. **केवलणाणेण सुद्धो होदि अप्पा।**

केवलज्ञान से आत्मा शुद्ध होती है।

Soul becomes pure from (omniscience) complete knowledge.

229. **अप्पा सव्वविगार-रहिदो सहावेण।**

स्वभाव से आत्मा सब विकारों से रहित है।

Soul is free from all maladies by nature.

230. **अप्पा उक्किट्ठो सुन्दरो लोए।**

आत्मा लोक में उत्कृष्ट सुन्दर है।

Soul is the supreme beauty in the universe.

231. **संत-मणम्मि पयासदे अप्पजोदी।**

शांत मन में आत्म ज्योति प्रकाशित होती है।

Soul is enlightened in a peaceful heart.

232. **संतप्पा णासदि अण्णाणं।**

शान्त आत्मा सहजतापूर्वक अज्ञान का नाश कर देती है।

Peaceful soul destroys ignorance easily.

233. **सगप्प-सम्पत्तिं कहणे को समत्थो?**

आत्मा की स्वकीय सम्पत्ति को कहने में कौन समर्थ है?

Who can speak of soul's own wealth?

234. **मोक्खो ण अप्पादु दूरो।**

मोक्ष आत्मा से दूर नहीं है।

Salvation is not far from soul.

235. **सव्व-सत्तीसु पहाणा अप्प-सत्ती।**

आत्मा की शक्ति सर्व शक्तियों में प्रधान है।

The strength of soul is the chief among all strengths.

236. **देहभिण्ण-देहीणप्पा हु चिदप्पा ।**

देह से भिन्न संसारी प्राणियों की आत्मा ही चिदात्मा है।

The soul which is seperate from body of worldly beings, is the supreme soul.

237. **सहावेण पत्तेयं अप्पा सुद्धो।**

स्वभाव से प्रत्येक आत्मा शुद्ध होती है।

Every soul is pure by nature.

238. **सगप्पं जाणदि सो आगमसारं।**

जो अपनी आत्मा को जानता है वह आगम का सार जानता है।

He who knows his own soul, knows the gist of scripture.

239. **सत्तु-मित्तस्स भावो वि अप्प-सत्तू मित्तं च।**

शत्रु मित्रता का भाव भी आत्मा का शत्रु-मित्र है।

Feeling of enmity or friendship is also the enemy or friend of the soul.

240. **अप्पा ण पोसदि देहपोसम्मि।**

देह के पुष्ट होने पर आत्मा पुष्ट नहीं होती।

When the body is nourished, the soul doesn't get nourishment.

241. **सगपरिणाम-विसुद्धी हु अप्पस्स परं धणं।**

आत्मा की परिणाम विशुद्धि ही आत्मा का परम धन है।

Purity of self thought is the greatest wealth of soul.

242. **अप्परक्खव्व ण को वि धम्मो।**

आत्मा के रक्षण के समान अन्य कोई धर्म नहीं है।

There is no other religion like protecting the soul.

243. **अग्गीए सुवण्णादी सुद्धो होदि तहा तवग्गीए अप्पा।**

जैसे अग्नि से सुवर्ण आदि धातु शुद्ध होती है वैसे ही तपाग्नि से आत्मा शुद्ध होती है।

As gold and other metals get purified by fire similarly soul gets purified by penance.

244. **जहा रज्जुणा जलपत्तं कूवादो कड्ढदि तहा सम्मत्तेण अप्पं भवसायरादो।**

जैसे रस्सी के द्वारा जलपात्र कुएँ से निकाला जाता है वैसे सम्यक्त्व द्वारा आत्मा भवसागर से।

Just as the bucket is pulled out of the well by a string, similarly the soul is pulled out from the ocean of the world by perception or right faith.

245. **सगदव्वाइ-चउक्के मम सस्सदहियारो।**

स्वद्रव्यादि चतुष्टय पर मेरा शाश्वत अधिकार है।

I have eternal right on quaternity as self substances etc.

246. **जाव सुहुमो ताव थूलो वि अप्पा।**

आत्मा जितना सूक्ष्म है उतना ही स्थूल भी।

Soul is as much gross as it is fine.

247. **संजदप्पस्स किं करिस्सदि जमो?**

जिसने अपनी आत्मा को संयमित कर लिया है उसका यमराज क्या करेगा?

What can king of yama do of him who has restrained his own soul?

248. **अप्पाणंद-भोत्तू ण बिहेदि कयावि।**

आत्मानंद का भोक्ता कभी भी डरता नहीं है।

The enjoyer of soul's happiness is never afraid.

249. **अप्पस्स महासत्ती सवरणंद-कारणं।**

आत्मा की महाशक्ति स्वपर आनन्द का कारण है।

The great power of soul is the cause of others and one's joy.

250. **एग-समये अप्प-अप्पियर-दव्व-रक्खा असंभवो।**

एक समय में आत्मा तथा आत्मेतर इन दो द्रव्यों का रक्षण असंभव है।

Protecting two substances 'soul and other than soul' at a time is impossible.

आध्यात्म विद्या

251. **सवर-संतिदा अज्झप्प-विज्जा।**

अध्यात्मविद्या स्वपर के लिए शान्तिप्रद है।

Spiritual knowledge is peaceful for self and others.

252. **अज्झप्पणाणं विणा भववड्ढगं सद्दणाणं।**

बिना अध्यात्मज्ञान के शब्द ज्ञान संसार वर्धन करने वाला है।

Without spiritual knowledge, only knowledge of letters can grow the world.

253. **सया सुहंकरी अज्झप्प-विज्जा।**

अध्यात्म विद्या सदा सुखकारी होती है।

Spiritual knowledge is always beneficial.

254. **अज्झप्पविज्जा अमरत्त-कारणं।**

अध्यात्मविद्या अमरत्व का कारण है।

Spiritual knowledge is the cause of immortality.

आनन्द

255. **सव्वकाले णंदाणुभवो संभवो।**

सर्वकाल में आनन्द का अनुभव संभव है।

It is possible to feel happiness everytime.

आपत्ति

256. **ण थिरा संपत्ति-आपत्ती य लोए।**

लोक में सम्पत्ति और आपत्ति स्थिर नहीं है।

Prosperity and adversity are not stable in the world.

257. **आपत्ती वि सम्पत्ती साहु-समागमे।**

साधु के समागम में आपत्ति भी सम्पत्ति हो जाती है।

Adversity becomes prosperity when associated with an ascetic.

258. **हिदंकरा वि विमुहा आपत्तीए।**

आपत्तिकाल में हितकर भी विमुख हो जाते हैं।

Even the well-wishers become opponents at the time of adversity.

259. **आपत्तीए बहुसत्तू उप्पज्जंति।**

आपत्तिकाल में बहुत शत्रु उत्पन्न हो जाते हैं।

Many enemies are born at the time of adversity.

260. **मित्त-परिक्खा हु आपत्तीए।**

आपत्ति में ही मित्र की परीक्षा होती है।

A friend is examined only at the time of adversity.

261. **आपत्तीए सुबुद्धी वि णस्सदि।**

आपत्तिकाल में सुबुद्धि नष्ट हो जाती है।

Intelligence gets destroyed at the time of adversity.

आप्त

262. **वीयरायी सव्वण्हू हु अत्तो।**

वीतरागी व सर्वज्ञ ही आप्त हैं।

Only the unpassionate and omniscient is god.

आयु

263. **आऊ णिच्चं जमेण अक्कंतो।**

आयु नित्य ही यम से आक्रान्त है।

Life is always feared by yama.

264. **आउकम्म-खीणस्स मिच्चू णिच्छियो।**

जिसका आयुकर्म क्षीण है उसकी मृत्यु निश्चित है।

One whose age determining karmas get destroyed, his death is fixed.

265. **आउ-कम्म-णिसेगे जीवा पाण-रक्खण-कारणं लहंते।**

आयुकर्म के निषेक होने पर प्राणियों को प्राणरक्षा का कारण मिल जाता है।

Creatures get the cause of protective life if age determining karma is left.

266. **जीवण-मूलं आऊ।**

जीवन का मूल आयु है।

The foundation of life is age.

267. **आउ-साखा सूल-फुल्ल सहिदा।**

आयु रूपी शाखा काँटे और फूल से सहित होती है।

The branch of life has both thorns and flowers (sorrow & happiness).

268. **पत्तेगं आऊ अप्पो हु भासदि।**

प्रत्येक आयु अल्प ही प्रतिभासित होती है।

Every life seems short.

आरोग्य

269. **आरोग्ग-लाहोव्व कं वि वत्थुं रमणीयं णो लोए ।**

इस लोक में आरोग्य लाभ के समान कोई भी रमणीय वस्तु नहीं है।

In this world, there is nothing as splendid as good health.

270. **आरोग्गव्व णो सुहं।**

आरोग्य के समान सुख नहीं है।

There is no happiness like good health.

271. **आरोग्गं सव्वपुरिसट्ठ-मूलं।**

आरोग्य सभी पुरुषार्थों का मूल है।

Good health is the root of all efforts.

272. **लाहेसु मुक्खो आरोग्गलाहो।**

लाभों में आरोग्यलाभ मुख्य है।

Amongst all profits, the chief profit is good health.

आर्जव

273. **उत्तम-अज्जवं गुणागरो।**

उत्तम आर्जव गुणों का भण्डार है।

Supreme simplicity is a treasure trove of virtues.

274. **मण-वयण-कायेगा वित्ती अज्जव-भावो।**

मन, वचन, काय की एक सी वृत्ति आर्जव भाव है।

Same state of mind, speech and body is simplicity.

275. **णेव करेज्ज कवडं, णेव छड्डेज्ज अज्जवं च।**

कभी कपट नहीं करना चाहिए और न कभी आर्जवभाव छोड़ना चाहिए।

One should neither be deceitful nor leave simplicity.

276. **कवडं मिच्चू अज्जवं सुही जीवणं च।**

कपट मृत्यु है और आर्जव सुखी जीवन।

Deceit is death and simplicity is happy life.

277. **कवडं पावं अज्जवं महाधम्मो य।**

कपट ही पाप है और आर्जव महाधर्म।

Deception is sin and simplicity is supreme religion.

278. **सरलो हु बंभणाणी।**

सरलचित्त ही ब्रह्मज्ञानी होता है।

Only simple hearted people are self-enlightened.

279. **कवडीसु पीदी णो णीदी।**

कपटियों से प्रीति, नीति नहीं है।

It is not good to be friendly with the deceitful.

आर्त्त

280. **अट्टं वि दुस्सहं लोए।**

आर्त्त परिणाम लोक में दुस्सह हैं।

Painful feelings are unbearable in this world.

281. **अट्टं धम्मं समरावदि।**

आर्त्त परिणाम धर्म का स्मरण कराता है।

Outcome of extreme pain is a reminder of religion.

282. **अट्टज्झाणिणो ण रुच्चदे देहसुहं।**

आर्त्तध्यानी को देहसुख अच्छा नहीं लगता है।

A mournful meditator doesn't like the joy of body.

आर्य

283. **अज्जवकज्जेहिं अज्जा णो जादि-विज्जा-खेत्तेहिं।**

सरलकार्यों से आर्य होते हैं न कि जाति, विद्या और क्षेत्र से।

Civilized people are defined by simple works, not by caste, knowledge and region.

284. **कयावि मिच्छोव्व ववहारो णो कुव्वंति अज्जा।**

आर्य कभी भी म्लेच्छों की तरह व्यवहार नहीं करते हैं।

Civilized people never behave like the uncivilized.

285. **अज्जो कयावि णो करेज्ज अप्प-पसंसा।**

आर्य कभी भी आत्म प्रशंसा नहीं करे।

Civilized people should never indulge in self-praise.

आलस्य

286. **अलसो सव्व-सुफल-अणाहियारी।**

आलसी सर्व सुफलों का अनधिकारी है।

Lazy cannot claim on good deeds and their outcomes.

287. **आलस्सो हु महाविग्घो अप्प-हिय-पहे।**

आत्म हित के पथ में आलस्य ही महाविघ्न है।

Laziness is the chief obstacle on the way of self

welfare.

288. **सव्वकज्जेसु अजोग्गो अलसो।**

आलसी सभी कार्यों के लिए अयोग्य होता है।

Lazy is ineligible for all works.

289. **अलसो हु णिद्धणो।**

आलसी ही निर्धन है।

A slothful person is always poor.

290. **अलसाणं कहिं जसो बलं धणं च।**

आलसियों के लिए कहाँ यश, बल और धन।

There is no fame, power and money for the lazy.

291. **अलसो ण समत्थो धण-जस-विज्जा-धम्म-रक्खाए।**

आलसी धन, यश, विद्या और धर्म की रक्षा में समर्थ नहीं है।

The lazy can not protect money, fame, skills and religion.

292. **अलसो हु दारिद्द-कारणं।**

आलस्य ही निर्धनता का कारण है।

Laziness is the only cause of poverty.

293. **आलस्सो मित्तरूवे सत्तू।**

आलस्य मित्र के रूप में शत्रु है।

Laziness is the enemy disguised as friend.

294. **आलस्सो दुह-मूलं।**

आलस्य दु:ख का मूल है।

Laziness is the root of sorrow.

295. **अलसाणं सव्व-विज्जा-गुणा विणस्संति।**

आलसियों के सभी विद्या गुण नष्ट हो जाते हैं।

All the skills and virtues of the lazy get destroyed.

296. **दक्खाणं सुहदजीवणं वि आलसाण सया दुहदं।**

दक्षों का सुखदजीवन भी आलसियों के लिए सदा दु:खद ही है।

Even the happy life of a skilled person is painful for a lazy person.

आशा

297. **आसा हु महापासो जीवो बंधदि सव्वदा।**

आशा ही महापाश है जो जीव को सदा बांध के रखती है।

Desire is the heavy noose which always binds the soul.

298. **आसा चिरंजीवी सया।**

आशा सदा चिरंजीवी होती है।

Desire always lives long.

299. **आसाबद्धो हु पराहीणो।**

आशाबद्ध ही पराधीन है।

Only he who is bound by desire is enslaves by others.

300. **पर-आसापास-बद्धो सया दुही।**

दूसरों के द्वारा आशा-पाश बद्ध सदा दु:खी रहता है।

A person attached to others by desire always remains miserable.

301. **को समत्थो आसा-उदहि-तरेदुं?**

आशा सागर से तरने के लिए कौन समर्थ है?

Who is able to cross the sea of desires?

302. **तिव्वासा सत्तिदा।**

तीव्र आशा शक्तिदायिनी होती है।

Strong desire confers power.

303. **आसा सया जोव्वणसीला।**

आशा सदा यौवनशीला होती है।

Desire is always young.

304. **आसा कुव्वदि सगसामिं दासो।**

आशा स्व स्वामी को दास बनाती है।

Desire can enslave even a self-reliant person.

305. **आसा-हीणो सया सुही।**

आशा हीन सदा सुखी रहता है।

He always remains happy who has no desires.

306. **परासावंतो दुही णिच्चं।**

पर की आशा करने वाला हमेशा दु:खी रहता है।

He who desires others' possession, always remains unhappy.

307. **बलिट्ठा धणासा जीविदासा य पाणीसु।**

धनाशा और जीविताशा प्राणियों में बलवती रहती है।

Desire for money and life remains very strong in creatures.

308. **को रायी समत्थो आसं खयिदुं?**

ऐसा कौन रागी है जो आशा को नष्ट करने में समर्थ है?

Which worldly person is able to destroy the desires?

309. **आसाए को रित्तो?**

लोक में आशा से रिक्त कौन है?

Who is free from desires in this world?

आशीर्वाद

310. **गुरु-आसीवायो हु वरो।**

गुरुओं का आशीर्वाद ही वरदान है।

Blessings of spiritual Gurus is a boon.

311. **सव्व-कल्लाणं होज्ज महप्पाणं आसीवायो।**

सभी का कल्याण हो ऐसा महात्माओं का आशीर्वाद है।

Great saints bless for the welfare of all.

आश्रम

312. **आसमो धम्म-साहणं ण दु सज्झो।**

आश्रम धर्म का साधन है साध्य नहीं।

Ashram is the means of religion not its end.

313. **समण-ठाणं आसमो।**

श्रमणों के रहने का स्थान आश्रम है।

Home of ascetics is called Ashram.

314. **अहिंसा-सच्च-णिस्संग-बंभचेरं च अप्पासमो।**

अहिंसा, सत्य, नि:संग (चोरी व परिग्रह रहित) और ब्रह्मचर्य आत्मा का आश्रम है।

Non-violence, truth, asceticism and chastity are the abode of soul.

आसक्त

315. **परासत्तो पराहीणो।**

परपदार्थों में आसक्त ही पराधीन है।

Indulged in alien substances is dependent.

316. **भव-भावासत्तो चुक्कदि पदे पदे।**

संसार के भावों में आसक्त जीव पद-पद पर भूल करता है।

A soul indulged in worldly attachment makes mistakes at every step.

आस्तिक्य

317. **सग-अत्थित्त-बोहो अत्थिक्क-भावो।**

स्व अस्तित्व का बोध आस्तिक्य भाव है।

Knowledge of self-existence is credo.

आहार

318 **अज्जा सागाहारं दु भुंजेज्ज।**

आर्य पुरुषों को शाकाहार ही करना चाहिए।

Noble people should take only vegetarian food.

319 **पागदिगाहारेण विणा को वि जीवो अप्प-संतिं लद्धुं णो समत्थो।**

प्राकृतिक आहार के बिना कोई भी जीव आत्म शान्ति पाने में समर्थ नहीं होता।

No one is able to get peace without natural (vegetarian) meal.

320. **पागदिगाहारो वि ओसहिव्व।**

प्राकृतिक आहार भी औषधि रूप माना जाता है।

Natural food is also considered a medicine.

321. **विणा आहार-सुद्धीए णो चित्तसुद्धी।**

बिना आहारशुद्धि के चित्तशुद्धि नहीं होती।

Without purity of meal, there cannot be purity of mind.

322. **आहार-सुद्धी धम्मंगं।**

आहारशुद्धि धर्म का अंग है।

Purity of meal is a part of religion.

323. **सुद्धाहारो वि तव-कारणं।**

शुद्ध आहार भी तप का कारण है।

Pure meal is also a cause of penance.

324. **णिरामिसभोई दयावरो।**

निरामिषभोजी दयालु होता है।

Only a vegetarian is compassionate.

325. **आहारो वि महोसही।**

आहार भी महौषधि है।

Meal is also medicine.

इच्छा

326. **इच्छा अणंता संसारीणं।**

संसारी प्राणियों की अनन्त इच्छा होती हैं।

Transmigrating souls have infinite desires.

327. **धि इच्छं अंतहीणं।**

अन्तहीन इच्छा को धिक्कार है।

Endless desire is reproachful.

328. **अंतहीणा णिस्सारिच्छा सव्व-दुहकारणं।**

अंतहीन निस्सार इच्छा ही सर्वदु:खों का कारण है।

Only endless and worthless desire is the cause of all pains.

329. **सफला इच्छा पुण्णवंताणं।**

पुण्यवानों की सभी इच्छा सदा ही सफल होती है।

All desires of virtuous people are always fulfilled.

इन्द्रिय

330. **इंदिय-विसयासत्ती हु भव-कारणं।**

इन्द्रिय विषयों में आसक्ति नियम से संसार का कारण है।

Attachment to sensual pleasures is surely the cause of transmigration.

331. **णो इट्ठफलं विणा इंदिय-णिग्गहेण।**

बिना इन्द्रिय निग्रह के कोई भी इच्छित फलों को प्राप्त नहीं करता।

Desired result cannot be attained without control of senses.

332. **इंदियाणि बहिमुहाणि।**

इन्द्रियाँ बहिर्मुखी होती हैं।

Senses are extrovert.

333. **इंदियाणि बहि-अत्थाणि जाणदि णो अंतरंगस्स।**

इन्द्रियाँ बाह्य पदार्थ जानती हैं न कि अंतरंग के।

Senses know exterior substances not the interior ones.

334. **इंदियजयी हु अप्पजयी।**

इन्द्रियजयी ही आत्मजयी है।

Conqueror of senses is the conqueror of soul.

335. **इंदिय-जयेण विणा ण को वि जिणो।**

इन्द्रियजय के बिना कोई भी जिन नहीं हो सकता।

No one is capable of becoming Jina without conquering senses.

336. **इंदिय-असंजमो हु भवदुक्ख-कारणं।**

इन्द्रियों का असंयम ही भव दु:खों का कारण है।

Unrestrained senses are the only cause of pain in the world.

337. **इंदियवसो हु महादुही।**

इंद्रियवशी ही महादु:खी है।।

One who is under the control of his senses always suffers pain.

338. **इंदिय-असंजमो मरणादो दुहंकरो।**

इन्द्रियों का असंयम ही मरण से अधिक दु:खकारी है।

restrained of the senses is more painful than death.

339. **णरय-सग्गा वि इंदियपरिणामो।**

नरक और स्वर्ग भी इन्द्रियों का परिणाम है।

Hell and heaven are also the result of senses.

340. **तवसारो इंदियणिग्गहो।**

इन्द्रियनिग्रह तप का सार है।

Sense-restraint is the gist of penance.

341. **अणिग्गहिय-इंदियाणि अइदुहकारणं।**

अनिग्रही इन्द्रियाँ अतिदु:ख का कारण हैं।

Non-restrained senses are the cause of deep sorrow.

342. **इंदियविक्खेवो बंधणं संजमो मोक्खो य।**

इंद्रिय विक्षेप बंधन है और इन्द्रिय संयम मोक्ष है।

Sense-deflexion or deviation is bondage and selfrestraint is emancipation.

343. **इंदिय-विसय-लोहेण को ण लहदि संकडं?**

इन्द्रिय विषय के लोभ से कौन संकट प्राप्त नहीं करता है?

Who doesn't get into trouble because of the greed of sense enjoyment?

344. **इंदियजयी ठिदपण्णो।**

इन्द्रियजयी स्थितप्रज्ञ है।

Conqueror of senses is immortal.

345. **इंदिय-तिव्ववेयो सज्जणाणं दूहवदि।**

इंद्रियों का तीव्रवेग सज्जनों को दु:ख देता है।

The onrush of sensations gives pain to virtuous people.

346. **जोगि-पाणो इंदियणिग्गहो।**

इन्द्रियनिग्रह योगियों का प्राण है।

Sense-resistance is the life of ascetic.

347. **सव्विंदिय-णिग्गाही विस्सरायो।**

सर्वइन्द्रिय निग्रही विश्व का राजा है।

One, whose all senses are restrained, is the king of the universe.

348. **एगिंदिय-णिग्गहो वि दुस्सहो दीहसंसारीणं।**

दीर्घ संसारियों के लिए एक इंद्रिय का निग्रह भी दुस्सह है।

For long-aged worldly being even single sense restraint is a very difficult.

349. **दुद्धर-तवस्सी वि ण विस्ससेज्ज इंदियविसयेसु।**

दुर्द्धरतपस्वी को भी इंद्रिय विषयों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

Even a strong ascetic shouldn't rely on sense-enjoyments.

350. **इंदियणिग्गहो तव-मूलं।**

इन्द्रियनिग्रह तप का मूल है।

Sense-resistance is the root of penance.

इष्टवस्तु

351. **इट्ठवत्थुं सव्व-सुहंकरं।**

इष्टवस्तु सबके लिए सुखकारी है।

Desirable things are the cause of pleasure for everyone.

352. **इट्ठवत्थु-विजोगेणं होदि दुहं सव्वदा।**

इष्ट वस्तु के वियोग से सदैव दु:ख होता है।

Everyone suffers pain from seperation of desirable things.

353. **इट्ठवत्थुणा कस्स चित्तं ण तिप्पदि?**

इष्ट वस्तु से किसका चित्त संतुष्ट नहीं होता?

Whose heart doesn't get satisfied from desirable thing?

354. **इट्ठवत्थुं समीवे सुही।**

जो इष्टवस्तु के समीप होता है वह सुखी है।

A person experiences bliss when he is close to his desirable thing.

355. **चिरकंखिद-वत्थुणा को ण णंददि?**

चिरकांक्षित वस्तु के द्वारा कौन आनन्द को प्राप्त नहीं होता?

Who doesn't get happy after attanining long desired thing? Means everyone becomes happy.

ईर्ष्या

356. **धम्मी मा करेज्ज इस्सं।**

धर्मात्माओं को ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए।

Pious people shouldn't feel envious.

357. **इस्साए विणस्संति सव्वगुणा।**

ईर्ष्या भाव से सब गुणों का नाश होता है।

All virtues get destroyed by envy.

358. **णिसेवदु ईसं दट्ठिय इस्सं।**

ईर्ष्या को छोड़कर अपने ईश्वर को भजो।

Leave envy and worship god.

359. **इस्सा कलह-कारणं।**

ईर्ष्या कलह का कारण है।

Envy is the cause of strife.

360. **इस्सा बुद्धि-भक्खगा।**

ईर्ष्या बुद्धि का भक्षण करने वाली है।

Envy devours the mind.

361. **इस्सा णासदि पुण्णं।**

ईर्ष्या पुण्य को क्षीण करती है।

Envy diminishes merits.

362. **इस्साए अहोगदी।**

ईर्ष्या से अधोगति प्राप्त होती है।

Envy takes us to a lower place.

ईश्वर

363. **ईसरो सस्सदो सिद्धो।**

ईश्वर शाश्वत सिद्ध है।

God is eternal.

364. **कया वि णो जम्मदि ईसरो।**

ईश्वर कभी भी उत्पन्न नहीं होता।

God never arises (born).

365. **जम्म-मरण-रहिदो सुद्धप्पा ईसरो।**

जन्म मरण रहित शुद्धात्मा ईश्वर है।

A pure soul free from birth and death, is god.

366. **ईस-णाणं हु लोयम्मि।**

ईश्वर का ज्ञान सर्वलोक में रहता है।

Knowledge of God exists in the whole world.

ईहा

367. **पदत्थेसु विसेस-जिण्णासा ईहा।**

पदार्थों को विशेष जानने की इच्छा ईहा है।

Desire to especially know the things is speculation.

368. **ईहा भववड्ढगा।**

ईहा भव को बढ़ाने वाली है।

Speculation increases transmigration.

369. **ईहा अवायपेरगा।**

ईहा अवाय की प्रेरक है।

Speculation is the inspiration of perceptual

judgement.

370. **ईहाए णाणा-विअप्पा।**

ईहा से नाना विकल्प होते हैं।

There are many options in speculation.

उच्चपद

371. **जोग्ग-सिक्खाजुत्ता सक्कार-विहीणा वि उच्चपदे आसीणा।**

योग्य शिक्षायुक्त संस्कार विहीन लोग भी उच्च पद पर आसीन हैं।

People who are able and educated but without values seem to hold high posts.

372. **पाय उच्चपदं संकणीयं।**

प्रायश: उच्चपद शंकनीय होता है।

High post is filled with suspicion.

उत्सव

373. **धम्मुच्छवो सम्मत्त-वड्ढगो।**

धर्मोत्सव सम्यक्त्व के संवर्धक होते हैं।

Religious festivals increase right faith.

374. **उच्छवो पीदि-वड्ढगो।**

उत्सव प्रीतिवर्धक होते हैं।

Festivals are instrumental in increasing affection and harmony.

375. **उच्छव-पिया हु संसारी।**

उत्सवप्रिय ही संसारी है।

One who is a festival-lover is a worldly soul.

376. **उच्छवा हु देससंति-समिद्धि-कारणं।**

उत्सव ही देश की शांति और समृद्धि का कारण है।

Religious festivals are the only cause of peace

& prosperity of a country.

377. **णिच्छलपेम्मो हु उच्छव-हेदू णो धणं।**

निश्छल प्रेम ही उत्सव का हेतु है न कि धन।

Innocent love, not money is the cause of festivals.

378. **उच्छवा उच्छाह-वड्ढगा।**

उत्सव उत्साहवर्धक होते हैं।

Festivals increase enthusiasm.

उत्साह

379. **सरिदाए उच्छलिद-जलवेगोव्व चित्तम्मि उदीयमाणो सुहभावो उच्छाहो।**

नदी के उमड़ते प्रवाह की तरह चित्त में उठने वाले शुभभाव का नाम उत्साह है।

Good (holy) feelings which move in the heart like the overflow river is enthusiasm.

380 **उच्छाहो सवरविगास-कारणं।**

उत्साह स्वपर विकास में कारण है।

Zeal is the cause of growth of self and others.

381. **उच्छाहो वि मित्तं व सहाई।**

उत्साह भी मित्र की तरह सहायक है।

Enthusiasm is also a helper like a friend.

382. **उच्छाहो वि कज्जत्थं पच्चग्ग-कारणं।**

उत्साह भी कार्य करने के लिए प्रधान कारण है।

Zeal is also the chief cause of doing work.

383. **उच्छाहेण कज्जाणि सुलद्धाणि।**

उत्साह से सभी कार्य सुलभ होते हैं।

All works become easy because of enthusiasm.

384. **उच्छाहवंताणं ण किं वि दुल्लहं लोए।**

उत्साहवानों के लिए लोक में कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

Nothing is difficult to obtain for enthusiasts in this world.

385. **सगकज्जेसु उच्छाहवंतो हु पर-पेरगो।**

अपने कार्यों में उत्साहवान् ही दूसरों के लिए प्रेरक होता है।

One who is enthusiastic in his own works, becomes a motivator for others.

386. **उच्छाहो हु विजयसिरि-कित्ति-विज्जादि-कारणं।**

उत्साह ही विजयश्री, कीर्ति, विद्या आदि गुणों का कारण है।

Enthusiasm is the cause of knowledge, victory, fame and other such virtues.

387. **विणा उच्छाहेण पुरिसत्थो पंगू।**

बिना उत्साह के पुरुषार्थ पंगु है।

Effort is lame without enthusiasm.

388. **रयणत्तयाहारो हु सगकल्लाणुच्छाहो।**

स्वकल्याण का उत्साह ही रत्नत्रय का आधार है।

The enthusiasm for self welfare is the foundation of three jewels (right faith, right knowledge and right conduct).

389. **उच्छाहवंतो हु समत्थो सत्तुं जिणिदुं।**

उत्साही ही शत्रु को जीतने के लिए समर्थ है।

Only enthusiastic is able to win over enemies.

390. **सव्वयालम्मि उच्छाहवंतो महापुरिसो।**

सभी काल में उत्साहवान् महापुरुष है।

Only the enthusiastic at all times is great man.

उदार

391. **पसरंति चंदकलव्व उरालस्स करुणा।**

जैसे चन्द्रमा की कला सहज ही फैलती है उसी प्रकार उदारपुरुष की करुणा भी।

Just as moonlight spreads naturally so does the compassion of a generous person.

392. **वयणे णो उरालो सो कत्थ?**

जो वचन बोलने में उदार नहीं है वह किस क्षेत्र में उदार हो सकता है?

How can one be generous in any field if he is not magnanimous in speech?

393. **उरालोव्व बहुजलधारगो मेहो कया वि ण गज्जदि।**

उदार पुरुष के समान बहुजल धारक मेघ कभी भी गरजता नहीं है।

Like a noble person, rainy clouds never thunder.

394. **उरालचरियाणं ण को वि सवरो।**

उदार चरित्र का कोई भी अपना या पराया नहीं है।

A noble person has neither friends nor enemies.

395. **उरालचरियो हु णायप्पियो।**

उदारचरित्र ही न्यायप्रिय है।

Only a noble person is a lover of justice.

396. **करुणा उरालत्त-कारणं।**

उदारता का कारण करुणा है।

The reason of generosity is compassion.

397. **उरालपुरिसस्स सव्वणिही सव्वहिदत्थं।**

उदार पुरुष की सर्वनिधियाँ सर्वहित के लिए होती हैं।

All the wealth of a noble person is for welfare of everyone.

398. **उरालपुरिसा परदुक्खं वि सगोव्व मण्णे।**

उदार पुरुष पर दु:ख को भी अपना मानता है।

A noble man considers others' pain as his own.

उद्देश्य

399. **मेत्तं वक्खाणीय-वत्थु-कहणं उद्देसो।**

विवेचनीय वस्तुमात्र के कथन को उद्देश्य कहते हैं।

Narration of the thing only which is able to treat is called purpose.

400. **उद्देसहीणो पवट्टगो मूढो।**

जो उद्देश्यहीन प्रवर्तन करता है वह मूर्ख है।

One who acts aimlessly is foolish.

401. **उद्देसहीण-कज्जं णिप्फलं।**

उद्देश्यहीन कार्य निष्फल है।

Aimless work is fruitless.

उद्यम/उद्यमहीन

402. **उज्जमहीणो पायसो अप्पियो।**

प्रायश: उद्यमहीन अप्रिय होता है।

Usually a shirker is not admired.

403. **णो संभवो आजीविया विणा कज्जेण।**

बिना कार्य के आजीविका संभव नहीं है।

Livelihood is not possible without work.

404. **उज्जमहीणो सया दुही।**

उद्यमहीन सदा दु:खी रहता है।

A shirker always remains unhappy.

405. **करजुत्ता सफला णिच्चं।**

हाथयुक्त (उद्यमयुक्त) हमेशा सफल होते हैं।

An energetic person always gets success.

406. **पाणिलाहादो णो को वि लाहो।**

हाथ के मिलने के लाभ से अधिक और कोई लाभ नहीं है।

No profit is better than the profit gained by hard work.

407. **उज्जुत्तस्स संसारो वि किंचि णो।**

उद्यमशील का संसार भी कुछ नहीं है।

Transmigration is nothing for endeavoured.

408. **उज्जुत्ता ण कयावि उव्विग्गा सुकज्जेहिं।**

उद्यमशील कभी भी अच्छे कार्यों से उद्विग्न नहीं होते।

An energetic person never get perturbed while doing good works.

409. **इंदो वि उज्जुत्तस्स बंधू।**

उद्यमशील का इन्द्र भी बंधु होता है।

Indra is also a friend of an energetic person.

410. **सव्वमित्ताणि उज्जुत्ताणं।**

उद्यमशीलों के सभी मित्र होते हैं।

All are friends of an energetic person.

411. **सवर-सत्तू उज्जमहीणा।**

उद्यमहीन स्वपर का शत्रु है।

A shirker is an enemy of self and others.

412. **उज्जमेण सिज्झदि कज्जं।**

उद्यम से कार्य सिद्ध होता है।

Goal is achieved by hard work.

413. **उज्जमो समिद्धि-कारणं।**

उद्यम समृद्धि का कारण है।

Hard work is the cause of prosperity.

414. **देससंती उज्जमेण।**

उद्यम से देश में शांति रहती है।

Peace exists in the country by hard work.

415. **उज्जमो भग्ग-बंभो।**

उद्यम भाग्य का विधाता है।

Endeavour is the creator of fortune.

416. **देसुण्णदी उज्जुत्तेहिं।**

उद्यमशीलों द्वारा ही देश की उन्नति होती है।

A country progresses only by its energetic people.

417. **सम्मुज्जमेण णस्संति दुक्खाणि।**

सम्यक् उद्यम से दु:ख नष्ट होते हैं।

Pains get annihilated by right effort (efforts for getting liberation).

418. **सिवणे वि णो दरिद्दा उज्जुत्ता।**

उद्यमशील स्वप्न में भी दरिद्र नहीं होते।

Energetic people never get poor even in dreams.

419. **उज्जुत्ताणं णो कयावि जीविया-भयं।**

उद्यमशीलों को कभी भी आजीविका का भय नहीं होता।

Energetic people never fear for livelihood.

420. **उज्जमो धणागरिसगो।**

उद्यम ही धन की चुम्बक है।

Hard work is the money attracting magnet.

421. **उज्जुत्ताण छायव्व लच्छी।**

लक्ष्मी उद्यमशीलों के लिए छाया की तरह है।

Wealth is like a shade for the energetic people.

422. **उज्जमेण विणा णिहि-संति-कीत्ति-विजयसिरी णो जहा खीरं विणा सप्पी।**

जैसे बिना दूध के घी नहीं, वैसे ही उद्यम के बिना निधि, शांति, कीर्ति और विजयश्री नहीं है।

Just as there is ghee without milk similarly there is no wealth, peace, fame and victory without effort.

423. **णो दुही उज्जुत्तो।**

उद्यमी दु:खी नहीं होता।

An energetic person is never sad.

424. **सुकज्जेण लहदि लक्खं।**

सुकार्य करने से लक्ष्य प्राप्त होता है।

Aim is achieved by doing good work.

425. **उज्जमहीणा जवंति भवियव्वदा भविस्सदि।**

उद्यमहीन जपते हैं कि जो होने योग्य है वही होगा।

A shirker always chants that what has to happen will always happen.

426. **उज्जमहीणा दुहं सहंति णो सुहस्स कुव्वंति कज्जं।**

उद्यमहीन दु:ख सहन करते हैं सुख के लिए कार्य नहीं करते।

A shirker endures pain, but never works for happiness.

427. **उज्जुत्ताणं देवा वि मित्ताणि।**

उद्यमशीलों के देव भी मित्र होते हैं।

The gods also befriend energetic people.

428. **सुभग्गा उज्जुत्ता।**

उद्यमशील सौभाग्यशाली माने जाते हैं।

Energetic people are considered fortunate.

429. **उज्जमहीणस्स णरजम्म-णिप्फलं।**

उद्यमहीन का नरजन्म भी निष्फल है।

Human life of effortless is also useless.

उपकार

430. **अकारण-सवर-हिदेसि-पवित्ती उवयारो।**

अकारण स्वपर हितैषी प्रवृत्ति उपकार है।

Tendency of selfless benevolence for self and others is beneficence.

431. **महापुरिसा लोगिग-सुहकंखाए ण उवयरंति।**

महापुरुष लौकिक सुख की आकांक्षा से उपकार नहीं करते।

Great men don't show kindness with the desire of worldly pleasure.

432. **उवयारो वि लोगे महाधम्मो।**

उपकार भी लोक में महाधर्म माना जाता है।

Beneficence is also considered to be the highest form of religion in the world.

433. **लोए जीवा परोप्परे उवयरंति।**

लोक में सर्वजीव परस्पर उपकार करते हैं।

All creatures reciprocate kindness in the world.

434. **पाणरक्खगुवयारस्स ण पडिउवयारो।**

प्राण रक्षा करने वाले उपकार का कोई प्रत्युपकार नहीं है।

Beneficence shown in protecting life is non returnable by any other favour.

435. **सगेण सह परा उवयरेज्ज।**

स्व के साथ पर का उपकार करना चाहिए।

Kindness should be shown to others as well as one's own self.

436. **णिस्सत्थुवयारो पुण्ण-वड्ढगो।**

नि:स्वार्थ उपकार पुण्यवर्धक होता है।

Selfless beneficence multiplies merits.

437. **कवडेण सह उवयारो वि पावं।**

कपट के साथ उपकार भी पाप है।

To show kindness to the deceitful is also a sin.

उपदेश

438. **अप्प-हिदंकर-उवदेसो हिदुवदेसो।**

आत्मा का हित करने वाला उपदेश हितोपदेश है।

The sermon which does good to the soul is beneficent.

439. **आसण्णविणट्ठस्स उवदेसो णिरट्ठो।**

जिसका विनाशकाल निकट है उसके लिए उपदेश निरर्थक है।

Sermons are useless for him whose downfall is near.

440. **उवदेसो मूढाणं सगापत्ति-कारणं।**

मूर्खों के लिए उपदेश स्वयं के लिए आपत्ति का कारण है।

Preachings for foolish is the cause of self-difficulty.

441. **विवेगहीणा णो उवदिसेज्ज।**

विवेक हीनों को उपदेश नहीं देना चाहिए।

Unwise people should not be preached.

442. **विणा सद्धाए उवदेसस्स णो मुल्लं।**
श्रद्धा के बिना उपदेश का मूल्य नहीं है।
Without faith there is no value of preachings.

उपयोग

443. **जोग-समीवे सो उवजोगो अहवा चेयणाणुविहाइ-परिणामुवजोगो।**
जो योग के निकट रहता है वह उपयोग है अथवा चेतना का अनुविधायी परिणाम उपयोग है।
One who stays near consciousness is active consciousness.

उपवास

444. **उववासो वि उवासणा।**
उपवास भी उपासना है।
Fasting is also worship.

445. **उववासो आरोग्ग-कारणं।**
उपवास आरोग्य का कारण है।
Fasting is the cause of good health.

446. **उववासेण वि खयदि पावकम्मं।**
उपवास से भी पापकर्म क्षीण होता है।
The karmas of sin are also diminished by fasting.

447. **उववासेण सिज्झदि मणोरहा।**
उपवास से मनोरथ सिद्ध होते हैं।
Heart-felt wishes are fulfilled by fasting.

उपशम

448. **कसाय-समणं उवसमो।**
कषायों का शमन उपशम है।
Mollification of passions is suppression.

449. **कसायुवसमेण विणा णो उवसमो।**
कषाय के उपशम के बिना उपशम भाव नहीं मिलता।
Subsidence is not found without controlling passions.

450. **कसायुवसमगो समणो।**
कषायों का उपशमक श्रमण कहलाता है।
One who controls passions is called an ascetic.

451. **कसाय-खीणव्व ठिदी उवसमणा।**
कषायों की क्षीणवत् स्थिति उपशमणा है।
When the passions become lean, it is called subsidence.

उपाय

452. **उवायेण खयंति सत्तू।**
उपाय से शत्रु नष्ट होते हैं।
Enemies get destroyed by skill.

453. **जुत्ती उवायो य सत्तीए सेट्ठा।**
युक्ति और उपाय शक्ति से श्रेष्ठ है।
Skill and solution are better than use of power.

454. **उवायो उण्णदि-कारणं।**
उपाय उन्नति का कारण है।
Resolution is the cause of development.

455. **उवायेण सिग्घं लहदि सफलत्तं।**
उपाय से शीघ्र सफलता मिलती है।
Success is achieved by resolution.

उपेक्षा

456. **उवेक्खा इत्थीणं पुरिसस्स अइदुक्ख-कारणं।**
स्त्रियों की उपेक्षा पुरुषों के लिए बहुत दु:ख का कारण है।
Undermining of women is the cause of extreme sorrow for men.

ऋजु

457. **रिऊ लहंति रिउगदिं।**

सरल लोग ऋजुगति (सिद्ध) प्राप्त करते हैं।

Simple people get liberation.

458. **अज्जवया हु रसवदी।**

ऋजुता ही रसवती है।

Simplicity is elegant.

459. **अज्जवं हु सग्गलदा।**

सरलता ही स्वर्ग की लता है।

Only simplicity is the climber to heaven.

ऋषि

460. **रिसीणं सिक्खुवदेस-सक्कारेहिं विणा कुत्थ विस्स-संती?**

ऋषियों की शिक्षा, उपदेश और संस्कार बिना विश्व शान्ति कहाँ संभव है?

How can world peace be possible without the education, preachings and pious qualities of the ascetics?

461. **धम्म-मुत्ती रिसी।**

ऋषि ही धर्म मूर्ति हैं।

An ascetic is the idol of religion.

462. **रिद्धि-सिद्धि-पुंजो रिसी।**

रिद्धि-सिद्धि का पुंज ऋषि है।

An ascetic is the accumulation of super natural powers and fulfillment of tasks.

463. **कम्मक्खयग्गिव्व रिसी।**

कर्मक्षय करने के लिए ऋषि अग्नि के समान है।

An ascetic is like fire for destruction of karmas.

464. **विस्स-णायगो रिसी।**

ऋषि ही विश्व का नायक है।

An ascetic is a leader of the universe.

465. **रिसी हु सवरणाणि-दंसगो।**

ऋषि ही स्वपर का ज्ञानी और दर्शक है।

An ascetic is a spectator and a knower of self & others.

466. **रिसी हु चेयणाए गुणुप्पायगो किसीवलो।**

ऋषि ही चेतना का गुणोत्पादक कृषक है।

Only an ascetic is the virtues productive farmer of conscience.

467. **एगल्लो णो समत्थो कयावि महाजुद्धे।**

एकाकी कभी भी महायुद्ध करने में समर्थ नहीं होता।

A loner can never fight big war.

औषधि

468. **रोयं ण णासदि णोसही सा।**

जो रोग का नाश नहीं करती वह औषधि नहीं है।

That which doesn't destroy disease is not a medicine.

469. **जिणवयणं परमोसही जम्म-मरण-विणासगा।**

जिनवचन जन्म और मरण का विनाश करने वाली परमौषधि है।

Words of jina which destroy that cycle of birth & death, are the greatest medicine.

470. **विसो हु विसोसही।**

जहर की औषधि जहर ही होती है।

Poison is the medicine of poison.

471. **रुक्खाणं मूलं पत्ताणि पुप्फादीणि वि अइसेट्ठा ओसही।**

वृक्षों की जड़, पत्ते, फूल आदि भी अतिश्रेष्ठ औषधि मानी जाती है।

Root, leaves and flowers etc. of the tree are considered to be the best medicine.

472. **रुक्खंगं विणा ण को वि ओसही।**

वृक्ष के अंगों के बिना कोई भी औषधि निष्पन्न होना संभव नहीं है।

No medicine can be produced without the parts of the tree.

473. **पागदिगाहारो वि ओसहिव्व।**

प्राकृतिक आहार भी औषधि रूप है।

Natural (vegetarian) food is also considered medicinal.

कदाचार

474. **कयायारी अज्झेऊ वि मलिणो।**

कदाचारी अध्ययनशील होते हुए भी मलिन है।

An unrighteous person is wicked even if he is studious.

475. **दुट्ठायरो वि कयायारो।**

दुष्टों का आदर भी कदाचार है।

Honouring the wicked person is also bad conduct.

कन्या

476. **कण्णा-जणगो संवेयणसीलो।**

कन्या का जनक संवेदनशील होता है।

The father of a girl is warm hearted.

477. **भारदीय-सक्किदीए मंगला कण्णा।**

भारतीय संस्कृति में कन्या मंगल होती है।

In Indian culture, a girl is considered auspicious.

478. **उहयकुल-सोहा कण्णा।**

कन्या दोनों कुलों की शोभा है।

A girl is the beauty of both the families.

479. **कण्णासुण्णं गिहं हु पेम्मसुण्णं।**

कन्यारहित गृह ही प्रेम शून्य है।

Only a home without a girl is without love.

480. **विणा कण्णाए जणगो सया दुहं अणुहवदि।**

कन्या के बिना पिता सदा दु:ख का अनुभव करता है।

A father always feels pain without his daughter.

481. **पुप्फेण विणा वाडीगा तहा कण्णाए विणा गिहं।**

जैसे पुष्प के बिना वाटिका होती है वैसे कन्या के बिना घर।

Just as there is garden without flowers similarly home without a girl.

482. **कण्णा दाएज्ज सुजोग्गं वरं हु।**

कन्या सुयोग्य वर को ही देनी चाहिए।

A girl should only be given to an able bridegroom.

483. **पस्सेज्ज णवगुणा कण्णा-वरे।**

कन्या के लिए वर में नौ गुण देखने चाहिए।

Nine virtues should be seen in the bridegroom before giving away the girl.

484. **सुजोग्ग-कण्णाए सुजोग्गो वरो हु उचिदो।**

सुयोग्य कन्या के लिए सुयोग्य वर ही उचित है।

An able bridegroom is appropriate for an able girl.

485. **जहा कमलेण विणा तडागं ण सोहदे तहा कण्णाए विणा उच्छवो।**

जैसे कमल के बिना सरोवर नहीं शोभता है वैसे ही कन्या के बिना उत्सव।

Just as pond doesn't look beautiful without lotus similarly there is no prosperity in festivals without a girl.

कपटी

486. **सया दुही अणुज्जुयो।**

कपटी सदा दु:खी होता है।

A deceitful person is always sad.

487. **विउलणिहिं लहिय वि णो थिंपदि अणुज्जुयो।**

कपटी को यदि लोक की विपुल निधि भी मिल जाए तब भी वह संतुष्ट नहीं होता।

Deceitful is never contented even if he gets entire wealth of the world.

488. **अणुज्जुय-जाजगं सज्जणा उज्झेज्झ।**

सज्जन द्वारा कपटी याचक को त्याग देना चाहिए।

A deceitful petitioner should be given up by a virtuous person.

489. **अणुज्जुयणं मित्ती ण ठादि दीहकालादु।**

कपटी की मित्रता दीर्घकाल तक नहीं ठहरती।

Friendship of deceitful person cannot remain for a long time.

490. **णो जाणदि अणुज्जुयो सच्चमूलं।**

कपटीजन सत्य के मूल को नहीं जानते।

Deceitful people do not know the value of truth.

करुणा

491. **करुणाहीणा कट्ठथंभोव्व।**

करुणाहीन काष्ठ के स्तम्भ के समान है।

A merciless person is like a pillar of wood.

492. **करुणाहीणा महापुरिसा असंभवा।**

करुणाहीन महापुरुष असंभव हैं।

A merciless man can never be a great man.

493. **करुणासीलो विदियो भयवो।**

करुणाशील दूसरा भगवान् है।

A compassionate man is like another God.

494. **अइकरुणासीलाणं ण किं वि पियं।**

अतिकरुणाशीलों के लिए कोई भी वस्तु प्रिय नहीं होती।

Nothing is too dear to the compassionate people.

495. **करुणावंता संवेयणसीला।**

करुणावान् संवेदनशील होते हैं।

Compassionate men are sensitive.

कर्त्तव्य

496. **सवर-हिद-कज्जं कत्तव्वं।**

स्व-पर हितकर कार्य कर्तव्य है।

Benevolent work for self and others is one's duty.

497. **सुक्कमेहोव्व अदि गज्जंति कत्तव्वहीणा।**

कर्त्तव्य हीण मनुष्य शुष्क मेघ के समान अति गरजते हैं।

As dry clouds thunder similarly aimless people speak a lot.

498. **सव्वकम्मेसु पहाण-कत्तव्वं।**

सभी कार्यों में प्रधान कर्तव्य है।

Duty is chiefest of all works.

499. **कत्तव्वसीला हु महापुरिसा ण दु वत्ता मेत्तं।**

कर्तव्यशील महापुरुष होता है न कि मात्र वक्ता।

A man of duty is not only an orator, but a great man.

500. **विणा कम्मेण को लहदि कत्तव्वसुहं?**

बिना कर्म के कर्त्तव्य का सुख कौन प्राप्त करता है?

Without doing work, who can get the happiness of duty?

कर्त्ता

501. **जो करेदि सो खु भोत्तू।**

जो करता है वही भोक्ता है।

A person who is the doer is also the receiver or enjoyer.

502. **करेदि सो कत्तू।**

जो कार्य करता है वह कर्त्ता है।

A person who does work is the doer.

503. **पर-कत्तु-भावो खु दुक्ख-हेदू।**

पर का कर्ता भाव नियम से दु:ख का हेतु है।

Feeling of being a doer for others is surely the cause of grief.

504. **कत्तू भोत्तू णो भिण्णा।**

कर्त्ता और भोक्ता भिन्न नहीं है।

Doer and receiver are not different.

कर्म

505. **जीवाणं भवभमण-मूल-कारणं कम्माणि।**

जीवों के संसार भ्रमण का मूलकारण कर्म हैं।

Karma is the basic cause of transmigration of the worldly souls.

506. **अप्प-बंधण-णामं कम्मं।**

आत्मा के बंधन का नाम कर्म है।

Karma is bondage of soul.

507. **सव्वा-कम्मक्खयेण सिद्धगदी।**

सर्व आयु कर्म के क्षय होने से सिद्ध गति की प्राप्ति होती है।

Liberation is attained after destruction of all age determining karmas.

508. **अवस्समेव भुंजेज्ज किदं कम्मं सुहासुहं।**

कृत शुभ-अशुभ कर्म अवश्य ही भोगना पड़ता है।

One has to endure good or bad karmas done by him.

509. **विचित्तो हु कम्म-पहावो।**

कर्मों का प्रभाव विचित्र ही है।

Effect of karma is peculiar.

510. **जीवाणं भव-कारणं कम्मं।**

जीवों के भव (संसार) का कारण कर्म है।

The cause of transmigration of a soul is karma.

511. **विणा कम्मं णो भव-भमणं।**

बिना कर्म के भवभ्रमण असंभव होता है।

Transmigration is impossible without karma.

512. **अचिंता कम्मसत्ती।**

कर्म की शक्ति अचिन्त्य है।

Power of karma is inconceivable.

513. **सव्व-बलेसु कम्मबलं पहाणं।**

सब बलों में कर्मबल प्रधान है।

Power of karma is greatest in all powers.

514. **को चिंतदि कम्म-फलाणि?**

कर्म के फलों के बारे में कौन सोचता है?

Who thinks about the result of karmas?

515. **कम्म-भेयेण भेया खलु संसारीणं।**

कर्म के भेदों के अनुसार ही संसारी जीवों के भेद हैं।

Worldly souls are divided according to the types of karmas.

516. **तिव्वपाव-फलं पुण्ण-कम्म-कारणं वि।**

तीव्र पाप का फल पुण्यकर्म का भी कारण है।

Fruition of strong sins is also a cause of good deeds.

517. **संसारी सगकम्मेहि वट्टंते।**

संसार के जीव स्वकर्मवशात् वर्तन करते हैं।

Living beings transmigrate according to their karmas.

518. **सव्वजीवा स-किदकम्मफलं भुंजंते।**

सभी जीव स्वकृतकर्म का फल भोगते हैं।

All souls bear the fruits of their own karmas.

519. **कम्मेहिं णच्चंते जीवा लोयरंगे।**

जीव कर्म द्वारा लोक के रंगमंच पर नाचते हैं।

Souls dance on the stage of the world because of their karmas.

520. **णियकम्माणि सव्वदा समभावेण सोढव्वाणि।**

निजकर्मों को हमेशा समभाव से सहना चाहिए।

One should always endure his own karmas with

equanimity.

521. **णियमेण फलंते पुव्वकिदकम्माणि जोग्गकालागदे।**

यथायोग्य काल के आने पर नियम से पूर्वकृत कर्म फल देते हैं।

One always receive the fruit of karmas done formely when time comes.

522. **जह कुणदि तह भुंजदि।**

जो जैसा करता है वह वैसा भोगता है।

As you sow, so shall you reap.

523. **कम्म-लीला विचित्ता हु लोगे।**

लोक में कर्मों की लीला विचित्र है।

Karmas play a strange role in the world.

524. **वट्टमाण-जीवस्स परिणामो अणागयस्स कम्मफल-बीजं।**

वर्तमान काल के जीव के परिणाम भविष्य के लिए कर्मफल का बीज है।

Present feeling of the soul is the seed for the fruition of karmas in future.

525. **कम्मदिट्ठी अदिकूरा।**

कर्म की दृष्टि अतिक्रूर है।

Karma has a very malignant glance.

526. **पुव्वकम्मेहि जीवो जम्मदे।**

संसार में जीव पूर्वकर्म के अनुसार ही जन्म लेता है।

A soul takes birth according to his previous karmas.

527. **राय-दोस-भावेहिं कम्मबंधणं।**

कर्मों का बंध रागद्वेषमय भावों से होता है।

Karmas get bound with the fellings or thoughts of love and malice.

528. **जोगत्तय-पवित्तीए कम्मबंधो।**

योगत्रय की प्रवृत्ति से कर्मों का बंध होता है।

Karmas are bound with the tendency of three yogas (mind, body & speech).

529. **इन्दो वि ण सक्को कम्म-परिवट्टणे।**

इन्द्र भी कर्मों को अन्यथा करने में समर्थ नहीं है।

Indra is also not able to change karmas.

530. **णामकम्मे णट्ठे जीवो हु णिक्कलो।**

नामकर्म के नष्ट होने पर जीव निष्कल (शरीर रहित) हो जाता है।

When the physique making karmas get destroyed, the soul becomes bodyless.

531. **कम्मणुकूला हु लोगपवित्ती।**

कर्मानुसार ही लोगों की प्रवृत्ति होती है।

Activities of people are according to karmas.

532. **सया कम्मेहिं जणा लहंते रिद्धिं।**

मनुष्य सदैव कर्मों द्वारा ऋद्धि को प्राप्त करता है।

Only through karmas man is able to attain Riddhi.

533. **अहो कम्मस्स वक्क-गदी।**

अहो! कर्म की वक्र गति।

Oh! the motion of karma is curvilinear.

534. **कम्माणि विचित्ताणि जत्थ कुलेगुप्पण्णा वि भिण्णा।**

कर्म निश्चित ही विचित्र हैं जहाँ एक कुल में उत्पन्न लोग भिन्न-भिन्न होते हैं।

Karmas are surely strange where people born in one family are different.

535. **वट्टमाणे कम्म-किड्डुं जाणेदुं ण समत्थो को वि।**

वर्तमान में कर्मों की सम्पूर्ण क्रीड़ा जानने में कोई भी समर्थ नहीं है।

In the present time, no one can know whole play of karmas.

536. **सिद्धी होदि णिक्कंतस्स णो कत्तव्वहीणस्स।**

कर्म से निष्क्रान्त की सिद्धि होती है कर्त्तव्यविहीन की नहीं।

A person who leaves all worldly attachment gets liberation but not the slothful person.

537. **बुद्धीए किद-कम्माणि सेट्ठाणि।**

बुद्धि से किये गये कर्म श्रेष्ठ होते हैं।

Works done by intellect are best.

538. **सुहासुहकम्माणि फलत्थं कालमवेक्खंति।**

शुभ और अशुभकर्म फल के लिए काल की अपेक्षा रखते हैं।

Good and bad karmas give fruit according to time.

539. **जहा करेदि कम्मं तहा होदि माणवो।**

जैसा कर्म करता है वैसा मानव होता है।

As a man does, he becomes like that.

540. **बीयेण विणा किंचि वि णो जायदे।**

बीज के बिना कुछ भी उत्पन्न नहीं होता।

Nothing is produced without seeds.

541. **पसत्थकम्माणुट्ठाणं सया सुहंकरं।**

प्रशस्त कर्म का अनुष्ठान सदा सुखप्रद होता है।

Undertaking of auspicious karmas is always joyful.

542. **अहंकारजुदं कम्मं णिप्फलं।**

अहंकार से युक्त कर्म निष्फल या अनर्थकारी माना जाता है।

Work done in arrogance is considered useless or harmful.

543. **विदू वि णो जाणंति सव्वकम्माकम्माणि।**

सम्पूर्ण कर्म और अकर्म विद्वज्जन भी नहीं जानते।

Even the learned don't know about all actions & inactions.

544. **पयडीए अणुऊल-कम्मं सिज्झदि।**

प्रकृति के अनुकूल किया गया कर्म नियम से सिद्ध होता है।

Work done conformable to nature accomplishes surely.

545. **जीवस्स णियकम्मं हु सत्तू मित्तं वा।**

जीव का निजकर्म ही शत्रु या मित्र होता है।

Karmas done by the soul is its friend or enemy.

546. **अलंघणीया कम्म-गदी।**

कर्मों की गति अलंघनीय है।

Motion of karma is unsurpassable.

547. **सव्वजोगेसुं कम्म-जोगं विसिट्ठं।**

सभी योगों में कर्मयोग विशिष्ट है।

Karma yoga is distinctive in all yogas.

548. **कम्मेहिं णरा गुरू लहू वा।**

कर्मों से मनुष्य बड़े या छोटे होते हैं।

Man is considered great or small by his karmas.

549. **कम्मेण पण्णा फुट्टदि ण अकम्मेण।**

कर्म से प्रज्ञा स्फुटित होती है न कि अकर्म से।

Knowledge becomes evident by action not by

inaction.

550. **जीवं अणुधावदि कम्मफलं।**

कर्म का फल जीव के पीछे भागता है।

Fruition of karma chases the worldly soul.

551. **भवसुह-दुहाण कारणं एकमेत्तं कम्मं।**

भव के सुख और दु:ख का कारण एकमात्र कर्म है।

Karma is the sole cause of worldly pleasure and pain.

552. **अणाइकालेण जीवा कम्म-बंधणेहिं बद्धा।**

अनादिकाल से सभी जीव कर्मों के बंधन से बद्ध हैं।

All worldly souls are in the grip of karmas from beginnigless period.

553. **कम्म-बद्धजीवो संसारी तादु मुत्तो सुद्धो सिद्धो य।**

कर्मों से बंधा जीव संसारी है और उनसे मुक्त शुद्ध और सिद्ध।

Souls bonded with karmas are worldly souls and free form them are pure and emancipated.

कलत्र

554. **कलत्तं वि सुहासुह-णिमित्तं जणाणं।**

कलत्र (भार्या) भी लोगों के लिए शुभ या अशुभ का निमित्त है।

A woman is also the medium of being auspicious or inauspicious for the pepole.

555. **कलत्तं बंधणं संकलं विणा।**

स्त्री, बिना श्रृंखला का बंधन है।

Woman is a bond without chain.

556. **दुहं वि सुहं व कलत्तेण सह।**

कलत्र के साथ दु:ख भी सुख की तरह लगता है।

Sorrow also seems like joy with a woman.

कलह

557. **कलहेण विणस्सदि गेहं परिवारो समाजो वा।**

कलह से गृह, परिवार और समाज नष्ट होता है।

Home, family or society is destroyed by strife.

558 **परकलह-कारगेण कहं कल्लाणो संभवो?**

जो अन्यों के लिए कलह का कारण है उससे कल्याण कैसे संभव है?

How can welfare be possible with that which is the cause of strife for others?

कला

559. **कला सव्वत्थ पसंसणीया।**

कला सर्वत्र प्रशंसनीय होती है।

Art is always praiseworthy everywhere.

560. **पुरिसाणं बिसत्तरी इत्थीणं च चउसट्ठी कला।**

पुरुषों की बहत्तर तथा स्त्रियों की चौसठ कला होती हैं।

There are seventy two arts of men and sixty four arts of women.

561. **सव्वकलासु बे मुक्खा जीवियज्जया जीवतारणा य।**

सभी कलाओं में दो कला मुख्य हैं जीविकोपार्जनी तथा जीव को तारने वाली कला।

Two arts are chief in all arts-earning livelihood and welfare of the soul.

562. **कप्परुक्खच्चाए को कंखदि अण्णरुक्ख-पुप्फं?**

कल्पवृक्ष की पूजा के लिए कौन अन्य वृक्ष के पुष्प चाहता है?

Who wants the flowers of any other tree for worshiping (wish fulfilling tree) 'kalp vriksha'.

कल्याण

563. **सव्व-कल्लाणं चिंतेज्जा।**

सभी का कल्याण सोचना चाहिए।

Welfare of all should be thought of.

कवि

564. **कव्व-जणगो कवी।**

काव्य का जनक कवि है।

Father of poetry is poet.

565. **धम्म-णिरूवगो परमट्ठेण कवी।**

परमार्थ से वे ही कवि हैं जो धर्म के निरूपक हैं।

According to duty only that person is considered a poet, one who is an expounder of religion.

566. **सगकव्वेण थिप्पदि कवी।**

कवि अपने काव्य से संतुष्ट होता है।

Whether others are satisfied or not, a poet becomes contented with his own poetry.

567. **धम्मकव्वे समत्थो कवी कहं णिद्धणो?**

धर्म काव्य के करने में जो समर्थ है वह कवि निर्धन कैसे हो सकता है?

A poet who is able to compose religious poetry, how can he become poor?

568. **कवीणं कव्वं कत्तव्वपेरगं होज्ज।**

कवि की कविता कर्तव्यप्रेरक होनी चाहिए।

Poem of a poet should be inspiring to duty.

569. **कवी कप्पणा-आयासे उड्डदि।**

कवि कल्पना के आकाश में उड़ता है।

A poet flies in the sky of imagination.

570. **कव्वं सुदा कवी जणगो।**

कविता पुत्री है कवि जनक।

Poem is the daughter and poet is father.

571. **णाणी हि सुकवी।**

ज्ञानी ही सुकवि है।

Only a learned is a great poet.

कषाय

572. **जत्थ कसायुवसमणं तत्थ हु संती।**

जहाँ कषाय का उपशमन होता है वहाँ नियम से शान्ति होती है।

Where there is subsidence of passions, for sure there is tranquility.

573. **कोहाइ-कसायो-चेयणा-दाहग्गी।**

क्रोधादि कषाय चेतना की दाहक अग्नि है।

Anger and others passions are the burning fire of conscience.

574. **कसायवेगे मोणं धरेज्ज जिणगुणं चिंतेज्ज य।**

कषायों के वेग के समय में मौन धारण करना चाहिए और जिनेन्द्र भगवान् के गुणों का चिंतन करना चाहिए।

One should be silent at the time of intensity of passions and remember the qualities of jinendra Deva.

575. **बहुजणा वक्कपयडिजुत्ता कसायुव्वेगी य संपइ।**

वर्तमान में बहुत से लोग वक्रप्रकृति युक्त और कषायोद्वेगी होते हैं।

Many people are crooked and passionate in the present time.

काम

576. **कामो हु महारोयं संसारीणं।**

काम ही संसारी जीवों का महारोग है।

Lust is the heinous disease of worldly souls.

577. **परवत्थुं तिव्व-भोगेच्छा कामो।**

परवस्तु को भोगने की तीव्र आकांक्षा काम है।

Strong desire to enjoy others' possession is lust.

578. **कामासत्तो किं दुकम्मं णो कुणेदि।**

कामासक्त कौन सा दुष्कर्म नहीं करता?

Which sin in not done by a lustful person.

579. **कामभूदो खु गहीदमज्जादं लोवदि।**

कामभूत नियम से ग्रहीत मर्यादा का लोप करता है।

A lustful person does not care about his dignity.

580. **कामभोगेसु को रज्जदि विवेगी?**

कौन विवेकी कामभोगों में रत रहता है?

Which discerning person indulges in worldly pleasures?

581. **कामासत्तस्स णो का वि ओसही।**

कामासक्त की कोई भी औषधि नहीं है।

There is no medicine for lustful.

582. **कामसेवाए को थिप्पदि लोगे?**

लोक में कामदेव की सेवा से कौन तृप्त होता है?

Who becomes satisfied by the service of cupid in this world?

583. **कामो ण खणे वि करेज्ज आणाभंगं सगसासणस्स।**

काम एक क्षण भी स्वशासन की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता है।

Even for a moment, lust cannot leaping over its rule.

584. **णागपासा विसयभोया।**

निश्चय से विषयभोग नागपाश है।

Worldly pleasure is a noose from ultimate point of view.

585. **कामी लहदि दुग्गदिं।**

कामी दुर्गति को प्राप्त करता है।

Lustful gets abejection.

586. **कामभोयेहिं ण कया वि संती।**

कामभोगों से कभी भी शान्ति नहीं मिलती।

No one gets tranquility from worldly pleasures.

587. **कामासत्ताणं विवेगसुण्णा पवित्ती।**

काम में रत लोगों की प्रवृत्ति विवेकशून्य है।

Actions of lustful people are imprudent.

588. **कामप्पा णो पसंसणीयो।**

कामात्मा प्रशंसनीय नहीं है।

Lustful soul is not worthy of praise.

589. **कामो विसय-पवट्टगो सत्तू।**

काम विषय प्रवर्तक शत्रु है।

Lust is an enemy which grows worldly pleasures.

590. **अदिकामो विरत्ति-कारणं।**

अतिकाम विरक्ति का कारण है।

Extreme lust is the cause of detachment.

591. **कामो जीवाणं अदिट्ठ-बंधणं।**

काम जीवों का अदृष्ट बंधन है।

Lust is the invisible bond of worldly souls.

592. **कामहीणो हु बंभजोगी।**

काम से हीन ही ब्रह्म योगी है।

A person free from lust and desires is a spiritual ascetic.

593. **कामासत्तो किं अणत्थं णो करेदि?**

कामासक्त क्या अनिष्ट नहीं करता?

Which harm is not done by the lustful?

594. **हासो विलासो वि कामंगं।**

हास्य और विलास भी काम का अंग है।

Laughter and luxurious life is also the part of lust.

595. **विण्णाणी णो सेवेज्ज कामं।**

विशिष्टज्ञानी को काम का सेवन नहीं करना चाहिए।

The learned shouldn't enjoy sensuous pleasures.

596. **कामो चिरजीवी चेयणा देहीणं।**

काम संसारियों के लिए चिरजीवी चेतना है।

Lust lives very long in the conscience of worldly souls.

597. **कामो मणोहरो भासदे।**

काम मनोहर दिखता है।

Lust seems delightful.

598. **कामणुधाविरा णियमेण विणस्संति।**

काम के पीछे भागने वाले नियम से नष्ट होते हैं।

People who run after lust, are surely destroyed.

599. **कामचागी पहुभत्तो।**
काम का त्यागी प्रभु का भक्त होता है।
The renouncer of lust is a devotee of God.

600. **सव्वजीवाणं कामो हु अणाइसत्तू।**
सभी जीवों का काम ही अनादि शत्रु है।
From beginnigless period, lust is the enemy of all creature.

601. **कामेण कामो णो उवसमदि जहा अग्गीए अग्गी।**
काम से काम उपशान्त नहीं होता जैसे अग्नि से अग्नि।
Lust is not pacified by lust as fire from fire.

602. **कामदप्प-दलणे विरला समत्था।**
काम दर्प के दलने में विरले ही समर्थ हैं।
Rare people are able to destroy lust.

603. **विवेगहीणो कामंधो।**
कामांध विवेकहीन होते हैं।
Those blind in lust are undiscerning.

604. **कामुगाणं णो भयं णो लज्जा।**
कामातुरों के लिए न तो भय है न लज्जा।
There is not fear and shame for the lustful.

605. **कामो कोहो णस्सदि विवेगं वेरग्गं च।**
काम और क्रोध विवेक व वैराग्य को नष्ट कर देता है।
Lust and anger destroy wisdom and detachment.

606. **उप्पज्जंति कामो कोहो रजोगुणादु।**
काम और क्रोध रजोगुण से उत्पन्न होते हैं।
Lust and anger are produced by the quality rajos.

607. **मज्जं व कामो अग्गिव्व कोहो।**

काम मद्य की तरह और क्रोध अग्नि के समान है।
Lust is like liquor and anger is like fire.

608. **गुणवगुणा णो पस्सदि कामी।**
कामी गुण और अवगुण को नहीं देखता।
Lustful doesn't discern between virtues and vices.

कामदेव

609. **अइ-रूववाणो लोगप्पसिद्धो कामदेवो।**
अतिशय रूपवान् लोकप्रसिद्ध को कामदेव कहते हैं।
World famous extremely handsome, is cupid.

कामना

610. **सग-इट्ठवत्थु-पत्तीए तिव्व-भावणा कामणा।**
स्व इष्ट वस्तु की प्राप्ति के लिए तीव्र भावना कामना है।
Desire is the strong feeling to get one's desired thing.

611. **णरा बहुकंख-जुदा।**
मनुष्य बहुत आकांक्षा युक्त होता है।
Man is full of desires.

612. **सव्वाणं पिय-कामो।**
सभी को आकांक्षा प्रिय होती है।
Desire is dear to everyone.

613. **कामपुंजो हु संसारो।**
संसार कामनाओं का ही पुंज है।
World is the accumulation of desires.

614. **आगासोव्व अणंत-कामा।**
कामनाएँ आकाश की तरह अनंत हैं।
Desires are infinite like the sky.

काय

615. **कायं हु रोयसप्प-बिलं।**

काय रोग रूपी सर्प का बिल है।

Body is the hole of a snake full of diseases.

616. **जलबुदबुदोव्व काया खणे हु णस्सदि।**

जल के बुदबुदे के समान काया किसी भी क्षण नष्ट हो जाती है।

Body can be destroyed at any moment like a bubble of water.

कायर

617. **सगलक्खणादो चुदि कापुरिसो।**

कायर पुरुष स्वलक्षण से च्युत हो जाता है।

A coward man strays from his own charateristics.

618. **दोस-भयेण ण कुव्वदि कम्मं सो कापुरिसो।**

दोषों के भय से जो कार्य नहीं करता वह कायर पुरुष है।

One who doesn't work from the fear of making mistakes is a coward man.

619. **'भग्गं सव्वं देदि' भणंति कापुरिसा।**

भाग्य सब कुछ देता है ऐसा कायर पुरुष कहते हैं।

Coward men say that we get everything because of fate.

कायोत्सर्ग

620. **परत्थादो देहादो य ममत्त-चागो काउस्सगो।**

पर पदार्थों से और देह से ममत्व त्याग व्युत्सर्ग/कायोत्सर्ग है।

Giving up affection attached to external substances and the body is kayotsarga.

कारण

621. **साहणतम-हेदू कारणं।**

साधनतम हेतु कारण होता है।

Cause is due to means.

622. **जहा हेदू तहा फलं लोगे।**

लोक में जैसा कारण होता है वैसा फल लोक में देखा जाता है।

Fruition seems according to the cause in the world.

कारुण्य

623. **दीणेसुं अणुग्गहभावो कारुण्णं।**

दीनों पर अनुग्रह भाव रखना कारुण्य है।

To show kindness to needy or wretched people is compassion.

कार्य

624. **कारणाणुसारेण हु कज्जं।**

कारण के अनुसार ही कार्य होता है।

Work happens according to reason.

625. **उव्वेगो सुकज्जेसु महाविग्घं।**

उद्वेग अच्छे कार्यों में महाविघ्न है।

Anxiety is a great obstacle in good deeds.

626. **जोग्ग-कज्जं उज्जमेज्ज।**

योग्य कार्य का उद्यम करना चाहिए।

Efforts should be made for worthy deeds.

627. **सुकज्जेहिं अज्जिदा कित्ती।**

कीर्ति सुकार्यों से अर्जित होती है।

Glory can be acquired by good deeds.

628. **कारणेण विणा णो कज्जं।**

कारण के बिना कार्य नहीं होता।

No work happens without reason.

629. **सुकज्जेसुं पवीणो कुसलो।**

जो अच्छे कार्यों में प्रवीण है वह नर कुशल है।

A person who is proficient in good deeds is an expert.

630. **अविआरियं कज्जं सव्वदा हु विफलं।**

अविचारित कार्य सर्वदा विफल ही होता है।

Thougtless karma is always fruitless.

631. **उहयकारण-जोगेण होदि कज्जं।**

उभय कारणों (अंतरंग और बहिरंग) के मिलने से नियम से कार्य होता है।

By associating both reasons (external & internal) work surely gets its fruition.

632. **विणा साहण-सामग्गीए कज्जं णो होदि।**

बिना साधन सामग्री के कार्य नहीं होता है।

No work can be done without means.

633. **णीदि-णिउणा सव्वदा इट्ठकज्ज-सिद्धिं वंछंति।**

नीति निपुण मनुष्य सर्वदा इष्टकार्य की सिद्धि चाहते हैं।

Tactful persons always want the fulfillment of desired work.

634. **विणा बहुपरिसमेण णो संपण्णो महाकज्जं।**

बिना महापरिश्रम के महान् कार्य सम्पन्न नहीं होता।

Great work cannot be done without great endeavour.

635. **सम्मगविआरगाणं किं कज्जं ण सिज्झदि।**

सम्यक्विचारवानों का क्या कार्य सिद्ध नहीं होता।

Which work is not fulfilled by those with real knowledge?

636. **कज्जं जाए विहीए संवण्णे समत्थो ताए विणा फलं ण देदि।**

जो कार्य जिस विधि द्वारा सम्पन्न होने में समर्थ है वह कार्य उस विधि के बिना फल देने में असमर्थ होता है।

That work which can be completed by a particular method is unable to give fruition without that method.

637. **सम्मजदेण कज्जं करेदि सो सिद्धिं लहेदि।**

जो सम्यक् यत्नपूर्वक कार्य करते हैं उन्हें कार्य में सिद्धि प्राप्त होती है।

People who works with right effort, get success in that work surely.

638. **बलिट्ठो हु गुरुकज्जे समत्थो संसारे।**

संसार में बड़े कार्य को बलवान् ही करने में समर्थ होते हैं।

Only strong people are able to do great work in the world.

639. **णियकज्जेसु संलग्गा पिपीलिया हु सेट्ठा ण मेत्तं उवदेसगो।**

निजकार्य में संलग्न चींटी ही श्रेष्ठ है न कि मात्र उपदेशक।

An ant engrossed in its own work is also great, not only the preacher.

640. **सुकज्जेसु विज्जदे अमियं।**

सुकार्यों में अमृत रहता है।

Nector is present in good deeds.

641. **सद्दा णाणं सुकम्मं च महप्पाणं लक्खणं।**

श्रद्धा, ज्ञान और सुकर्म महात्माओं का लक्षण है।

Faith, knowledge and good conduct are the symptoms of ascetics.

642. **सुकज्जेहिं महापुरिसो देदि सगपरिययं।**

सुकार्यों के द्वारा महापुरुष स्वपरिचय देता है।

Great man introduces himself by his good works.

643. **एगेण कारणेण णो सिज्झदि कज्जं।**

कोई भी कार्य एक कारण से सिद्ध नहीं होता।

No work gives fruition through a single cause.

644. **सगकज्जेहिं संतुट्ठो हु णो पवट्टदि इयरकज्जेसु।**

स्वकार्यों द्वारा संतुष्ट ही अन्य कार्यों में प्रवृत्त नहीं होता।

One who is satisfied by one's own work, doesn't interfere in others' works.

645. **जहा कम्मं तहा फलं भणिदं जिणागमे।**

जैसा कर्म वैसा फल ऐसा जिनागम में कहा गया है।

As you sow, so shall you reap, it is said in jina scriptures.

646. **लहुकम्मं वि सारभूदं जदि उक्किट्ठं।**

यदि उत्कृष्ट हो तो लघुकार्य भी सारभूत है।

Small works are also eminent if they are significant.

647. **सव्वदोस-रहिदं कज्जं दुल्लहं।**

सभी दोषों से रहित कार्य दुर्लभ है।

Faultless work is extremely difficult.

648. **सुकाले किदं कज्जं वरं।**

अच्छे काल में किया गया कार्य अच्छा माना जाता है।

Work done in auspicious time is considered to be good.

649. **एगचित्तेण कज्जं सफलं बेचित्तेहिं विणस्संति।**

एक चित्त का कार्य सफल होता है दो चित्तों से नष्ट हो जाता है।

Work become successful if done with concentration of heart and is destroyed by double mindedness.

650. **उवेक्खावित्ती कज्ज-विणासगा।**

उपेक्षावृत्ति कार्य की विनाशक है।

Tendency of negligence destroys work.

651. **सगकज्जं णो पियं कस्स?**

अपना कार्य किसको प्रिय नहीं होता?

Who doesn't like one's own work?

652. **मणंसी कज्जत्थी णो सुहं गणदि णो दुहं च।**

मनस्वी कार्यार्थी न सुख गिनता है और न दुःख।

Intelligent worker is not affected by joy and sorrow

कार्योपरान्त

653. **फलं लहिय को सिंचदि तरुं?**

फल को प्राप्त करके वृक्ष को कौन सींचता है?

Who waters the tree after getting its fruit?

654. **कज्जणंतरं कारणेण किं पयोजणं?**

कार्य के अनन्तर कारण से क्या प्रयोजन?

What is the use of cause after the work is done?

655. **णीरं पिवित्ता को पुच्छदि जादिं?**

पानी पीकर जाति को कौन पूछता है?

Who asks a person's cast after drinking water?

656. **गदो कालो ण पुण आयादि।**

जो काल चला गया वह पुनः लौटकर नहीं आता।

Time that has lapsed, never returns.

657. **कालो इच्छदि जीवं कहं णो जीवो तं।**

काल (मृत्यु) जीव को चाहता है जीव क्यों नहीं काल को चाहता?

Death likes living beings, why living beings don't like death?

658. **समयट्ठिदी मज्जादा वा कालो।**

समय की स्थिति या मर्यादा काल है।

Limitation or condition of time is specific period.

659. **काल-गदी दुग्गमा।**

काल की गति दुर्गम है।

Motion of time is inaccessible.

660. **भूद-वट्टमाण-अणागदो कालो तिविहो।**

काल के तीन भेद हैं यथा-भूत, वर्तमान तथा भविष्यकाल।

There are three division of time past, present and future.

661. **कालणुसारेण मिदू वि कक्कसो।**

काल के अनुसार मृदु भी कर्कश हो जाता है।

Soft also becomes harsh according to time.

662. **सज्जणा सुजोग्ग-काले सुजोग्गवत्थुं हु गहेज्ज।**

सज्जनों को सुयोग्य काल में सुयोग्य वस्तु ही ग्रहण करनी चाहिए।

Virtuous people should take suitable things in auspicious time.

663. **कालस्स बहुमाणं ण कुव्वदि सो सफलत्तं णो लहेदि।**

जो काल का बहुमान नहीं करता है वह श्रेष्ठ सफलता को प्राप्त नहीं करता है।

One who doesn't respect time, cannot achieve excellence.

664. **काल-णाणं सव्वेसु पहाणं।**

काल का ज्ञान सर्वज्ञानों में प्रधान है।

Of all knowledge, knowledge of time is the chiefest.

665. **समयणुसारेण कज्ज-कारगो हु णीदि-णिउणो।**

समय के अनुसार कार्य करने वाला नीति-निपुण कहा जाता है।

One who works according to the demand of time is called diplomatic.

666. **सुसमयं ण चुक्कंते कुसला।**

कुशलजन सुसमय को नहीं चूकते हैं।

The skilful don't miss good time.

667. **णो कालो कायो आऊ हु णस्संति।**

काल कभी भी नष्ट नहीं करता है काय और आयु ही नष्ट करती है।

Time never destroys but body and age do.

668. **कालणुसारेण णीदि-गाहगो सव्वत्थ सफलो।**

कालानुसार जो नीति को ग्रहण करता है वह सर्वत्र सफल होता है।

A person who grasps policy according to time is successful everywhere.

669. **कालेण संचिद-बहु-परमाणू वि होज्ज मेरू।**

काल के अनुसार संचितमान बहुत से परमाणु भी मेरू हो जाते हैं।

Many atoms collected also become Meru according to time.

670. **अणुऊल-समये अग्गिकणो वि महाजालारूवे वड्ढदे।**
अनुकूल समय प्राप्त होने पर अग्नि कण भी महा ज्वाला रूप में बढ़ जाता है।
A spark also become a big flame according to time.

671. **जहा कालो यादि तहेव धणं जीवणं जोव्वणं च।**
जैसे समय जा रहा है वैसे ही धन, जीवन और यौवन।
As time is passing so is wealth, life & youth.

672. **जम्मि सव्वाणं सुई विज्जदे तस्स कालस्स मुहु णमो।**
जिसमें सबकी स्मृति विद्यमान है उस काल को बार-बार नमस्कार हो।
We bow several times before such time where everyone's memory exists.

673. **काल-पहावो सव्वेसु जेट्ठो।**
काल का प्रभाव सबमें ज्येष्ठ है।
Affect of time is supreme in all.

674. **कालस्स वत्थुं णो अइभार-जुदं।**
काल के लिए वस्तु अतिभारयुक्त नहीं है।
Nothing is impossible for time.

675. **कालो णो कस्स वि बंधू।**
काल किसी का भी बंधु नहीं है।
Time is no one's friend.

676. **कालादो बहि णो किं वि कम्मं।**
काल से बाहर कोई कर्म नहीं है।
There is no work outside time.

677. **वत्थूणि सोहंति कालाणुसारेण।**
सभी वस्तुएँ काल के अनुसार ही शोभित होती हैं।
All things get adorned according to time.

678. **सव्व-कज्जेसुं सुसमयो हु महासाहगो।**
सभी कार्यों में सुसमय ही महान् सहायक है।
Good time is a great helper in all works.

679. **सुकाले सव्वं लहदि।**
अच्छे समय में मनुष्य सब प्राप्त करता है।
Man gets everything when good time exists.

680. **सव्वं पडि कालो मज्झत्थं।**
सभी के प्रति काल मध्यस्थ है।
Time is neutral towards everyone.

681. **कालो हु अपमत्तो।**
काल ही अप्रमत्त है।
Time is active.

682. **जलकल्लोलोव्व सव्वपज्जाय-कालादो उप्पज्जंति णिमज्जंति य।**
सभी पर्याय काल से उत्पन्न और विलीन होती हैं जलकल्लोल के समान।
All forms generate and destroy in time as waves in the ocean.

683. **सुह-दुह-फलजुदं सस्सं कालो हु कट्टदि।**
सुख-दुःख फल युक्त फसल को काल ही काटता है।
Time cuts the fruitful crop of joy & sorrow.

684. **कालणंतो थोवाऊ।**
काल अनन्त है और आयु थोड़ी।
Time is infinite and age is little.

685. **कालो णो कस्स वि पडिक्खदे।**
काल किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करता।
Time wait for none.

686. **णो भूदो परिमिदो णो अणागदो।**

न तो भूत परिमित है न ही अनागत।

Neither past is limited nor future.

687. **संमुह-पत्तेग-खणो मेत्तं वट्टमाणो।**

सम्मुख संप्राप्त एक क्षणमात्र ही वर्तमान है।

Anything present which is attained in a moment only is present.

688. **णो कं वि छड्डदि कालो।**

काल किसी को भी नहीं छोड़ता।

Death leaves none.

काव्य

689. **रसजुत्त-ललिदक्खर-सद्द-पद-समूहो कव्वं।**

रसयुक्त ललित अक्षर शब्द पद का समूह काव्य कहलाता है।

A group of elegant and graceful alphabets words and verses is called poetry.

690. **सुकव्व-कहणे समत्थो कवी।**

सुकाव्य के कहने में समर्थ कवि है।

One who is able to recite good poetry is a poet.

691. **को ण णंदंति सरस-कव्वेण?**

सरस काव्य से कौन आनन्दित नहीं होता?

Who doesn't get delighted by a charming poem?

692. **धम्मणुमोयग-कव्वं सव्वकाले पसंसं।**

धर्मानुमोदिनी कविता सर्वकाल में प्रशंसनीय होती है।

Poetry which approves religion is commendable in all time.

693. **कव्वं कवि-जीवणं।**

काव्य कवि का जीवन है।

Poetry is the life of a poet.

694. **कविणो भावो हु कव्वं भासा होज्ज जा सा वा।**

कवि का भाव काव्य है भाषा यह हो या वह।

Feeling of poem is poetry, language may be one or other.

695. **अज्झप्प-कव्वं सेवदि सो लहेदि चेयणाणंदं।**

अध्यात्म काव्य का जो सेवन करता है वह चेतना के आनन्द को प्राप्त करता है।

One who appreciates spiritual poetry, attains the pleasure of conscience.

696. **बुभुक्खिदाण णो रुच्चदे कवित्तं।**

क्षुधातुरों को कविता अच्छी नहीं लगती।

Hungry men don't like poetry.

697. **जदा सुकवित्ते रज्जदि चित्तं तदा रज्जेण किं?**

जब सुकविता में चित्त लगता है तब उसका राज्य से क्या प्रयोजन?

What is the use of kingdom if one is interested in good poems?

698. **कला-विज्जाछंद-रसालंकाराइ-पुंजो कव्वं।**

काव्य कला, विद्या, छंद, रस, अलंकारादि का पुंज है।

Poem is the collection of art, knowledge, sentiments and figures of speech etc.

699. **कवी वि दुल्लहो लोए सुकवित्तं अदिदुल्लहं।**

लोक में कवि भी दुर्लभ है तब सुकविता तो अतिदुर्लभ है।

If a poet is difficult to find in the world then good poem is all the more difficult.

700. **कवित्तं वि अमियधारा जदि कल्लाणवड्ढगं।**

कविता भी अमृत की धारा है यदि वह कल्याणवर्धक हो।

Poem is also the stream of nector if it is for welfare.

701 **सुकव्वं देदि णंदं सुहं जसं च।**

सुकाव्य आनन्द, सुख और यश देता है।

Good poetry gives pleasure, joy and fame.

702. **सुकव्वं वि अमियं णाणीणं।**

ज्ञानियों के लिए सुकाव्य भी अमृत है।

Good poetry is also like nector for the learned.

703. **कव्वं रमणीयं हिदंकरं णेयं च।**

काव्य रमणीय, हितकर और ज्ञेय होता है।

Poetry is beautiful, benevolent & worth knowing.

704. **सुकव्वं णो सव्वत्थ सुलहं।**

सुकाव्य सर्वत्र सुलभ नहीं है।

Good poem is not easily obtainable everywhere.

कीर्तन

705. **इट्ठदेव-गुण-गायणं कित्तणं।**

इष्टदेव के गुणों का गायन कीर्तन है।

Singing the praises of favoured God is 'kirtan'.

कीर्ति

706. **कणय-कंता कित्ति-तण्हा य चदुगदि-कारणं।**

कंचन, कांता, कीर्ति, तृष्णा ये चतुर्गति का कारण हैं।

Wealth, woman, glory and endless desires are the cause of transmigration.

707. **णट्ठकित्ती णट्ठोव्व।**

जिसकी कीर्ति नष्ट हो गई है वह नर नष्ट के समान है।

That man is like dead person whose fame has been destroyed.

708. **मिदो वि जीविदो जस्स सुकित्ती विज्जदे।**

जिसकी सुकीर्ति विद्यमान है वह मृत भी जीवित है।

That dead person is also alive whose fame exist in the present.

कुजाति

709. **कुजादी हु णिंदणीय-जादी।**

निन्दनीय जाति कुजाति ही है।

Reprehensible caste is worse caste.

कुटिल

710. **णो सहंति धम्मिणो वि कुडिला।**

कुटिल व्यक्ति धर्मात्माओं को भी सहन नहीं कर सकते।

Crooked people cannot tolerate even holy personages.

711. **सहावेण कुडिला कहंपि णो सिज्झंते।**

जो स्वभाव से कुटिल पुरुष हैं वे किसी भी प्रकार से सीझते नहीं हैं।

People who are crooked by nature, can never be softened by any means.

712. **णाणा रूवजुत्ता कुडिला।**

कुटिल जन अनेक रूपों से युक्त होते हैं।

Devious people are endowed with many forms.

कुतर्क

713. **जरोव्व कुतक्क-वेगो।**

ज्वर के समान कुतर्क का वेग होता है।

Intensity of wrong reasoning is like fever.

कुदेश

714. कुदेसे णो वसेदु धण-लोहे।

धन के लोभ में कुदेश में वास नहीं करना चाहिए।

One should not live in a bad country in greed of money.

715. दुट्ठा वसंति जत्थ सो कुदेसो।

जिस क्षेत्र में दुष्ट रहते हैं वह कुदेश है।

Where wicked people live, is a bad country.

कुपात्र

716. जहा आम-मिदिगा-पत्ते खीरं विणस्सदि तहा कुपत्तदाण-फलं वि।

जैसे कच्चे मिट्टी के पात्र में रखा दूध नष्ट हो जाता है, वैसे ही कुपात्रों में दिया दान का फल नष्ट हो जाता है।

As milk kept in unbaked pitcher gets destroyed similarly donating to unworthy people destroys its fruit.

717. कुपत्ता कुधम्म-वड्ढगा।

कुपात्र कुधर्म के वर्धक होते हैं।

Unworthy people are the propgator of religion which is not the cause of welfare.

718. सायर-णित्थारिदुं णो समत्था सिला तहा कुपत्तो वि।

जैसे पत्थर की शिला सागर पार कराने में समर्थ नहीं होती है वैसे ही कुपात्र भी।

As rock is uncapable to cross the ocean likewise is the ease with unworthy also.

719. जत्थ कुपत्ता णो तत्थ सुदायगा।

जहाँ कुपात्र रहते हैं वहाँ सम्यग्दाता नहीं रहते।

Where unworthy people live, there is no true-do-nor.

720. जत्थ सम्मदिट्ठि-दाणी तत्थ णो कुपत्त-पहावो।

जहाँ सम्यग्दृष्टि दाता विपुलता से रहते हैं वहाँ कुपात्रों का प्रभाव नहीं होता है।

Where the right believer and donor live in great number there is no effect of the unworthy.

कुपुत्र

721. कुपुत्तादो अपुत्तो वरो।

कुपुत्र से पुत्र रहित श्रेष्ठ है।

Not having a son is better than an unworthy son.

722. कुपुत्तो जणगस्स परम-सत्तू।

कुपुत्र पिता का परम शत्रु है।

An unworthy son is the foe of his father.

कुमार्ग

723. कुमग्ग-गमणेण को लहदे इट्ठत्थं।

कुमार्ग पर गमन से किसको इष्ट अर्थ की प्राप्ति होती है?

Who can get his desired thing by following the wrong direction?

724. पाव-कारणं कुमग्गो।

जो पाप का कारण है वही कुमार्ग होता है।

That which is the cause of sin is the wrong path.

725. कुमग्गं णो गच्छंति सज्जणा।

जो नर कुमार्ग पर नहीं जाता वह सज्जन होता है।

That man who doesn't go in wrong direction is gentleman.

726. अण्णाणी सव्वदा गच्छदि कुमग्गं।

अज्ञानी सदा कुमार्ग पर जाता है।

An unwise person always goes in the wrong direction.

727. **णो वरं कुमग्ग-फलं।**

कुमार्ग का फल श्रेष्ठ नहीं है।

Fruition of wrong direction is not good.

कुल

728. **गुण-पसंसाए उच्चकुलं।**

गुण प्रशंसा करने से जीव उच्च कुल को प्राप्त करता है।

A transmigrating soul is born in a good family by his quality of praising others.

729. **सगदोसालोचणेण उच्चकुलं।**

अपने दोषों की आलोचना करने से व्यक्ति उच्च कुल को प्राप्त करता है।

A person is born in a good family by self criticization.

730. **सम्मणाण-दंसण-वेरग्ग-संजम-तवा य उच्चकुल-फलाणि।**

सम्यग्ज्ञान, दर्शन, वैराग्य, संयम और तप जो मनुष्य प्राप्त करता है वे उच्च कुल के फल हैं।

Right knowledge, perception, detachment, restraint and austerity which a person gains, are the result of being born in a high family.

731. **कोलीणेसु कयायारो दुल्लहो।**

उच्चकुल में उत्पन्न मनुष्यों में कदाचार प्रायः दुर्लभ है।

Bad conduct is difficult to see in those people who take birth in a good family.

732. **मोक्खाणुऊलायारो असंभवो णीयकुलेसु।**

जो पुरुष नीचकुल में उत्पन्न होते हैं उनमें मोक्षानुकूल आचार असंभव है।

Conduct leading to liberation is impossible in the people who take birth in low family.

733. **सयायार-णासगा णासंति कुलं।**

जो सदाचार को नष्ट करते हैं वे कुल को नष्ट करते हैं।

People who destroy ethics, destroy their clan.

734. **सुकुल-धम्म-मज्जादं ण मणंति ते अण्णाणी।**

जो सुकुल धर्म की मर्यादा को नहीं मानते हैं वे अज्ञानी हैं।

Those who don't believe in the reilgious dignity of high clan are unwise.

735. **णो उज्झंति सप्प-चादग-पासाण-सायर-मेहादी सगकुलमज्जादं कहं माणवो?**

सर्प, चातक, पाषाण, सागर, बादल आदि भी स्वकुल मर्यादा नहीं त्यागते हैं तो मनुष्य द्वारा अपने कुल की मर्यादा क्यों त्यागी जाती है?

Snake, pied cuckoo, rock, sea, clouds etc. don't give up the dignity of their own clan, then why do people give up their clan's dignity.

736. **कुलीणो णो चिट्ठदि अकुलीणेसु णिराउलदाए।**

कुलीन नर अकुलीनों के बीच निराकुलता से नहीं रहता।

Aristocratic person cannot live easily among low born people.

737. **सगपदी हु वरो कुलीणकण्णाए किं परेण?**

कुलवान् बाला के लिए अपना पति ही सर्वश्रेष्ठ होता है उन्हें पर पुरुष से क्या प्रयोजन?

For the girls of noble family their husband is foremost, then what purpose do they have with other men.

738. **परणिंदाए णीयकुलं।**

परनिंदा के परिणाम से जीव नीच कुल को प्राप्त करते हैं।

Soul takes birth in a low family if his thoughts

always censure others.

739. **विणयाणुसासण-मज्जादा-रहिदं णीय-कुलं।**

जिस कुल में विनय अनुशासन मर्यादा नहीं होती है वह नीच कुल है।

In that family where there is no dignity, discipline and custom, it is a low family.

740. **सयायारेण रक्खेज्ज कुलं।**

सदाचार द्वारा कुल की रक्षा करनी चाहिए।

One should protect the family by good conduct.

741. **किं महच्चं कयायारीणं सुकुलस्स वि?**

कदाचारियों के सुकुल का भी क्या महत्त्व?

What is the use of a high family, if people are of bad conduct?

742. **सुकुलं वि कुकुलं धम्ममज्जादा-लंघणेण।**

धर्म की मर्यादा का उल्लंघन करने से सुकुल भी कुकुल हो जाता है।

Good family also becomes bad by crossing the dignity of religion.

743. **सयायारेण जाणंति कुलाणि णाणी।**

ज्ञानी कुलों को सदाचार के द्वारा जानते हैं।

Learned know the families by their good conduct.

744. **जहा कुलं तहा वित्ती।**

जैसा कुल वैसी वृत्ति (प्रवृत्ति)।

As there is family so there is tendency.

745. **धणादु वरं मण्णंते कुलं णाणी।**

ज्ञानी धन से अधिक कुल को श्रेष्ठ मानते हैं।

Scholars consider family better than money.

कुलीन

746. **खीणपुण्ण-कुलीणो वि णो उज्झंति सग्गुणा।**

जिसका पुण्य क्षीण हो गया है ऐसा कुलीन भी सद्गुणों को नहीं त्यागता है।

An aristocrate whose merits has diminished doesn't give up virtues.

747. **आपत्तीए कुलीणाणं गुणा विसेसा दिव्वंते।**

आपत्तिकाल में कुलीनों के गुण विशेष दैदीप्यमान होते हैं।

Virtues of aristocrates bright specially at a time of adversity.

748. **विणयो सिट्ठायारो सयायारो य कुलीणेसु सहजा गुणा।**

कुलीनों में विनय, शिष्टाचार और सदाचार सहज गुण हैं।

Politeness, good behaviour and morality are the natural virtues of aristrocrates.

कुशल

749. **कुसला अज्जंति सफलत्तं कित्तिं च।**

कुशलजन सफलता और कीर्ति अर्जित करते हैं।

Learned gains success & fame.

750. **कुसलो कस्स वि अहिदं णो कंखदि।**

कुशल किसी का भी अहित नहीं चाहते।

Learned doesn't desire anyone's adversity.

कृतघ्न

751. **कयग्घो हु महापावी।**

कृतघ्न ही महापापी है।

Ungrateful person is heinous sinner.

752. **कयग्घा णिवारिदव्वा सज्जणेहिं।**

सज्जनों द्वारा कृतघ्नों का निवारण करना चाहिए।

Virtuous people should try to reduce ungrateful people.

753. **कयग्घो णो कया वि खमाभायगो।**

कृतघ्न कभी भी क्षमा का पात्र नहीं होता।

Thankless is never unforgivable.

754. **सीहो वि णो भक्खदि कयग्घ-मंसं।**

सिंह भी कृतघ्न का माँस भक्षण नहीं करता।

Lion also doesn't eat the meat of ungrateful person.

755. **बंभघादगो वि कयग्घो।**

ब्रह्मघातक भी कृतघ्न है।

Self-destroyer is also ungrateful person.

756. **कुत्थ पुण्णं सुहं जसं च कयग्घस्स?**

कृतघ्न के पुण्य, सुख और यश कहाँ?

Where is merits, happiness & fame for ungrateful person?

757. **कयग्घस्स णो किं वि पायच्छित्तं।**

कृतघ्न का कोई भी प्रायश्चित नहीं है।

There is no penance for ungrateful person.

कृतज्ञ

758. **सया कयण्णू हु सज्जणो।**

सज्जन सभी काल में ही कृतज्ञ होता है।

Virtuous person is always grateful.

759. **कयण्णू पुज्जो सव्वदा।**

कृतज्ञ सदा पूज्य होता है।

Grateful person is always venerable.

760. **कयण्णुणो उवयारं को ण कंखदि?**

कृतज्ञ का उपकार करने के लिए कौन नहीं चाहता?

Who doesn't want to favour the grateful person?

761. **कयण्णुदा सज्जणेसुं चिट्ठदि जहा खीरे सप्पी।**

कृतज्ञता सज्जनों में रहती है जैसे दूध में घी।

Gratitude exists in virtuous person as ghee in milk.

762. **सज्जण-पुप्फ-सुअंधोव्व कयण्णुया।**

कृतज्ञता सज्जन रूपी पुष्पों के सुगंध की तरह है।

Gratitude is like a fragrance of flowers of virtuous person.

कृति

763. **कत्तुणो रयणा हु किदी।**

कर्ता की रचना ही कृति है।

A work of creator is creation.

कृपण

764. **जुत्तकाले धणं ण विअदि किवणो।**

युक्तकाल में जो धन व्यय नहीं करता है वह कृपण है।

One who doesn't spend money in need is miser.

765. **किवणो वि महापावी ण भुंजदि ण देदि।**

कृपण भी महापापी है, न भोगता है न देता है।

Miser is also heinous sinner, he doesn't enjoy and give.

766. **किवणो संकिलेसे जीवदि।**

कृपण संक्लेश में जीता है।

Miser lives in affliction.

767. **किवणो उरालो य विवरीया जहा भूमी णहं च।**
कृपण और उदार परस्पर में विपरीत हैं जैसे पृथ्वी और आकाश।
Miser and generous are mutually opposite as earth & sky.

768. **किवणस्स धणं विणस्सदि जहा पंके जलं।**
कृपण के धन की दुर्गति होती है जैसे कीचड़ में जल।
Miser's money is waste as water in mud.

769. **किवणो सगधणं वि उवभुंजिदुं णो समत्थो।**
कृपण स्वधन का भी उपभोग करने में समर्थ नहीं है।
Miser is not able to enjoy his own money.

770. **किवण-धणं णिरत्थं।**
कृपण का धन निरर्थक है।
Miser's money is useless.

771. **किवण-सेवाए बे-फलाणि दुहं पच्छातावो य।**
कृपण की सेवा के दो फल हैं-दु:ख और पश्चाताप।
Serving a wise results pain and penance.

कृश

772. **को कंखदि मित्ती किसेण सह?**
कृश के साथ मित्रता कौन करना चाहता है?
Who wants to be a friend of a weak person?

773. **दुब्बलो वि णो सया दुब्बलो।**
दुर्बल भी सभी समय दुर्बल नहीं होता।
Position of weak never remains same.

कृषक

774. **किसीवलो हु महोरालो।**
कृषक ही महा उदार है।

Farmer is highly generous.

775. **जावइ पेम्मो किसीवलेसु तावइ दुल्लहो अण्णेसु।**
जितना प्रेम कृषकों में रहता है उतना प्रेम अन्य वर्ग में दुर्लभ है।
Love like farmers is rare in other classes.

776. **किसीवलुवेक्खगो देसुण्णदि-घादगो।**
कृषकों की उपेक्षा करने वाला देश की उन्नति का घातक है।
Person who neglects farmer, hinders the growth of the nation.

777. **सुहभावणा किसीवलाण सुभिक्ख-कारणं।**
कृषकों की शुभभावना ही सुभिक्ष का कारण है।
Good feelings of farmers is the cause of prosperity.

778. **किसीवल-पसूण-अट्टणाओ दुब्भिक्ख-कारणं।**
कृषकों और पशुओं का आर्तनाद ही दुर्भिक्ष का कारण है।
Cry of pain of farmers and animals is the cause of death.

779. **पक्खी णो वारेज्ज किसीवलो।**
कृषकों को पक्षियों का निवारण नहीं करना चाहिए।
Farmers shouldn't prevent the birds.

780. **परहिद-रदा किसीवला वि धण्णा।**
वे कृषक भी धन्य हैं जो परहित में निरत हैं।
Those farmers are blessed who are engrossed in the beneficence of others.

कृषि

781. **किसिव्व सुट्ठु णो ववसायो।**
कृषि के समान श्रेष्ठ अन्य व्यवसाय नहीं है।
There is no other business like agriculture.

782. **देसस्स मेरुदंडो किसी।**

देश का मेरुदण्ड कृषि ही मानी जाती है।

Agriculture is considered the backbone of any country.

783. **किसी पसुपालणं विज्जा कला वाणिज्जं च लोगजीवणाहारो।**

कृषि, पशुपालन, विद्या, कला और वाणिज्य लोकजीवन का आधार है।

Agriculture, factory farming, knowledge, art and business are the foundation of world life.

784. **जलं व किसी हु णरजीवणं।**

जल के सदृश कृषि ही मनुष्यों का जीवन है।

Agriculture is the life of the people like water.

785. **किसी पत्तलेहणं संचालणं पेम्मो वंदणं च सगमेव करेज्ज।**

कृषि, पत्रलेखन, संचालन, प्रेम और वंदना स्वयं ही करना चाहिए।

Agriculture, letter writing, administration, affection and adoration should be done by onself.

केवलज्ञान

786. **सव्व-दव्वाणं गुण-पज्जाया केवलणाणे विज्जंते।**

सर्वद्रव्यों की गुण पर्याय केवलज्ञान में रहती हैं।

Properties and forms of all substances exist in omniscience (complete knowledge).

787. **सव्वणाणेसु अइसेट्ठं केवलणाणं।**

सर्वज्ञानों में केवलज्ञान अतिश्रेष्ठ होता है।

Omniscience is the best knowledge among all knowledges.

क्रिया

788. **कत्तुणो कम्मं किरिया।**

कर्ता के कर्म को क्रिया कहते हैं।

Action of doer is called act.

789. **सम्म-किरियावंतो णाणी।**

सम्यक् क्रियावान् नर ज्ञानी होता है।

Right conducted is learned.

790. **कत्तु-करणेहि विणा असंभवा किरिया।**

कर्त्ता और करण के बिना क्रिया असंभव है।

Action in impossible without a doer and an instrument.

791. **कम्मफल-कारणं किरिया।**

कर्मफल का कारण क्रिया है।

Action is the cause of fruition of karmas.

792. **उचिदठाणे काले य किदा किरिया हु सफला।**

उचित स्थान और काल में की गई क्रिया ही सफल होती है।

Only an action done at the right place and time is successful.

793. **गुरुवयारेण विणा णो सफला का वि किरिया।**

गुरु के उपकार के बिना कोई भी क्रिया सफल नहीं होती।

No work can be successful without the blessings of one's teacher.

क्रोध

794. **कोहोव्व जीवाणं णो को वि सत्तू।**

क्रोध के समान जीवों का कोई शत्रु नहीं है।

There is no bigger enemy of the living beings than anger.

795. **जम्हा उप्पज्जदि तमेव डहदि कोहो।**

जिसमें क्रोध उत्पन्न होता है उसी को निश्चय से जलाता है।

Anger burns him only, in whom it generates.

796. **सवरताव-हेदू कोहो वेर-कारणं वि।**

क्रोध स्वपर ताप का हेतु है और बैर का भी कारण है।

Anger is the cause of enmity and suffering for self and others.

797. **कोहेण मित्ती विणस्सदि सत्तू वड्ढंते।**

क्रोध से मैत्री का नाश होता है और शत्रु बढ़ते हैं।

Anger destroys friendship and increases enemies.

798. **कोहेण कोहो ण खयदि जहा अग्गीए अग्गी।**

क्रोध से क्रोध नष्ट नहीं होता जैसे अग्नि से अग्नि।

Anger doesn't destroy anger, just as fire to fire.

799. **कोहं णासदि बोहं।**

क्रोध बोध को नष्ट करता है।

Anger destroys knowledge.

क्रोधी

800. **कोहीणं ण को वि मित्तं जहा अग्गिजाला।**

क्रोधियों का कोई भी मित्र नहीं होता जैसे अग्नि की ज्वाला।

Anger people have no friends just like the flames of fire.

801. **कोहीणं ण किं वि असंभवो।**

क्रोधीजनों के लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं है।

Nothing is impossible for angry people.

802. **कोही लंघदि मज्जादं।**

क्रोधी मर्यादा का उल्लंघन करता है।

Hot tempered people cross the limits.

803. **कोही आगिसदि सव्वाणत्था।**

क्रोधी सभी अनर्थों को आकृष्ट करता है।

An angry person attracts all harmful things.

804. **कोहीणं कुत्थ मित्तं?**

क्रोधियों के मित्र कहाँ?

Angry people have no friends?

805. **इट्ठं णासदि अणिट्ठं पस्सदि कोही।**

क्रोधी इष्ट को नष्ट करता है और अनिष्ट को देखता है।

Angry person destroys desired things and gains evil things.

क्षणभंगुर

806. **लोए सव्ववत्थूणि खणधंसी।**

लोक में विद्यमान सभी वस्तु क्षणभंगुर ही मानी जाती हैं।

All things are mortal in the world.

807. **खणधंसी देहीणं जीवणं जोव्वणं च।**

संसारी जीवों का जीवन और यौवन क्षणध्वंसी है।

The life and youth of worldly beings is mortal.

808. **खणधंसी सहावेण आऊ देहं धणं बलं च।**

आयु, देह, धन और बल स्वभाव से ही क्षणध्वंसी है।

Age, body, wealth and strength are naturally mortal .

809. **चवलव्व खणधंसी देहं।**

मानव का शरीर बिजली के समान क्षणध्वंसी होता है।

Human body is mortal like the flash of lightening.

810. **परमप्प-बीय-णरदेहं कहं खणधंसी?**

परमात्मा का बीज मनुष्य का शरीर क्षणभंगुर क्यों होता है?

Why human body which is the seed of God is mortal?

811. **खणधंसी देहं परं गुणा सस्सदा।**

देह क्षणध्वंसी है किन्तु गुण शाश्वत।

The body is mortal but virtues are immortal.

क्षत्रिय

812. **सगपर-रक्खगो खत्तियो।**

जो स्वपर का रक्षक होता है वह ही क्षत्रिय होता है।

A person who is the protector of self and others is a kshatriya.

813. **णायपुव्व-जीवियज्जगो खत्तियो।**

जो न्यायपूर्वक आजीविका करता है वही क्षत्रिय होता है।

A person who earns fairly is kshatriya.

क्षुद्र

814. **खुद्दा णो जाणंति सवरहिदं।**

क्षुद्र नर स्वपर हित को नहीं जानते हैं।

Petty people don't understand benevolence of self and others.

815. **खुद्दा बंधु-सत्तु-रूवेण भेदं कुव्वंति।**

क्षुद्र, बंधु और शत्रु रूप से भेद करते हैं।

Low people discriminate among friends and enemies.

816. **खुद्दा सिग्घं खिज्जदि जहा अप्पजलजुद-सरोवरो।**

क्षुद्र शीघ्र ही खिन्न होता है जैसे अल्पजलयुक्त सरोवर।

Mean or low people get irritated fast just like pond with little water.

क्षुधा

817. **जिदछुहो अप्पजइयो।**

क्षुधा को जीतने वाले आत्मजयी होते हैं।

Conquerors of hunger are self conquerors.

818. **छुहा विणस्सदि सण्णाणं धम्मज्झाणं च।**

क्षुधा सम्यग्ज्ञान और धर्म ध्यान को नष्ट कर देती है।

Hunger destroys right knowledge & right concentration.

819. **छुहाउला उज्झंति धीरं बलं साहसं विवेगं च।**

क्षुधाकुल बालक धैर्य, बल, साहस और विवेक त्याग देते हैं।

Ravenous kids sacrifice patience, strength, bravery & prudence.

820. **अण्णं रुच्चदि तिव्वछुहाए।**

तीव्र क्षुधा में अन्न अधिक रुचता है।

Strong hunger makes the meal delightful.

821. **अइतिव्वछुहा बाल-बुड्ढाणं।**

बालकों और वृद्धों की क्षुधा अतितीव्र होती है।

Hunger of children and old people is unbearable.

क्षुभित

822. **महासत्तजुदो णो खिज्जदि।**

महासत्व से युक्त क्षुभित नहीं होते।

Courageous doesn't get exasperated.

क्षमा

823. **दीणत्तं सीहेसु खमा पण्णगेसु य णो विज्जदे।**

शेरों में दीनता और सर्पों में क्षमा नहीं होती है।

Lions don't have humility and snakes don't possess forgiveness.

824. **खमंति-खामयंति तरंति भवसायरं।**

जो क्षमा करते हैं तथा कराते हैं वे संसार सागर पार करते हैं।

People who forgive and get forgive they cross

the ocean of the world.

825. **खमा वीर-भूसणं।**

क्षमा वीर पुरुषों का आभूषण है।

Apology is an ornament of courageous man.

826. **बहुहा धम्माणुरायी खमासीलो।**

बहुधा धर्मानुरागी लोग क्षमाशील होते हैं।

Mostly, pious people are forgiving.

827. **खमासीलस्स का चिंता?**

क्षमाशील को क्या चिंता?

What is there to worry for a forgiving person?

828. **खमा महप्पाणं सहजगुणो जहा सप्पीए् सणेहत्तं।**

क्षमा महात्माओं का सहज गुण है जैसे घी में स्निग्धता।

Forgiveness is the natural virtue of ascetics as oiliness in ghee.

829. **खमाए् भूसदि पुरिसा जहा मणिणा सप्पो।**

क्षमा से पुरुष विभूषित होते हैं जैसे मणि से सर्प।

Men are adorned by forgiveness as snakes with jewel.

830. **खमासीला रयणं व दुल्लहा।**

क्षमाशील रत्न के सदृश लोक में दुर्लभ हैं।

Forgiving people are very rare in the world as jewel.

831. **खमा-सत्थेण विणस्सदि वेरं।**

क्षमा रूपी शस्त्र से शत्रुता का नाश होता है।

Enmity is destroyed by the weapon of forgiveness.

832. **खमव्व ण को वि गुणो।**

क्षमा के समान कोई भी गुण नहीं है।

There is no virtue like forgiveness.

833. **सव्वं खमेदुं समत्था मुणी।**

सभी को क्षमा करने में मुनि समर्थ होते हैं।

Ascetics are able to forgive everyone.

गंधोदक

834. **जलं हु गंदोदयं जिणचरण-फासेण।**

जिन चरण के स्पर्श से जल गंधोदक हो जाता है।

Water becomes Gandhodak by touching feet of lord jina.

835. **गंदोदयं सुह-परिणाम-णिमित्तकारणं।**

गंधोदक शुभ परिणामों का निमित्त कारण होता है।

Gandhodak is the field cause of auspicious thoughts.

836. **गंदोदयं रोय-सोग-भय-दुह-हारग-हेदू।**

गंधोदक रोग, शोक, भय और दु:ख को हरने वाला हेतु है।

Gandhodak is the medium of destroying diseases, grief, fear and pain.

गंभीरता

837. **गंभीरिमं पहुत्त-लक्खणं।**

गाम्भीर्य प्रभुता का लक्षण है।

Profoundness is the symptom of greatness.

गति

838. **कम्मेण हु उच्च-णीय-गदी।**

कर्मवश ही जीव उच्च और नीच गति प्राप्त करता है।

Soul get high and low transit according to karmas.

839. **जहा मदी तहा गदी अंते।**

अन्तकाल में जिसकी जो मति होती है उसकी वही गति होती है।

At the time of death, one gets the same transit as he thinks.

गन्तव्य

840. **विणा खलेण चलदि सो गंतव्वं लहदि।**

बिना च्युत हुए जो चलता है वह गन्तव्य प्राप्त करता है।

One who moves without deviating, attains the aim.

गर्हा

841. **सग-दोस-णिंदणं गरहा।**

अपने दोषों की निन्दा करना गर्हा है।

Censure to own vices is 'Garha' (confessing before the master).

गीत

842. **वणमिग-चित्तहारगं सेट्ठ-गीदं।**

वही गीत उत्तम माना जाता है जो वन के मृग का चित्त हर लेता है।

Song which steals the heart of deer in forest is considered best.

गुण

843. **अउचित्तं गुणो सव्वेसुं पहाणो।**

औचित्य गुण सर्वगुणों में प्रधान है।

Propriety is chief in all virtues.

844. **चेयणं सिंगारेज्ज गुणेहि णो देहस्स मेत्तं।**

गुणों से चेतना का श्रृंगार करना चाहिए, देहमात्र का श्रृंगार मत करो।

Conscience should be adorned by virtues, don't adorn the body only.

845. **गुणा णो विणस्संति कया वि।**

गुण कदापि नष्ट नहीं होते हैं।

Virtues are never destroyed.

846. **गुणा सव्वत्थ पुज्जंते।**

गुण सर्वत्र पूजे जाते हैं।

Virtues are worshipped everywhere.

847. **गुणा गुणीहिं हु पुज्जंते।**

गुण गुणवानों के द्वारा ही पूजे जाते हैं।

Virtues are adored by virtuous people.

848. **गुणसेट्ठो लोए जेट्ठो।**

गुणों में श्रेष्ठ लोक में ज्येष्ठ है।

One who is best in virtues is eldest in the world.

849. **सरलदा सहजदा वि चेयणाए महागुणा।**

सरलता सहजता भी चेतना के महान् गुण माने जाते हैं।

Simplicity and naturality are also considered the great virtues of conscience.

850. **दोसेण विणा ण पुज्जा गुणा।**

दोषों के बिना गुण पूज्य नहीं होते।

Virtues are not venerable without vices.

851. **दोस-मज्झे गुणा पयासंति।**

दोषों के मध्य में गुण प्रकाशित होते हैं।

Virtues get brightened among vices.

852. **जिणगुणा गायदि सो सुट्ठु कंठो।**

वह ही श्रेष्ठ कण्ठ माना जाता है जो जिनेन्द्र के गुण गाता है।

Throat which eulogise Lord jinendra, is considered the best.

853. **सव्वणरेसु सुगुणकंखा होज्ज।**

सभी मनुष्यों में सुगुणों की आकांक्षा होनी चाहिए।

People should have desire of virtues.

854. **एगंततो ण किं वि वत्थुं सव्वगुणदोस-हीणं।**

एकान्तत: कोई भी वस्तु सर्वगुण-दोष हीन नहीं है।

Nothing is without virtues and vices from one side.

855. **सव्वत्थ पुज्जंते गुणा तत्तो गुणी वि।**

चूंकि गुण सर्वत्र पूजे जाते हैं इसीलिए गुणीजन भी।

Virtues are worshipped everywhere so virtuous people also.

856. **णो भासंति बहुगुणेसुं अप्पदोसा।**

बहुत गुणों में अल्पदोष नहीं दिखते।

Little faults doesn't seem in more virtues.

857. **पेम्मे गुणा णो वत्थुम्मि मेत्तं।**

गुण प्रेम में है न कि मात्र वस्तु में।

Virtue is in love, not only in thing.

858. **गुणेहिं गारवं ण वयेण।**

गुणों से गुरुता आती है न कि आयु से।

Superiority comes by virtues not by age.

859. **गुण-गुणीसु पूआठाणं ण दु भेसं वयं च।**

गुण गुणियों में पूजास्थान होते हैं न कि वेश और उम्र में।

Worship places are in virtues & virtuous people, not in dress and age.

860. **गुणो अणुराय-हेदू णो दोस-कारणं।**

गुण अनुराग का हेतु है न कि द्वेष का कारण।

Virtues are the cause of affection not of hate.

861. **गुण-धम्म-विहीणाणं जीवणं विफलं।**

गुण और धर्म हीनों का जीवन ही विफल है।

Life of vice and unrighteous people is fruitless.

862. **जदेज्ज गुण-गहणे आडंबरेहिं कि?**

गुण ग्रहण करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए, आडम्बरों से क्या प्रयोजन?

Efforts should be done for apperciating virtues, what is the purpose of vanity?

863. **गुणेहिं गारवं ण उच्चासणेण।**

गुणों से गुरुता होती है न कि उच्चासन है।

Superiority comes from virtues, not by high sitting.

864. **गुणा सव्वत्थ पुज्जंते ण दु गुणहीण-कुलं।**

गुण सर्वत्र पूजे जाते हैं न कि गुणहीन कुल।

Virtues are worshipped everywhere, not families without virtues.

865. **दूरत्थ-सज्जणाणं वि गुणा पुज्जा ण दु णियड-गुणहीणाणं।**

दूरस्थ सज्जनों के भी गुण पूज्यनीय हैं कि निकटस्थ गुणहीनों के।

Virtues are venerable of remotely situated virtuous people also, not of neighbouring vice people.

866. **एगठाणे सव्वगुणा णो चिट्ठंति जहा तारगा पुप्फगंधं च।**

एक स्थान पर सभी गुण नहीं रहते हैं जैसे तारे और फूलों की सुगंध।

All qualities don't exist at one place as stars & fragrance of flowers.

867. **रुक्खोव्व भिण्णा गुणा पुरिसाणं।**

प्रत्येक वृक्ष के समान पुरुषों के गुण भिन्न होते हैं।

Every man has different quality like every tree.

868. **सज्जणाणं गुणं पस्सेज्ज ण दु चम्म-वण्णं।**

सज्जनों के गुण देखने चाहिए न कि चमड़ी का वर्ण।

Virtues should be seen of virtuous people, not the skin colour.

869. **गुणी महप्पाणं गुणा माणंति।**

गुणीजन महात्माओं के गुणों का आदर करते हैं।

Virtuous people respect the virtues of saints.

870. **गुणेहिं भूसदि रूवो।**

गुणों से रूप विभूषित होता है।

Appearance become graceful by virtues.

871. **गुणुवेक्खाए विउल-धणं वि णो णंद-कारणं।**

गुणों की उपेक्षा से विपुल धन भी आनन्द का कारण नहीं होता।

By neglecting virtues, ample money can't be the cause of pleasure.

872. **एगो गुणो वि ढक्कदि सयलदोसा जहा कत्थूरी।**

एक गुण भी सकल दोषों को ढक देता है जैसे कस्तूरी।

One virtue can cover the whole vices as musk.

873. **गुणहीणदाए णिल्लज्जिमा जीवे।**

गुणहीनता जीव में निर्लज्जता पैदा करती है।

Vices generate impudence in a person.

गुणी

874. **गुणि-मज्झे उववसिदि भासदि गुणी।**

गुणीजनों के मध्य जो बैठता है वह गुणी भासित होता है।

One who sits among virtuous people seems virtuous people.

875. **गुणी गुणेसुं णिज्झंति।**

गुणीजन गुणों से प्रीति करते हैं।

Virtuous people love virtues.

876. **दोसा ण पस्सदि गुणत्थी।**

गुणार्थी दोषों को नहीं देखता।

Desirous of virtues doesn't see vices.

877. **दाणच्चण-तव-सील-जुत्तो कहं णो गुणी?**

दान, अर्चना, तप, शील से युक्त गुणी कैसे नहीं होता है?

A person who is endowed with charity, adoration, penance and decent character is virtuous?

878. **सुगुणी णिंददि णियदोसं परगुणं पसंसदि।**

सुगुणी हमेशा अपने दोषों की निंदा और परगुण प्रशंसा करता है।

Virtuous people always censure their own faults and praise others' virtues.

879. **गुणी दुहे वि उवयरदि।**

जो गुणयुक्त मनुष्य है वह दु:ख के काल में भी उपकार ही करता है।

Virtuous people show kindness at the time of sufferings too.

880. **गुणहीणो लहू गुणपुण्णो य वरो।**

गुणहीन लघु तथा गुणों से पूर्ण श्रेष्ठ माना जाता है।

People without virtues are considered to be inferior and those with virtues are considered to be the most eminent.

881. **जत्थ गुणवंतो माणणीयो सो कुलो वि जहा पंके पउमं आयारे वज्जं च।**

जिस कुल में गुणवान् पैदा होता है वह कुल माननीय हो जाता है जैसे कीचड़ में कमल और खान में हीरा।

The family in which a virtuous person takes birth becomes venerable just as lotus in mud and diamond in mine.

882. **अप्पगुणी वि सोहदि गुणि-संगेण।**

गुणियों के संसर्ग में अल्पगुणी भी शोभित होता है।

Even the less virtuous people get adorned because of the company of good people.

883. **गुणी गुणेहिं दिप्पदि लोगे।**

गुणी गुणों द्वारा लोक में चमकते हैं।

Virtuous people shine in the world because of their virtues.

884. **गुणी हु विणयसीला।**

गुणीजन ही विनयशील होते हैं।

Only virtuous people are courteous.

885. **सगकल्लाणत्थं गुणिं वंदेज्ज सया।**

स्वकल्याणार्थ गुणीजन की सदा वंदन करना चाहिए।

Homage should be paid to virtuous person for selfwelfare.

886. **गुणी गुणणुरत्तो य दुल्लहा सव्वलोयम्मि।**

गुणी और गुणानुरागी सर्वलोक में दुर्लभ हैं।

Virtuous and affectionate people are rare to find in the entire world.

गुप्ति

887. **मण-वयण-काय-गोवणं असुहजोग-णिवित्ती वा गुत्ती।**

मन-वचन-काय का गोपन अथवा अशुभयोग की निवृत्ति गुप्ति है।

Protection of mind, words and body or removal of unauspicious voilition is 'gupti'.

गुरु

888. **गुरुं विणा सिक्खा दुल्लहा।**

बिना गुरु के शिक्षा दुर्लभ है।।

Education is difficult to attain without a preceptor.

889. **अकारणेण हु पप्पोदि गुरु-दयादिट्ठी।**

गुरु की दयादृष्टि अकारण ही प्राप्त होती है।

Merciful sight of preceptor is obtained unaccountably.

890. **गुरुं विणा को णासेज्ज अण्णाणंधं?**

गुरु के बिना अज्ञान तम को कौन नष्ट कर सकता है?

No one can destroy the darkness of ignorance without preceptor.

891. **गुरु-णेहेण हु वंछा पुण्णा।**

गुरु के स्नेह से सभी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं।

He who is dearest to his preceptor, his all wishes are fulfilled.

892. **ण विज्जालाहो गुरु-सेवाए विणा।**

बिना गुरु की सेवा के विद्या का लाभ नहीं होता है।

Knowledge cannot be attained without service to preceptor.

893. **कुपह-णासगं गुरु-वयणं।**

गुरु वचन कुपथ के नाशक होते हैं।

Words of preceptor are the destructor of wrong paths.

894. **किं ण होदि गुरु-सेवाए?**

गुरु सेवा से क्या नहीं होता है?

What doesn't happen by service to preceptor?

895. **परमत्थमग्गे ठावगो गुरू हियंकरो।**

जो परमार्थ के मार्ग में स्थापित करता है वही गुरु हितकारक है।

One who leads on the path of transcendental is the well wisher of precrptor.

896. **तच्च-बोहगो वि गुरुव्व।**

जो कोई भी तत्त्वबोध देता है वह गुरु के समान ही माना जाता है।

One who gives knowledge of truth is considered to be a preceptor.

897. **णिग्गंथ-गुरुभत्ती तिलोयम्मि दुल्लहा।**

निर्ग्रन्थ गुरुभक्ति तीन लोक में दुर्लभ है।

Adoration of digamber (naked) saints is difficult to find in all the three worlds.

898. **परमट्ठेण गुरू हु सरणं।**

परमार्थ से एकमात्र गुरु ही शरण है।

Preceptor is the only shelter from ultimate point of view.

899. **गुरुं विणा को वि णो लहेदि पहु-देव-धम्म-सरणं।**

बिना गुरु के किसी भी मनुष्य को प्रभु (राजा), देव और धर्म की शरण प्राप्त नहीं होती।

A person cannot attain shelter of king, God and religion without preceptor.

900. **परमट्ठेण गुरू भगवो दंतो खंतो संतो मंतविद्दो दयाजुदो सुसीलो वयधरो पर-अत्थेहिं महाविरत्तो होज्ज।**

परमार्थ से गुरु भगवान्, जितेन्द्रिय, क्षमावान्, शान्त, मंत्रविद्, सर्व जीवों के प्रति दयायुक्त, सुशील, व्रतधारी, परपदार्थों से महा विरक्त रूप होना चाहिए।

From ultimate point of view a preceptor should be learned, conqueror of senses, forgiving, peaceful, knower of sacred verse, virtuous pious and detached.

901. **गुणेहिं गुरू हु गुरू।**

जो गुणों से गुरु (भारी) रूप होता है वह ही गुरु होता है।

Only, who has great virtues is a preceptor.

902. **परमट्ठेण पंचहा गुरू।**

परमार्थ से गुरु के पाँच भेद होते हैं।

There are five kinds of preceptor from ultimate view point.

903. **अरिहा सिद्धाइरियुवज्झाया साहू हि गुरू।**

अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु ही गुरु हैं।

Only Arihanta (destroyer of destructive karmas) Siddha (pure soul), Acharya, Upadhyaya and saints are preceptor.

904. **जहाजादा दियंबरा गुरू विसेसेण संसार-सरीर-भोगेहिं परम-विरत्ता।**

जो गुरु यथाजात दिगम्बर होते हैं वे विशेष रूप से संसार, शरीर, भोगों से परम विरक्त होते हैं।

Saints who are Digamber, they are detached from world, body and enjoyment.

905. **आइरिय-उवज्झाय-साहु-परमेट्ठी कलिकाले भगवोव्व।**

आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी कलिकाल में भगवान् रूप माने जाते हैं।

Acharya, Upadhyaya and sadhus are considered as God in this 'kali kal'.

906. **सिद्धा तित्थयराण पच्चक्खगुरू अण्ण-सामण्णाण परोक्खगुरू।**

सिद्ध, तीर्थंकरों के प्रत्यक्ष गुरु तथा अन्य सामान्य जीवों के परोक्ष गुरु होते हैं।

Siddhas are the direct preceptor of teerthankars and indirect preceptor of all other creatures.

907. **अरिहा सिद्धा हु भगवंता।**

अरिहंत सिद्ध ही भगवान् रूप होते हैं।

Arihant and siddhas are God.

908. **गुरुं विणा को वि सगलक्खं ण लहेदि।**

बिना गुरु के कोई जीव अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं करता।

No one can achieve one's aim without a preceptor.

909. **विज्जं कलं णाणं देदुं समत्थो हु तस्स खेत्तस्स गुरू।**

विद्या, कला, ज्ञान देने में समर्थ श्रेष्ठ नर ही उस क्षेत्र का गुरु है।

Only the person best in providing education, art and knowledge is the preceptor at that place.

910. **सिस्स-हिद-मग्गे गुरू हु परमणिमित्तं।**

शिष्य के हित के मार्ग में गुरु ही परम निमित्त होता है।

Preceptor is the supreme medium on the path of beneficence of disciples.

911. **जहा बीयं विणा तरू, णीरं विणा सरिदा, गंधं विणा पुप्फं, खीरं विणा सप्पी तहा गुरुं विणा सिस्स-णिम्माणं असंभवो।**

जिस प्रकार बीज के बिना वृक्ष, पुष्प के बिना गंध, दुग्ध के बिना घृत असंभव है उसी प्रकार गुरु के बिना शिष्य बनना असंभव है।

As seed without tree, fragrance without flowers, ghee without milk is impossible similarly being disciple without preceptor is impossible.

912. **तिलोए गुरू हु मंगल्लो उक्किट्ठो सरणभूदो सवर-पयासी सस्सदो णंददीवो णियसामी य।**

तीन लोक में मंगलमय, उत्कृष्ट, शरणभूत, स्वपर प्रकाशी, शाश्वत आनंददीप गुरु ही अपने स्वामी या मालिक होते हैं।

Preceptors auspicious, eminent, protector, lightening himself and other and eternal blissful lamp among all the world are their own masters.

913. **विणा गुरुवदेसेण को तरदि भवसायर?**

गुरु के उपदेश बिना कौन भवसागर पार करता है?

Who can cross the ocean of world without preceptor's preachings?

914. **गुरुवदेसे अप्पज्झाणे य रज्जेज्ज।**

गुरु के धर्मोपदेश और आत्मध्यान में रति करनी चाहिए।

One should be passionate about preceptor's preachings and self-meditation.

915. **गुरुचित्तं णो करेज्ज संकिलिट्ठं कयावि।**

कभी भी गुरु के चित्त को संक्लिष्ट नहीं करना चाहिए।

Preceptor's heart should never be distressed because of you.

916. **असिट्ठ-चेट्ठा गुरुं णियडे कयावि ण करेज्ज।**

अशिष्ट चेष्टाएँ गुरु के समीप कभी भी नहीं करनी चाहिए।

Ill mannered activities should never be done near preceptor.

917. **घणं विणा णो विट्ठी तहा गुरुं विणा ण णाणं।**

जैसे बादल के बिना वृष्टि नहीं होती वैसे ही गुरु के बिना ज्ञान नहीं।

Just as there is no rain without clouds, there is no knowledge without preceptor.

918. **पिदुव्व आढाएज्ज गुरुं।**

गुरु को पिता के तुल्य आदर देना चाहिए।

One should respect a preceptor like father.

919. **संदेह-वारणत्थं गुरुं विणयेण पुच्छेज्ज।**

संदेह निवारण के लिए गुरु से विनय के साथ पृच्छना करनी चाहिए।

For clearing your doubts question should be asked politely from your preceptor.

920. **बहुणाणी इंदो वि गुरुवयणं सद्धाए सुणदि तदा अप्प-णाणीणं का कहा?।**

जब बहुज्ञानी इन्द्र भी गुरुवचन को श्रद्धापूर्वक सुनता है तब अल्पज्ञानी की क्या कथा?

When learned indra can listen to the preachings of the preceptor faithfully then why can't the less learned?

921. **सिस्सुण्णदीए गुरुमाहप्पं वड्ढदि।**

जब शिष्य की उन्नति होती है तब गुरु का माहात्म्य वर्धित होता है।

Greatness of a preceptor increases when a disciple rises.

922. **गुरुजणा हु जाणंति गुरु-माहप्पं।**

गुरुओं का महत्व गुरुजन (श्रेष्ठजन) ही जानते हैं।

Only great people know the importance of preceptor.

923. **मोरा णंदंति मेहं पस्सिय तह गुरुं भत्ता।**

जैसे मेघ को देखकर मोर आनन्दित होते हैं वैसे ही गुरु को देखकर भक्त।

Just as peacocks rejoices from seeing the clouds devotees delights from seeing their preceptor.

924. **णिमित्तं विणा णो कज्जं संभवो जह गुरुं विणा णो सगहिदं।**

जैसे निमित्त के बिना कोई भी कार्य संभव नहीं है वैसे ही गुरु के बिना आत्महित।

Just as no work is possible without a medium like wise self-welfare is not possible without preceptor.

925. **णो आरामो विअसदि मालागारं विणा तह सुगुरुं विणा सिस्सो वि।**

जैसे माली के बिना उपवन विकसित नहीं होता वैसे ही सद्गुरु के बिना शिष्यों का पूर्ण विकास संभव नहीं है।

Just like a garden cannot bloom without a gardener, a student cannot develop without a good teacher.

926. **गुरू लहुचिंतणादो परो दुल्लहो य।**

गुरु लघुचिंतन से परे और दुष्प्राप्य होते हैं।

Preceptor is difficult to find and beyond lowers thoughts.

927. **गुरु-वयणं कज्जं चिंतणं दंसणं सवणं चेव गुरू।**

गुरु का वचन, कार्य, चिन्तन, दर्शन और श्रवण गुरु (भारी) ही होता है।

Preceptor's words, acts, thinking, vision and listening are always great.

928. **जहा विसालसायर-महागंथ-णिग्गंथ-अणंतायास-आदीण गूढरहस्सं गुणं लाहं लहिदुं समत्थो गुरू तहा गुरूणं गुणा वि।**

जैसे विशाल सागर, महाग्रन्थ, निर्ग्रन्थ, अनंत आकाश आदि के गूढ़ रहस्य, गुण, लाभ को गुरुजन प्राप्त कर सकते हैं वैसे गुरुओं के गुण भी।

As great people can know mystery of vast sea, scriptures, digamber saints, infinite sky etc. similarly virtues of preceptor also.

929. **गुरु-इंगिदं जाणेदुं समत्थो ण चुक्कदि सुहावसरं।**

गुरु के इशारों को जानने में जो समर्थ है वह सुअवसर को नहीं चूकता।

One who is able to know hints of a preceptor, never misses any good opportunity.

930. **गुरु-अभिप्पाय-णादू दुहादो छुट्टदि।**

गुरु के अभिप्राय को समझने वाला आपत्तियों से बच जाता है।

One who understands the intention of a preceptor saves himself from adversities.

931. **तित्थ-मूलं वि गुरू।**

तीर्थों का मूल भी गुरु है।

Preceptor is also the root of pilgrimage.

932. **गुरुसेवाए वड्ढंति वयो विज्जा सिरी कल्लाणं सत्ती कित्ती य।**

गुरु सेवा से आयु, विद्या, लक्ष्मी, कल्याण, शक्ति और कीर्ति बढ़ती है।

Age, knowledge, wealth, welfare, power and glory grow by serving preceptor.

933. **सण्णाणमसंभवो गुरुसेवं विणा।**

गुरुसेवा के बिना सद्ज्ञान असंभव है।

Right knowlege is impossible without service to preceptor.

934. **विणय-सेवाजुत्त-सिस्सं गुरू सिक्खावदि सेट्ठविज्जं रहस्सं च।**

विनयशील सेवायुक्त शिष्य को गुरु श्रेष्ठ विद्या और रहस्य बताते हैं।

Preceptor gives best knowledge & secrets to courteous serving disciple.

935. **णिस्संका गुरु-आणा।**

गुरु आज्ञा निश्चय से निःशंक होती है।

Order of preceptor is undaunted.

936. **सिस्सा लहंति गुण-धम्म-णाणं च गुरुवासणाए।**

गुरु उपासना से शिष्य गुण, धर्म और ज्ञान प्राप्त करते हैं।

Disciples get virtues, religion and knowledge by worshiping preceptors.

937. **भव्वा लहंते णाणं गुरुसेवाए।**

गुरुसेवा से भव्य ज्ञान प्राप्त करते हैं।

Accomplishable souls gain knowledge by serving preceptor.

938. **गुरु-महिमा अगम्मा।**

गुरु की महिमा अगम्य है।

Glory of preceptor is said incomprehenisble.

गुरुभक्ति

939. **गुरुभत्ती सेयणुबंधणं।**

गुरुभक्ति कल्याण का अनुबंधन है।

Adoration of preceptor is an agreement of welfare.

940. **कामधेणुव्व गुरुभत्ती सव्वकंखापूरगा।**

गुरुभक्ति कामधेनु के समान सर्व आकांक्षा पूरी करने वाली है।

Worship of preceptor is able to fulfill all desires like the cow of plenty.

941. **महेभादु णो विहदि सीह-वच्छो तहा आपद-पिसल्लादु गुरुभत्तो।**

जैसे सिंह का बच्चा भी स्थूलकाय हाथी से नहीं डरता वैसे गुरुभक्त आपत्ति रूपी पिशाच से।

Just as lion's cub is not afraid of huge elephant like wise a devotee of preceptor is not afraid of demon of adversity.

942. **गुरुभत्ती संजम-भूसणं।**

गुरुभक्ति संयम का आभूषण है।

Adoration of preceptor is an ornament of self-re-straint.

गृह

943. **गेहं वणं व जत्थ बाला ण किड्डंति।**

जहाँ बालक नहीं खेलते वह घर वन के समान है।

That home is like a forest in which children do not play.

944. **गिहत्थ-गिहं होज्ज सच्छं पूदं सुववत्थिदं च।**

गृहस्थ का घर स्वच्छ, पवित्र और समुचित व्यवस्थित होना चाहिए।

Home of a householder should be sacred, clean and arranged.

945. **अज्जो णो वासेज्ज जत्थ गिहे ण पेम्म-ईसुवासणा-विस्सास-विणय-मज्जादा य।**

जहाँ प्रेमभाव, ईशोपासना, विश्वास, विनय और मर्यादा नहीं होती है उस घर में आर्यों को नहीं रहना चाहिए।

Where there is no love, adoration, faith, courtesy and custom then noble people should not live there.

946. **जम्मि गिहे णारि-मज्जादा णो तम्मि गिहे सुहसंती दुल्लहा।**

जिस घर में नारियों की मर्यादा नहीं होती है उस घर में सुख शान्ति दुर्लभ है।

Where there is no dignity of ladies then tranquility is diffucult in that home.

947. **वसंति गो-महिसि-आइ-पसू तवेदिगाइ-महारोया णो तत्थ गिहे।**

जिस घर में गाय, भैंस आदि पशु रहते हैं उस घर में टी.बी. (क्षयरोग) आदि महारोग नहीं होते।

House in which cows, buffaloes etc animals live then T.B. and other epidemics don't exist there.

948. **बाला णो किड्डंति णंदंति तत्थ गिहे धम्माणुट्ठाणं पुण्णफलं ण देदि।**

जिस घर में बालक न खेलते, न आनन्दित होते उस घर में किया हुआ धर्मकार्य अनुष्ठान पूर्ण फल देने में समर्थ नहीं होता।

Religious work, worship and obligation are not capable to give their whole fruit in such home in which children do not play, laugh and get delighted.

949. **जत्थ मादु-णेहो भज्जा-पीदी बाल-वच्छलं च विज्जदे तं खलु गिहं।**

वह घर ही घर है जिसमें माता का स्नेह, भार्या की प्रीति, बच्चों का वात्सल्य रहता है।

That home is home where love of mother, fondness of wife and affection of children exist.

950. **गिहत्थाणं गिहं वि धम्म-कारणं।**

गृहस्थों के लिए घर भी धर्म का कारण है।

Home is also the cause of religion for householders.

951. **जत्थ जणा णेहेण वसंति गिहं तं।**

जहाँ लोग स्नेह से रहते हैं उसे घर कहते हैं।

Where people live with affection is considered as a home.

952. **गिहं णो उज्झदि णरं सगकल्लाणत्थं णरो उज्झेज्ज गिहं।**

घर मनुष्य को नहीं छोड़ता स्वकल्याण के लिए मनुष्य को घर छोड़ना चाहिए।

Home doesn't leave people, people should leave home for self-welfare.

गृहिणी

953. **णो गिहं, गिहिणी हु गिहं।**

घर को घर नहीं कहो गृहिणी को ही घर कहो।

Only wife is said home not lodge.

954. **सगिहिणी गुहा रुक्खमूलं वि गेहं।**

गृहिणी सहित गुफा या वृक्ष का मूल भी घर है।

Cave or hollow is also a house with a wife.

955. **दुट्ठ-गिहिणीए सह को लहदि वरं सुहं?**

दुष्ट गृहिणी के साथ कौन श्रेष्ठ सुख को प्राप्त करता है?

Who can attain immense happiness with wicked wife?

956. **कुगिहिणी पीडयरा णवग्गहादो।**

एक कुगृहिणी नवग्रह से अधिक पीड़ाकारक होती है।

A wicked wife gives pain more than nine planets.

गृहस्थ

957. **दंपत्तीणं सम-सहावो वि गिहत्थधम्मो।**

दम्पत्तियों का सम स्वभाव भी उनका गृहस्थ धर्म है।

Alike nature of couples is also their lay adherents' religion.

958. **गिहत्थसुद्धचित्तं हु धम्म-कारणं।**

गृहस्थों का शुद्धचित्त ही धर्म का कारण है।

Pure heart of lay adherents is the cause of religion.

959. **सुहप्पवित्ति-मग्गो गिहत्थधम्मो।**

शुभप्रवृत्ति का मार्ग गृहस्थ धर्म है।

Path of auspicious action is religion of lay adherents.

960. **गिहत्थजीवणं संसार-वड्ढगं।**

गृहस्थ जीवन संसार वर्धक है।

Family life is world formant.

961. **कत्तव्वसीलो धम्मणिट्ठो गिहत्थो सव्वधम्माहारो।**

कर्तव्यशील धर्मनिष्ठ गृहस्थ सभी धर्म का आधार है।

Dutiful pious layman is the base of all religion.

962. **सव्वहिद-भावणा वि गिहत्थधम्मो।**

सभी के लिए हितभावना भी गृहस्थ धर्म है।

Benevolent feelings for all is also lay adherents' religion.

963. **विणा इत्थीए णो गिहत्थो।**

बिना स्त्री के गृहस्थ भी गृहस्थ नहीं है।

Householder is not also a house holder without a life.

964. **गिहत्थाणं कत्तव्वाणि णो कयावि णिस्सेसाणि।**

गृहस्थों के कर्त्तव्य कभी भी नि:शेष नहीं होते (अनन्तकामनाएँ होने से।)

Duties of house holders never get completed because of infinite desires.

965. **कम्म-धम्म-तवोभूमी य गिहं हु गिहत्थाणं।**

गृह ही गृहस्थों की कर्म, धर्म और तपोभूमि है।

Home is act, religion and austerity land of house holder.

966. **गिहत्थो सव्वासमाहारो।**

गृहस्थ सभी आश्रमों का आधार है।

House holder is the base of all ashrams.

गौ (गाय)

967. **गो-धणं वि रट्ठ-वड्ढगं।**

गोधन भी राष्ट्र का संवर्धक है।

Cow-wealth also develops the nation.

968. **गो जत्थ सुहं तत्थ।**

जहाँ गाय रहती है वहाँ सुख होता है।

Where there are cows, there is pleasure.

969. **विणा गोरसं किं रसो भोयणे?**

बिना गौरस के भोजन में क्या रस?

Where is taste in the meal without cow products.

970. **गो देह-पोसगो णराणं।**

गाय मनुष्यों के शरीर की पोषक होती है।

Cow nourishes human body.

चक्रवर्ती

971. **णवणिहि-चउदस-रयण-सामी छक्खण्डाहिवदी चक्कवट्टी।**

नवनिधि, चौदह रत्नों का स्वामी षट्खण्डाधिपति चक्रवर्ती है।

Owner of nine treasures and forteen jems is 'Chakravarti' who is the king of six parts of Bharat Kshetra.

972. **अतुट्ठा सक्क-चक्की वि दुक्खं लहंति सव्वदा।**

असंतुष्ट इन्द्र व चक्रवर्ती भी सर्वदा दु:ख पाते हैं।

Unsatisfied Indra and sovereign king also suffer pain always.

चतुर

973. **इंगिदेण हु परभावा जाणदि चदुरो।**

संकेत से ही दूसरों के भावों को जो जान लेता है वह चतुर होता है।

People who come to know others' feelings by indications only, are clever.

974. **वागपडू ववहारकुसलो य चदुरो।**

वाक्पटु और व्यवहार कुशल चतुर होता है।

Eloquent and practical person is skilled.

975. **उहयलोय-खेमंकरा सेट्ठा चदुरिमा।**

दोनों लोकों का क्षेम करने वाली चतुराई श्रेष्ठ है।

Cleverness which do well for both worlds, is best.

चारित्र

976. **रिजुकज्जं सच्चत्तं च सच्चरिय-लक्खणं।**

ऋजु कर्म (सरलता) और सत्यता यह सच्चरित्र के लक्षण हैं।

Simplicity & truthfulness are the characteristics of good conduct.

977. **चरियेण जाणिज्जदि णरो पूदियरो वा।**

व्यक्ति पवित्र है या अपवित्र यह चरित्र से जाना जाता है।

If man is holy or not, is known by his character.

चिंतन

978. **जो जं अवत्थं चिंतदि होदि तहेव।**

जो जिस अवस्था का चिंतन करता है वह वैसा ही हो जाता है।

One who thinks about a state, becomes like that.

979. **जह चिंतदि तह अणुभवदि।**

जिस भाव से चिंतन किया जाता है वह अनुभव में आता है।

From which intention one thinks, one feels the same.

980. **सत्तू वि मित्तं व मित्तबुद्धीए।**

मित्र बुद्धि से चिंतन करने से शत्रु भी मित्र के समान लगता है।

Enemy also become friend by thinking from friendly-mind.

981. **विसो वि अमियमिव अमियबुद्धीए।**

यदि अमृत बुद्धि से चिंतन किया जाए तो विष भी अमृत हो जाता है।

Poison also becomes nectar if thought from nectar like mind.

982. **जहा चिंतदि तहा होदि।**

जो जैसा सोचता है, वैसा हो जाता है।

As one thinks, so one becomes.

चिंता

983. **परचिंताए विणस्सदि तच्च-चिंतणं वेरग्गं च।**

पर की चिंता से तत्त्वचिंतन और वैराग्य नष्ट होता है।

Thinking over reality and detachment gets destroyed from others' apprehension.

984. **चिंता चित्त-दुक्ख-कारणं।**

चिंता चित्त के दु:ख का कारण है।

Disquietude is the cause of grief of heart.

985. **चिंता वि लहु-मिच्चू।**

चिंता भी छोटी मृत्यु है।

Tension is like a short death.

986. **चिंतव्व णो को वि रोयो।**

चिंता के समान कोई रोग नहीं है।

There is no disease like tension.

987. **चिंता-जरो णासदि छुहं णिद्दं सत्तिं च।**

चिंता ज्वर है जो क्षुधा, निद्रा और शक्ति का नाश करती है।

Tension is like a fever which destructs hunger, sleep & strength.

988. **महप्प-वयणं हु चिंतोसही।**

महात्माओं के वचन ही चिंताओं की औषधि हैं।

Words of great souls are the medicine for tension.

989. **चियगा दहदि णिज्जीवं चिंता देहिं च।**

चिता निर्जीव को जलाती है और चिंता देहधारी (सजीव) को।

Funeral pyre burns dead but tension burns living beings.

990. **वड्ढदि हसदि चिंता जल-कल्लोलोव्व।**

जल की तरंगों की तरह चिंता घटती बढ़ती रहती है।

Tension increases and decreases like waves of water.

991. **अंतरेण णासदि चिंता णरा जहा अण्णं घुणो।**

चिंता मनुष्यों को अंतरंग से नष्ट करती है जैसे अन्न को घुन।

Tension destroys the person from inside just as worm to food.

992. **वड्ढणेण वड्ढदि चिंता।**

चिंता बढ़ाने से बढ़ती है।

Tension increases by increasing it.

993. **चिंता जरा-कारणं।**

चिंता बुढ़ापे का कारण है।

Tension is the cause of old age for persons.

चित्त

994. **सरोव्व जलबिंदुव्व चित्त-परिणदी जस्स सो सरलो।**

तीर या जलबिन्दु वत् जिसके चित्त की परिणति है वह सरल है।

Modification of whose heart is like an arrow or water drop is a simple man.

995. **भाव-मलिणदा हु चित्त-मलिणदा-हेदू।**

भावों की मलिनता ही चित्त की मलिनता का कारण है।

Impurity of thoughts is the cause of impurity of heart.

996. **फलेच्छाणुसारेण चित्तभूमीए वीयं ववेज्ज।**

जैसा फल चाहते हो चित्त की भूमि पर वैसे बीज बोओ।

Grow seeds like you want on the heart's land.

997. **चित्तस्स सदुवजोगं करेज्ज।**

चित्त का सदुपयोग करना चाहिए।

One should make use of one's heart.

998. **णेह-सोग-उव्विग्ग-चित्ते कहं तच्चचिंतणं?**

जिसका चित्त स्नेह और शोक से व्यथित है उसके चित्त में तत्त्वचिंतन कैसे संभव है?

One whose heart is caught in affection and grief, how analysis of reality is possible there.

999. **खुद्ध-चित्तेसुं सुहाणुभूदी कहं?**

क्षुभित चित्तों में सुखानुभूति कैसे हो सकती है?

How feelings of pleasure can be present in distressed hearts?

1000. **चित्ताणंददायगा हु महाविभूदी।**

चित्त को आनंद देने वाली महाविभूति कहलाती है।

That is called great prosperity which gives pleasure to heart.

1001. **संतचित्ते णाण-जोदी पयजलदि।**

शान्त चित्त में ज्ञान की ज्योति प्रकाशित होती है।

Radiance of knowledge enlightens in peaceful heart.

1002. **कुडिला वि चित्तगदी।**

चित्त की गति कुटिल भी होती है।

Motion of heart is also crooked.

1003. **पवित्त-चित्तमंतो हु संतिं लहदि।**

जिसके चित्त में पवित्रता होती है वह मनुष्य नियम से शान्ति प्राप्ति करता है।

That man get tranquility whose heart is sacred.

1004. **संतचित्तं णियदंसणं होदि।**

जिसका चित्त शांत है उसको निजदर्शन संभव है।

Self-vision is possible for him whose heart is peaceful.

1005. **को ण जाणदि ववहारेण चित्तवित्ती?**

व्यवहार से चित्त की वृत्ति को कौन नहीं जानता?

Who doesn't know the tendency of heart practically?

1006. **अथिर-चित्ताणं अद्धुवं मित्तं।**

अस्थिर चित्त वालों के मित्र अध्रुव हैं।

Friends are unfixed (doubtful) for unstable minded.

1007. **अथिरचित्ताणं कज्जं णट्ठदि।**

अस्थिर चित्त वालों का कार्य नष्ट हो जाता है।

Work of unstable minds get destroyed.

1008. **चित्तं हु णरो णो अण्णो किं वि।**

चित्त ही मनुष्य है और कुछ नहीं।

Heart is nothing but man.

1009. **रायाइ-दूसिदं चित्तं हु संसारो।**

रागादि भावों से दूषित चित्त ही संसार है।

Impure heart with attachment and other feelings is world.

1010. **चेयण-जुदा सव्वजीवा।**

सभी जीव चेतन युक्त होते हैं।

All creatures have consciousness.

1011. **पसण्ण-चित्तमंतो हु कुसलबुद्धी।**

प्रसन्नचित्त वाला ही कुशलबुद्धि है।

Only a delighted person is wise.

1012. **विविहरूवो हु चित्त-वित्ती।**

चित्त की वृत्ति ही विविध रूप है।

Tendency of heart is varied.

1013. **हिदंकरं ढुंढुल्लदि पसण्णचित्तमंतो।**

प्रसन्नचित्त हितकर को खोजता है।

Delighted heart looks for a benevolent person.

1014. **संकिलिट्ठ-चित्तं पस्सदि सत्तुं।**

संक्लिष्ट चित्त शत्रु को देखता है।

Depressed mind looks for an enemy.

1015. **णाण-पवणेण चित्त-णदीए विआर-कल्लोला उप्पज्जंति।**

ज्ञान की पवन के द्वारा चित्त रूपी नदी में विचार रूपी लहरें उत्पन्न होती हैं।

Waves of thoughts generate in the river of heart by the air of knowledge.

1016. **चित्तं हु भव-सिव-कारणं च।**

चित्त ही संसार और मोक्ष का कारण है।

Mind is the cause of transmigration & liberation.

1017. **सत्थ-चित्ते बुद्धी फुट्टदि हु।**

स्वस्थ चित्त में ही बुद्धि स्फुरायमान होती है।

Intelligence develops only in a sound mind.

1018. **दुग्गमो चित्त-णिग्गहो।**

चित्त का निग्रह दुर्गम है।

Prevention of heart is difficult.

1019. **चित्तं मूक-बहिराणं वि णाण-कारणं।**

चित्त गूंगे और बहरों के लिए भी ज्ञान का कारण है।

Heart is the cause of knowledge for dump and deaf too.

चित्रकला

1020. **चित्तकला वि धम्म-कामट्ठ-सिवदा।**

चित्रकला धर्म, काम, अर्थ और मोक्ष को देने वाली है।

Art gives religion, worldly pleasure, money and emancipation.

चेष्टा

1021. **विचित्ता हु मत्त-चेट्ठा।**

मदहोश व्यक्ति की चेष्टाएँ विचित्र होती हैं।

Activities of tippled person are peculiar.

1022. **सेट्ठस्स चेट्ठा सेट्ठा।**

महापुरुष की चेष्टा महान् ही होती हैं।

Activities of great man are great.

1023. **णाणा-जीवाणं चेट्ठा विचित्ता।**

संसार में नाना जीवों की चेष्टा विचित्र है।

Activities of different creatures are different in the world.

चेहरा

1024. **वक्कं वंजदि चित्त-भावा।**

मुख चित्त के भावों को अभिव्यक्त करता है।

Face expresses the feelings of heart.

1025. **सज्जणाणं वक्कं अइसंतो।**

सज्जनों का चेहरा अतिशांत होता है।

Face of virtuous person is very peaceful.

1026. **कुडिलाण वक्कं अदिसंतो भासदि।**

कुटिलों का चेहरा मात्र अतिशांत दिखता है।

Face of crooked people only seems very peaceful.

चोरी

1027. **परवत्थुं अदत्तगहण-भावो चोरिअं।**

दूसरे की वस्तु बिना दिए ग्रहण करने का भाव चोरी है।

Taking others' things without being given is theft.

1028. **चोरकम्मेण अवस्सं होदि पावबंधो।**

चोर कर्म से अवश्य ही पापबंध होता है।

Sinful karmas get bounded by stealing.

1029. **चोरकम्मलीणं ण कोवि देदि आसयो।**

चोर कर्म में लीन को कोई भी आश्रय नहीं देता।

No one give shelter to the person who is engrossed in stealing.

1030. **चोरिअ-चागेण विणा ण पुण्णं अहिंसा वदं।**

चौर्य का त्याग किये बिना अहिंसा व्रत पूरा नहीं होता है।

Non-violence doesn't complete without giving up stealing.

जनक

1031. **जणगो संमाणणीयो सव्वत्थ सव्वकाले।**

सर्वत्र और सर्वकाल में पिता सम्माननीय होते हैं।

Father is venerable everytime and everywhere.

1032. **परमप्पा वि जणगो के वि मण्णंते।**

कुछ लोग परमात्मा को भी पिता मानते हैं।

Some people also consider God as father.

1033. **ते दुल्लहा लोए जणगं वि परमप्पव्व मण्णदे।**

वे लोग भी लोक में दुर्लभ हैं जो पिता को भी परमात्मा के समान मानते हैं।

People who consider father like a God are rare in the world.

1034. **जणगं विणा पुत्तो असंभवो कत्थ वि कया वि।**

किसी भी काल और क्षेत्र में पिता के बिना पुत्र संभव नहीं।

Son can't take birth without father at anytime and anywhere.

1035. **जणगो वंस-ठावगो।**

पिता वंश का संस्थापक होता है।

Father is the founder of family.

1036. **जणग-सेवगो सया सुह-संपण्णो।**

पिता का सेवक सदा सुख-सम्पन्न रहता है।

One who serves his father remains forever happy.

1037. **जणगस्स णिस्संकिदा णिक्कंखा मणोणुकूला वित्ती सेवा।**

पिता की नि:शंकित निष्काम मनोनुसारिणी वृत्ति सेवा है।

Undaunted & desireless tendency according to father is actual service to a father.

1038. **सुदाए णेहाहियो जणगस्स।**

पिता का पुत्री के प्रति स्नेह अधिक होता है।

Father has more love towards daughter.

जननी (माता)

1039. **को कंखदि जणणि-जम्मभूमीण चागं?**

जननी और जन्मभूमि का त्याग कौन चाहता है?

Who wants to leave his mother and mother land?

1040. **णो जम्मं मेत्तं सुसक्कारं वि देंति सेट्ठ-पियरं।**

मात्र जन्म ही नहीं अपितु जो सुसंस्कार भी देते हैं वे श्रेष्ठ माता-पिता हैं।

Parents who don't only give birth but also give good teachings are best.

1041. **मादू पिदू वि इयर-देवदा।**

माता-पिता भी इतर देवता हैं।

Parents are also like god.

1042. **मादु-हिअयं मक्खणादु अइमिदू।**

माता का हृदय मक्खन से अधिक कोमल होता है।

Heart of a mother is softer than butter.

1043. **सगभुण्ण-घादागा मादू हु महापावंसा।**

स्वभ्रूण की घातिका माता महापापिनी ही है।

A mother who kills her foetus is heinous sinner.

1044. **मादू जादि-पदीगं।**

माता जाति की प्रतीक है।

A mother is the symbol of caste.

1045. **णो कोडिहियेसु मादु-वच्छलं।**

करोड़ मनुष्यों के हृदय में एक माता का वात्सल्य असंभव है।

Affection of a mother is impossible in the hearts of billions of people.

1046. **ममत्तं मादु-लक्खणं।**

ममता माता का लक्षण है।

Affection is the symbol of a mother.

1047. **सम्म-मादू सहस्सेसु वरा।**

सम्यक् माता सहस्र नरों से भी श्रेष्ठ होती है।

Rightious mother is better than thousands of men.

1048. **मादाए रिणं पुण्ण-करिदुं को समत्थो?**

माता के ऋण को पूरा करने में कौन समर्थ है?

Who is able to get free from mother's debt?

1049. **मादु-संमुहे सग्गभूमी वि णीरसा।**

माता के सम्मुख स्वर्ग की भूमि भी नीरस है।

Land of heaven is even insipid in front of mother.

जन्म

1050. **णवसरीर-गदि-जीवण-गहण-किरिया जम्मो।**

नया शरीर, गति, जीवन ग्रहण की क्रिया जन्म है।

Gaining new body, transit and life is birth.

1051. **णवदेह-संपत्ती जम्मो।**

नवदेह की सम्प्राप्ति जन्म है।

Attaining new body is birth.

1052. **एक्कलो जम्मदि जीवो मरदि वि एक्कलो।**

जीव अकेला ही जन्म लेता है और अकेला ही मरण को प्राप्त होता है।

Living beings take birth and die alone respectively.

1053. **जसकित्ति-रहिदं जम्मं णिग्गंधपुप्फमिव।**

यश, कीर्ति से रहित जन्म गंध रहित पुष्प के समान है।

Life without glory is like fragranceless flower.

1054. **जम्म-मिच्चु-जरातंक-भया को ण लहदे?**

जन्म, मृत्यु, जरा, आतंक से भय कौन प्राप्त नहीं करता?

Who dosen't afraid of birth, death, old age & terror?

जन्मभूमि

1055. **जम्मभूमी विदिया मादू।**

जन्मभूमि भी दूसरी माता है।

Nativeland is the second mother.

1056. **जम्मभूमी मादुव्व पुज्जा।**

जन्मभूमि माता के समान पूज्य है।

Nativeland is venerable like mother.

1057. **पिदरं जम्मभूमी धम्मो मज्जादा य सग्गादो वि सुट्ठु।**

जनक-जननी, जन्मभूमि, धर्म और मर्यादा स्वर्ग से भी श्रेष्ठ माने जाते हैं।

Father, Mother, nativeland, religion and dignity are considered better than heaven.

जमाता

1058. **कण्णारासीए जामादू दसमो गहो।**

कन्या राशि पर जमाता दसवाँ ग्रह है।

Son-in-law is tenth planet on a girl.

जल

1059. **जलं हु जीव-जीवणं।**

जल ही प्राणी का जीवन है।

Water is the life of the creatures.

1060. **तिसं णो हरेदि तं कहं णीरं?**

जो पिपासा को शान्त न करे वह जल कैसे माना जाता है?

The liquid which cannot quench your thirst is not water?

1061. **जलं व जस्स देहं सो जलकाइयो।**

जल ही जिसका शरीर है वह जलकायिक जीव है।

Whose body is water is called water bodied organisms.

1062. **जस्स णेत्तेसु णो जलं णेत्ताणि णिप्फलाणि।**

जिसकी आँखों में जल नहीं है वह आँखें निष्फल हैं।

Those eyes are useless in whose eyes there is no water (shyness).

जाति

1063. **णाणुप्पण्णा जादी अजरा अमरा य।**

ज्ञान से निष्पन्न जाति अजर और अमर है।

Learned caste is changeless and immortal.

1064. **जदणायरेण जादिं कुलं धम्मं च रक्खेज्ज।**

यत्नपूर्वक आचरण से जाति, कुल और धर्म की रक्षा करनी चाहिए।

Caste, family and religion should be protected by good conduct.

जाया

1065. **पुत्ताइ-जम्मेण जाया।**

पुत्रादिक को जन्म देने से जाया नाम सार्थक है।

'Jaya' name is meaningful because of giving birth to a child.

जितेन्द्रिय

1066. **जिएंदियो भयव-अणुयरो।**

जितेन्द्रिय भगवान् का अनुचर है।

One who conquers the senses is the follower of God.

1067. **जिएंदियो धीरो संतो सवर-किलेस-हारगो।**

जितेन्द्रिय धीर, शान्त और स्व पर क्लेश को हरने वाला है।

Conqueror of the senses is patient, peaceful and destroyer of self and others pain.

1068. **सव्व-वसण-विमुत्तो हु जिएंदियो।**

सर्वव्यसनों से विमुक्त ही जितेन्द्रिय है।

Free from all bad habits is conqueror of the senses.

1069. **जिएंदियो सया सुही।**

जितेन्द्रिय सदा सुखी है।

Conqueror of senses is always happy.

1070. **जिएंदियाणं ण को वि सत्तू।**

जितेन्द्रियों के लिए कोई भी शत्रु नहीं है।

There is no enemy of conqueror of senses.

1071. **कंखिदत्थे वि णो करेदि सीग्घदा जिएंदियो।**

जितेन्द्रिय इच्छित पदार्थ में भी जल्दबाजी नहीं करते हैं।

Conqueror of the senses doesn't jump the gun even in desirous things too.

1072. **जिएंदियो महासूरो।**

इंद्रियविजयी महाशूर है।

Victor of senses is valiant.

1073. **जिएंदियो इंदिय-विसयं विसोव्व मण्णदे।**

जितेन्द्रिय इंद्रियविषय को विष रूप ही मानता है।

Conqueror of senses considers worldly pleasures like poison.

1074. **जिएंदियाणं सया सव्वत्थ सग्गो।**

जितेन्द्रियों के लिए सदा सर्वत्र स्वर्ग है।

Heaven is everywhere for victor of senses.

1075. **जिएंदिय-महिमा अपुव्वा।**

जितेन्द्रिय पुरुष की महिमा अपूर्व है।

Glory of conqueror of senses is unprecedented.

जिन

1076. **तिव्वपापमसंभवो जिणं समीवे।**

जिन के समीप तीव्र पाप असंभव है।

Heinous sins are impossible near 'jina'.

जिनधर्म

1077. **जिणधम्म-संपत्ती दुल्लहा लोए।**

लोक में जिनधर्म की प्राप्ति दुर्लभ है।

Jainism is difficult to attain in the world.

जिनवचन

1078. **जिणवयणं परमोसही कम्मरोय-विणासगा।**

जिनवचन ही कर्मरूपी रोग की विनाशक परमौषधि है।

Preachings of jina are the remedy for destroying disease of karmas.

1079. **जिण-वयणं हु पमाणं।**

जिनेन्द्र के वचन ही प्रमाण हैं।

Only the words of jinendra are authentic.

1080. **जिणवयणे वि संकदि संकिलिट्ठ-धीमंतो ।**

जिसकी बुद्धि संक्लिष्टता से युक्त है वह जिनवचन में भी शंका करता है।

One whose mind is distressed, doubts the words of 'Jina' too.

1081. **पावभारेण जीवो दुग्गदिं लहदि।**

पाप के भार से जीव दुर्गति को प्राप्त करता है।

Worldly beings get abjection due to sin.

1082. **विवेकहीणा ण मणंते हिदंकरं वि जिणवयणं।**

जिनवचन को विवेकहीन हितकर नहीं मानते।

Imprudent people don't consider words of jina benevolent.

1083. **जिणोव्व जिणवाणी-णिग्गंथ-गुरू वि पुज्जा।**

जिनेन्द्र के समान जिनवाणी और निर्ग्रन्थ गुरू भी पूज्य होते हैं।

Preachings of jina and digamber saints are also

venerable like lord jina.

जीव

1084. **आउ-वसेण जीवदि जीवो।**

जीव आयु के वश होकर जीता है।

Worldly soul lives in subjection of age.

1085. **सहायेणं विणा जीवो असमत्थो हु सव्वदा।**

सहायक के बिना जीवन सर्वदा असमर्थ ही होता है।

Living soul is always incapable without helper.

1086. **जीवो धम्म-भावेणं कज्जेणं वा उच्चपयं लहदि सया।**

जीव धर्म भाव या कर्म से सदा उच्चपद को प्राप्त करता है।

Living soul attains always high post through religious feelings and actions.

1087. **लोए सव्वजीवा परोप्परे उवसंगहंति।**

लोक में सर्वजीव परस्पर उपकार करते हैं।

All creatures show kindness reciprocally in the world.

1088. **पत्तेयं जीवो अणाइ-कालेणं कम्म-बद्धो।**

प्रत्येक जीव अनादिकाल से कर्मबंधन से बंधा है।

Every soul is bounded with karmas from beginning less period.

1089. **णिय-परिणाम-फलं भुंजदि जीवो।**

जीव अपने परिणामों का फल भोगता है।

Worldly soul endures the fruition of his own deeds or feelings.

1090. **दुक्खमेव लहदि जीवा दुक्कम्मादु।**

बुरे कर्मों से जीव दु:ख ही प्राप्त करता है।

Worldly soul only get pains by sinful karmas.

1091. **णिक्कम्मे एक्कल्लो जीवो लहदि णिव्वाणं।**

निष्कर्म होने से जीव अकेला ही निर्वाण को प्राप्त करता है।

After getting free from karmas soul gets liberated alone.

1092. **आसाए जीवदि जीवो णो धण-तण-बल-मित्तेहि य।**

आशा से ही जीव जीता है न कि धन, तन, बल और मित्र से।

Worldly soul lives through hope not through wealth, body, strength and friend.

1093. **असंखपदेसा धम्माधम्मेसु जीवम्मि य।**

धर्म-अधर्म और एक जीव में असंख्यात प्रदेश होते हैं।

There are innumerate particles in ether fluent, nonether fluent and a soul.

1094. **एगम्मि जोणि-उप्पण्णा बे जीवा वि भिण्णा जहा रावणो विभीसणो य।**

एक योनी में उत्पन्न दो जीव भी भिन्न होते हैं जैसे रावण और विभीषण।

Two children are also different even if born from one womb as Ravana & Vibhishana.

1095. **जीवो जीवाणं सुह-कारणं होज्ज।**

जीव जीवों के सुख का कारण होना चाहिए।

A living being should be the cause of happiness for all living beings.

1096. **जदा जीवस्स उवजोगो सगसहावलीणो तदा परं सुहं अणुभवदि।**

जब जीव का उपयोग स्वस्वभाव में लीन रहता है तब परम सुखानुभूति होती है।

When consciousness of living being is engrossed in self nature then he feels supreme pleasure.

जीवन

1097. **इंद-धणुव्व णर-जीवण-जोव्वणं।**

इन्द्रधनुष के समान क्षणिक नर जीवन व यौवन है।

Human life & youth is mortal like a rainbow.

1098. **दुहण्णियं पाणि-जीवणं।**

प्राणियों का जीवन दु:ख से समन्वित है।

Life of the worldly beings is filled with sorrow.

1099. **सव्वदाणेसु जीवणदाणं पहाणं।**

जीवनदान सर्वदानों में प्रधान है।

Giving life to creatures is the best donation.

1100. **सव्वाणं सगजीवणं हु परमपियं।**

सर्वजीवों को स्वजीवन परमप्रिय होता है।

All creatures love their own life.

1101. **जीवो अणाइणिहणो जीवणं अप्पं।**

जीव अनादिनिधन होता है पर जीवन अल्पकाल का।

Soul has no end and beginning but life is short.

1102. **पत्तेगं दिग्घजीवणं इच्छदि।**

प्रत्येक प्राणी दीर्घजीवन चाहता है।

Every creature wants long life.

1103. **जीवणस्स विफलदाए अवरा का हाणी?**

जीवन की विफलता से बढ़कर हानि क्या हो सकती है?

What loss can be bigger than an unsuccessful life?

1105. **मम जीवण-सुत्तं तव हत्थे होज्ज एरिसो वंछामि।**

मेरे जीवन की डोरी आपके हाथ में हो ऐसी मैं वांछा करता हूँ।

May ! the string of my life remain in your hand.

1106. **सुहविहीण-जीवणं को पसंसदि?**

सुख विहीन जीवन की कौन प्रशंसा करता है?

Who praises unhappy life?

1107. **धि सयायार-विहीण-जीवणं।**

सदाचार विहीन जीवन को धिक्कार है।

Curse on ! bad conducted life.

1108. **बंधुहीणं णरजीवणं वणपसुव्व।**

बंधुहीन नरजीवन वन्य पशुओं के समान माना जाता है।

Friendless human life is considered as the life of wild animals.

1109. **वरं मणिव्व अप्पजीवणं णो मिदिगव्व बहुजीवणं।**

मणि के समान अल्पजीवन भी श्रेष्ठ है मिट्टी के समान बहु-जीवन भी श्रेष्ठ नहीं है।

Short life like a jewel is better than long life like soil.

1110. **धम्महीण-जीवणादु धम्मणुयारपुव्वं मरणं वरं।**

धर्महीन जीवन से धर्मानुचारपूर्वक मरण श्रेष्ठ है।

Religious death is better than irreligious life.

1111. **बहुजीवणाहारो हु सत्थग-जीवणं।**

बहुत से जीवन का आधार है वही सार्थक जीवन है।

Whose life is the base of many lives that life is meaningful.

1112. **जीविदो गुणधम्मो जस्स सो हु जीविदो।**

जिसके गुणधर्म जीवित रहते हैं वही निश्चय से जीवित कहा जाता है।

Whose good deeds are alive they are said to be alive from ultimate point of view.

1113. **जीवणं भव-सिव-कारणं।**

भव और शिव का कारण जीवन है।

Life is the cause of transmigration & salvation.

1114. **किण्ण-सुक्कपक्खोव्व जीवणस्स सुहासुहा बे पक्खा।**

मास में कृष्ण और शुक्ल पक्ष की तरह जीवन के दो पक्ष होते हैं-शुभ और अशुभ।

Two sides can be there in the life of every living being-auspiciuos & inauspicious as bright and dark fortnight.

जीविका

1115. **जीविगा-हरणं वि पाणहरणमिव।**

जीविका का हरण भी प्राण हरण के समान है।

Carrying off livelihood is also like carrying-off life.

1112. **जीविगा वि महच्चं गेहीणं।**

जीविका भी गृहस्थों के लिए महत्वपूर्ण है।

Livelihood is also important for house holders.

जीवित

1116. **जीविदे हि सव्वधम्मो संभवो।**

जीवित रहने पर ही सभी धर्म संभव हैं।

All religions are possible only if we live.

1117. **मरणादो जीविदासा सेट्ठा।**

मरण से जीविताशा श्रेष्ठ है।

Desire of living is better than death.

जुआ

1118. **जूआ-सत्तवसणाणि खु महापावाणि।**

जुआदि सप्तव्यसन ही महापाप हैं।

Gamble and other seven bad habits are heinous

sins.

1119. **सव्वणासग-सत्तुव्व जूअं।**

जुआ पुरुषों का सर्वविनाशक शत्रु जैसा है।

Gamble is an all destroyer enemy of men.

1120. **जूअमिव इयरं पावं ण भूदो ण भविस्सदि।**

जूआ की तरह दूसरा पाप न अतीत में था न भविष्य में होगा।

Sin like gamble was not in past and will not be there in future.

1121. **जूएण विणस्सदि जस-सुह-संति-धम्मा य।**

जूआ से यश, सुख-शान्ति और धर्म नष्ट हो जाता है।

Fame, tranquility and religion get destroyed because of gambling.

1122. **सव्व-अणत्थकारणं जूअं।**

जुआ सर्व अनर्थों का कारण है।

Gamble is the cause of all harms.

जैन

1123. **जिणाणुयरो-सज्जणो हु जेणो।**

जिनानुगामी सज्जन ही जैन है।

Virtuous people who are follower of jainism are jain.

1124. **देसहिदे सगधण-पाणदायगा जेणा वि धण्णा।**

देशहित में अपने धन-प्राण उत्सर्गित करने वाले जैन भी धन्य हैं।

Those jains are praiseworthy (blessed) who sacrificed their lives and wealth for the good of their country.

ज्ञान

1125. **सगप्पम्मि रदी णाण-फलं।**

ज्ञान का फल अपनी आत्मा में रति है।

Resultant of knowledge is absorbed in own soul.

1126. **सम्मत्त-रहिदं णाणं णिप्फलं तवो वदं वेरग्गं वि।**

सम्यक्त्व से रहित ज्ञान निष्फल है तथा तप, व्रत और वैराग्य भी।

Knowledge without right belief is fruitless and penance, detachment and vows too.

1127. **भावणाणं सव्वकाले पमाणं।**

भावज्ञान सर्वकाल में प्रमाण होता है।

Conscious knowledge is authentic in all time.

1128. **णाण-दाणेण होदि केवलणाणी।**

ज्ञानदान से जीव केवलज्ञानी होता है।

Living being become omniscient by giving knowledge.

1129. **णाणावरण-कम्म-हणणेण केवलणाणं होदि।**

ज्ञानावरण कर्म के हनन से केवलज्ञान उत्पन्न होता है।

Infinite konwledge is gained by destroying knowledge obstructing karmas.

1130. **णाणेण सोहदि णरो।**

मनुष्य ज्ञान से सुशोभित होता है।

A person gets adorned by knowledge.

1131. **णाणादो दुहं समदि तहा च कम्माणि खयंते।**

ज्ञान से दु:खों का उपशम होता है और कर्मक्षीण होते हैं।

Pains get suppressed and karmas get de-

stroyed by knowledge.

1132. **भूमि-णहादो य णाण-वित्थारो अणंतो।**

भूमि और आकाश से ज्ञान का विस्तार अनंत है।

Expansion of knowledge is infinite than earth and sky.

1133. **णाण-हीण-देही णिस्सारो जहा सप्पिहीणं खीरं।**

ज्ञान से हीन संसारी निस्सार है जैसे घी से रहित दूध।

Ignorant living being is worthless like milk without ghee.

1134. **णत्थि णाणंतो।**

ज्ञान का अंत नहीं है।

There is no end of knowledge.

1135. **णाणतुट्ठो ण चिंतदि।**

ज्ञान से संतुष्ट चिंता नहीं करता।

Contented with knowledge doesn't take tension.

1136. **जण्णेसु सुट्ठु णाणजण्णो।**

सभी यज्ञों में ज्ञानयज्ञ श्रेष्ठ है।

Knowledge is the best in all sacrificial arts.

1137. **पिच्छणा गुरुसेवा विणयो य णाणमग्गो।**

पृच्छना, गुरुसेवा और विनय ज्ञान के मार्ग हैं।

Questioning, service of preceptor & courtesy are the ways of knowledge.

1138. **णाणमिव ण किं वि पवित्तं लोए।**

ज्ञान के समान लोक में कुछ भी पवित्र नहीं है।

Nothing is holy like knowledge in the world.

1139. **णाण-पिवासिदो सद्धिओ संजमतप्परो य णियमेण लहदि णाणं।**

ज्ञान पिपासु, श्रद्धावंत और संयमतत्पर नियम से ज्ञान प्राप्त करता है।

Desirous of knowledge, faithful & restraint gets knowledge definitely.

1140. **णाणं अविणस्सर-दीवो।**

ज्ञान अविनश्वर दीप है।

Knowledge is everlasting lamp.

1141. **णाणं वि उहयलोगेसु हिदंकरं।**

ज्ञान भी दोनों लोकों में हितकर है।

Knowledge is also beneficient in both worlds.

1142. **सम्मणाणं महापोत्तं भवसायरे णिमग्गदेहीणं।**

सम्यग्ज्ञान भवसागर में डूबते संसारियों के लिए महापोत है।

Right knowledge is ship for the people who are drowning in the ocean of world.

1143. **सम्मणाणं जत्थ कल्लाणो तत्थ।**

जहाँ सम्यग्ज्ञान है वहाँ कल्याण है।

Where there is right knowledge there is welfare.

1144. **दुरग्गहसंकुल-णाणेण किं?**

दुराग्रह से संकुलित ज्ञान से क्या प्रयोजन?

Knowledge congested from bad importunity is of what purpose?

1145. **णाणं भारो किरियाए विणा।**

क्रिया के बिना ज्ञान भार है।

Knowledge is nothing but weight without activity.

1146. **जीविगाए जस्स णाणं सो वणिगो ण दु णाणी।**

जिसका ज्ञान जीविका के लिए है वह वणिक् है ज्ञानी नहीं।

Whose knowledge is for livelihood he is business man not learned.

1147. **णराभूसणं णाणं णाणस्स संती य।**

मनुष्य का आभूषण ज्ञान है और ज्ञान का आभूषण शांति।

Knowledge is an ornament of a man and peace is of knowledge.

1148. **णाणहीणस्स कुत्थ संती मुत्ती य?**

ज्ञानहीन के लिए कहाँ शान्ति कहाँ मुक्ति?

Where is tranquility or liberation for ignorant?

1149. **णाणं वि पावणासणं।**

ज्ञान भी पापनाशक है।

Knowledge is also sin-destructor.

1150. **संजमेण विणा णाणं णिरत्थं जहा छुहालुणा अगहीद-भोयणं।**

संयम के बिना ज्ञान वैसे ही निरर्थक है जैसे भूखे के द्वारा ग्रहण नहीं किया गया भोजन।

Just as that food is useless which is not taken by hungry person after getting it, knowledge is useless without self-restraint.

ज्ञानी

1151. **णाणी णो छड्डुदि सुहावसरं।**

ज्ञानी शुभावसर को नहीं छोड़ता है।

Learned person doesn't give up good opportunity.

1152. **सवर-हिदं कंखदे णाणी।**

ज्ञानी स्वपर हित की कांक्षा करते हैं।

Learned people want welfare for themselves and others.

1153. **जिणवयणं णो हीलदि णाणी।**

ज्ञानी जिनवचनों की अवज्ञा नहीं करता।

Learned person doesn't flout the words of jina.

1154. **सगजोग्ग-पुरिसं वत्थुं च आसयेज्ज णाणी।**

अपने योग्य पुरुष व वस्तु का आश्रय ज्ञानी पुरुष को लेना चाहिए।

Scholar should resort to his capable persons and things.

1155. **को णाणी मोक्खं ण इच्छदि?**

कौन ज्ञानी है जो मोक्ष नहीं चाहता है?

Which scholar doesn't want liberation.

1156. **कम्मबंध-विमोअगो णाणी।**

ज्ञानी पुरुष कर्मबंध का विमोचन करने वाला होता है।

Learned people release the bond of karmas.

1157. **मूढा कायं दंडंति कसायं णाणी।**

मूर्ख काय को दण्डित करते हैं ज्ञानी कषाय को।

Foolish people punish the body but learned people punish passions.

1158. **णो पोसदे णाणी देहं परं सुतच्चं।**

ज्ञानी शरीर का पोषण नहीं करते हैं किन्तु समीचीन तत्त्व का पोषण करते हैं।

Learned people don't nurture the body but they nurture proper reality.

1159. **जम्मि गुण-गरिमा सो हु णाणी।**

जिसमें गुणों की गुरुता विद्यमान है वही ज्ञानी माना जाता है।

He who has the gravity of virtues is considered

a scholar.

1160. **देह-धम्म-विहीणो सुद्धप्प-सहाव-लीणो णाणी।**

ज्ञानी देह के धर्म से विहीन शुद्धात्म स्वभाव में लीन होता है।

One who is deprived of body-religion and engrossed in pure soul-nature is a scholar.

1161. **अप्पविहव-संलीणो हु णाणी।**

जो आत्मा के वैभव में लीन है वह ही ज्ञानी है।

One who is engrossed in glory of soul is learned.

1162. **भुंजमाणो वि ण भुंजदे णाणी विसयट्ठाणि।**

ज्ञानी पुरुष भोगता हुआ भी विषय पदार्थों को नहीं भोगता।

Even after enjoying the sensual pleasures, learned person doesn't indulge in them.

1163. **अप्पणाणी गंभीरो ण दु वायालो।**

अल्पज्ञानी गंभीर नहीं वाचाल होता है।

Ignorant is garrulous not serious.

1164. **सम्मजोगेण समाहिं लहदे णाणी।**

ज्ञानी पुरुष सम्यक् योग से समाधि को प्राप्त करता है।

Learned person attains trans from right voilition.

1165. **अण्णाणीणं गुरुत्तो वरो णाणीणं सिस्सो।**

अज्ञानियों का गुरु होने से ज्ञानियों का शिष्य होना अच्छा है।

Being a student of learned men is better than being a precepter of ignorants.

1166. **णाणी कत्ता-कम्म-किरिया-करणाण करेदि पदीदिं।**

ज्ञानी कर्त्ता, कर्म, क्रिया और करण की प्रतीति करता है।

Scholar forms a clear conception of doer, verb, action and its instrument.

1167. **जाणिच्चा णिय-सत्तुं सिग्घं पडिअरदि णाणी।**

अपने शत्रु को जान ज्ञानी शीघ्र प्रतिकार करता है।

Knowing one's enemy learned conflicts quickly.

1168. **णाणि-सिस्सं वि अप्पणाणि-गुरुआणं ण लंघेज्ज।**

ज्ञानी शिष्य को भी अल्पज्ञानी गुरु की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

Even scholar disciple should never disobey his ignorant preceptor.

1169. **सव्व-सुहकंखी णाणी सव्वहिदंकरो।**

जो सर्वजीवों का सुखाकांक्षी है वह ज्ञानी सर्व हितंकर है।

Learned person who wants happiness for all is benevolent.

1170. **थिरचित्तमंतो हु णाणी।**

स्थिर चित्त ही ज्ञानी माना जाता है।

One who has resolute mind is considered a scholar.

1171. **अप्पज्झाणी महासुही।**

आत्मज्ञानी महासुखी होता है।

Self knower is very happy.

1172. **अण्णाणीणं सव्वकज्जेहिं णाणी पिधं होज्ज।**

अज्ञानियों के समूचे कार्य से ज्ञानी को दूर रहना चाहिए।

Learned people should be at a distance from the deeds of ignorants.

1173. **विण्णाणी हु जाणंति दुट्ठ-सिट्ठ-पयोजणं।**

दुष्ट और शिष्ट के प्रयोजन को बुद्धिमान् व्यक्ति जान लेते हैं।

Wise men come to know the purpose of wicked and gentlemen.

1174. दुल्लहं धम्मं गहिच्चा छड्डुदि को णाणी?

कौन ज्ञानी है जो दुर्लभ धर्म को प्राप्त कर छोड़ देता है।

Who is that learned person who leaves the rare religion after getting it?

1175. णाणी इत्थीसु ण विस्ससंति।

ज्ञानीजन स्त्रियों पर विश्वास नहीं करते।

Wise men don't rely on women.

1176. मोसवयणं ण भासंति णाणी।

ज्ञानीजन मिथ्यावचन नहीं बोलते हैं।

Learned people don't tell lies.

1177. सुट्ठु कज्जम्मि को णाणी सहदि विलंबं?

श्रेष्ठ कार्यों में कौन ज्ञानी विलम्ब सहन करते हैं?

Which scholar tolerates delay in good deeds?

1178. णाणी रमंते सया णाणम्मि।

ज्ञानी सदा ज्ञान में रमते हैं।

Learned people are always absorbed in knowledge.

1179. णाणी णो दासो कस्स वि।

ज्ञानी किसी का भी दास नहीं है।

Learned person is no one's slave.

1180. णिच्चं सुही णाणी।

ज्ञानी नित्य सुखी होता है।

Learned person is always blissful.

1181. संपइ पुण्णणाणी णो को वि।

इस काल में पूर्णज्ञानी कोई भी नहीं है।

There is no omniscient in this period.

1182. भो णाणी! उट्ठ णाणं पाहि।

अरे ज्ञानी! उठ ज्ञान को प्राप्त कर।

Oh learned! stand up and gain knowledge.

1183. णाणी णाणादो णाणं णाणीदो सिआ भिण्णाभिण्णा य।

ज्ञानी ज्ञान से, ज्ञान ज्ञानी से कथंचित् भिन्न है और कथंचित् अभिन्न।

Learned person from knowledge and knowledge from learned person is slightly seperate and slightly inseparable.

1184. णाणं णाणी णाणिं णाणं परम-पियं।

ज्ञान को ज्ञानी और ज्ञानी को ज्ञान परमप्रिय है।

Knowledge loves learned person & learned person loves knowledge.

1185. अप्पा हु णाणी।

आत्मा ही ज्ञानी है।

Only soul is enlightened.

1186. किरियातीदो हु परमणाणी।

क्रिया से परे ही परमज्ञानी है।

Supreme-learned person is beyond activities.

1187. णाणी सत्तू वरो दुट्ठुमित्तादो।

दुष्टमित्र से ज्ञानी शत्रु श्रेष्ठ है।

Learned enemy is better than a wicked friend.

1188. तच्चणाणी हु णिब्भयो।

तत्त्वज्ञानी ही निर्भय होता है।

Only knower of reality is fearless.

1189. णाणी णो कुप्पदि कया वि।

ज्ञानी क्रोध कदापि नहीं करता है।

Learned person never get angry.

1190. जोदिस-देवा विमाण-संचरणेण माणव-जीवणं पहावदि।

ज्योतिष देव विमानों के संचरण से मानव जीवन को प्रभावित करते हैं।

Human life gets affected by moving stellar abodes of stellar devas.

1191. जोदिसाणं पंचभेया सूरो चंदो गह-णक्खत्त-तारगा।

ज्योतिष देवों के पाँच भेद हैं-सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र और तारा।

There are five kinds of stellar devas-sun, moon, planets, constellation and stars.

1192. लोगिग-जोदिसणुसारेण बहस्सदी गुरुव्व अइ-उक्किट्ठो।

लौकिक ज्योतिषानुसार बृहस्पति गुरु की तरह अति उत्कृष्ट माना जाता है।

According to ordinary astrology jupiter is considered supreme like preceptor.

1193. करयलम्मि गुरुगह-ठाणं तज्जणि-मूले।

हथेली में गुरु ग्रह का स्थान तर्जनी के मूल में है।

Mount of jupiter planet on the palm is located at the root of index finger.

1194. आइच्चो चंदो वि सुहगहा।

सूर्य और चन्द्र भी शुभग्रह हैं।

Sun & moon are also auspicious planets.

1195. सूर-चंद-ठिदी कणिट्ठमूले।

सूर्य और चंद्र की स्थिति कनिष्ठा के मूल में होती है।

Position of sun & moon is at the root of little finger.

1196. बुहगह-सहावो सगसहवासिणो अणुसारेण होदि जइ एगल्लो हु सुहठाणे सुहफलं देदि।

बुध ग्रह का स्वभाव अपने सहवासी ग्रह के अनुसार होता है, यदि शुभ स्थान पर अकेला होता है तो शुभ फल देता है।

Nature of mercury planet changes according to its co-planet but if it is alone at auspicious place it gives auspicious result.

1197. करयलम्मि बुहगह-ठिदी कणिट्ठ-मूले।

हथेली में बुध ग्रह की स्थिति कनिष्ठा के मूल में होती है।

Mount of mercury on the palm is located at the root of little finger.

1198. अंगारयगहो परक्कम-कारणं, जादगं साहसं संतिं च देदि।

मंगलग्रह पराक्रम का कारण है जातक को साहस शान्ति देता है।

Mars causes valour and gives courage and tranquility to a person.

1199. अंगारयगह-ठिदी हु करमज्झे।

मंगलग्रह की स्थिति हाथ के मध्य में ही है।

Mount of mars is located in the center of the palm.

1200. इंदियसुह-कारग-सुक्क-ठिदी अंगुट्ठमूले।

इन्द्रिय सुख का कारक शुक्रग्रह की स्थिति अंगूठे के मूल में होती है।

Mount of venus offers worldly pleasure. it is located at the root of thumb.

1201. सणी अज्झप्पगहो।

शनिग्रह आध्यात्मिक ग्रह है।

Saturn is the spiritual planet.

1202. **सणिगह-ठिदी करयलस्स मज्झ-अंगुलिमूले।**

शनिग्रह की स्थिति हथेली की मध्यमा अंगुली के मूल में है।

The mount of saturn is placed below the middle finger on the palm.

1203. **लोयम्मि सणी अंगारयो राहू केदू असुहगहा।**

लोक में शनि, मंगल, राहु, केतु आदि अशुभग्रह हैं।

Saturn, Mars, Rahu, Ketu etc. are considered inauspicious planet in the world.

1204. **कयाचि जोइसिओ आइच्चं सुक्कं च असुहा मण्णंते।**

कुछ ज्योतिषविद् सूर्य और शुक्र को अशुभ मानते हैं।

Some astrologers consider sun and venus as inauspicious.

1205. **गहप्पहावो जादगे वि दिस्सदि।**

ग्रहों का प्रभाव जातक के ऊपर भी दिखता है।

Effect of planets is also seen on the people.

1206. **जोदिससत्थेसु बेदह-लग्गरासी य।**

ज्योतिष शास्त्रों में बारह राशि और लग्न माने जाते हैं।

Twelve zodiac signs and lagnas (ascendants) are considered in astrological scriptures.

1207. **मेस-विस-मिहुण-कक्क-सीह-कण्णा-तुला-विच्छिग-धणु-मगर-कुंभ-मीण-बेदहलग्गाणि।**

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन ये बारह लग्न हैं।

There are twelve lagnas (ascendants)-Aries, Taurus, gemini, cancer, leo, virgo, libra, scorpio, sagittarius, capricorn, aquaries and pisces.

1208. **अक्को मेसे उच्चो तुला-रासीए णीयो।**

सूर्य मेष के ऊपर उच्च माना जाता है और तुला राशि पर नीच

का माना जाता है।

Sun is extremely strong when it is in Aries but considered weakest in libra sign.

1209. **चंदो विसरासीए उच्चो विच्छिग-रासीए णीयो।**

चंद्र वृषराशि के ऊपर उच्च का व वृश्चिक राशि के ऊपर नीच का माना जाता है।

Moon's exalted sign is taurus and debilitated sing is scorpio.

1210. **अंगाररो मगररासीए उच्चो कक्करासीए णीयो।**

मंगलग्रह मकर राशि के ऊपर उच्च का और कर्क राशि के ऊपर नीच का माना जाता है।

The exalted sign for mars is capricorn and debilitated sign is cancer.

1211. **बुहो कण्णारासीए उच्चो मीणे य णीयो।**

बुध कन्याराशि पर उच्च का और मीन पर नीच का माना जाता है।

The exalted sign for mercury is virgo & debilitated sign is pisces.

1212. **गुरुगहो कक्के उच्चो मगरे णीयो।**

गुरुग्रह कर्क राशि के ऊपर उच्च का और मकर पर नीच का होता है।

The exalted sign for jupiter is cancer and debilitated sign is capricorn.

1213. **सुक्कगहो मीणे उच्चो कण्णाए णीयो य।**

शुक्रग्रह मीन राशि पर उच्च का और कन्या पर नीच का होता है।

The exalted sign for venus is pisces & debilitated sign is virgo.

1214. **सणी तुलाए उच्चो मेसे णीयो य।**

शनिग्रह तुला राशि पर उच्च का और मेष पर नीच का होता है।

The exalted sign for saturn is libra and debilitated sign is aries.

1215. **राहू विसमिहुणेसु य उच्चो बिच्छुग-धणूसु णीयो।**

राहु वृष और मिथुन राशि पर उच्च का और वृश्चिक धनु पर नीच का होता है।

The exalted signs for Rahu are taurus & gemini and debilitated signs are scorpio & sagittarius.

1216. **केदू-बिच्छुग-धणूसु उच्चो विस-मिहुणेसु णीयो य।**

केतु वृश्चिक और धनु पर उच्च का और वृष और मिथुन पर नीच का होता है।

The exalted signs for ketu are scorpio and sagittarius and debilitated signs are taurus and gemini.

1217. **राहू केदू परोप्परे सत्तमदिट्ठीए दिस्संति।**

राहु केतु परस्पर सप्तमदृष्टि से देखते हैं।

Rahu & ketu see from seventh view mutually.

1218. **अक्को सीहस्स, चंदो कक्कस्स, अंगारयो मेसबिच्छुगाण, बुहो मिहुण-कण्णाण, गुरू-धणु-मीणाण, सुक्को उसह-तुलाण, सणी मगर-कुंभाण सामी होंति ।**

सूर्य सिंह का, चन्द्र कर्क का, मंगल मेष-वृश्चिक का, बुध मिथुन-कन्या का, गुरु धनु-मीन का, शुक्र वृष-तुला का, शनि मकर-कुंभ का स्वामी होता है।

Leo is governed by sun, cancer by moon, aries and scorpio by mars, gemini and virgo by mercury, sagittarius and pisces by jupiter, taurus and

libra by venus, and capricorn and aquarius by saturn.

1219. **रासी सगसामिणो सगगहा मण्णंते।**

राशियाँ स्वस्वामियों को स्वग्रह मानती हैं।

These zodiac signs are considered masters of their own houses.

1220. **अक्कस्स मित्तगहा चंदो अंगारयो गुरू य।**

सूर्य के मित्रगृह चन्द्र, मंगल और गुरु हैं।

Sun's friend by planets are moon, mars and Jupiter.

1221. **चंदस्स मित्तगहा अक्को बुहो य।**

चंद्र के मित्र गृह सूर्य और बुध हैं।

Moon's friend by planets are sun and mercury.

1222. **अंगारयस्स मित्ताणि अक्को चंदो गुरू य।**

मंगल के मित्र सूर्य, चंद्र और गुरु हैं।

Mars's friend by planets are sun, moon & jupiter.

1223. **बुहस्स मित्ताणि अक्को सुक्को राहू य।**

बुध के मित्र सूर्य, शुक्र और राहु हैं।

Sun, venus and rahu are the friends of mercury.

1224. **गुरुणो मित्ताणि अक्को चंदो अंगारयो य।**

गुरु के मित्र सूर्य, चन्द्र और मंगल हैं।

Sun, moon and mars are the friends of jupiter.

1225. **सुक्कस्स मित्तगहा बुहो सणी राहू य।**

शुक्र के मित्र ग्रह बुध, शनि और राहु हैं।

Mercury, saturn and rahu are the friends of venus.

1226. सणिगहस्स मित्ताणि बुहो सुक्को राहू य।

शनिग्रह के मित्र ग्रह बुध, शुक्र और राहु हैं।

Mercury, venus and rahu are the friends of saturn.

1227. राहुगहस्स मित्ताणि बुहो सुक्को सणी य।

राहु ग्रह के मित्र बुध, शुक्र और शनि हैं।

Mercury, venus, saturn are the friends of rahu.

1228. केदुणो वि मित्ताणि राहुव्व णेयाणि ।

केतु के भी मित्र राहु के समान जानना चाहिए।

Friends of ketu also should be known as rahu.

1229. अक्कस्स सुक्को सणी राहू, चंदस्स राहू, अंगारयस्स बुहो राहू य, बुहस्स चंदो, गुरुस्स बुहो सुक्को य, सुक्कस्स अक्को चंदो य, सणि-राहु-केदूणं च अक्को चंदो अंगारयो य सत्तू।

सूर्य का शुक्र, शनि और राहु, चंद्र का राहु, मंगल का बुध और राहु, बुध का चंद्र, गुरु का बुध और शुक्र, शुक्र का सूर्य और चन्द्रमा, शनि, राहु और केतु के सूर्य, चन्द्र और मंगल शत्रु हैं।

Venus, saturn and rahu are enemies of sun, rahu is of moon, mercury and rahu are of mars, moon is of mercury, mercury and venus are of jupitor, sun & moon are of venus and sun, moon & venus are enemies of saturn, rahu & ketu.

1230. अक्कस्स बुहो, चंदस्स अंगारयो गुरू सुक्को सणी य, अंगारयस्स सुक्को सणी य, बुहस्स अंगारयो गुरू सणी य, गुरुणो सणी राहू य, सुक्कस्स अंगारयो गुरू सणि-राहु-केदूणं च गुरू समभावी गहो।

सूर्य का बुध, चंद्र का मंगल-गुरु-शुक्र और शनि, मंगल का शुक्र और शनि, बुध का मंगल-गुरु और शनि, गुरु का शनि

और राहु, शुक्र का मंगल और गुरु, शनि, राहु व केतु का गुरु समभावी ग्रह है।

Sun is neutral towards mercury, moon towards mars, jupiter & saturn, mars towards venus & saturn, mercury towards mars, jupiter & saturn, jupiter towards saturn and rahu, venus towards mars and jupiter & saturn, rahu ketu are neutral towards jupiter.

1231. तणू धणं सुहिदं मादू विज्जा सुदो वा सत्तू जाया मिच्चू भग्गं रज्जं लाहो हाणी य बेदहभावा कुंडलीए।

तन, धन, सुहृद, माता, विद्या या पुत्र, शत्रु, पत्नी, मृत्यु, भाग्य, राज्य, लाभ, हानि ये बारह भाव कुण्डली में होते हैं।

There are tweleve Bhavas in one's horoscope-body, wealth, brother, mother, children or education, enemy, wife, death, fortune, kingdom, profit & loss.

1232. पढमो भावो लग्गं।

प्रथम भाव लग्न होता है।

Lagna is the first bhava.

1233. जोदिससत्थं अज्जवि सच्चवित्तंतं भणदि।

ज्योतिषशास्त्र आज भी सत्यवृत्तान्त कहता है।

Astrotrogical scriptures are still proven to be legitimate.

णमोकार

1234. णिव्वाण-पहिआणं पाहेयं हु णमोक्कारमंतो।

निर्वाण पथ के पथिकों के लिए णमोकार मंत्र पाथेय है।

Namokar Mantra is a provision for the people who choose the path of liberation.

तटस्थ

1235. सरिदाए तडोव्व परदव्वेसु सक्खिभावं धरेदि सो तडत्थो।

सरिता के दोनों तटों के समान जिसका भाव परद्रव्यों में साक्षीभाव रखता है वह तटस्थ है।

Whose thoughts or feelings remain equal like both bank of the river in alien substances is called indifferent.

1236. तडत्थभावो हु अप्पसंति-कारणं पारंपरेण सिवसुहस्स वा।

तटस्थभाव ही आत्मा की शान्ति का कारण है अथवा परम्परा से शिवसुख का कारण है।

Equanimity is the cause of peace of soul or it is cause of liberation reciprocally.

तत्त्व

1237. वीयराय-विण्णाणं खु लोयम्मि परमतच्चं।

वीतराग विज्ञान ही लोक में परम तत्त्व माना जाता है।

Passionless science is assumed as ultimate reality in the world.

1238. जीवाजीवासव-बंध-संवर-णिज्जरा मोक्खो वि कल्लाणस्स सगतच्चं।

जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष भी कल्याण के स्वकीय तत्त्व हैं।

Living, Nonliving, influx, bondage, stoppage of karmas, shedding of karmas and salvation are also own elements of welfare.

1239. तच्चेसुं अप्पतच्चं वरं।

सर्वतत्त्वों में आत्मतत्त्व श्रेष्ठ है।

Soul is the best in all elements.

1240. महुररसेण जलं मिट्ठं होदि तहा तच्चसवणेण णंदो।

जैसे मधुर रस के योग से जल मीठा होता है वैसे ही तत्त्व श्रवण से आनन्द उत्पन्न होता है।

Just as water gets sweet from essence, pleasure comes through listening to reality.

1241. अप्पतच्च-णाणेण वि णरा णाणी।

अल्पतत्त्व-ज्ञान के योग से भी मनुष्य ज्ञानी माना जाता है।

Even with little knowledge of reality, man is considered to be wise.

1242. लोगे सुहदा तच्चणाण-संजुत्ता।

तत्त्वज्ञान सहित जीव सर्वलोक में सुखदायक है।

The one with the knowledge of reality is the happiest in the whole world.

1243. दुक्खट्ठं वि सुक्खट्ठं तच्च-णाणेण।

तत्त्वज्ञान के उत्पन्न होने पर दुःख निमित्त पदार्थ भी सुखार्थ हो जाते हैं।

After receiving the knowledge of truth even the painful things give us pleasure.

1244. तच्चणाण-विहीणो णो लहदि सुह-संतिं च।

तत्त्वज्ञान से विहीन कोई भी सुख शान्ति को प्राप्त नहीं करता।

No one get tranquility and happiness without the knowledge of truth.

1245. तच्चणाण-हीणा पसुव्व णरा।

जो नर तत्त्वज्ञान से हीन हैं वे पशु के समान माने जाते हैं।

Men who have no knowledge of reality are like animals.

1246. तच्चचिंतणं करेज्ज णो चिंतं।

तत्त्व का चिन्तन करना चाहिए चिन्ता नहीं।

You should think of reality not be worried.

1247. चिंताए लहदि असत्थं तच्चचिंतणेण सत्थं अप्पा।

चिंता से आत्मा अस्वस्थता व तत्त्व चिंतन से स्वस्थता प्राप्त करती है।

Soul suffers because of stress and flourishes by thinking about the real nature of things.

1248. तच्चणाणहीणाणं संणासो णिप्फलो।

तत्त्वज्ञान हीन का संन्यास निष्फल है।

Penance of the one devoid of true reality is fruitless.

1249. ण समत्था अण्णा गूढतच्चं जाणिदुं।

गूढ़ तत्त्व को जानने में इतरजन असमर्थ होते हैं।

Other people are unable to know mysterious reality.

तप

1250. तवो अप्प-सोहगो।

तप आत्मा का शोधक है।

Penance is soul-purifier.

1251. तवो सव्वत्थ-सिद्धि-सहाओ।

तप सभी प्रयोजन की सिद्धि में सहायक है।

Asceticism is helpful in fulfillment of all motives.

1252. दुद्धरं तवेदि तस्स णाणं सफलं।

जो दुर्द्धर तप करता है उसका ज्ञान सफल होता है।

His knowledge surely get succeeded who penances.

1253. तवेण हु साहगो समणो।

तप से ही साधक श्रमण कहा जाता है।

Saint is called ascetic by asceticism.

1254. तवो हु उक्किट्ठो समो तत्तो संजमी वट्टदे तम्मि।

तप ही उत्कृष्ट श्रम है इसीलिए संयमी उसमें ही वर्तन करता है।

Penance is supreme hardwork so self restrained is always engrossed in that.

1255. णट्ठंति सव्व-दुरायारा तवस्स तिव्व-अग्गीए।

सर्व दुराचार तप की तीव्र अग्नि में नष्ट हो जाते हैं।

All bad conduct gets destroyed by the fire of penance.

1256. णो णस्संति कम्माणि सम्म-तवेण विणा।

सम्यक् तप के बिना कोई भी कर्म नष्ट नहीं होते।

No karma get destroyed without right asceticism.

1257. लोकत्तये णो किंचिवि जो तवेण सिज्झदि णो।

लोकत्रय में वह कुछ भी नहीं है जो तप से सिद्ध नहीं होता है।

There is nothing in the three worlds which cannot be attained by penance.

1258. सव्वबलेसु तवबलं सुट्ठु महो य।

निश्चय से सभी बलों में तप बल महान् और श्रेष्ठ है।

Strength of austerity is greatest and best in all strengths.

1259. इंदिय-णिरोहो इच्छा-णिरोहो वा तवो।

इन्द्रिय निरोध अथवा इच्छा निरोध तप है।

Control of senses or desires is asceticism.

1260. **इंदिय-संजमेण तवो संभवो।**

इन्द्रिय संयम से तप संभव है।

Austerity is possible from self restraint.

1261. **तव-सत्ती अलंघा।**

तप की शक्ति अलंघनीय है।

Power of asceticism can't be stepped over.

1262. **तवेण खयंति कम्माणि।**

तप से कर्म क्षीण होते हैं।

Karmas get destroyed from asceticism.

1263. **तिलोय-विहवमूलं तवो।**

त्रिलोक के वैभव का मूल तप है।

Asceticism is the root to the wealth of the three worlds.

1264. **तवेण उवकस सव्वा वयजुज्झेण किं?**

तप से सब प्राप्त होता है, वाक्युद्ध से क्या सिद्ध होता है?

Everything can be attained by austerity what talkings prove?

1265. **तवे असमत्थो परं णिंददि।**

जो तप करने में असमर्थ है वह पर निंदा करता है।

One who is unable to penance, censures others.

1266. **तवेण विणा को लहदि महासुहं?**

तप के बिना महासुख को कौन प्राप्त करता है?

Who can attain the greatest pleasure without asceticism?

1267. **अप्पलीणदा हु महातवो।**

आत्मलीनता ही महातप है।

Self-absorbedness is the great penance.

1268. **परमप्प-पय-बीयं तवो।**

परमात्मपद का बीज तप है।

Asceticism is the seed of supreme state of god.

1269. **तवो सिद्धालय-सोवाणं।**

तपस्या ही सिद्धालय का सोपान है।

Only asceticism is the stair to siddhalaya (top-most part of the universe).

1270. **किं असंभवो तवेण?**

तप से क्या कार्य असंभव है?

Nothing is impossible by austerity.

1271. **गिहत्थाणं वि तव-भावणा संभवो।**

गृहस्थों के भी तप भावना संभव है।

Desire of penance is possible in house-holders too.

1272. **जिएंदियाणं गेहं वि तवोवणं।**

जितेन्द्रियों के लिए घर भी तपोवन है।

Home is also a hermitage for self-restrained.

1273. **असंजमीणं तवोवणं वि पावट्ठाणं।**

असंयमियों के लिए तपोवन भी पाप का स्थान है।

A hermitage is also a place of sin for the non-restrained.

तपस्वी

1274. **णाणीणं तवस्सीणं च णो किं चि वि दुल्लहं।**

ज्ञानियों और तपस्वियों के लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

Nothing is difficult to obtain for learned people & ascetics.

1275. **तवसी तिजोगेहिं पुज्जो सव्वदा।**

तपस्वी त्रियोग से सर्वदा पूज्य है।

An ascetic is always venerable by the three worlds.

1276. **तवसीणं पाणो तवो।**

तपस्वियों का प्राण तप है।

Austerity is the life of ascetics.

तर्क

1277. **अविणाभावी वत्तिणाणं तक्को।**

अविनाभावी व्याप्ति ज्ञान तर्क है।

Contemporaneity knowledge is logic.

तीर्थ

1278. **तच्चणाणी अप्पज्झाणी जिएंदियो हु तित्थं।**

तत्त्वज्ञानी आत्मध्यानी जितेन्द्रिय ही तीर्थ है।

Conqueror of senses, philosopher and the knower of the supreme spirit is pilgrimage.

1279. **महापुरिसो चिट्ठदि जत्थ तित्थं तत्थ।**

महापुरुष जहाँ रहता है वही तीर्थ है।

Where the great soul dwell, there is pilgrimage.

1280. **सव्वठाणाणि तित्थाणि जिएंदियाणं।**

जितेन्द्रियों के लिए सभी स्थान तीर्थ हैं।

All places are pilgrimages for victors of senses.

1281. **तित्थं हु भवतारणं।**

तीर्थ ही भव से तारने वाला है।

Pilgrimage saves from transmigration.

1282. **रयणत्तयं हु महातित्थं।**

रत्नत्रय ही महातीर्थ है।

The three jems (right faith, right knowledge and right conduct) are the greatest pilgrimage.

1283. **पंचगुरूणं चरणं चरणरजो ठाणं तित्थं।**

पंचगुरुओं के चरण, चरणरज और स्थान तीर्थ होते हैं।

The feet & its dust and the place of living of the five parmeshthis are pilgrimage.

तीर्थंकर

1284. **धम्म-पवट्टोसु पहाणो हु तित्थयरो।**

धर्म प्रवर्तकों में प्रधान महापुरुष ही तीर्थंकर होता है।

The greatest men among the founders of the religion are Trithankara.

1285. **समोसरणं जत्थ धम्म-अदिविट्ठी तत्थ।**

जहाँ तीर्थंकर का समवशरण विद्यमान होता है वहाँ नियम से धर्म की अतिवृष्टि होती है।

Where there is congregation hall (Samavsaran) of Tirthankara there in rains heavily of religion.

1286. **तित्थयरो आदिणा रिसहदेवो उसहदेवो वा आदिबंभो पजापदी महादेवाइ-णामेण वेदेसु वि पूजणीयो।**

तीर्थंकर आदिनाथ ऋषभदेव या वृषभदेव, आदिब्रह्मा, प्रजापति, महादेव आदि नाम से वेदों में भी पूजनीय हैं।

Tirthankara Aadinath is revered by many names such as rishabhdeve, Vrishabhdeva, Aadi Brahma, Prajapati, Mahadeva etc. in Vedas.

1287. **जेणाणं तुरियायालस्स पढमो तित्थयरो अजियणाहो।**

अजितनाथ तीर्थंकर जैनों के चतुर्थकाल के प्रथम तीर्थंकर माने गये हैं।

Sri Ajitnath ji is considered the first Tirthankara of fourth period of jains.

1288. **भगवदो महावीरो तुरियकालस्स भरहखेत्तस्स अंतिमो तित्थयरो।**

भगवान् महावीर चतुर्थकाल के भरतक्षेत्र के अंतिम तीर्थंकर कहलाते हैं।

Lord Mahavira is said to be the last trithankara of Bharat Kshetra of fourth period.

1289. **भगव-महावीरस्स पंचणामा वड्ढमाणो संमदी वीरो अदिवीरो महावीरो य।**

भगवान् महावीर के पाँच नाम थे-वर्द्धमान, सन्मति, वीर, अतिवीर और महावीर।

Lord Mahavira had five names-Vardhman, Sanmati, Veer, Ativeer & Mahaveer.

तृष्णा

1290. **णिस्सीम-कंखा तण्हा वा पुरिसस्स पराजय-हेदू।**

निस्सीम आकांक्षा या तृष्णा पुरुष की पराजय का हेतु है।

Endless desire or non-satisfaction is the cause of the conquest of man.

1291. **चिरकंखिद-लाहे को णो तिप्पदि।**

चिरकांक्षित लाभ होने पर कौन तृप्त नहीं होता?

Who doesn't get satisfied after getting long-desired thing?

1292. **जिणदेव-समरणेण तण्हा मूलादो विणस्सदि।**

जिनदेव नाम स्मरण मात्र से तृष्णा मूल से नष्ट हो जाती है।

Only by recalling the name of jina, non-satisfaction get destroyed from its roots.

1293. **तण्हालुओ को सुही इहलोए?**

इस लोक में तृष्णावान् कौन सुखी होता है?

Who is blissful in this world who is filled with desires?

1294. **अग्गीव तण्हा सयायाले अंतक्करणं दहदि।**

अग्नि के समान तृष्णा सदाकाल में अन्त:करण को जलाती है।

Non-satisfaction always burns conscience like fire.

1295. **तण्हग्गीए पडेदि को सेसो?**

जो तृष्णा अग्नि में गिर जाता है वह कौन शेष बच पाता है?

Who can remain safe after falling in the flames of desire?

1296. **जह जह जरा वड्ढदि तह तह तण्हा वि।**

जैसे-जैसे बुढ़ापा बढ़ता है वैसे-वैसे तृष्णा बढ़ती है।

Desires grow with old age.

1297. **तण्हाइ किंचि कणिया वि दुक्ख-महाजाला-बीयं।**

तृष्णा की किंचित् कणिका भी दु:ख रूपी महाज्वाला का बीज होती है।

Even a small sparkle of desire is a seed for big flames of pain.

1298. **तण्हा हु भव-मूलं।**

तृष्णा ही भव का मूल है।

Wise men consider that non-satisfaction is the base of transmigration.

1299. **तोसं लहेदि तण्हमुज्झेदि सज्जणा।**

सज्जन संतोष प्राप्त करते हैं और तृष्णा को त्याग देते हैं।

Getting contented virtuous people imbibe satisfaction and sacrifice desire.

1300. **णो तण्णाए अंतो।**

तृष्णा का अंत नहीं है।

Desires are endless.

1301. **एगठाणे णो चिट्ठदि चिरं तण्हा चवला वाणरं च।**

तृष्णा, बिजली और वानर एक स्थान पर अधिक देर तक नहीं ठहरते।

Desires, Lightening & monkey don't stay at a place for a long time.

1302. **कुलालचक्कीव भमंति तण्हाबद्धा।**

तृष्णाबद्धजन कुलालचक्र के समान घूमते हैं।

Desirous People move like a potter's wheel.

1303. **तण्हालू जलं व अहठाणे गच्छदि।**

तृष्णावान् जल के समान अधोगमन करते हैं।

Desirous people go down like water.

1304. **तण्हा सत्तू सव्वजीवाणं।**

तृष्णा सभी जीवों की शत्रु है।

Desire is the enemy of all living beings.

1305. **तण्हा पाविट्ठ-रक्खसी।**

तृष्णा पापिष्ठ राक्षसी है।

Desire is the most sinful demoness.

1306. **देह-सिढिले वि तण्हा तरुणी सया।**

देह के शिथिल होने पर भी तृष्णा सदा तरुणी रहती है।

Desires remain young even after the body becomes weak.

1307. **तण्हा णो जिण्णा जुवदी मरदि सया।**

तृष्णा जीर्ण नहीं होती वह सदा युवती ही मरती है।

Desire never get old, they die young.

तेज

1308. **तेजो वि पाणिस्स बारसम-पाणो।**

तेज भी प्राणियों का बारहवाँ प्राण है।

Energy is also the twelth vitality of creatures.

1309. **गुण-तेजो कस्स वि तमेण णो विणस्सदि।**

गुणों का तेज किसी भी अंधकार से नष्ट नहीं होता।

Brightness of virtues dosen't get destroyed by any kind of darkness.

1310. **गुण-तेजो ण कयावि कंखदि अक्क-किरणा।**

गुणों का तेज कभी भी सूर्य की किरणों की आकांक्षा नहीं करता।

Brightness of virtues never wish for the rays of the sun.

1311. **सूरोव्व तेजस्सी ण अण्णो।**

सूर्य के समान तेजस्वी दूसरा नहीं है।

Nothing is brighter than the sun.

तेजस्वी

1312. **तेजस्सीणं णो वयं देक्खेज्ज।**

तेजस्वियों की आयु नहीं देखी जाती।

Age of brilliant people is not seen.

1313. **तेजस्सी णो अण्णायं सहदि कया वि।**

तेजस्वी कभी अन्याय नहीं सहता।

A brilliant one never bears injustice.

त्रस

1314. **बेइंदियाइ-जीवा तसा।**

दो इन्द्रियादि जीव त्रस हैं।

Two & other sensuous organisms are mobile.

त्याग

1315. **सवर-अणुग्गहत्थं सग-वत्थु-मुंचणं हु चागो।**

स्वपर अनुग्रह के लिए स्वकीय वस्तु को छोड़ना ही त्याग है।

Giving up one's own thing to show compassion

towards one's self is abondoning.

1316. **महापुरिसाण चागो लोयुवयारी।**

महापुरुषों का त्याग लोकोपकारी होता है।

Sacrifice of great men is philanthropic.

1317. **णो कस्स वि दुक्ख-कारणं महापुरिसस्स चागो।**

महापुरुष का त्याग किसी के भी दु:ख का कारण नहीं होता।

Sacrifice of a great man is never a cause of pain for anyone.

1318. **इंदिय-दमणेण विणा चागो विडंबणा।**

इंद्रिय दमन के बिना त्याग एक विडम्बना है।

Sacrifice is a burden without controlling senses.

1319. **कुभावा उज्झेज्ज धम्मप्पा।**

धर्मात्माओं को कुभावों का भी त्याग करना चाहिए।

Pious people should also give up bad thoughts.

1320. **णत्थि चागोव्व सुहं।**

त्याग के समान सुख नहीं है।

There is no happiness like sacrifice.

दंभ

1321. **गुणदाहग-अणलो दंभो।**

दंभ गुणों को जलाने वाली अग्नि है।

Arrogance is a fire which burns virtues.

1322. **सच्चरित्त-चंदं गसिदुं राहुव्व दंभो।**

सच्चरित्र रूपी चन्द्र को ग्रसने के लिए दंभ राहु के समान है।

Arrogance is like Rahu for eclipsing moon of good conduct.

1323. **अज्झप्प-सरोवरं सुक्किदुं अक्कोव्व दंभो।**

आध्यात्मिक सरोवर को सुखाने के लिए दंभ सूर्य के समान है।

Pride is like a sun for drying spiritual lake.

1324. **दंभ-चागेण विणा तवो णिप्फलं।**

दंभ का त्याग किये बिना तप भी निष्फल है।

Asceticism is fruitless without giving up arrogance.

दया

1325. **धम्म-मूलं दया।**

धर्म का मूल दया है।

Kindness is the root of religion.

1326. **णिद्दोसा दया करुणा हु पसंसणीया।**

निर्दोष दया, करुणा निश्चय ही प्रशंसनीय है।

Unblemished mercy and tenderness are always praiseworthy.

1327. **बालो बुड्ढो रोयी य दयापत्तो।**

बाल, वृद्ध और रोगी दया के पात्र होते हैं।

Children, old people and patients are mercy worthy.

1328. **सव्वं पडि अजाइद-दया किवा।**

सभी के प्रति अयाचित दया कृपा है।

Unbegged mercy to all is compassion.

1329. **दीणेसुं अणुग्गह-भावो कारुण्णं।**

दीनों पर अनुग्रह भाव रखना कारुण्य है।

Being kind to needy people is compassion.

1330. **दयाभावो सव्व-कल्लाण-कारगो लोग-पुज्जो उत्तम-धम्मो।**

दयाभाव सर्वकल्याण कारक, लोकपूज्य उत्तम धर्म है।

Kindness is auspicious, world venerable and supreme religion.

1331. **सव्व-गुणा दया-रक्खाए।**

सभी गुण दया की रक्षा के लिए कहे गये हैं।

All virtues have been laid down for the protection of mercy.

1332. **दुहिं पस्सिय कस्स चित्ते णो उप्पज्जदि दया?**

दु:खीजनों को देखकर किसके चित्त में दया उत्पन्न नहीं होती?

Who dosen't show mercy towards sorrowful people?

1333. **पाणि-दया लोए पसिद्धा।**

प्राणियों की दया लोक में प्रसिद्ध है।

Compassion of creatures is famous in the world.

1334. **धि दयाहीणं।**

जो जीव दया से रहित है उसे धिक्कार।

Shame on them who are merciless.

1335. **दया हु परमो णायो हिंसा महण्णायो।**

दया ही परम न्याय है और हिंसा ही महा अन्याय।

Kindness is supreme just and violence is supreme unjust.

1336. **णो दया पाविट्ठ-चित्ते।**

पापी के चित्त में दया नहीं ठहरती।

Mercy does not exist in the heart of sinful person.

1337. **भूदेसु दयं करेदि सो सगहिदं हु।**

जो प्राणिमात्र में दया भाव रखता है वह निश्चित ही अपना हित करता है।

One who shows compassion for all creatures, surely does his welfare.

1338. **दाहगाणं चित्ते णो दया।**

जलाने वालों के चित्त में दया नहीं होती।

There is no mercy in the heart of the people who hurt.

1339. **तदा परमाणंदो होदि णेत्तेहिं पहदि करुणाजलं।**

जब आँखों से करुणा जल बहता है तब परमानंद होता है।

When tears of mercy shed from eyes then one feels supreme pleasure.

दरिद्रता

1340. **उच्छाहं णासदि दारिद्दं।**

दरिद्रता उत्साह को नष्ट करती है।

Poverty destroys enthusiasm.

1341. **दारिद्दं वि सेट्ठं जं पहुभत्ति-कारणं।**

वह दरिद्रता भी श्रेष्ठ है जो प्रभुभक्ति का कारण है।

The poverty which is the cause of devotion to God is also best.

1342. **दारिद्दे मित्तं अप्पं।**

दरिद्रावस्था में मित्र अल्प होते हैं।

Poor people have few friends.

1343. **दारिद्दवयधारगो वि अज्झप्पणाणी।**

दरिद्रव्रत को धारण करने वाला अध्यात्मज्ञानी होता है।

One who accepts poverty vow is spiritual.

1344. **पुग्गलहीणा णो दारिद्दा अज्झप्प-विहवहीणा हु।**

पुद्गल हीन दरिद्र नहीं है अध्यात्म वैभवहीन ही दरिद्र है।

People deprived of spiritual wealth are poor, not the one's without worldly pleasures.

1345. **दारिद्दं णासदि दाणं।**

दान दरिद्रता का विनाश करता है।

Charity destroys poverty.

1346. **दारिद्दं हु लहू मिच्चू।**

दरिद्रता ही लघु मौत है।

Poverty is slow poison.

1347. **महादुक्ख-मूलं दारिद्दं।**

महादु:ख का कारण दरिद्रता है।

Poverty is the cause of great pains.

1348. **धणहीणस्स णो मित्तं णो सहोदरो।**

धनहीन मनुष्य का न कोई मित्र है न कोई सहोदर।

Poor person has neither a friend nor a brother.

दर्शनावरणीय कर्म

1349. **दंसणावरणिज्जं कम्मं हु सव्व-दंसिकम्म-विणासगं।**

दर्शनावरणी कर्म सर्वदर्शी कर्म का विनाशक है।

Faith deluding karma is the destructor of perception observing karmas.

1350. **विणा दंसणावरणिज्ज-कम्मक्खयेण को वि सव्वण्हू ण होज्ज।**

बिना दर्शनावरणीय कर्म के क्षय हुए कोई भी सर्वज्ञ नहीं हो सकता।

No one can be omniscient without destroying perception observing karmas.

दांत

1351. **इन्दिय-दमि-साहू दंतो।**

इन्द्रिय दमित साधु दांत है।

Sense-repressed ascetic is Danta.

1352. **दंता हु जिणा।**

दांत ही जिन होते हैं।

Ideal ascetics (who controlled their senses) are jina.

1353. **दंता भावी सिद्धा।**

दांत ही भावी सिद्ध होते हैं।

Ideal ascetics are fortune-pure soul.

दाता

1354. **सत्त-गुण-सहिदो दायगो।**

दाता सप्त गुण सहित होता है।

Donator possesses seven qualities.

1355. **दायगो पंचभूसणेण भूसिदो।**

दाता पंच आभूषणों से भूषित होता है।

Donator is adored with five ornaments.

1356. **पंचदूसण-रहिदो णिद्दोसो दायगो।**

निर्दोष दाता पाँच दोषों से रहित होता है।

Faultless donator is free from five faults.

1357. **सव्वयालम्मि खेत्तम्मि य दायगो हु महापुरिसो।**

सभी काल और क्षेत्र में दाता ही महापुरुष है।

Donator remains a great man everytime and everywhere.

1358. **सया उवरि दायग-हत्थाणि।**

दाताओं के हाथ सदा ऊपर रहते हैं।

Hands of donators always remain above.

दान

1359. **अभय-दाण-पुण्णेणं जीवो होदि णिब्भयो।**

अभयदान के पुण्य से यह जीव निर्भय होता है।

Soul becomes fearless by good karmas of abhaya dan (protecting creatures).

1360. **विउल-भोया आहारदाणेण।**

जीव आहार दान के फल से विपुल भोगों को प्राप्त करते हैं।

Soul receives enormous pleasure by the rewards of Aahar Dan.

1361. **सुहदाणादो ण किं सुहं?**

शुभ दान से क्या सुख नहीं होता?

What pleasures cannot be gained by auspicious donation?

1362. **दाणं पसण्ण-चित्तेण दाएज्ज मुणीणं।**

प्रसन्न मन से मुनियों को दान देना चाहिए।

One should donate with happy hearts to munis.

1363. **जीवणादो मरणं वरं विणा दाणेण गेहीणं।**

बिना दान के गृहस्थों का जीने से मरना श्रेष्ठ है।

It is better to die than live without charity.

1364. **दाणेण सुर-भोय-संपया।**

दान से देवों की भोग सम्पदा प्राप्त होती है।

Wealth of gods can be obtained by charity.

1365. **दाणेण महामाणवो हु तिप्पदि।**

महामानव दान से ही संतुष्ट होते हैं।

Great men get satisfied only by charity.

1366. **दाणं हु भोय-भूमीए मुक्ख-कारणं।**

भोगभूमि का मुख्य कारण दान ही है।

Only charity is the main cause of enjoyment region.

1367. **सवरणुग्गह-बुद्धीए सगवित्त-चागो दाणं।**

स्वपर के अनुग्रह की बुद्धि से स्व वित्त का त्याग करना दान है।

Giving up self money for self and others welfare is charity.

1368. **जह देदि तह लहेदि।**

जो जैसा देता है वो वैसा प्राप्त करता है।

As you give, so you receive.

1369. **संत-परिणाम-जुदो हु दाणप्पा।**

शान्त परिणामों से युक्त ही दानात्मा है।

One who is made of peaceful thoughts is an ascetic.

1370. **संपुण्ण-विहव-मूलं दाणं।**

सम्पूर्ण वैभव का मूल दान है।

Donation is the base of whole wealth.

1371. **दाणहीणो परिग्गही।**

दानहीन परिग्रही है।

One who doesn't donate is reciar of accumulation.

1372. **चउविहं दाणं चउदिससंति-कारणं।**

चार प्रकार का दान चारों दिशाओं की शान्ति का कारण है।

Donation of four types is the cause of tranquility of four directions.

1373. **भत्तिहीणं दाणं णो दाणं।**

भक्तिहीन दान, दान नहीं है।

Donation without devotion is not a donation.

1374. **अभयदाणं महादाणं।**

अभयदान महादान है।

Protecting life is a great donation.

1375. **सगणायज्जिद-दव्वं हु दाएज्ज।**

स्व न्यायोपार्जित द्रव्य ही देना चाहिए।

Only the money earned justly by oneself should be donated.

1376. **परवत्थु-दाणं णो सेयकरं।**

पर वस्तु का दान श्रेयस्कर नहीं है।

Donating other's things is not appreciable.

1377. **दाणेण णिद्धणो वि इंद-पुज्जो।**

यदि दान से निर्धन होता है तो वह भी इन्द्रों द्वारा पूज्य है।

The one who becomes poor because of donation is also venerable by Indras.

1378. **वित्तदाणं चित्तणाणं विणा णो को वि दाणी णाणी य।**

वित्त के दान और चित्त के ज्ञान के बिना न तो कोई दानी है और न ही ज्ञानी।

Without donating wealth and having knowledge of soul no one is a donator or a learned.

1379. **दाण-मूलं सया हरिअं।**

दान की जड़ सदा हरी रहती है।

Root of donation always remains evergreen.

1380. **अभयदाणं अक्खयदाणं च णो विणासगं णो णिप्फलं।**

अभयदान और अक्षयदान न तो विनाशक है और न ही निष्फल।

Protecting life and imperishable donation are neither destructive nor fruitless.

दाम्पत्य

1381. **इत्थि-पदिधम्मो जत्थ तं दंपत्तं।**

जहाँ स्त्री-पतिधर्म विद्यमान है वही दाम्पत्य है।

Where marital fidelity exists, there exists married life.

दास

1382. **धि सत्थपुण्ण-दासवित्तिं।**

स्वार्थपूर्ण दासवृत्ति को धिक्कार है।

Curse on! selfish slavery.

1383. **समप्पिदं-दासो सग-पहुं समीवे वसदि।**

समर्पित दास स्वप्रभु के पास में रहता है।

Devoted devotee lives near his God.

1384. **परमट्ठेण दासो सग-पहु-संमुहे किंकरो।**

परमार्थ से दास वही है जो स्वप्रभु के सामने किंकर बनकर रहता है।

From ultimate point of view devotee is he who lives like a servant in front of his God.

दिगम्बर

1385. **सव्व-परिग्गह-चागी जहाजादो हु दियंबरो।**

सर्व परिग्रह का परित्यागी ही यथाजात दिगम्बर है।

Only a renunciator of all dependance is a true Digamber in real sense.

1386. **जहाजादा दियंबरा समणा सव्वसुहं लहंति।**

यथाजात दिगम्बर संत सर्व सुख प्राप्त करते हैं।

Only the Digamber saints can attain whole pleasure.

1387. **धण्णा जे जहाजादा दियंबरा।**

यथाजात दिगम्बर धन्य हैं।

Digamber saints are blessed.

1388. **वत्थेण विणा वि वदेहिं सुंदरा दियंबरा।**

दिगम्बर संत वस्त्र के बिना भी व्रतों से सुन्दर लगते हैं।

Even without clothes Digamber saints look handsome from their vows.

1389. **देहे जल्लमलं दियंबराणं भूसणं।**

शरीर के ऊपर विद्यमान जल्लमल दिगम्बर साधुओं के आभूषण होते हैं।

Dirt on the body of Digamber saints are their ornaments.

1390. **जहा णिरावरण-णदी-पव्वद-सायर-रुक्ख-आयास-मेह-इंदधणु-आदी तहा अइसुन्दरो वत्थ-भूसणेहि विणा दियंबरो वि।**

निरावरण नदी, पर्वत, सागर, वृक्ष, आकाश, मेघ, इन्द्र धनुष आदि जैसे अतिसुन्दर लगते हैं वैसे ही वस्त्र आभूषण के बिना दिगम्बर संत भी।

As unveiling river, mountain, sea, tree, sky, clouds, rainbow etc. look very beautiful similarly Digamber saints look good without clothes and ornaments too.

1391. **पाइयरूवोव्व पाइयरूवधारगो दियंबरो वि अइसुंदरो सव्वप्पियो य।**

प्राकृत रूप के समान प्राकृत रूप धारक दिगम्बर संत भी अतिसुंदर और सर्वप्रिय होता है।

As naturality is very beautiful and dear to all similarly Digamber saints in natural form too.

1392. **महावद-धारगा जहाजादा दिसिवासा वि महापुरिसा।**

महाव्रत धारक यथाजात दिगम्बर भी महापुरुष हैं।

Any man who accepts five great vows and is naked Digamber saint is also a great man.

दीक्षा

1393. **सव्व-पाव-विमोयगा दिक्खा।**

सर्व पाप विमोचिनी दीक्षा है।

Initiation destroys all sins.

1394. **दिक्खा विदिओ जम्मो।**

दीक्षा दूसरा जन्म है।

Initiation is second birth.

1395. **इंदियदमण-खमाइ-भावो जस्सिं दिक्खा।**

जिसमें इन्द्रियदमन क्षमादि भाव रहता है वह दीक्षा है।

In which prevention of senses, forgiveness and other feelings remain is initiation.

1396. **पाव-णिवित्ती सुहे पवित्ती दु दिक्खा।**

पापों से निवृत्ति और शुभ कार्यों में प्रवृत्ति ही दीक्षा है।

Preventing from sins and acting in good works is initiation.

1397. **आसण्णभव्वो हु समत्थो जहाजाद-दिक्खा-गहणे।**

आसन्न भव्य ही यथाजात दीक्षा ग्रहण करने में समर्थ है।

One who is magnificient adjacent is able to take initiation.

1398. **तच्चणाणम्मि अविणाभावि-पवित्तीए संकप्पो दिक्खा।**

तत्त्वज्ञान में अविनाभावी प्रवृत्ति के संकल्प का नाम दीक्षा है।

Determination of concomitant act in reality is initiation.

1399. **जहाजादा दिक्खा संसारसायर-तारगं पोत्तं।**

यथाजात दीक्षा संसार सागर से तरने के लिए जहाज है।

Naked initiation is a ship for crossing the ocean of world.

1400. **जहाजादा दिक्खा पंचमकाले दुल्लहा।**
यथाजात दीक्षा पंचमकाल में दुर्लभ है।
Naked initiation is difficult in this fifth age.

1401. **उवयारेण दिक्खा इत्थीणं।**
स्त्रियों के लिए उपचार से दीक्षा मानते हैं।
Initiation of woman is considered from analogy.

1402. **बंभणाणी जहाजादो दिक्खिदो दिओ।**
ब्रह्मज्ञानी यथाजात दीक्षित द्विज है।
Spiritual wise naked initiated is Dwij.

1403. **गब्भादो अट्ठ-वस्स-पज्जतं जहाजाद-दिक्खा असंभवो।**
गर्भ से आठ वर्ष पर्यन्त यथाजात दीक्षा असंभव है।
Digamber initiation is impossible from foetus till eight years.

दीक्षित

1404. **संकप्प-पुव्वगं पावचागी दिक्खिदो।**
संकल्पपूर्वक पापत्यागी दीक्षित है।
Forsaker of sins determinately is initiated.

दीनवृत्ति

1405. **दीणवित्तीसुं अप्पसाहसी दुल्लहो।**
दीनवृत्तियों में अल्पसाहसी दुर्लभ है।
Little courageous is difficult to find in sufferings.

1406. **दीणवित्तीसु वि परमप्पं पस्सिदुं समत्थो दीणाणाहो सो।**
दीनवृत्तियों में जो परमात्मा को देखने में समर्थ है वह भी दीनानाथ है।
One who is able to see God in sufferings is a protector of the poor.

1407. **दइण्णं दइच्चोव्व भयंकरं।**
दैन्य दैत्य के समान भयंकर है।
Poverty is a terrible demon.

दीपक

1408. **हत्थे दीवं ठाविय वि पडदि कूवे तस्स दीवो णिप्फलं।**
अपने हाथ में दीपक रखकर भी जो कूप में गिरता है उसका दीपक निष्फल है।
One who falls down in the well even after having lamp in his hand his lamp is useless.

दीर्घसूत्री

1409. **दूरदिट्ठो वरो ण दु दीहसुत्ती।**
दूरदृष्टा श्रेष्ठ है न कि दीर्घसूत्री।
Farseeing is better than to be a dilatory.

1410. **दीहसुत्तदा अलस-लक्खणं।**
दीर्घसूत्रता आलसियों का लक्षण है।
Dilatoriness is a symptom of lazy persons.

दु:ख

1411. **चिंतणं विणा कज्जं दुह-साहणं।**
बिना सोचे किये गये सभी कार्य दु:ख के साधन हैं।
All works which have been done without thinking are a medium of sorrow.

1412. **दुक्ख-संपत्ते हु मण्णदे मूढो सज्जण-वयणाणि।**
दु:ख आने पर ही मूर्ख जन सज्जन के वचनों को मानते हैं।
Foolish people listen to the words of gentle person only at the time of sorrow.

1413. **उम्मग्गयस्स सया दुहं।**
उन्मार्गी नित्य ही दु:ख पाता है।
Vicarious always suffer.

1414. **परदुक्खेसुं रोयणं वि सगदुक्ख-हेदू।**

दूसरों के दु:ख में रोना भी स्वदु:ख का कारण है।

Crying in others suffering is also the cause of self- suffering.

1415. **परट्ठ-भुंजणेच्छा खु दुह-जणणी।**

पर वस्तु को भोगने की इच्छा नियम से दु:ख की जननी है।

Desire of enjoying alien substances is surely the mother of all miseries.

1416. **सुह-हेदू वि णो सुहदं दुहीणं।**

दुखियों को सुख के हेतु भी सुख नहीं देते।

Even causes of happiness don't give joy to sad people.

1417. **पाय दुही विवेगहीणा।**

प्राय: दु:खी लोग विवेकहीन होते हैं।

Often unhappy people are unthoughtful.

1418. **सग-दुक्खाणुभवो अदिसच्चं।**

अपने दु:ख का अनुभव अति सत्य अनुभव होता है।

Feelings of self pain are true feelings.

1419. **अदिदुहदा सीदे तिसा।**

शीतकाल में पिपासा अति दु:ख देती है।

Thirst gives a lot of pain in winters.

1420. **माणसिग-पीडा हु अदिदुक्ख-जणणी।**

मानसिक पीड़ा ही अतिदु:खों की जननी है।

Mental pain is the mother of extreme sorrow.

1421. **वत्थुं लहिय णट्ठे पुण अपत्तीए अहिय दुक्खं होदि।**

वस्तु को प्राप्त कर पुन: नष्ट होने पर उसकी अप्राप्ति से अधिक दु:ख होता है।

One feels more pain in getting the things destroyed after getting them than not attaining them.

1422. **दुक्खं एक्कं णो उप्पज्जदि।**

दु:ख अकेला उत्पन्न नहीं होता।

Pain doesn't come alone.

1423. **आही वाही उवाही य दुह-कारणं।**

आधि, व्याधि और उपाधि दु:ख का कारण है।

Tension, disease and honour are the causes of pain.

1424. **जाव अवेक्खा ताव दुहं।**

जब तक अपेक्षा है तब तक दु:ख है।

Till there is expectation, there is pain.

1425. **अवेक्खावित्ती दुहवड्ढगा।**

अपेक्षावृत्ति दु:खवर्धक है।

Expectation increases pains.

1426. **दुक्खमूलं संगचिंता।**

परिग्रह की चिंता दु:ख का मूल है।

Anxiety of accumulation is the root of pain.

1427. **परासत्ती दुक्ख-हेदू।**

पर में आसक्ति दु:ख का हेतु है।

Infatuation for others is the cause of pain.

1428. **दुक्खसुई वि दुक्ख-जणणी।**

दु:खों की स्मृति भी दु:खों की जननी है।

Memory of sorrows is also the mother of sorrows.

1429. **परमेट्ठीसुं लीणो अप्पलीणो वा दुक्खहीणो।**

परमेष्ठी में लीन या आत्मलीन दु:खहीन है।

Who is engrossed in God or is self-engrossed is blissful.

1430. **अरहट्टघडिगव्व कमसो आयंति दुहं सुहं वा।**

अरहटघण्टी की तरह क्रमश: दु:ख या सुख आते हैं।

Joy and sorrow comes inlife like a persian wheel.

1431. **परभाव-लीणदा हु दुह-कारणं।**

परभाव लीनता ही दु:ख का कारण है।

Absorbedness in alien substances is the cause of sorrow.

दुर्जन

1432. **जहा पासाणं मिदु-किदं ण णीरं समत्थं तहा णाणि सम्मुहे दुट्ठ-दसा।**

जैसे जल में पाषाण को मृदु करने की शक्यता नहीं होती है वैसे ही ज्ञानी के सम्मुख दुष्ट की दशा होती है।

Just as water cannot soften a stone similar is the condition of wicked in front of learned people.

1433. **अग्गीव सगाहारं दहंति दुज्जणा।**

दुर्जन मनुष्य अग्नि के समान स्वकीय आधार को जलाते हैं।

Scoundrels burn their own base like fire.

1434. **सगगुणा परदोसा भणंति दुज्जणा।**

अपने गुण और दूसरे के दोष जो कहता है वह दुर्जन है।

A scoundrel is one who always says self virtues and vices of others.

1435. **पर-दोसाणपेक्खगो दुज्जणो।**

दूसरे का दोषान्वेषी दुर्जन कहलाता है।

A scoundrel is one who always finds faults in others.

1436. **मूलहीणाणि कमलाणि अक्को जहा पीडदि तहा पुण्णहीणं दुज्जणो।**

मूलहीन कमलों को जैसे सूर्य पीड़ित करता है वैसे ही पुण्यहीन को दुर्जन।

As sun gives pain to a rootless lotus similarly scoundrel to wretched.

1437. **जस्स चित्ते दुब्भावो सो दुज्जणो।**

जिसके चित्त में बुरा भाव है वही दुर्जन है।

One who has evil feelings in his heart is a scoundrel.

1438. **जह अंगारो दाहगस्स अग्गिरहिदो य कालुस्स-कारणं तह दुज्जणो।**

जिस तरह कोयला अग्नियुक्त होने पर दाहक और अग्निरहित होने पर कालेपन का कारण होता है वैसे ही दुर्जन।

As coal is inflammatory with fire and is the cause of blackness without fire similar is a scoundrel.

1439. **दुज्जणा णो तिप्पंति बहुहिदं किच्चा वि।**

बहुत हित करने के बाद भी दुर्जन संतुष्ट नहीं होते।

Even after getting a lot of by others scoundrel never get satisfied.

दुर्बल

1440. **पाय बलिट्ठा पीडंते दुब्बला।**

प्राय: दुर्बल व्यक्ति बलिष्ठों के द्वारा पीड़ित किये जाते हैं।

Usually powerless persons are afflicted by powerful persons.

1441. **णिस्सीला दुब्बला।**

नि:शील नारी दुर्बल होती है।

Characterless female is feeble.

1442. **पुण्णहीणा दुब्बला।**

पुण्यहीन दुर्बल है।

All wretched are feeble.

1443. **साहसहीणो दुब्बलो सुहडो।**

साहसहीन सुभट दुर्बल है।

Effortless warrior is always feeble.

दुर्बुद्धि

1444. **हत्थगदामुल्लणिहिं उज्झदि कुबुद्धी।**

हाथ आयी अमूल्य निधि को भी दुर्बुद्धि छोड़ देता है।

A foolish leaves even the precious treasure, he gained.

1445. **हिद-मग्गे अहिदं ढुंढुल्लदि सो दुब्बुद्धी।**

हित के मार्ग में भी जो अहित खोजते हैं वे दुर्बुद्धि जन हैं।

People who find harm even on the way of beneficence are foolish.

दुर्भाग्य

1446. **जदि दुब्भग्गुदये किं करेज्ज णरो?**

यदि दुर्भाग्य का उदय हो तो मनुष्य क्या करे?

What can a person do when faced with misfortune?

दुर्लभ

1447. **गुण-णादू णिद्धणेसु णेहधारगा जुद्धे साहसी परदुहे दुही य अदिविरला लोयम्मि।**

गुणों को जानने वाले, निर्धनों को स्नेह करने वाले, युद्ध में साहसी और दूसरों के दु:ख में दु:खी लोक में अतिविरल हैं।

People who know the virtues, love poor people, show vigour in the battle and become sorrowful in others' pain are rare in the world.

1448. **अमुल्लदो अप्पमुल्ल-वत्थु-गहणं णो दुल्लहं।**

अमूल्य से अल्पमूल्य वाली वस्तु ग्रहण करना दुर्लभ नहीं है।

It is not unusual to gain cheaper things than precious things.

1449. **ण करेज्ज खेवं जदि दुल्लहं पदत्थं समीवे।**

अतिदुर्लभ वस्तु यदि समीप में हो तो उसको प्राप्त करने में देरी नहीं करना चाहिए।

One should not waste time in getting the thing which is very difficult to obtain if it is nearer.

1450. **वणे गेहं दारिद्दे धणं अंधयारे दीवो दुल्लहो।**

वन में घर, निर्धनता में धन और अंधकार में दीपक दुर्लभ है।

Home in forest, wealth in poverty and lamp in darkness is very rare.

1451. **को जाणदि णरजीवणस्स दुल्लहत्तं?**

मनुष्य जीवन की दुर्लभता को कौन जानता है?

Who knows the rarity of human life?

दुष्कर्म

1452. **परमट्ठेण णो बंधवो दुक्कम्मी।**

दुष्कर्म करने वाला परमार्थ से बांधव नहीं होता।

From ultimate point of view a vicious never becomes a friend.

दुष्ट

1453. **दुट्ठ-संगदी महा-अणिट्ठा।**

दुष्टों की संगति महा अनिष्ट है।

Company of wicked people causes harm.

1454. **णिद्दोस-वत्थुम्मि वि दोसं पस्संति दुट्ठा।**

दुष्ट पुरुष निर्दोष वस्तु में भी दोष देखते हैं।

Wicked people find faults in faultless things too.

1455. **दुट्ठ-चित्तस्स णाणं असक्कं।**

दुष्ट का चित्त जानना अशक्य है।

Wicked person's heart is impossible to know.

1456. **दुट्ठ-सेवा-लद्ध-विज्जाए सिट्ठेण सह अण्णाणी वरो।**

दुष्ट की सेवा से प्राप्त विद्या की अपेक्षा शिष्ट के साथ अज्ञानी रहना अच्छा है।

It is better to being ignorant with virtuous person than getting education by serving a scoundrel.

1457. **दुट्ठ-विणयो हु इसुव्व भयंगरो।**

दुष्टों की विनय निश्चय से धनुष की तरह भयंकर होती है।

Courtesy of scoundrel is fearsome like a bow.

1458. **दुट्ठा लोगं कुव्वंति दुट्ठो।**

दुष्ट पुरुष लोक को दुष्ट बना देते हैं।

Wicked persons make the world wicked.

1459. **दुज्जणा भणंति मम्मभेदि-सद्दा इदरा सज्जणा।**

दुष्ट लोग मर्मभेदी शब्दों को कहते हैं और सज्जन उसके विपरीत।

Scoundrel says piercing words and virtuous person its contrary.

1460. **दुट्ठा ण सहंति सज्जण-गुण-पसंसा।**

दुष्ट मनुष्य सज्जनों की गुण प्रशंसा सहन नहीं करते।

Wicked person cannot bear praise of the virtues of virtuous people.

1461. **दुट्ठेहि ण विणस्सदि सिट्ठ-खमा जह अक्कंसू सिंधुं सोसेदुं ण समत्थो।**

दुष्टजन के द्वारा कदापि शिष्ट की क्षमा नष्ट नहीं होती जैसे सूर्य की किरण सिंधु को सुखाने में समर्थ नहीं होती।

Forgiveness of cultivated doesn't get destroyed by wicked person just like a ray of sun is unable to dry the ocean.

1462. **दुट्ठा सज्जणा कयाचि दुक्खं देदि ण सया।**

दुष्ट, सज्जनों को कभी कदाचित् काल में दु:ख देने में समर्थ होते हैं सदा नहीं।

Wicked people are able to give pains to virtuous people sometimes but not always.

1463. **ण सुहेण वसंति दुट्ठा।**

दुष्टजन सुख से नहीं रहते।

Wicked persons don't live happily.

1464. **सज्जणा लहंति दुक्खं दुट्ठ-संगदीए।**

दुष्ट की संगति से सज्जन दु:ख प्राप्त करते हैं।

Virtuous people receive sorrow from the company of a wicked person.

1465. **अंधमुक्कबहिरा वि धण्णा, जे वत्थु-दुट्ठाणं च ण दोसं पस्संति वदंति सुणंति य।**

वे अंधे, मूक व बधिर लोग भी धन्य होते हैं जो वस्तु और दुष्टों के दोष नहीं देखते, न ही कहते और न ही सुनते हैं।

The deaf, dumb & blind people are lucky who neither see the faults of depreaved people nor do they speak or hear ill-words.

1466. **पुव्वद्ध-छायव्व दुट्ठ-पीदी।**

दिन के पूर्वार्द्ध के छाया के समान दुष्ट की प्रीति होती है।

Affection of a wicked person is like an afternoon's shadow.

1467. **दुट्ठ-मित्ती परिच्चाया हेया सज्जणदोसा।**

दुष्ट की मैत्री त्याज्य है सज्जन के दोष हेय हैं।

Friendship of wicked person is omissible and faults or vices are renounceable of virtuous person.

1468. **दुट्ठेण सह वि हिदंकरं ववहारं करेज्ज।**

शठ या दुष्ट के साथ भी हितकर व्यवहार करना चाहिए।

One should be good to evil people too.

1469. **दुट्ठा सज्जणाणं अकारणं सत्तू।**

दुष्टजन सज्जनों के अकारण शत्रु होते हैं।

Wicked people are the enemy of good people for no reason.

1470. **दुट्ठाणं अहिसावो वि वरो।**

दुष्टों का वरदान भी अभिशाप है।

Even a wish granted by a wicked person is a curse.

1471. **को ण बीहेदि दुट्ठेहिं?**

दुष्टों से कौन नहीं डरता?

Who doesn't fear evil people?

1472. **दुट्ठो सिट्ठो य परोप्परे संगदिं णो कंखदि।**

दुष्ट और शिष्य परस्पर में संगति की वांछा नहीं करते।

Wicked and obedient person don't wish for each other's company.

1473. **दुट्ठो वि कालंतरे सुह-णिमितेहिं सज्जणो होज्ज।**

दुष्ट भी कालांतर में शुभनिमित्तों द्वारा सज्जन हो जाता है।

Wicked person also become virtuous by auspi-

cious mediums in due course of time.

1474. **दुट्ठाणं णो सिंगं णो सिट्ठाणं मत्थगे मणी ववहारेण हु जाणंति।**

दुष्टों के सिर पर सींग और शिष्टों के मस्तक पर मणि नहीं होती, व्यवहार से उनकी पहचान होती है।

There is no horn on the head of wicked person and no jem on the head of obedient, they are recognised only by their behaviour.

दूध

1475. **को दुहदि खीरत्थं गोसिंगं।**

दूध के लिए कौन व्यक्ति गाय के सींग दुहता है।

Who milks the horns of cow for milk?.

दूरदर्शिता

1476. **दूरदंसिदा सव्व-खेमंकरा।**

दूरदर्शिता सबके लिए क्षेमंकर होती है।

Foresight is auspicious for all.

दृष्टि

1477. **दिट्ठिहीणं णयणं णिरत्थं जहा अहिंसाए विणा धम्मो।**

दृष्टि से रहित नेत्र निरर्थक हैं जैसे अहिंसा के बिना धर्म।

Eyes are meaningless without sight as religion without non-violence.

1478. **दिट्ठी दंसणं कयाचि भिण्णभिण्णा।**

दृग, दृष्टि और दर्शन कदाचित् भिन्नाभिन्न हैं।

Eyes, sight and perception are somewhat same and different.

देव

1479. **देवाउ-देवगदि-णामकम्मुदयेण य दिव्वकायसंजुत्ता देवा।**

देवायु और देवगति नामकर्म के उदय से जो दिव्य शरीर से संयुक्त हैं वे देव हैं।

Who has divine body from the rise of divine age and celestial form genetic code are called celestial beings.

1480. जत्थ-तत्थ विहरमाणा अदिचंचला देवा वंतरा।

यत्र-तत्र विचरण करने वाले अतिचंचल देव व्यंतर हैं।

Celestial beings keep roaming around and are very fickle are called peripatetic celestial beings.

1481. दिव्व-जोदि-संपण्णा जोदिस-विमाणेसु विज्जमाणा जोदिसदेवा।

दिव्य ज्योति से सम्पन्न ज्योतिष विमानों में निवास करने वाले देव ज्योतिषी देव हैं।

Celestial beings who are endowed with divine light and live in heavenly abodes are called steller devas.

1482. जेसु विमाणेसु इंदाइ-पयं कप्पदि इंदाइ-णाम-धारगा विमाणेसुं विज्जंते ते वेमाणिगा।

जिन विमानों में इन्द्रादि पदों की कल्पना होती है तथा इन्द्रादि नाम धारक विमानों में जो विद्यमान रहते हैं उन्हें वैमानिक देव कहते हैं।

Abodes where there is the imagination of indra and other ranks and Devas who live in the abodes are celestial beings.

1483. कसाय-भाव-विरत्ता, पाव-किरिया-रहिदा मिच्छताइ-विहीणा देवेसु उप्पज्जंति।

कषायों से विरक्त, पाप क्रियाओं से रहित और मिथ्यात्व से हीन जीव नियम से देवों में उत्पन्न होते हैं।

Souls which are alienated from passions, less from sinful deeds and misbelief, take birth in celestial beings surely.

1484. पहु-गुरु-सुद-अदिहि सामि-पदीहि-देवगदीए जीवेहिं सह पजुत्तो 'देवो'।

देव शब्द प्रभु, गुरु, श्रुत, अतिथि, स्वामी, पति व देवगति के जीवों के साथ प्रयुक्त होता है।

Deva word is used with lord, preceptor, scriptures, guests, owner, husband and celestial beings.

1485. परमट्ठेण एगो देवो जिणदेवो सिद्धो वा।

परमार्थ से एक ही देव है जिनदेव या सिद्ध।

From ultimate point of view God is only one jinadeva or siddha (liberated soul).

1486. जदि तुमं ण सक्को देव-होदुं तदा माणुसो हु ण पहोज्ज दाणवो।

यदि तुम देव होने में समर्थ नहीं हो तो मनुष्य ही रहो दानवों में मत गिरो।

If you are not able to become God then remain a human, don't be a monster.

1487. देवो तु णामेण अमरो, सिद्धो हु अमरो।

देव तो नाम से अमर हैं, सिद्ध ही अमर हैं।

Emancipated soul is really immortal god is immortal only for name.

1488. देवदंसण-दया-दम-दाणं च देव-लक्खणं।

देवदर्शन, दया, दम और दान भावी देव का लक्षण है।

Having vision of jina, mercy, restraint of mind and donation are the symptoms of fortune-jina.

1489. सुगुणकरंडजुदो जीवो देवो।

सुगुणों के पिटारे से युक्त जीव देवता है।

Soul endowed with box of virtues is God.

1490. **जस्सिं देवत्तं सो देवो।**

जिसमें देवत्व विद्यमान रहता है वह देव है।

In whom Godhood exist is God.

1491. **देवहीणो देवालयो णिरत्थो।**

देवता से रहित देवालय निरर्थक है।

Temple is meaningless without God.

1492. **वीयरायी सव्वण्हू हु परमो देवो।**

वीतरागी सर्वज्ञ ही परमदेव हैं।

Passionless omniscient is supreme Deva (God).

1493. **सव्वकम्महीणा घाइकम्महीणा वा परमट्ठेण देवो।**

सर्वकर्महीन या घातिकर्मरहित परमार्थ से देव हैं।

Free from all karmas or free from destructive karmas is 'Deva' from ultimate point of view.

देश

1494. **णाणा-गामाइ-जुत्तो देसो।**

अनेक ग्रामादि से युक्त देश होता है।

A country contains many villages etc.

देह (शरीर)

1495. **देहो अद्धुवो।**

देह अध्रुव है।

Body is transient.

1496. **रोय-सदणं देहं पडिखणं खयदि।**

शरीर रोग का घर है जो प्रतिपल क्षीण होता है।

Body is a house of diseases which gets destroyed every moment.

1497. **ण दुल्लहो देहचागो परं असंजम-चागो।**

शरीर त्याग दुर्लभ नहीं है अपितु असंयम का त्याग दुर्लभ है।

Sacrificing body is not difficult but giving up non-restraint is difficult.

1498. **देहं वि संजम-कारणं।**

शरीर भी संयम का कारण है।

Body is also a cause of restraint.

1499. **वीभत्थं देहं वि पुण्ण-कारणं।**

वीभत्स शरीर भी पुण्य का कारण होता है।

Gruesome body is also the cause of good karmas.

दोष

1500. **परदोसा कया वि ण पयासेज्ज तु गोवेज्ज।**

दूसरों के दोषों को कभी भी उद्योत नहीं करना चाहिए बल्कि छिपाना चाहिए।

One should not expose others' faults instead they should try to hide them.

1501. **सव्वट्ठं अदिसुंदरं लोए परं दोसा दिट्ठि-दोसेण दिस्सदि।**

लोक में विद्यमान सभी पदार्थ अतिसुंदर हैं लेकिन दृष्टिदोष के कारण उनमें दोष दिखता है।

All substances existing in this world are very beautiful but with evil eyes they occur faulty.

1502. **सदोस-रत्तीए चंदो अब्भुत्तदि।**

दोषों से युक्त रात्रि में चंद्रमा अधिक चमकता है।

Moon shines more in a darkness.

1503. **अविज्जमाण-दोसा गहिय दोसी णरो।**

अविद्यमान दोषों को ग्रहण कर मनुष्य दोषी हो जाता है।

A person becomes faulty by taking in non-existing sins or vices.

1504. **अप्पदोसा हु भयंकरा।**
अल्पदोष ही भयंकर होते हैं।
Little faults are terrible.

1505. **अणुचिद-दोसेहिं उव्वेगो होदि।**
अनुचित दोषों से मात्र उद्वेग उत्पन्न होता है।
Unfair faults only produces anxiety.

1506. **जहा विणा धूमेण णो अग्गी तहा दोसहीणा णरा।**
जैसे बिना धुएँ के अग्नि नहीं वैसे ही दोष हीन नर नहीं।
Just as there is no fire without smoke, there is no person without faults.

1507. **कया वि णो पुज्जा दोसा।**
दोष कभी भी पूज्य नहीं होते।
Faults are never venerable.

1508. **दोसा वि परिवट्टणसीला।**
दोष भी परिवर्तनशील होते हैं।
Faults are also variable.

1509. **एगेण दोसेण अण्णगुणा णो उज्झेज्ज।**
एक दोष से अन्यगुण नहीं त्यागने चाहिए।
Other virtues should not be given up because of one fault.

1510. **णिद्दोसा गुणा हु सव्वेहिं वंदणीया।**
निर्दोष गुण ही सभी के द्वारा वंदनीय हैं।
Faultless virtues are venerable by all.

1511. **सदोस-सुवण्णं वि तावं सहदि।**
दोषयुक्त सुवर्ण भी ताप सहता है।
Fallacious gold bears heat too.

1512. **सव्वदोसविहीणा हु परमप्पा।**
सभी दोषों से रहित ही परमात्मा है।
Devoid of all fault is God.

1513. **दोस-णासस्स इच्छू हु महप्पा।**
सभी दोषों को नष्ट करने का इच्छुक महात्मा होता है।
Desirous of destroying all faults is a great soul.

1514. **सगदोसाणं दोसो मण्णदे अंतरप्पा सो।**
अपने दोषों को जो दोष मानता है वही अन्तरात्मा है।
One who accepts one's faults is the inner self.

1515. **सव्वेसुं किं वि दोसो संभवो।**
सभी में कुछ भी दोष संभव है।
Any fault is possible in everyone.

द्वेष

1516. **परत्थेसु अरदिभावो दोसो।**
पर पदार्थों में अरतिभाव का होना द्वेष है।
Detachment towards alien-substances is aversion.

1517. **दोस-परिचागो रायादु सुलहो।**
द्वेष का परित्याग राग से सुलभ होता है।
Sacrificing aversion is easy.

धन

1518. **धणं हु होदि देहीणं पाणादो पियं।**
प्राणियों को धन प्राणों से भी ज्यादा प्रिय होता है।
People like money more than life.

1519. **किं ण कुणेदि धणं?**
धन क्या नहीं करता है?
What money doesn't do?

1520. **को ण आसासदि धणं?**

धन की आशा किसको नहीं होती?

Who doesn't want money?

1521. **विणा धणेण लोगिग-सुहं ण लहदि को वि।**

धन के बिना लौकिक सुख कोई भी प्राप्त नहीं करता।

No one can get worldly pleasures without money.

1522. **सया मेत्तं धणं ण पिरच्चायं तस्स दुरुवजोगो वि।**

सर्वथा मात्र धन ही त्याज्य नहीं है उसका दुरुपयोग भी त्याज्य है।

Money is not omissible all the time, its misuse is also omissible.

1523. **जं धणमणुधावदि तं वि दुक्खस्स-कारणं।**

जिस धन के पीछे मनुष्य भागता है वह भी दु:ख का कारण है।

A man runs after which money that is also the cause of great pain.

1524. **णायज्जिदा लच्छी सहाआ सव्वदा।**

न्यायोपार्जित लक्ष्मी सभी काल में सहायक होती है।

Money earned justly helps always.

1525. **धम्मकज्जेसु वय धणं हु धण्णं।**

धर्म कार्य में जो धन व्यय होता है वही धन धन्य होता है।

Only the money which gets spent for religious tasks is blessed.

1526. **धण-फद्धो वड्ढदि समाजेसु अज्जं।**

आज समाज में धन की स्पर्धा बढ़ रही है।

Competition of money is increasing at this time in the society.

1527. **सरदयाले सुक्खमेहोव्व धण-णट्ठे माणवदसा।**

धन के नष्ट होने पर मानव की दशा शरदकाल में सूखे मेघ के समान होती है।

After destroying money, condition of a person becomes like dry clouds of the autumn.

1528. **जीविदो वि मिदोव्व गिहत्थो धणं विणा।**

धन के बिना गृहस्थ जीवित होकर भी मृत के समान है।

Being a householder without money is like being dead.

1529. **चागो हु धण-रक्खण-मुक्ख-हेदू।**

त्याग ही धन रक्षण का मुख्य हेतु है।

Donation is the chief cause for protecting or saving money.

1530. **धणं णिरत्थं दाण-भोगहीणं।**

दान और भोगहीन धन निरर्थक है।

Money is useless without donation and enjoyment.

1531. **जाव धणं ताव चिंता।**

जितना धन उतनी चिंता।

More the money, more the worry.

1532. **जोगीणं धणं णाणं।**

योगियों का धन ज्ञान है।

Knowledge is the wealth of ascetics.

1533. **सच्चं रायस्स धणं ।**

राजा का धन सत्य है।

King's wealth is truthful.

1534. **सुहडस्स धणं विक्कमो।**

सुभट का धन पराक्रम है।

Wealth of a warrior is vigour.

1535. **इत्थीए धणं लज्जा।**

स्त्री का धन लज्जा है।

Wealth of woman is shyness.

1536. **साहगस्स वित्तं संजमो।**

साधक का धन संयम है।

Saint's wealth is self-restraint.

1537. **गिहत्थस्स इत्थी पुत्तो वित्तं च धणं।**

गृहस्थ का धन स्त्री, पुत्र और वित्त है।

Wealth of householder is wife, son and money.

1538. **पुरिसो धण-दासो णो धणं पुरिसस्स।**

पुरुष धन का दास है, धन पुरुष का नहीं।

Man is salve of money, money isn't slave of a man.

1539. **धणं वि धम्मंगं जहा गेह-थंभो।**

धन भी धर्म का अंग है जैसे घर का अंग स्तम्भ।

Money is also a part of religion as part of a house is pillar.

1540. **णो वित्तं विणा चित्त-संती।**

वित्त के बिना चित्त में शान्ति नहीं।

There is no tranquility in the heart without money.

1541. **धणं गिहत्थि-सरिदाए णित्थारेदुं णावव्व।**

गृहस्थी रूपी सरिता से पार करने के लिए धन नाव के समान है।

Money is like a boat to ride across the river of household.

1542. **धणादो धम्मो णिस्सरदि जहा भूमीए अंकुरं।**

धन से धर्म निस्सरित होता है जैसे भूमि से अंकुर।

Religion comes out from money as sprout from earth.

1543. **वित्तचागी हु विरत्तो।**

वित्तत्यागी ही विरक्त है।

Renouncer of money is detached.

1544. **वित्तहीण-गिहत्थस्स कत्थ वि णो सुहं।**

वित्तहीन गृहस्थ को कहीं भी सुख संभव नहीं।

Happiness is not possible for poor householder.

1545. **ववहारधम्मं पालेदुं धणं मूलं।**

व्यवहार धर्म पालने के लिए वित्त मूल है।

Money is the root to obey worldly religion.

1546. **धणेण धणं जहा अक्केण आदवो।**

वित्त से वित्त वैसे ही होता है जैसे सूर्य से आताप।

Money begets money as heat from sun.

1547. **धणहीणो जुवो वि बुड्ढोव्व।**

वित्तहीन युवक भी वृद्ध के समान है।

Even a wealthless young is like an old man.

1548. **धणेण बलवंतो पंडिदो य।**

धन से जीव बलवान् और पंडित होता है।

Living being become stronger, and learned from money.

1549. **धणेण कित्ती मित्तं पुण्णं च संभवो।**

वित्त से कीर्ति, मित्र और पुण्य संभव है।

Glory, friends & merits are possible from money.

1550. **धण-सुहोवजोगो हु सुग्गदि-कारणं।**

वित्त का शुभ उपयोग ही सुगति का कारण है।

Good use of money is the cause of good condition.

1551. **सादि-जल-बिंदुणा मुत्ता तह सग्गं धणचागेण।**

जैसे स्वाति जल बिंदु से मोती होता है वैसे वित्त के त्याग से स्वर्ग।

Just as a rain drop falling in swati (name of a constellation) into a shell becomes pearl, heaven from giving up money.

1552. **धणं संरक्खेज्ज जहा इत्थिं पुत्तं मित्तं च।**

वित्त का संरक्षण करना चाहिए जैसे स्त्री, पुत्र और मित्र का।

Money should be protected like wife, son & friend.

1553. **जाव समत्थो वित्तज्जणे ताव पसण्णो परिवारो।**

जब तक धनार्जन में समर्थ है तब तक परिवार प्रसन्न है।

As long as one is able to earn money, the family is happy.

1554. **दाणं भोगं धणफलं।**

दान और भोग धन का फल है।

Donation & enjoyment are the fruits of money.

1555. **परोवयारस्स धणचागो हु धणरक्खणं।**

परोपकार के लिए धनत्याग ही धन का रक्षण है।

Giving up money for benevolence is protection of money.

1556. **जं ण हरदि परदुहं तेण धणेण किं?**

उस अर्थ से क्या प्रयोजन जो दूसरों का दु:ख नहीं हरता।

What is the use of that wealth which doesn't cure others pain?

1557. **इच्छिद-संपत्ती ण कस्स वि।**

इच्छानुरूप सम्पत्ति किसी की भी नहीं होती।

No one gets desired wealth.

धनी

1558. **धम्मं पडि गच्छदि सो धणवंतो।**

निश्चय से वही धनी माना जाता है जो धर्म की ओर जाता है।

He who goes towards religion is considered rich.

धर्म

1559. **धम्मो सुगदि-कारणं।**

धर्म सुगति का कारण है।

Religion is the cause of good state.

1560. **धम्मो देदि इहपरलोय-सुहं।**

धर्म इस लोक तथा मोक्ष का सुख देता है।

Religion is the giver of worldly pleasures as well as the pleasure of emancipation.

1561. **अहिंसा हु महाधम्मो तिलोए दुल्लहा।**

अहिंसा ही महाधर्म है, वह तीन लोक में दुर्लभ है।

Non-violence is the greatest religion and difficult to find in all the three worlds.

1562. **धम्म-रहिदो ण लहदि सुहं।**

धर्म से रहित सुख प्राप्त नहीं करता है।

He, devoid of religion, doesn't get pleasure.

1563. **अधम्मेणं ण सिज्झंति मणोरहा।**

अधर्म से मनोरथ की सिद्धि नहीं होती।

Unrighteousness doesn't fulfill heart's desire.

1564. णो कल्लाणो धम्मं विणा।

धर्म के बिना कल्याण नहीं होता।

There is no welfare without religion.

1565. धम्मेणं विणा ण सरणं।

धर्म के बिना संसार में शरण नहीं है।

There is no refuge in the world without religion.

1566. संसारे महासरणं धम्मो एगो हु णिच्चलो।

संसार में धर्म ही एक निश्चल महाशरण है।

Religion is the only absolute shelter in the world.

1567. आहार-सुद्धी धम्मंगं।

आहार शुद्धि धर्म का अंग है।

Diet purification is a part of religion.

1568. धम्मो सग-सवर-कल्लाणस्स णियामग-हेदू।

धर्म स्वपर कल्याण का नियामक हेतु है।

Religion is the regulatory cause of self and other's welfare.

1569. धम्मो हु सव्वस्स कम्महरिदुं समत्थो।

धर्म ही सभी के कर्महरण में समर्थ है।

Religion is able to destroy everyone's karmas.

1570. विणा धम्मं कहिं सग्गं?

बिना धर्म के स्वर्ग कहाँ?

Where is heaven, without religion?

1571. विणा कसायचागेण णो धम्मभावो।

बिना कषाय त्याग के धर्म भाव उत्पन्न नहीं होता है।

Sense of religion cannot generate without sacrificing passions.

1572. धम्मं पालेज्ज जदि इच्छदि दुह-मुत्तिं।

यदि दु:खों से मुक्त होने की इच्छा है तो धर्म का पालन करो।

If you want to be free from sorrow then obey religion.

1573. को सुहत्थी णो पालदि धम्मं?

कौन सुखार्थी संयम धर्म का पालन नहीं करता?

Which happy person isn't restraint?

1574. तम्हि धम्मे धरेज्ज बुद्धी जो सग्ग-मोक्ख-कारणं।

उसी धर्म में बुद्धि रखनी चाहिए जो स्वर्ग व मोक्ष का कारण हो।

One should have faith in only that religion which leads to heaven and liberation.

1575. दया धम्म-मूलं।

दया धर्म का मूल है।

Mercy is the base of religion.

1576. जिणुद्दिट्ठ-धम्मो दुल्लहो लोए।

जिन प्रणीत धर्म लोक में दुर्लभ है।

Religion said by Jina is rare in the world.

1577. धम्मो हु महाबंधू देहीणं।

सर्व संसारी प्राणियों के लिए धर्म ही महाबंधु है।

Religion is the most eminent friend of all worldly beings.

1578. धम्मो रक्खदि सव्वदुक्ख-किलेसादो।

धर्म सर्वदु:ख और क्लेशों से रक्षा करता है।

Religion protects the creatures from all sufferings and afflictions.

1579. **अहिंसा महाधम्मो लोयम्मि सुहंकरो।**

अहिंसा महाधर्म लोक में सुखकर है।

Non violence as a highest form of religion is pleasant in the world.

1580. **धम्मो वित्थारदि जसं सुहं धणं संतिं च।**

धर्म यश, सुख, शान्ति और धन का विस्तार करता है।

Religion expands fame, pleasure, peace and wealth.

1581. **धम्मेण चक्कि-इंद-अहमिंद-बलदेव-तित्थयर-पदं।**

प्राणी धर्म से चक्रवर्ती, इन्द्र, अहमिन्द्र, बलदेव और तीर्थंकर पद प्राप्त करता है।

Worldly creature become chakravarti, Indra, Ahmindra, Baldeva and Teerthankara from religion.

1582. **धम्मेण तिलोएसु विज्जमाणं चउवग्गं लहंते।**

धर्म से तीन लोक में विद्यमान चारों वर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) प्राप्त करते हैं।

All four classes can be gained through religion in the world.

1583. **लोए सुलहा धम्मुवदेसगा धम्म-पालगा दुल्लहा।**

लोक में धर्म के उपदेशक सुलभ हैं परन्तु धर्म के पालक दुर्लभ हैं।

Preachers of religion are available in the world but followers are rare.

1584. **कस्स पियो जो चुअदि धम्म-मग्गादु?**

जो धर्म के मार्ग से च्युत हो जाता है वह किसको प्रिय होता है?

Who loves him who strays from the path of righteousness.

1585. **णरो धम्मं रक्खेदि धम्मो सव्वजीवा।**

मनुष्य धर्म की रक्षा करता है और धर्म सभी जीवों की रक्षा करता है।

Human protects religion and religion protects all living beings.

1586. **णाणागुणजुत्तस्स वि धम्मणिट्ठं विणा सव्व णिप्फलं।**

अनेक गुणों से युक्त के भी धर्मनिष्ठा के बिना सर्व निष्फल है।

Without devotion every thing is meaningless for him even if he is endowed with many virtues.

1587. **धम्मणिट्ठो हु धम्म-मूलं।**

धर्मनिष्ठ ही धर्म का मूल है।

Devout is the root of religion.

1588. **धम्मणिट्ठं विणा जीवणं तहा विणा अक्कचंदेहिं गगणं।**

धर्म निष्ठा के बिना जीवन वैसा माना जाता है जैसे सूर्य और चन्द्र के बिना गगन।

Life without devotion is like a sky without sun & moon.

1589. **वेदेसु वि जीवरक्खणं हु वरो धम्मो।**

वेदों में भी जीवरक्षण ही सर्वोत्कृष्ट धर्म है।

Protection of living beings is the supreme religion even in the vedas.

1590. **सुद्धचित्त-वित्त-जोगेहि य धम्मो संभवो।**

शुद्ध चित्त, वित्त और योग से धर्म संभव है।

Religion is possible from pure heart, money and yoga (voilitions).

1591. **धम्मत्थं सद्धा मुक्खा ण धणं।**

धर्म के लिए श्रद्धा मुख्य है धन नहीं।

Faith is chief for religion not money.

1592. **जहा सद्दा तहा धम्मो।**

जैसी श्रद्धा वैसा धर्म।

As there is faith so there is religion.

1593. **दंभ-कवड संकिलिट्ठ रहिदो हु धम्मो।**

दंभ, कपट, संक्लेशता रहित ही धर्म है।

Religion is devoid of pretence, deceit and distress.

धर्मात्मा

1594. **आढाएज्ज सया धम्मप्पा।**

धर्मात्मा जनों का सदा आदर सत्कार करना चाहिए।

A person should respect righteous people.

1595. **णिम्मल-दिट्ठी धम्मि-चिण्हं।**

निर्मल दृष्टि धर्मात्मा का चिह्न माना जाता है।

Clear perception is considered a sign of holy personage.

1596. **बालोव्व चित्त-धारगो धम्मप्पा।**

जिसका चित्त बालक की तरह होता है वही धर्मात्मा होता है।

Only the one whose heart is sacred like a child is holy person.

1597. **धम्मीणं को ण सहाओ?**

धर्मात्माओं का कौन सहायक नहीं?

Who doesn't help pious people?

1598. **को धम्मी णो धम्मि-पियो?**

कौन धर्मात्मा है जो अन्य धर्मात्माओं को प्रिय नहीं होता है?

Which pious man is not dear to other pious men?

1599. **गिहत्था धण्णा जे धम्मणिट्ठा।**

जो धर्मनिष्ठ होते हैं वही गृहस्थ धन्य होते हैं।

Only devout householders are praiseworthy.

धारणा

1600. **धारणा सुइ-हेदू।**

धारणा स्मृति का हेतु है।

Assumption is the motive of rememeberance.

धीर

1601. **धीरो ण चयदि धम्म-मग्गादो।**

धीर व्यक्ति धर्म के मार्ग से च्युत नहीं होता।

A person who have patience doesn't deviated from the way of religion.

1602. **धीरो हु सगकल्लाणं करेदुं समत्थो।**

धीर पुरुष नियम से अपना कल्याण करने में समर्थ होता है।

A person who has patience is able to do his welfare surely.

1603. **धीरभत्ता णियगुरूणं णो कुप्पंति।**

धीर भक्तजन निज गुरुजनों पर क्रोध नहीं करते।

Patient devotee doesn't get angry on his preceptor.

1604. **धम्म-धि-धण-धारगा धीरा।**

धर्म बुद्धि रूपी धन के धारक धीर होते हैं।

People who have wealth of religious mind are patient.

1605. **कट्ठं सहिय वि धीरा णो अवसीयंति।**

कष्ट सहन करके भी धीर दु:खी नहीं होते।

Patient never become sorrowful even after tol-

erating trouble.

1606. **संकडे धीरो णो खुब्भदि।**

संकट में धीर क्षुभित नहीं होते।

Pateint doesn't get disturbed in trouble.

1607. **धम्ममग्गादो णो चयंति धीरा।**

धीर धर्ममार्ग से डिगते नहीं हैं।

Pateint doesn't deflect from the way of religion.

धीरत्व

1608. **धीरिमाए विजयो होदि लोए दीणदाए विणासो।**

धीरता से लोक में विजय प्राप्त होती है और दीनता से विनाश।

Fortitude gives victory in the world and dejection annihilates.

1609. **धीरिमा ण कयावि उज्झणीया सज्जणेहिं।**

सज्जनों के द्वारा धीरता कभी भी त्यागने योग्य नहीं है।

Fortitude is never abandoned by virtuous people.

1610. **धीरिमा हु गुरूणं गुरु-पयडि गुणो वा।**

धीरता ही गुरुओं का गुरु प्रकृति या गुण है।

Fortitude is the great nature or virtue of great men.

धृष्ट

1611. **सामिणा पुच्छणं विणा कज्जं करेदि सो धिट्ठो।**

स्वामी के बिना पूछे जो कार्य करता है वह धृष्ट है।

One who does work without asking his master is presumptuous.

धैर्य

1612. **विणा धीरेण समप्पणेण अप्पविस्सासेण य को वि सगलक्खं ण पप्पोदि।**

धैर्य, समर्पण और आत्मविश्वास के बिना कोई भी मानव अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता।

No one can achieve his aim without patience, devotion and self confidence.

1613. **धीरव्व ण को वि मित्तं।**

धैर्य के समान कोई मित्र नहीं है।

There is no friend like patience.

ध्यान

1614. **अप्पज्झाण-समं णो अण्णज्झाणं।**

आत्मध्यान के समान अन्य कोई ध्यान नहीं है।

There is no meditation like self-meditation.

1615. **कहं करेदि जीवो अट्ट-रुद्दज्झाणं हु सव्वदा?**

यह जीव सर्वदा आर्त्त-रौद्र ध्यान क्यों करता है?

Why does this worldly soul concentrate painful and cruel?

1616. **धम्मज्झाण-याले वक्के आणंदो विज्जदे।**

धर्मध्यान के काल में मुख के ऊपर प्रसन्नता होती है।

There is happiness on the face at the time of righteous concentration.

नम्रता

1617. **परक्कम-भूसणं णम्मत्तं।**

नम्रता पराक्रम का आभूषण है।

Courtesy is an ornament of vigour.

नय

1618. **पमाण-अंसो णयो।**

प्रमाण का अंश नय है।

Prudence is a part of right knowledge.

1619. **णाणिणो अभिप्पायो णयो।**

ज्ञानी का अभिप्राय नय है।

Prudence is loved a lot by learned.

1620. **संगहदि पमाणं सव्व-वत्थुं णयो एगंसं।**

प्रमाण से सर्व वस्तु का संग्रह होता है और नय से एकांश का ज्ञान होता है।

All parts of the things can be known by right knowledge and one part can be known by prudence.

नर

1621. **णरस्स तवो सेट्ठो इत्थीए।**

नर का तप स्त्रियों के तप से श्रेष्ठ है।

Austerity of men is better than the austerity of women.

नरक

1622. **रुद्द-परिणामेण जीवा लहंते णिरयगदिं।**

रौद्रपरिणाम से जीव नरकगति प्राप्त करते हैं।

Soul go to hell because of violent thoughts.

1623. **अदितिव्व-पावफलेण जीवा लहंति णिरयगदिं।**

अतितीव्र पाप के फल से जीव नरकगति प्राप्त करते हैं।

Soul go to hell because of the fruition of heinous sin.

नाटक

1624. **सिक्खा सक्कार-मणोरंजण-दायग-णाडगं।**

शिक्षा संस्कार व मनोरंजन दायक नाटक है।

Education is a play which gives culture and enjoyment.

नायक

1625. **को ण वंछदि णायगं?**

नायक को कौन नहीं चाहता? अर्थात् सभी चाहते हैं।

Everyone likes a leader.

1626. **जस्स अवेक्खा णायगेण ण होदि पुण्णो सो ण णायगो।**

जिसकी अपेक्षा नायक के द्वारा परिपूर्ण नहीं होती वह नायक को नहीं चाहता।

One whose expectation doesn't get fulfilled by the leader he doesn't like him.

1627. **समत्थो णायगं ण वंछदि।**

स्वकीय समर्थ जन नायक को नहीं चाहता।

One who is capable doesn't like his leader.

1628. **जेण णायगेण अप्पलाहो बहुहाणी य होदि तं को वि ण वंछदि।**

जिस नायक के द्वारा अल्प लाभ और बहु हानि होती है उस नायक को कोई भी नहीं चाहता।

That leader by whom there is small profit and lot of loss is not liked by anyone.

1629. **करुणा-भाव-रहिदो अइणाय-पियो वि ण वंछदि णायगं।**

जो दूसरों में करुणाभाव से सहित है अतिन्यायप्रिय है वह भी नायक को नहीं चाहता।

One who is mercifull and loves justice, also doesn't like leader.

निंदनीय

1630. वंदणीयो होज्ज णो णिंदणीयो।

वंदनीय होना चाहिए निंदनीय नहीं।

One should be praiseworthy not reprehensible.

निंदा/निंदक

1631. परदोसभासणं णिंदा।

पर के दोषों को कहना निंदा है।

Saying others' vices is censure.

1632. णिंदा वि महापावं लोए।

लोक में निंदा भी महापाप है।

Censure is also a heinous sin in the world.

1633. परणिंदाहीणो वि महागुणी।

परनिंदा से हीन भी महागुणी है।

Devoid of others' censure is also a great virtue.

1634. महापुरिसो णिंदगेहिं णो बीहेदि।

महापुरुष निंदकों से डरते नहीं हैं।

Great men don't fear from standeress.

1635. मेत्तं परणिंदगो पुढवीए महाभारो।

पृथ्वी पर परनिंदक एकमात्र महाभार है।

One who blame others is only a burden on earth.

नि:कांक्ष

1636. कंखा-हीणो हु णिक्कंखो।

कांक्षा से हीन ही नि:कांक्ष है।

Only the one free from desires is desireless.

1637. णिक्कंखिद-जीवणं अप्पसंति-कारणं।

नि:कांक्षित जीवन ही आत्मशान्ति का कारण है।

Only a life free from desires is a cause of self-peace.

नि:शंक

1638. णिग्गदा संका जस्स सो णिस्संको।

जिसकी शंकायें निकल गई हैं वही नि:शंक है।

One whose doubts come out is undaunted.

1639. कया वि णो णिसंको अवराही।

अपराधी कभी भी निशंक नहीं है।

Guilty is never undaunted.

निक्षेप

1640. पमाण-णयावेक्खाए आरोवणं णिक्खेवो।

प्रमाण और नयों की अपेक्षा आरोपण करना निक्षेप है।

Impose according to right knowledge and paralogism is imposition or attribution.

1641. वत्थुम्मि णामाइ-णिक्खेवणं णिक्खेवो।

किसी भी वस्तु में नामादि का निक्षेपण करना निक्षेप है।

Imposing name etc in anything is attribuition.

निद्रा

1642. णिद्दा हु लहु मिच्चू, णिद्दासीला सग-कच्चे असफला।

निद्रा ही लघु मृत्यु है निद्राशील व्यक्ति अपने कार्य में सफल नहीं होते।

Sleep is short death, sleepy people don't succeed in their own work.

1643. **णिद्दा वि आरोग्गवड्ढवआ।**
निद्रा आरोग्यवर्धनी भी होती है।
Sleep is curative.

1644. **वाहिदाय कत्थ णिद्दा?**
व्याधिग्रस्त को कहाँ निद्रा?
When does ailing sleep?

1645. **णिद्दा वि पावपयडी।**
निद्रा भी पापप्रकृति है।
Sleep is also sinful.

1646. **णिद्दाए को कुणेदि सगभवं सत्थगं?**
निद्रा से कौन अपना भव सार्थक करता है?
Who makes his life significant by sleeping?

1647. **बहुदोसजुदा वि णिद्दा णिंदादोसरहिदा।**
निद्रा बहुदोष युक्त होते हुए भी निंदा दोष से रहित है।
Even after having many faults sleep is free from censure.

निमित्त

1648. **विणा णिमित्तेण णो कं वि कज्जं संभवो।**
बिना निमित्त के कोई भी कार्य संभव नहीं।
No work is possible without medium.

नियति

1649. **णियडि-फलाणि अण्णहा-कुणेदुं को समत्थो?**
नियति के फलों को अन्यथा लेने के लिए कौन समर्थ होता है?
Who is able to change the fruition of destiny?

1650. **सव्वदव्वाणं पयडी हु सासया णियडी।**
सर्वद्रव्यों की प्रकृति ही शाश्वत नियति है।
Nature of all substances is immortal fate.

नियम

1651. **वद-संजमो परिमिदयालस्स गहिदो सो णियमो।**
जो व्रत, संयम परिमित काल के लिए ग्रहण किये जायें वह नियम है।
Vow taken for a fixed period of time is called *niyama.*

1652. **जावज्जीवस्स गहिदो वद-संजमो जमो।**
जो यावज्जीवन के लिए व्रत संयम लिया जाए वह यम है।
Vow taken for whole life is called *'Yama'.*

नियोग

1653. **आसण्णभव्वो णियोगेण लहदि मोक्खं।**
आसन्नभव्य नियोग से मोक्ष प्राप्त करता है।
Adjacent accomplishable get liberation.

1654. **पत्तेयं अरिहंता णियोगेण सिद्धा।**
प्रत्येक अरिहंत नियोग से सिद्ध होते हैं।
Every Arihant becomes Siddha.

1655. **को वि देवो णेरइयो णियोगेण णो देव-णेरइया।**
कोई भी देव नारकी नियोग से देव और नारकी नहीं होते हैं।
No celestial beings and denizens of hell become celestial beings and dinizens of hell in the next birth.

निरक्षर

1656. **णिरक्खरा वि सरसा।**
निरक्षर भी सरस होते हैं।
Illiterate are also elegant.

1657. **णिरक्खरो वि कला-कुसलो।**
निरक्षर भी कला-कुशल होता है।
Illiterate is also skilled.

निरामय

1658. **सव्वपाणी होज्ज णिरामया।**

सभी प्राणी निरामय होने चाहिए।

All creatures should be free from disease.

1659. **णिरामयकंखी णिरामिसं भुंजेज्ज।**

निरामय का आकांक्षी निरामिष भोजन करे।

One who wants to be free from disease should take vegetarian food.

निरीह

1660. **णिरीहो णिरुज्जमी ण लहंति महवत्थूणि।**

निरीह और निरुद्यमी महान् वस्तुओं को प्राप्त नहीं करते।

Meek and effortless don't attain great things.

1661. **णिरीहो सो संतो।**

जो निरीह है वह संत है।

A person who is indifferent is ascetic.

1662. **तच्चणाणजुदो णिरीह-साहग-लक्खणं।**

तत्त्वज्ञान से युक्त निरीह होना साधक का लक्षण है।

Being indifferent with knowledge of truth is the sign of ascetic.

1663. **णिरीहो सो जदिवरो।**

जो निरीह है वह यतिश्रेष्ठ है।

Ascetic who is detached is the greatest.

निर्गुण

1664. **लोयम्मि णिग्गुणा गणंते पसुव्व।**

लोक में निर्गुण, पशु के समान गिने जाते हैं।

Men without virtues are counted like animals in

the world.

1665. **णिल्लज्जिमा जणदि जीवम्मि गुणहीणदा।**

गुणहीनता जीव में निर्लज्जता पैदा करती है।

Deprivation of virtues generates shamelessness in the living beings.

1666. **वणेसु फल-पुप्फ-पत्तेहिं विणा रुक्खोप्पण्णं होज्ज किण्णु माणवा णिग्गुणा ण होज्ज।**

वनों में फल, पुष्प, पत्तों के बिना वृक्ष उत्पन्न हो किन्तु मानव निर्गुण नहीं होने चाहिए।

Trees may grow without fruits, flowers and leaves in the forest but men shouldn't be without virtues.

1667. **गुणहीणस्स विसालकायं वि णिरट्ठं।**

गुणहीन की विशालकाय भी निरर्थक है।

Huge body without virtues is also useless.

1668. **णिग्गुणी सग-सत्तू वि।**

निर्गुणी स्वयं का भी शत्रु होता है।

Person without qualities is a foe of himself.

1669. **णिग्गुणी ण को वि लोयम्मि।**

लोक में कोई भी निर्गुणी नहीं है।

There is no one without virtues in the world.

निर्ग्रन्थ

1670. **विणा णिग्गंथ-जिणदिक्खाए ण को वि समत्थो कम्मक्खयिदुं।**

बिना निर्ग्रन्थ जिनदीक्षा के कोई भी कर्मों को क्षीण करने में समर्थ नहीं है।

No one is able to destroy karmas without Digamber initiation.

1671. **सव्वसंगचागी जहाजादो दियंबरो हु णिग्गंथो।**

सर्वपरिग्रहत्यागी यथाजात दिगम्बर ही निर्ग्रन्थ है।

Digamber saints who are renouncer of all accumulation are nirgranth.

1672. **रयणत्तयधारगो दियंबरो हु महाणाणी।**

रत्नत्रयधारक दिगम्बर ही महाज्ञानी है।

Digamber saint endowed with three jewels (right faith, right knowledge & right conduct) is a great scholar.

निर्णय

1673. **हंसणिण्णये णो विस्सासो तत्थ मिच्छा सव्वणिण्णया।**

जहाँ हंस के निर्णय पर विश्वास नहीं है वहाँ सर्व निर्णय मिथ्या हैं।

Where there is no belief on the (right) decision of swan, all decisions are false there.

निर्दयी

1674. **महु-मंस-मज्झ-सेवी हु णिद्दयो।**

मधु माँस मद्य सेवन करने वाला नियम से निर्दयी होता है।

One who takes honey, meat and wine, surely he is cruel.

1675. **णिद्दयदा हु महापावं।**

निर्दयता ही महापाप है।

Cruelty is a heinous sin.

1676. **णायहीण-णिद्दयाणं आयत्ततं अहिसावो।**

न्यायहीन निर्दयीजनों की अधीनता अभिशाप है।

Subjection of injustice and cruel people is a curse.

निर्धन

1677. **जइ दरिद्दस्स को वि मित्तं सच्चं होदि णियमेण।**

निर्धन का यदि कोई मित्र है तो वह नियम से सच्चा मित्र है।

If there is any friend of a poor man than he is a true friend.

1678. **णिल्लज्जो णिरीहो णिब्भियो य संभवो दरिद्दो।**

निर्धन का निर्लज्ज, निरीह और निर्भीक होना संभव है।

A poor man is possibly shameless, indifferent and fearless.

निर्बल

1679. **णिब्बलाणं को सहाई?**

निर्बलों का कौन सहायी होता है?

Who helps the weak?

1680. **अप्पबलजुदो णो कया वि णिब्बलो।**

आत्मबल युक्त कभी भी निर्बल नहीं होता।

People having spiritual strength are never weak.

निर्भीक

1681. **अत्थ-सत्थेहिं किं पयोजणं णिब्भीयाण?**

निर्भीकों के लिए अस्त्र शस्त्र से क्या प्रयोजन?

What is the use of weapons to fearless person?

1682. **पत्तेयं जीवं धम्म-कज्जे णिब्भयो होज्ज।**

प्रत्येक जीव को धर्मकार्य में निर्भय होना चाहिए।

Every soul should be fearless in religious work.

निर्मल

1683. **णो सण्णी णो असण्णी य हु णिम्मलो।**

न संज्ञी और न असंज्ञी ही निर्मल है।

Neither rational nor irrational beings are sacred.

1684. **णिम्मलेसु खयियभावो विज्जदे।**

निर्मलों में क्षायिक भाव रहता है।

Destructional disposition remains in sacred people.

1685. **कसायहीणो णिम्मलो।**

कषायहीन निर्मल है।

Dispassionate is sacred.

निर्वाण

1686. **चदुगदीए परिब्भमणस्स जम्ममरण-विरमणं वा णिव्वाणं।**

चतुर्गति में परिभ्रमण या जन्म मरण का छूटना निर्वाण है।

To release from transmigration or birth and death is salvation.

1687. **पवत्ति-मग्ग-णिरोहो हु णिव्वाण-कारणं।**

प्रवृत्ति मार्ग का निरोध ही निर्वाण का कारण है।

Preventing the way of activities is the cause of liberation.

1688. **सव्व-कम्मरहिदं सुहं णिव्वाण-सुहं।**

सर्व कर्म रहित सुख निर्वाण सुख है।

Pleasure without karmas is pleasure of liberation.

1689. **विणा णिव्वाणं जीवो लो हेदुं सस्सद-सुहं।**

बिना निर्वाण के कोई भी जीव शाश्वत सुख को प्राप्त करने में समर्थ नहीं होता।

No soul is able to get eternal bliss without liberation.

1690. **समत्थो णिव्वाणं पावेदुं तस्स किं कज्जं दुक्करं।**

जो निर्वाण को प्राप्त करने में समर्थ है उसके लिए कौन सा कर्म दुष्कर है।

What is arduous for him who is able to get emancipation.

निर्वेग

1691. **भव-तण-भोगादो विरत्ती णिव्वेओ।**

भव-तन-भोगों से विरक्ति निर्वेग है।

Detachment from world, body and worldly pleasures is *Nirvega.*

1692. **णिव्वेओ वेरग्ग-पोसगो।**

निर्वेग वैराग्य का पोषक है।

Nirvega rears detachment.

1693. **संवेअ-णिव्वेअ-जुदं संत-चित्तं।**

संवेग निर्वेगयुक्त संत का चित्त है।

Saint's heart is endowed with samvega & *Nirvega.*

1694. **पावभीरुत्तं विणा णिव्वेओ भावो असंभवो।**

पापभीरुता बिना निर्वेग भाव असंभव है।

Feelings of *nirvega* are impossible without fearing sins.

निश्चय

1695. **णिच्छयो साहणाए को ण लहदि सिद्धिं?**

निश्चय ही साधना से कौन सिद्धि को प्राप्त नहीं करता?

Who doesn't attain salvation through self devotion?

1696. **णिच्छयो हु ववहार-पाणो।**

निश्चय ही व्यवहार का प्राण है।

Reality is the life of practical.

1697. **विणा ववहारेण णिच्छय-सिद्धी ण कयावि।**

बिना व्यवहार के निश्चय की सिद्धि कभी भी नहीं होती।

Reality can never be attained without being practical.

1698. **णिच्छयं विणा ववहारो मिदिगो।**

निश्चय के बिना व्यवहार मृतक होता है।

Convention is like a dead corpse without reality.

निष्क्रिय

1699. **णिक्किरियाणि चदुदव्वाणि।**

चार द्रव्य निष्क्रिय हैं।

Four substances are inactive.

1700. **णिक्किरियाणि दव्वाणि वि परदव्वेसु किरिया-कारणं।**

निष्क्रिय द्रव्य भी परद्रव्यों में क्रिया का कारण है।

Inert substances are also the cause of changes in alien substances.

निष्ठा

1701. **विणा णिट्ठं ण होदि संकप्पो दढो।**

बिना निष्ठा संकल्प दृढ़ नहीं होता।

Determination is not firm without faith.

निस्पृह

1702. **परदव्वेसु णिप्पिहो साहगो।**

परद्रव्यों से निस्पृह साधक है।

Those detached from alien substances are ascetics.

1703. **अप्पलीणो हु णिप्पिहो।**

आत्मलीन नियम से निस्पृह है।

Self engrossed are definitely detached.

1704. **तच्चणाणी हु णिप्पिहो संजमी।**

तत्त्वज्ञानी ही निस्पृही संयमी होता है।

Only knower of reality are detached and restrained.

निस्सार

1705. **गुणेहिं विणा णरजीवणं णिस्सारं जहा विणा मुत्तीए सिप्पी।**

गुणों के बिना मानव जीवन निस्सार है जैसे बिना मोती के सीप।

Human life is as worthless without virtues as shell without pearl.

1706. **दयाहीण-धम्मो णिस्सारो जहा धण्णहीणो कुसो।**

दयाहीन धर्म निस्सार है जैसे धान्यहीन कुश।

Merciless religion is as worthless as grainless grass.

1707. **पाणहीण-देहो णिस्सारो जहा पुण्णहीण-राया।**

प्राणहीन देह निस्सार है जैसे पुण्यहीन राजा।

Lifeless body is as insubstantial as wretched king.

नीच

1708. **सहावेण को वि णीयो लोयम्मि।**

स्वभाव से लोक में कोई भी नीच नहीं है।

No one is lower by nature in the world.

1709. **कम्मकिअ-णीयो कालांतरे उच्चो संभवो।**

कर्मकृत नीच कालान्तर में उच्च हो सकता है।

Inferior by karma can become superior in due course of time.

1710. **माणी णीयगदिं लहदि जलव्व।**

जल की तरह मानीजन नीच गति प्राप्त करते हैं।

Egoist recieve low life like water.

1711. **गुणेसुं णीयविट्टी गुणि-लक्खणं।**

गुणों में नीचवृत्ति (नम्रता) गुणियों का लक्षण है।

Courtesy is a sign of virtuous people.

1712. **देहवण्णेण ण को वि णीयो आयार-ववहारेण हु।**

देह के वर्ण से कोई भी नीच नहीं होता, आचार-व्यवहार से ही नीच होता है।

No one is lower by the colour of the body but is lower by behaviour.

नीति

1713. **णीदी सुहमग्ग-साहगा।**

नीति शुभमार्ग की साधिका है।

Morality is the exercitant of auspicious way.

1714. **अवसरे पजुत्ता णीदी हु महाफल-दायगा।**

अवसर पर प्रयुज्यमान नीति ही महाफल देने वाली है।

Tacts applied on opportunity gives great fruition.

1715. **दुट्ठेहिं सत्थसिद्धीए पजुत्ता णीदी कूडणीदी।**

दुष्टों द्वारा स्वार्थसिद्धि के लिए प्रयुज्य नीति कूटनीति कहलाती है।

Policy applied by wicked people for self-interest is called crooked policy.

न्यायप्रिय

1716. **णायप्पियो सया करुणापालेदुं असमत्थो।**

न्यायप्रिय सदा करुणा पालन में असमर्थ होता है।

Righteous person is always unable to show kindness.

1717. **णायप्पियो णो पक्खवायी।**

न्यायप्रिय पक्षवादी नहीं होता।

Partial is not righteous.

पगदण्डी

1718. **पयपहेण विणा राजमग्गो ण पुण्णो जहा इत्थीए विणा गिहत्थो।**

पगदण्डी के बिना राजमार्ग वैसे ही पूर्ण नहीं होता जैसे स्त्री के बिना गृहस्थ।

Highway is incomplete without track just like householder without wife.

1719. **जहा भूसणेहिं विणा णो सोहदि णारी तहेव पायपहेण विणा रायपहो।**

जैसे आभूषणों के बिना नारी शोभित नहीं होती वैसे ही पगपथ के बिना राजपथ।

Just like a lady doesn't get adorned without jewels, so does a highway without pedestrains.

1720. **जहा लदाए रुक्खो सोहदि तहेव पयपहेण रायपहो।**

जैसे लता से वृक्ष की शोभा होती है वैसे ही पगपथ से राजपथ की।

Like trees get adorned by flowers, similarly highways by footpaths.

1721. **सरिदाए विणा समुद्दो असंभवो तहा पयपहेण विणा राजपहो।**

सरिता के बिना जैसे समुद्र असंभव है वैसे ही बिना पगपथ के राजपथ।

As sea is impossible without river similarly highway without footpaths.

1722. **जाव रुक्ख-समीवे पुप्फ-फलाणि लदा य सोहंति ताव पयपहेण रायपहो।**

जितना वृक्ष के समीप पुष्प, फल, लता शोभित होते हैं उतना ही पगपथ से राजपथ।

As much as flowers, fruits and creeper adorn near the tree so much highway from way for pedestrians.

पण्डित

1723. **सम्मद्दिट्ठी तच्चणाणी हु पंडिदो।**

जो समदृष्टि तत्त्वज्ञानी होता है वह ही पण्डित है।

One who is enlightened impartially is a scholar.

1724. **कज्ज-पुण्णे विस्समदि पंडिदो।**

कार्य के होने पर ही विश्राम लेता है वह पण्डित होता है।

One who takes rest only after completing the work is learned.

1725. **पंडिच्चं हु पदत्थाणं गुण-दोस-मुणणं।**

पदार्थों के गुण दोषों को जानना ही पांडित्य है।

Deciding virtues and vices of the substances is intelligence.

1726. **सम्मदंसी हु पंडिदो।**

समदर्शी ही पण्डित है।

Impartial is scholar.

1727. **पावरहिदो पवित्त-चित्तो पंडिदो।**

पापरहित पवित्र चित्त पण्डित है।

Sinless holy hearted is scholar.

1728. **सयायारहीणं को मण्णदे पंडिदो?**

सदाचारहीन को कौन पण्डित मानता है?

Who considers a person of bad conduct, a scholar? No one!

1729. **पंडिदं विणा णो धम्म-सहा।**

पण्डित के बिना धर्मसभा नहीं हो सकती।

Religious assembly is not possible without learned person.

1730. **सम्मद्दिट्ठी दियंबरो वि पंडिदो।**

समदृष्टि दिगम्बर भी पण्डित है।

Impartial Digamber saint is also scholar.

1731. **पंडिद-संगदी सया सुहंकरी।**

पण्डितों की संगति सदा सुखकारी होती है।

Company of scholars is always beneficial.

1732. **कोही माणी लोही पंडिदा खंडिदा।**

क्रोधी, मानी, लोभी पण्डित खण्डित होते हैं।

Angry, egoist and greedy scholars are faulty.

1733. **संजमि-पंडिदेहिं मंडिदा वसुहा।**

संयमी पण्डितों से वसुधा मण्डित है।

Earth is adorned by restrained scholars.

1734. **जस्स पण्णा अप्पलीणो सो पंडिदो।**

जिसकी प्रज्ञा आत्मा में लीन है वह पण्डित है।

Whose wisdom is engrossed in soul is learned.

पति

1735. **रक्खेदि सगदारं विवत्तीए सो पदी।**

विपत्ति में अपनी पत्नी की रक्षा करता है इसलिए वह पति माना जाता है।

One who defends his wife in adversity is considered a husband.

1736. **सगित्थिं पालदि सो भत्ती।**

जो अपनी स्त्री का भरण-पोषण करता है वह भर्ता माना जाता है।

One who supports & sustains his wife is considered a husband.

पत्नी

1737. **पदि-सुहं कंखदि सा भज्जा।**

जो पति के सुख की आकांक्षा करती है वह पत्नी कही जाती है।

One who desires good for her husband is called wife.

1738. **भज्जा हु अद्धंगी भारदिय-सक्किदीए।**

भारतीय संस्कृति में पत्नी अर्धांगिनी है।

Wife is considered half part of her husband in Indian culture.

1739. **भत्तु-धम्म-कारणं मण्णदे भज्जा।**

पति के धर्म का कारण पत्नी भी मानी जाती है।

Wife is also considered the cause of religion of her husband.

1740. **गिहत्थो अपुण्णो भज्जं विणा।**

बिना पत्नी के गृहस्थ अपूर्ण है।

House holder is incomplete without a wife.

पथ्य

1741. **पच्छा वि ओसही।**

पथ्य भी औषधि है।

Wholesome diet is also medicine.

1742. **ओसही णिरट्ठा अपच्छा सेवगाणं।**

अपथ्य सेवकों के लिए औषधि निरर्थक है।

Medicine is useless for them who take unwholesome food.

परमात्मा

1743. **तुमं हु तुव परमप्पा।**

तुम ही तुम्हारे परमात्मा हो।

You are your own lord.

1744. **परमप्पा हु चित्तम्मि अण्ण-दव्वेसु मा गवेसहि।**

तुम्हारा परमात्मा तुम्हारे चित्त में ही है इसे अन्य द्रव्यों में मत खोजो।

Your own God is in your heart, don't find Him in other substances.

1745. **परमप्पणाण-संपण्णो वि परमप्पा।**

जो परमज्ञान से सम्पन्न है वह परमात्मा होता है।

One who is endowed with supreme knowledge (omniscient) is God.

परमेष्ठी

1746. **परमपये ठिदा परमेट्ठी।**

जो परमपद में स्थित है वह परमेष्ठी है।

Who resides in the highest status is a paramesthi.

1747. **णीरं पंकं पक्खालदि तहा पंचपरमेट्ठि-भत्तीए चित्तं**

जैसे जल से कीचड़ प्रक्षालित होता है वैसे पंचपरमेष्ठियों की सद्भक्ति से चित्त प्रक्षालित होता है।

Just as mud gets washed away by water similarly heart gets purified by devotion to five Parmesthis.

परस्पर सहयोग

1748. **परप्पर-सहजोगं विणा णो जीवणं।**

परस्पर सहयोग के बिना जीवन नहीं है।

There is no life without co-operating of one-another.

1749. **परप्परसहजोगेण विणा अववत्थिदो समाजो।**

परस्पर सहयोग के बिना समाज अव्यवस्थित होता है।

Society is disorganised without co-operation from anyone.

1750. **परप्पर-सहजोगेण विणा पसुजीवणं वि असंभवो।**

परस्पर सहयोग के बिना पशुजीवन भी असंभव है।

Animals' life is also impossible without collaborating with each other.

1751. **मालाए बहुपुप्फाणि तहा समाजे णाणाविह-सहजोगो।**

जैसे माला में बहुविध पुष्प होते हैं वैसे समाज में नानाविध सहयोग।

Just as there are various kinds of flowers in garland similarly many types of co-operation in the society.

1752. **परप्पर-वेआरिग-सहजोगो वि गुण-वड्ढण-कारणं।**

परस्पर वैचारिक सहयोग भी गुणवर्धन का कारण है।

Ideological co-operation with each other is also the cause of increase of virtues.

1753. **गुरु-सिस्साण-परप्पर-सहजोगं विणा णो विज्जा।**

गुरु शिष्य के परस्पर सहयोग बिना विद्या संभव नहीं है।

Knowledge is not possible without co-operation of preceptor and disciple.

1754. **दंपत्तिणो-परप्परसहजोगं विणा णो वंसविद्धी।**

दम्पत्ति के परस्पर सहयोग बिना वंशवृद्धि असंभव है।

Continuation of generation is impossible without co-operation of husband & wife.

1755. **सावय-समणाण परप्पर-सहजोगं विणा धम्मभावणा असंभवो।**

श्रावक श्रमण के परस्पर सहयोग के बिना धर्म भावना असंभव है।

Religious feelings are impossible without mutual co-operation of ascetic & house holders.

1756. **राया-पयाण परप्परसहजोगेण विणा देसुण्णदी असंभवो।**

राजा प्रजा के परस्पर सहयोग के बिना देशोन्नति असंभव है।

Development of country is impossible without mutual co-operation of king and his subjects.

पराक्रम

1757. **परक्कमहीणो रायो पराजिदो।**

पराक्रम से हीन राजा पराजित माना जाता है।

Coward king is considered defeated.

1758. **परक्कमजुदो एगो सुभटो हु बहु-कायरपुरिसादो सुट्ठु।**

पराक्रमयुक्त एक सुभट भी बहुत से कायरों से श्रेष्ठ है।

Vigorous warrior is better than many cowards.

पराधीन

1759. **को सुही पराहीणो?**

पराधीन कौन सुखी होता है?

Which dependent is blissful?

1760. **परासिदो होदि भीरू लज्जालू य।**

जो पराश्रित है वह भीरू और लज्जावान् होता है।

One who is dependent is timid and shameless.

1761. **किं किं ण कारदि पारतंतं?**

पराधीनता क्या-क्या नहीं कराती है?

What does dependence not make one do?

1762. **पारतंतं हु महादुक्खं।**

पराधीनता ही महादु:ख है।

Dependence is the greatest sorrow.

1763. **अणुसासणहीणो पराहीणो।**

अनुशासनहीन, पराधीन होता है।

Undisciplined is dependent.

1764. **पराहीणं जीवणं मरणं देहीणं।**

संसारियों का जीवन-मरण पराधीन है।

Life and death of worldly souls is dependent.

पराभव

1765. **णो सहेदि सगपराभवं असमत्थो वि कहं समत्थो?**

असमर्थ भी अपना पराभव सहन नहीं करता तो समर्थ कैसे?

Even incapable cannot bear their defeat than how can capable?

1766. **मूढाणं पराभवो अदिकट्ठकरो।**

मूर्खों का पराभव अतिकष्टकर होता है।

Defeat of foolishman is very hurtful.

1767. **बलिट्ठस्स विरोहो हु सग-पराभव-कारणं।**

बलवान् से विरोध करना स्वपराभव का कारण है।

Resisting powerful person is the cause of self defeat.

1768. **णिप्फल-कज्जे रदा पदे पदे किं ण लहंति पराभवं?**

जो निष्फल कार्य में रत मनुष्य हैं वे क्या पद-पद पर पराभव प्राप्त नहीं करते हैं?

Do people who are engrossed in useless deeds not get defeated at every step?

1769. **तिरियो वि णो सहदि पराभवं।**

तिर्यंच भी पराभव सहन नहीं करता।

Even an animal doesn't tolerate its defeat.

1770. **पराभवो चित्त-खोह-कारणं।**

पराभव चित्त के क्षोभ का कारण है।

Defeat is the cause of distress in mind.

परिग्रह

1771. **परदव्वेसु मुच्छा हु परिग्गहो।**

परद्रव्यों में मूर्छा ही परिग्रह है।

Infatuation in alien substances is accumulation.

1772. **परिग्गहावंताण चित्त-सुद्धी कहं संभवो?**

परिग्रहवान् पुरुषों के चित्त की शुद्धि कैसे हो सकती है?

How can heart be pure of accumulated person?

1773. **विणा संगपरिचागेण को विजयदि आसा-रक्खसिं?**

संग परित्याग के बिना आशा राक्षसी को कौन जीत सकता है?

Who can win over the demoness of desire without giving up accumulation?

1774. **सव्व-पाव-मूलं परिग्गहो।**

सर्व पापों का मूल परिग्रह है।

Root of all sins is accumulation.

1775. **परिग्गह-जुदो असमत्थो अप्परक्खाए।**

परिग्रहवान् आत्मरक्षा में असमर्थ होता है।

Accumulated is unable to defend himself.

1776. **सगप्पियरो किं चि वि भावो सो परिग्गहो।**

अपनी आत्मा से परे जो कोई भी भाव है वह परिग्रह है।

Whatever feelings are there beyond one's soul is accumulation.

1777. **परदव्व-रक्ख-भावो हु परिग्गहो।**

परद्रव्य के रक्षण का भाव ही परिग्रह है।

Feelings of protecting alien substances is accumulation.

1778. **अप्पं जाणेदुं असमत्थो परिग्गहासत्तो।**

परिग्रह में आसक्त, आत्मा को जानने में असमर्थ है।

He who is engrossed in accumulation is unable to know his soul.

1779. **तच्चणाणी हु अपरिग्गही।**

तत्त्वज्ञानी ही अपरिग्रही है।

Knower of reality is non-accumulated.

1780. **परदव्वेसु लीणो दरिद्दो वि परिग्गहावंतो।**

परद्रव्यों में लीन निर्धन भी परिग्रही है।

Even a poor who is engrossed in alien substances is accumulated.

1781. **दुक्खरूवो हु परिग्गहो।**

परिग्रह निश्चय से दु:ख रूप ही होता है।

Accumulation surely gives pain.

परिवर्तन

1782. **परिअट्टणं पयडीए पयडी।**

परिवर्तन प्रकृति की प्रकृति (धर्म) है।

Chance is the nature of nature.

1783. **दसा-परिअट्टणं सामण्ण-णियमो।**

दशाओं (अवस्थाओं) का परिवर्तन सामान्य नियम है।

Change of state is universal law.

1784. **सव्व-दव्वा हु परिअट्टणसीला।**

सर्व द्रव्य ही परिवर्तनशील हैं।

All substances are variable.

परिश्रम

1785. **उज्जमेण विणा णो भव-विहवो णाण-पयासो य।**

परिश्रम के बिना न तो संसार का वैभव मिलता है न ही ज्ञान का प्रकाश।

Neither wealth of world nor light of knowledge can be attained without diligence.

परोक्ष

1786. **अक्खुप्पण्णं णाणं परोक्खं।**

जो ज्ञान इन्द्रियों से उत्पन्न होता है वह ज्ञान परोक्ष है।

Knowledge which generates from senses is indirect knowledge.

1787. **पमत्त-दसाए अप्पस्स परोक्खाणुभूदी होदि।**

प्रमत्त दशा में आत्मा की परोक्षानुभूति होती है।

Indirect realisation of soul becomes in imperfect vow state.

परोपकार

1788. **परोवयार-वित्ती सगपर-सुहकारणं।**

परोपकार की वृत्ति स्वपर सुख का कारण है।

Benevolence is the cause of joy for everyone.

1789. **अकारण-परोवयारेण विणा को वि महाणो णो होदि।**

अकारण परोपकार के बिना कोई भी मनुष्य महान् नहीं होता।

No person can be great without non-causal benevolence.

1790. **णिय-उवयारपुव्वं परोवयारं करेज्ज।**

निज उपकारपूर्वक पर का उपकार करना चाहिए।

Showing kindness to one self, one should show kindness to others.

1791. **अप्प-हिय-कंखी परंपराए पर-हिदंकरो वि।**

आत्महित का आकांक्षी परम्परा से पर हित का भी आकांक्षी होता है।

One who is desirous for self-benefiting he is also desirous for others' good.

1792. **जे रुक्खा संगोवंगेहिं परोवयारं करंति भूवीढे धण्णा।**

जो वृक्ष सांगोपांग से परोपकार करते हैं वे भूतल पर धन्य हैं।

Trees which show kindness with all its parts are blessed on the earth.

1793. **परोवयारेण णंदंति सज्जणा।**

परोपकार से सज्जन आनन्दित होते हैं।

Virtuous people become happy from benevolence.

परोपदेश

1794. **परोवएसो सुलहो दुल्लहं तस्सायरणं।**

परोपदेश सुलभ है उसका आचरण दुर्लभ है।

Advicing others is easy but behaving like that is difficult.

1795. **सगधम्मायरणेण विणा परोवएसो णिरट्ठो।**

स्वधर्माचरण के बिना परोपदेश निरर्थक है।

Advicing others is useless without self meritious conduct.

पर्याय

1796. **दव्व-गुण-भावो पज्जायो।**

द्रव्य और गुण के भाव पर्याय हैं।

Phases of substances and intrinsic qualities are called modes.

पात्र

1797. **रयणत्तयधारगो हु उत्तमपत्तं।**

जो रत्नत्रय धारक है वही उत्तमपात्र है।

One who bears triple gems (right faith, right knowledge & right conduct) is most eminent recipient.

1798. **सुपत्तदाणं महादाणं।**

सुपात्र को दान महादान है।

Donation to a good recipient is the greatest donation.

1799. **सुपत्तदाणं हु सवर-कल्लाण-कारणं।**

सुपात्रदान ही स्वपर कल्याण का कारण होता है।

Donation to right recipient is the cause of welfare.

1800. **विणा पत्तरूवणावं को वि समत्थो ण भवसायरं णित्थरिदुं।**

पात्र रूपी नाव के बना कोई भी संसार-सागर पार करने में समर्थ नहीं होता।

No one is able to cross the ocean of world without ship of good recipient.

1801. **सुगुण-संजुदा सुपत्ता।**

सुपात्र सुगुण से संयुक्त होते हैं।

Good recipients are endowed with good qualities.

1802. **सुपत्तो लहदि सिवसुहं।**

सुपात्र मोक्षसुख को प्राप्त करता है।

Good recipients get liberation.

1803. **अप्पपरप्पियो सुपत्तो।**

सुपात्र आत्मप्रिय और परप्रिय होता है।

Recipient is dear to self & others.

1804. **पावादो णित्थारि दुं समत्थो सुपत्तो।**

सुपात्र पाप से तारने में समर्थ होता है।

Recipient is able to save from sin.

1805. **विसुद्धगुण-धारगो सुपत्तो।**

विशुद्ध गुण धारण करने वाला पात्र सुपात्र माना जाता है।

One who attain pure virtues is considered good recipient.

1806. **पावादो रक्खदि अप्पं सो सुपत्तो।**

जो पाप से अपनी आत्मा की रक्षा करता है वही सुपात्र माना जाता है।

People who protect their souls from demerits are considered good recipients.

1807. **दायगो जाचगो य सुपत्तो होज्ज।**

दाता और याचक सुपात्र होना चाहिए।

Donator and petitioner should be good recipients.

1808. **सुपत्तो दुल्लहो लोए।**

सुपात्र लोक में दुर्लभ है।

Right recipients are rare in the world.

पाप

1809. **जीवस्स वहाइ-परिणामो हु पावो।**

जीव के वधादि रूप परिणाम ही पाप हैं।

Thought activity like murder etc. of the soul is sin.

1810. **पावेण पडणं धुवं।**

पाप से पतन निश्चित है।

Defeat is ascertained by sin.

1811. **णिग्गंथाणं महापूया पावकम्मं धोवदि।**

निर्ग्रन्थ साधु के प्रति की गई महापूजा पापकर्म को धो देती है।

Worship of Digamber saints washes away sins.

1812. **कस्स होदि सुहं पावेहिं?**

पापों से किसका शुभ होता है?

Who can become happy from sins?

1813. **अतुट्ठो कुणेदि सया पावं।**

असंतुष्ट हमेशा पाप करता है।

Unsatisfied always commits sins.

1814. **असुह-भावो पाव-हेदू।**

अशुभ भाव पाप का हेतु है।

Inauspicious emotions are the cause of sins.

1815. **दुब्भावेहिं पावासवो।**

दुर्भावों के द्वारा पापों का आस्रव होता है।

Sins inflow by bad disposition.

1816. **पुव्वकद-पावं हु दूहवदि।**

पूर्वकृत् पाप निश्चित ही दुःख देते हैं।

Previous demeritious actions definitely give pains.

1817. **वरं दूरादो पावुज्झणं।**

पाप को दूर से त्यागना श्रेष्ठ है।

It is best to give up sins from far.

1818. **पावभीरू णो लहदि दुग्गदिं।**

पापभीरू दुर्गति प्राप्त नहीं करता।

One who fears bad deeds doesn't get abjection.

1819. **पाव-णिवित्ती पारंपरेण मोक्ख-कारणं।**

पाप से निवृत्ति परम्परा से मोक्ष का कारण है।

Abstinence from sin is the cause of liberation.

1820. **भत्ति-वद-तव-महामंतजवेहिं पावाणि सिग्घं विणस्संति।**

भक्ति, व्रत, तप और महामंत्र के जाप से पाप शीघ्र नष्ट हो जाते हैं।

Sins get destroyed by devotion, vows, austerity and chanting navkar mantra.

1821. **विणासे कुबुद्धी जादि पावेण।**

विनाशकाल में पाप से कुबुद्धि पैदा होती है।

Foolishness generate by sin in destructive period.

1822. **झडि फलदि तिव्वपावं।**

तीव्रपाप शीघ्र फलता है।

Intense sin gives fruition quickely.

1823. **उयरस्स पाय पावाणि।**

प्रायशः सभी पाप पेट के लिए होते हैं।

Usually all sins are done because of hunger.

1824. **विलासिद-जीवणत्थं णो होंति णूण-पावाणि।**

विलासित जीवन जीने के लिए कम पाप नहीं होते।

Sins are not less in living luxurious life.

1825. **रुक्ख-हेदू मूलं तहा भवस्स पावं।**

जैसे वृक्ष का हेतु मूल है वैसे ही संसार का हेतु पाप है।

Just like root is the cause of tree similarly sins are the cause of transmigration.

पापी

1826. **एगो पाविट्ठो बहुजणाणं पाव-णिमित्तो।**

एक पापी बहुत से लोगों के पाप का निमित्त बनने में समर्थ हो सकता है।

A sinner can be a medium of sins of many people.

1827. **पाविट्ठा लहंति दुक्खाणि सया।**

पापी जीव अपने पाप से सदा दुःखी ही रहते हैं।

Sinners always remain sorrowful by own sins.

1828. **कुत्थ दया पाविट्ठ-चित्ते?**

पापिष्ठ के चित्त में दया कहाँ?

Where is compassion in the heart of sinner?

1829. **सया होंति पुण्णवंतो पाविट्ठो य।**

सभी काल में पुण्यवान् और पापी संभव हैं।

Auspicious & inauspicious people are always possible.

1830. **जम्मि गेहे णो पाविट्ठो तत्थ सग्ग-सुहं।**

जिस घर में पापी नहीं हैं उस घर में स्वर्ग का सुख रहता है।

In a home where there is no sinner, pleasure of heaven is there.

1831. **परमत्थ-परमप्पचागी भत्तो पाविट्ठो।**

यदि भक्त परमार्थ-परमात्मा को त्यागता है वह पापी है।

If devotee sacrifices transcendental God then he is a sinner.

1832. **अदिपाविट्ठो वि णो समत्थो पहुपद-गमणे।**

अतिपापिष्ठ भी प्रभु चरणों में जाने में समर्थ नहीं होता।

Even a sinner is not able to go to the feet of God.

1833. **पाविट्ठो सया होदि रोयी सोगी दीणो अदिचंचलो य।**

पापी सदा रोगी, शोकी, दीन और अति चंचल होता है।

Sinner is always ailing, sorrowful, wretched & fickle minded.

1834. **पाविट्ठस्स सव्वजोगा भिण्णा-भिण्णा।**

पापिष्ठ के सभी योग भिन्न-भिन्न होते हैं।

All voilitions of a sinner are different.

पाषाण

1835. **सुहाकिदि-पासाणो सुह-णिमित्तो।**

शुभाकृति पाषाण शुभ का निमित्त है।

Stone of auspicious shape is the medium of auspiciousness.

1836. **णिरागार-पासाणो संढोव्व णिरत्थो।**

निराकृति पाषाण नपुंसक के समान निरर्थक है।

Shapeless stone is as useless as an impotent.

1837. **पासाण-मुत्तीसुं वि देवो पडिभासदे।**

पाषाण की मूर्तियों में भी देव प्रतिभासित होते हैं।

God appears in idols of stones too.

1838. **अदिपागदरूवा पासाण-पडिमा ण दु धादूणं।**

पाषाण की प्रतिमाओं में अतिप्राकृत रूप रहता है, न कि धातुओं की में।

Naturality remains in collosi of stones, not in of metals.

पृथ्वी

1839. **मेंढ-सिंगेण ण कंपदि वसुहा।**

मेढा के सींग से वसुधा नहीं काँपती है।

Earth doesn't tremble by the horn of a sheep.

1840. **रयणाणि महि-गब्भे।**

पृथ्वी के गर्भ में रत्न विद्यमान हैं।

Jewels exist in the core of earth.

1841. **पिथु सद्देण णिप्पण्णा पुढवी।**

पृथ्वी शब्द पृथु शब्द से निष्पन्न है।

Earth word is produce from "Prithu".

1842. **जस्स सरीरो पुढवीए सो पुढविकाइयो।**

जिसका शरीर पृथ्वी का है वह पृथ्वीकायिक है।

Whose body is made up of earth is an earth bodied.

1843. **जो सरीरो पुढवीए उप्पज्जदि सो पुढविजीवा।**

जो शरीर पृथ्वी में उत्पन्न होता है वह पृथ्वीजीव है।

One who takes birth in earth, is an earthly being.

1844. **बहुविहा पुढवी-णिरय सग्ग समोसरण-लोगेसु य।**

पृथ्वी बहुविध है-नरक, स्वर्ग, समोशरण और लोक में।

There are various kinds of earth in hell, heaven, samavsharan and in this world.

1845. **समवसरणम्मि अट्ठा पुढवी।**

समवशरण में आठ पृथ्वी हैं।

There are eight earths in samavsarana.

1846. **णिरये सत्ता पुढवी।**

नरक में सात पृथ्वी हैं।

There are seven earths in hell.

1847. **सग्गे तेसट्ठी पुढवी पडलं वा।**

स्वर्ग में तिरेसठ पृथ्वी या पटल हैं।

There are sixty three earths or layers in heaven.

1848. **लोयम्मि अट्ठा छव्वीसा वा पुढवी।**

लोक में भी आठ या छब्बीस पृथ्वी हैं।

There are eight or twenty six earths in the world.

1849. **पुण्ण-खीणे ण लहदे धम्मबुद्धिं।**

पुण्य के क्षीण होने पर धर्म बुद्धि की प्राप्ति नहीं होती।

Religious mind can not be attained after decrease of good deeds.

1850. **पुण्णप्पाणं ण को वि इच्छा णिप्फला।**

पुण्यात्माओं की कोई भी इच्छा निष्फल नहीं होती है।

No desires of virtuous soul are fruitless.

1851. **भव-विहवो पुण्ण-फलावरणं चेयणाए सुद्धगुणा पुण्ण-फल- रसं।**

संसार का वैभव पुण्य के फल का आवरण है और चेतना के शुद्ध गुण पुण्य के फल का रस।

Wealth of the world is the cover of the fruition of merits and the pure virtues of conscience are the juice of the merit fruits.

1852. **धणहीणत्तं पाव-फलं पुण्णस्स य णिस्संगत्तं णिप्पिहत्तं वा।**

पाप का फल धनहीनता है किन्तु पुण्य का फल नि:संगता या निस्पृहता है।

Fruition of sin is poverty but the fruition of merits is absence of desire.

1853. **तिव्व-पुण्णोदयेण पाव पयडी वि सुहफलं देदि।**

तीव्र पुण्योदय से पाप प्रकृति भी अच्छा फल देती है।

Even demerits give good fruition at the time of rise of merits.

1854. **अदि-तिव्व-पुण्णोदये सत्तू वि मित्तं होज्ज।**

अतितीव्र पुण्योदय के काल में शत्रु भी मित्र हो जाता है।

Even enemies become good friends during the rise of merits.

1855. **पुण्णेण एक्कल्लो सत्तुं जिणिदुं समत्थो।**

पुण्य से एक अकेला जीव भी सभी शत्रुओं को जीतने में समर्थ होता है।

One soul alone is able to conquer all enemies by merits.

1856. **देहीणं पुण्णेण जोगाणं सुह-चेट्ठा।**

पुण्य से संसारियों की योगों की भी शुभ चेष्टाएँ होती हैं।

Auspicious activites of worldly souls occur by merits.

1857. **पुण्णेण लहंति जीवा णाणाविह-लोगिग-सुहाणि।**

पुण्य से जीव नाना प्रकार के लौकिक सुखों को प्राप्त करता है।

Worldly soul attains many kinds of worldly pleasure by merits.

1858. **पुण्णेण विणस्सदि सव्वभयं।**

पुण्य से सर्वभय नष्ट हो जाते हैं।

All fears get destroyed by merits.

1859. **जिणपूयाए लहंति उक्किट्ठ-पुण्णं।**

उत्कृष्ट पुण्य जिनेन्द्र भगवान् की पूजा से प्राप्त होता है।

Excellent merits can be attained by worship of God.

1860. **आवदाए अलंघणीयं पुण्णं हु महासरणं।**

पुण्य ही महाशरण है जो आपदकाल में भी अलंघनीय है।

Merits are great shelter which are uncrossabel at time of disaster too.

1861. **दाण-पूया-सीलुववासेहिं अज्जेज्ज पुण्णं।**

दान, पूजा, शील, उपवास के द्वारा पुण्य अर्जित करना चाहिए।

Merits should by attained by donation, worship, good character and fast.

1862. **इहपरलोय-सुहत्थं संचिणेज्ज पुण्णं।**

इह लोक और परलोक के सुखार्थ पुण्य का संचय करना चाहिए।

Merits should be done for this world and next world.

1863. **भव्वा लहंति सुपत्तदाणेण णिम्मलं पुण्णं।**

सुपात्र दान से भव्य जीव निर्मल पुण्य प्राप्त करते हैं।

Potential souls attain merits by donating to good recipients.

1864. **पुण्णस्स किं सुहं दुक्करं?**

पुण्य के लिए कौन सा सुख दुष्कर है?

Which pleasure is arduous for merit?

1865. **इट्ठफलसिद्धीए पुण्णादो वरं ण को वि साहणं।**

इष्ट सिद्धि के लिए पुण्य से बढ़कर और कोई साधन नहीं है।

There is no means for desired accomplishment like merits.

1866. **जेण अप्पं खचेज्ज तं पुण्णं।**

जिसके द्वारा आत्मा पवित्र की जाती है वह पुण्य है।

By which means soul is purified is merit.

1867. **पुण्णेगं हु समत्थो दुहादु रक्खिदुं।**

दु:खों से रक्षा करने में एक पुण्य ही समर्थ है।

Only merit is able to protect from pains.

1868. **अदिसय-पुण्णोदयेण विवत्ती आयादि णो कदा।**

अतिशय पुण्योदय से विपत्ति कभी नहीं आती।

Adversity never comes from rise of merits.

1869. **पुण्णेण पुण्णरक्खा।**

पुण्य के द्वारा पुण्य की रक्षा होती है।

Merits can be protected by merits.

1870. **महापुण्णं अजेयं तिलोयम्मि।**

त्रिलोक में महापुण्य अजेय है।

Great merit is unconquerable in the three worlds.

1871. **पुण्णेण किं वि ण अलद्धो लोए।**

लोक में पुण्य से कुछ भी अलभ्य नहीं है।

Nothing is unattainable by merits in the world.

1872. **विसेस-पुण्णोदयेण विवत्ती वि होदि संपत्ती।**

विशेष पुण्योदय से विपत्ति भी सम्पत्ति हो जाती है।

Adversity becomes prosperity by the rise of special merits.

1873. **पुण्णमेगं सरणं सव्वजीवाणं।**

पुण्य ही सर्वजीवों की एकमात्र शरण है।

Protection of all souls is only merit nothing else.

1874. **सगपुण्णहीणदाए ण को वि रक्खेदुं समत्थो जीवं।**

स्वपुण्यहीनता से जीव की कोई भी रक्षा करने में समर्थ नहीं है।

No one is able to protect the soul without merits.

1875. **पुण्णमंत-संसग्गेण होदि अदिसंत्ती।**

पुण्यवानों के संसर्ग से अति शान्ति उत्पन्न होती है।

Peace generates in the company of meritorious people.

1876. **रंको वि णिवोव्व पुण्णप्पा-संजोगेण।**

पुण्यात्माओं के संयोग से रंक भी राजा हो जाता है।

Pauper also becomes king by the company of meritorious souls.

1877. **अदिसय-पुण्णोदयेण णरा किं ण लहंति दुल्लहं?**

अतिशय पुण्य के उदय से पुरुषों को कौन सी दुर्लभ वस्तु प्राप्त नहीं होती है।

What thing which is difficult to find cannot be attained in the rise of merits?

1878. **णिक्कामं णिम्मलं पुण्णं इह-पर-लोए सुहंकरं।**

निष्काम और निर्मल पुण्य इस लोक और परलोक में सुखकर है।

Desireless and holy merit is beneficient in this and the next world.

1879. **पाणिरक्खा-भावो वि पुण्ण-कारणं खलु।**

प्राणीरक्षा का भाव भी नियम से पुण्य का कारण होता है।

Intention of protecting creatures is also the cause of merits.

1880. **पुव्व-पुण्ण-सक्कारेण जीवो लहदि सव्वगुणा।**

पूर्व पुण्य संस्कार से जीव अखिल गुण प्राप्त करता है।

Living being attains whole virtues by previous merits.

1881. **पुण्णपुरिस-चरियं वि पुण्ण-कारणं खलु।**

पुण्य पुरुष का चरित्र भी नियम से पुण्य का कारण है।

Character of meritorious person is surely the cause of merits.

1882. **पुण्णमंता लहंति जसं सुहं धणं बलं णाणं विज्जादि-गुणा।**

पुण्यवान् संसार में यश, सुख, धन, बल, ज्ञान और विद्या आदि गुण प्राप्त करते हैं।

Meritorious always gain fame, pleasure, money, strength and knowledge and other virtues in the world.

1883. **पुण्णेदये सहजा होदि कल्लाणपरंपरा।**

पुण्योदय काल में कल्याण की परम्परा सहज उत्पन्न होती है।

Welfare itself produces in the rise of merits.

1884. **सगपुण्णहीणं सुहिं करेदुं ण को वि समत्थो।**

स्वपुण्यहीन को सुखी करने में कोई भी समर्थ नहीं है।

No one is able to make demeritorious person blissful.

1885. **जत्थ गच्छदि पुण्णहीणो लहदि दुहं।**

पुण्यहीन जहाँ भी जाता है नियम से दुःख ही प्राप्त करता है।

Demeritorious always gets pain wherever he goes.

1886. **उक्किट्ठ-पुण्णं सिव-कारणं।**

उत्कृष्ट पुण्य मोक्ष का कारण है।

Supreme merit is the cause of liberation.

1887. **जहण्णपुण्णं वि भवसुह-कारणं।**

जघन्य पुण्य भी भव सुख का कारण है।

Lower merit is also the cause of worldly pleasures.

1888. **तित्थयर-धम्मसहाए अदिपुण्णप्पा हु चिट्ठदि।**

तीर्थंकर की धर्मसभा में अतिशय पुण्यात्मा ही बैठता है।

Only supreme meritorious souls sit in the congregation hall of tirthankara.

1889. **उक्किट्ठ-पुण्ण-पुत्तो मोक्खो।**

उत्कृष्ट पुण्य का पुत्र मोक्ष है।

Son of supreme merit is emancipation.

1890. **पुण्णाभावे सुहं वि असुहं।**

पुण्य के अभाव से शुभ भी अशुभ हो जाता है।

Auspicious become inauspicious by lack of merits.

पुत्र

1891. **पुत्तो पवित्त-कुलभूसणं।**

पुत्र कुल का पवित्र आभूषण है।

Son is a holy ornament of a family.

1892. **पुत्तस्स सुहचिंतगो जणगो।**

पुत्र का शुभचिंतक जनक होता है।

Father is a well-wisher of son.

1893. **सुपुत्तेण विणा ण रुच्चदे रज्जविहवा।**

सुपुत्र के बिना राज्यवैभव सुशोभित नहीं होता है।

Royal majesty is insipid without a good son.

1894. **मेत्तं पुत्तो हि णंददायगो, महाणाणिणो का कहा?**

पुत्र मात्र का होना महा आनन्ददायक है और फिर वह विद्वान् हो तो उसका क्या कहना?

If having a son is joy-giving then what can be said if he is a scholar.

1895. **कुलं थंगिदुं समत्थ-पुत्तं इच्छदि।**

पिता कुल को उन्नत करने में समर्थ पुत्र की इच्छा करता है।

Father desires the son by whom family progressess.

1896. **पिदु-णामेण जाणिज्जदि धि तं पुत्तं।**

पिता के नाम से जो जाना जाता है उस पुत्र को धिक्कार है।

Shame on that son who is known by the name of his father.

1897. **दरिद्दाणं वि दुहावत्थाए पुत्तजम्मो सुह-कारणं।**

दरिद्रों के लिए भी दु:खावस्था में पुत्रजन्म सुख का कारण है।

Birth of son is the cause of pleasure for the poor even in sorrowful condition.

1898. **सव्वगुण-संपण्णो सुपुत्तो पियो कस्स णो?**

सर्वगुण सम्पन्न सुपुत्र किसका प्रिय नहीं होता?

Who doesn't like the son endowed with all qualities?

1899. **सुगुणी पुत्तो जणगं सग्गादो वरं सुहं देदि।**

सुगुणी पुत्र पिता को स्वर्ग से अधिक सुख देता है।

Virtuous son gives more pleasure to his father than heaven.

1900. **सुजोग्गपुत्तो वि पिदु-मित्तं।**

सुयोग्य पुत्र भी पिता का मित्र है।

Capable son is also a friend of his father.

1901. **वुड्ढो पुत्तो वि जणगेण सिक्खणीयो।**

वृद्ध पुत्र भी पिता द्वारा शिक्षणीय है।

Even an old son is able to get education by his father.

1902. **पुत्तो पिदरप्पजो।**

पुत्र पिता का आत्मज है।

Son is father's off spring.

पुद्गल

1903. **फास-रस-वण्ण-गंधवंतो पोग्गलो।**

जो स्पर्श-रस-वर्ण-गंधवान् हो वह पुद्गल है।

Which has touch, taste, colour and odour is called matter.

1904. **कम्मं वि पोग्गल-पज्जायो।**

कर्म भी पुद्गल की पर्याय है।

Karma is also the phase of matter.

पुरातन

1905. **णो सव्व-पुरादणो णो णूदणो सुट्ठु।**

न तो सर्व पुरातन श्रेष्ठ हैं और न सर्व नूतन ही।

Neither all old nor all new are best.

1906. **पुरादणो भिच्चो मित्तं च विस्ससणीया।**

पुरातन भृत्य और मित्र विश्वसनीय होते हैं।

Old servants and friends are believable.

पुरुष

1907. **सगत्थं सिद्धं कुणदि सो परमट्ठेण पुरिसो।**

परमार्थ से वही पुरुष है जो स्व अर्थ को सिद्ध करता है।

By ultimate view point, one who fulfills his aim is a man.

1908. **विज्जावंतो लहदि आयरं बुहेहिं।**

विद्यावान् पुरुष पण्डितों द्वारा आदर को प्राप्त करते हैं।

Learned men get respect by scholars.

1909. **पण्णपुरिसा सगपयोजणेण चत्त-णरं हु गहंति।**

प्राज्ञ पुरुष स्वप्रयोजन से त्यागे हुए पुरुष को भी ग्रहण कर लेते हैं।

Wise man accepts even the left out person, for his purpose.

1910. **णिम्मल-भावजुत्ताण अखिल-लोयो परिवारो।**

निर्मल भाव युक्त पुरुषों के लिए संपूर्ण लोक परिवार है।

Men with good feelings consider the whole world as family.

1911. **कुत्थ लोयुच्छुगो पुरिसो कुत्थ अदिदरिद्दो?**

कहाँ लोकात्साही पुरुष कहाँ अतिदरिद्री मनुष्य?

There is no comparison of a person who is affectionate to all with an extremely poor one.

1912. **धण्णो सिविणे सगपहु-दंसी गुरु-दंसी वा।**

वह पुरुष धन्य है जो अपने प्रभु और गुरु को स्वप्न में देखता है।

That man is blessed who has a vision of God and preceptor in his dreams.

1913. **मुणिव्व सव्वकिलेस-सहिर-पुरिसस्स असज्झं किं?**

उस पुरुष को क्या असाध्य जो मुनि की तरह सर्वक्लेश सहिष्णु है?

What is not attainable to that man who is tolerant like an ascetic?

1914. **समत्थो खमासीलो पुरिसो।**

सामर्थ्यवान् क्षमाशील पुरुष है।

One who is powerful & forgiving is man.

1915. **पुरु-गुण-भोत्तू हु पुरिसो।**

श्रेष्ठ गुणों का भोक्ता ही पुरुष है।

Enjoyer of best qualities is man.

1916. **मोक्खसत्ति-संपण्णो पुरिसो।**

पुरुष मोक्ष शक्ति से सम्पन्न होते हैं।

One who can get liberation, is man.

1917. **अभत्तो कापुरिसो दुट्ठो णीचो अहमो वि णो पुरिसो।**

अभक्त, कायर, दुष्ट, नीच, अधम पुरुष भी पुरुष नहीं है।

Undevour, coward, wicked and lower man is not a man.

1918. **धम्म-गुण-मज्जादा-रक्खगो हु पुरिसो।**

धर्म गुण मर्यादा का रक्षक ही पुरुष है।

Protector of religion, virtues and dignity is a man.

1919. **परमप्प-बीयं पुरिसो।**

जो परमात्मा का बीज है वह पुरुष है।

He, who is a seed of God, is man.

1920. **कुलाहारो पुरिसो।**

वंश या कुल का आधार पुरुष है।

Base of succession of family is a man.

1921. **सायरोव्व गंभीरो पव्वदोव्व धम्मे अचलो हु पुरिसो।**

सागर के समान गंभीर, पर्वत के समान धर्म में अचल ही पुरुष है।

Serious like sea and firm in religion like mountain is man.

1922. **पुरु-अत्थ-साहगो पुरिसो।**

श्रेष्ठ अर्थ का साधक पुरुष है।

Achiever of best wealth is man.

पुरुषार्थ

1923. **बुद्धिपुव्वं सुकज्जस्स उच्छाहो उज्जमो वा पुरिसत्थो।**

बुद्धिपूर्वक सुकार्य करने का उत्साह या उद्यम पुरुषार्थ है।

Enthusiasm for efforts for doing good deeds wisely is vigour.

1924. **णो कज्जसिद्धी मेत्तं पुरिसत्थेण।**

केवल पुरुषार्थ से कार्य सिद्धि नहीं होती।

Work cannot be completed just by hard work.

1925. **तिव्व-कम्मं फलदि तत्थ पुरिसत्थो किं करिस्सदि?**

जहाँ तीव्र कर्म ही फल दे रहा हो वहाँ पुरुषार्थ क्या करेगा?

What will be the effect or use of hard work where powerful karma is giving its fruit.

1926. **कत्थ कम्मं सबलं कत्थ य पुरिसत्थो।**

कहीं कर्म बलवान् होता है और कहीं पुरुषार्थ।

Some where karma is strong and somewhere efforts.

1927. **विणा पुरिसत्थेण कम्मं णिप्फज्जदि णो।**

बिना पुरुषार्थ के कर्मों की निष्पत्ति नहीं होती।

Karma doesn't get destroyed without efforts.

1928. **अणुऊल-कम्मोदयेण पुरिसत्थेण य सव्व-कज्जाणि हु संभवा।**

अनुकूल कर्मोदय तथा पुरुषार्थ से सभी कार्य संभव होते हैं।

All works become possible from rise of merits & efforts.

1929. **णो किं चि वि सगवसे लोगे पुरिसत्थं विणा।**

पुरुषार्थ को छोड़कर इस लोक में अपने वश में कुछ भी नहीं है।

We cannot do anything except applying efforts in this world.

1930. **पुरिसत्थी सया लहदि धम्मं बलं धणं सुहं संतिं च।**

पुरुषार्थी सदा धर्म, बल, धन सुख और शान्ति को प्राप्त करता है।

Vigorous always attains religious merit, power, money and tranquility.

1931. **सुपुरिसत्थं विणा भव-णित्थरिदुं णो को वि समत्थो।**

सम्यक् पुरुषार्थ के बिना संसार पार करने में कोई भी समर्थ नहीं है।

No one is able to cross the world without right efforts.

1932. **तिपुरिसत्था वि मोक्ख-कारणं।**

तीन पुरुषार्थ भी मोक्ष के कारण हैं।

Three efforts are also the cause of liberation.

1933. **धम्मट्ठ-काम-मोक्खा य लहेदि कालक्कमेण।**

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष कालक्रम से ही मिलता है।

Religion, money, worldly pleasure and liberation are achieved by time.

1934. **मेत्तं एगपुरिसत्थ-सेवगो जहण्णो।**

चार पुरुषार्थों में से जो मात्र एक का सेवन करता है वह जघन्य है।

One who does only one in four kind of efforts is lower.

1935. **धम्मपुरिसत्थं विणा सव्वं णिप्फलं।**

धर्म पुरुषार्थ के बिना सब निष्फल है।

Everything is fruitless without religion.

1936. **चउपुरिसत्थेसुं णिउणो हु वरो णरो।**

चार पुरुषार्थों में निपुण ही उत्तम नर है।

Skilled in all the four efforts is best.

1937. **अणुऊल-दंपदी जत्थ तिवग्ग-सुहं तत्थ।**

जहाँ दम्पत्ति परस्पर में अनुकूल है वहाँ त्रिवर्ग का सुख संभव है।

Where couples are comfortable with each other, happiness of three classes of human life is possible.

1938. **तिवग्गे सव्वलोयो आसिदो।**

त्रिवर्ग पर सम्पूर्ण लोक आश्रित हैं।

Whole world is based on three classes of human life.

1939. **पिदरं विणा णो सुपुत्तो तह भग्गं पुरिसत्थेण विणा।**

जैसे माता-पिता के बिना सुपुत्र असंभव है वैसे ही पुरुषार्थ के बिना भाग्य।

As having son is impossible without mother & father, similarly fortune is impossible without effort.

1940. **पुरिसत्थो विजय-पहिगो।**

पुरुषार्थ विजय का पथिक है।

Preservence is the path to victory.

1941. **सहिरो धीमंतो धीरो पुरिसत्थी य होदि।**

सहिष्णु, बुद्धिमान् और धैर्यवंत पुरुषार्थी होता है।

Tolerant, wise and patient is vigorous.

1942. **धम्म-पुरिसत्थो सव्वेसु मुक्खो।**

धर्म पुरुषार्थ सर्व वर्गों में मुख्य है।

Religious efforts are chief among all.

पुरोहित

1943. **धम्मिट्ठो णीदिसंपण्णो हिदकज्जेसु पवट्टमाणो सुद्धायारी सयायारी लोय-हिदेसी हु पुरोहो।**

धर्मशील, नीतिसम्पन्न, हितकार्यों में प्रवर्तमान, शुद्धाचारी (आहार सम्बन्धी), सदाचारी, लोक का हितैषी पुरोहित माना जाता है।

Pious, politician, active in benevolence, vegetarian, virtuous, well wisher of the world is considered family priest.

पूजक

1944. **पुज्ज-गुणाणुरायी पूयगो।**

पूज्य का गुणानुरागी पूजक है।

Affectionate of the virtues of venerable is worshiper.

1945. **सद्धावंतो गुणाराहगो पूयगो।**

श्रद्धावान् और गुणों का आराधक पूजक है।

Devout and worshipper of virtues is hymnist.

पूजा

1946. **पुज्जस्स गुणा पडि सहजा किरिया भावो वा पूया।**

पूज्य के गुणों के प्रति सहज क्रिया या भाव, पूजा है।

Innate feelings towards virtues of revered is worship.

1947. **जिणुवासणा महिज्जा।**

जिनोपासना महापूजा है।

Worship of God is devotion.

1948. **जिणच्चणाए विणस्संति अदिपाव-कम्माणि वि।**

अति पाप कर्म भी जिनार्चना से नष्ट हो जाते हैं।

Sins also get destroyed by worshiping God.

1949. **णो सेयपहं जिणपूयव्व।**

जिनपूजा के तुल्य कोई भी कल्याणपथ नहीं है।

There is no way of welfare like worship of Jina.

1950. **जिणपूयव्व जिणवयण-पूया।**

जिनपूजा के समान जिनवचन की पूजा है।

Great preachings of Jina are venerable like Lord Jinendra.

1951. **पूयाए विणा ण लहेदि भोय-सुह-संपदा य।**

पूजा के बिना भोग, सुख, सम्पदा प्राप्त नहीं होती।

Worldly pleasure and enjoyment cannot be attained without worship.

पूज्य

1952. **लोगेसु सव्वुक्किट्ठो पूया-जोग्गो पुज्जो।**

लोक में सर्वोत्कृष्ट, जो पूजा योग्य होता है वह पूज्य है।

Supreme soul who is worth worshiping in the world is revered.

1953. **सस्सद-सुद्धगुण-संजुत्तो पुज्जो।**

शाश्वत शुद्ध गुण से युक्त पूज्य है।

One who is endowed with immortal pure virtues is revered.

पूर्ण

1954. **पुण्णदा सव्वपिया जहा पुण्णिंदू।**

पूर्णता सर्वप्रिय होती है जैसे पूर्ण चन्द्र।

Perfect state is dear to all just like full moon.

1955. **कम्मादो पुण्णमुत्तो हु सिद्धप्पा।**

कर्मों से पूर्ण मुक्त ही सिद्धात्मा है।

Pure soul is one which is devoid of all types of karmas.

1956. **पुण्णसुही पुण्णगुण-संजुदो परमप्पा।**

पूर्ण सुखी पूर्ण गुणों से युक्त परमात्मा है।

One who is endowed with all qualities and completely blissful is God.

प्रकृति

1957. **परिवट्टणसीला हु पइडी।**

प्रकृति ही परिवर्तनशील है।

Nature is always prone to change.

1958. **पत्तेगं दव्व-पइडी सस्सदा।**

प्रत्येक द्रव्य की प्रकृति शाश्वत है।

Nature of every substance is immortal.

1959. **अग्गी किं कुणेदि जस्स पइडी सीयला?**

जिसकी प्रकृति शीतल है उसका अग्नि क्या कर सकती है?

What can fire do to those, whose nature is cool?

प्रगल्भ

1960. **जोग्ग-याले जोग्ग-कज्जं कुणेदुं समत्थो सो पगब्भो।**

योग्य काल में योग्य कार्य करने में समर्थ है वह प्रगल्भ है।

One who is able to do suitable work in suitable time is skillful.

प्रजा

1961. **विज्जा-कला-धणविहीणा बहु-पया वि णिरत्था।**

विद्या, कला और धन से विहीन बहुत प्रजा भी निरर्थक है।

Many people who are devoid of knowledge, art & wealth are also meaningless.

प्रज्ञा

1962. **अदिसय-पण्ण-सिस्सेण वि ण लंघेज्ज गुरु-आणा।**

अतिशय प्रज्ञावान् शिष्य के द्वारा भी गुरु की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया जाना चाहिए।

Precepter's order should not be disobeyed even by wise disciples.

1963. **पण्णाहीणा ण जाणंति हिदमहिदं गुणावगुणा।**

प्रज्ञाहीन हित-अहित, गुण-अवगुण को नहीं जानते।

Ignorant people don't know advantage-disadvantage and virtues-vices.

1964. **तिलोयम्मि सेट्ठा पण्णा।**

त्रिलोक में प्रज्ञा श्रेष्ठ है।

Wisdom is most divine in the three worlds.

1965. **पण्णा जणाणंदकरा।**

प्रज्ञा लोगों को आनंद करने वाली है।

Wisdom makes people happy.

1966. **तित्थयरो केवली पण्णेसो।**

तीर्थंकर केवली प्रज्ञेश कहलाते हैं।

Tirthankara omniscient is said Pragyesha.

1967. **सुहाणुबंधगा पण्णा।**

प्रज्ञा सुखानुबंधिनी है।

Wisdom is pleasure binding.

1968. **दुहहारि-ओसही पण्णा।**

प्रज्ञा दु:खों को दूर करने वाली औषधि है।

Wisdom is a medicine for destroying pains.

1969. **पण्णा हु पदिट्ठा णाणीणं।**

ज्ञानियों के लिए प्रज्ञा ही प्रतिष्ठा है।

Wisdom is the best honour for learned.

1970. **मणोताव-घादगा पण्णा।**

प्रज्ञा मनोताप की घातक है।

Wisdom is a destroyer of mind's distress.

1971. **कज्जेसुं पण्णाए पडिबिंबो दिस्सदि।**

कार्यों में प्रज्ञा का प्रतिबिम्ब दिखता है।

Wisdom reflects in the deeds.

1972. **पण्णा-सिहरम्मि चडंति ते अप्पविहवं लहंति।**

प्रज्ञा के शिखर पर जो चढ़ते हैं वे आत्मवैभव को प्राप्त करते हैं।

They attain self wealth who climb the pinnacle of wisdom.

प्रति-उपकार

1973. **महप्पा पडि-उवयारं णो कंखदि कयावि।**

महात्मा प्रत्युपकार को कभी नहीं चाहता।

Great soul never wants a favour to be returned.

1974. **पडिउवयार-कंखी वणिजारयोव्व।**

जो प्रत्युपकार की वांछा करता है वह वणिक् की तरह है।

One who desires to get a favour returned is like a merchant.

1975. **पडिउवयार-मुल्लं उवयारादो णूणं।**

प्रत्युपकार का मूल्य उपकार से न्यून है।

Value of returning a favour is less than beneficence.

1976. **उवयार-पडिउवयारेहि विणा को सुहेण जीवदि लोयम्मि?**

उपकार-प्रत्युपकार के बिना कौन लोक में सुख से जीता है?

Who lives with ease in the world without showing kindness and returning a service.

1977. **उवयारगाणं पडिउवयारवसरो दुल्लहो।**

उपकारियों के लिए प्रत्युपकार का अवसर दुर्लभ है।

Opportunity of returning a favour is very rare for beneficent people.

प्रतिज्ञा

1978. **धम्म-पदिण्णा हु वीर-लक्खणं।**

धर्म की प्रतिज्ञा ही वीर का लक्षण है।

Assertion of religion is a sign of brave.

1979. **मणंसी सगपदिण्णं णो खंडदि।**

मनस्वी अपनी प्रतिज्ञा खण्डित नहीं करता।

Wise doesn't break his assertions.

1980. **सगपर-हिदंकरा पदिण्णा होज्ज।**

प्रतिज्ञा स्वपर हितकारी होनी चाहिए।

Assertion should be benevolent for self and others.

1981. **किं पदिण्णा-भंग-पाणेहि?**

प्रतिज्ञा भंग के प्राणों का क्या प्रयोजन?

What is the purpose of life for a person who breaks obligations?

1982. **पदिण्णा पाणादु वरा सज्जणाणं।**

प्रतिज्ञा सज्जनों के लिए प्राणों से भी श्रेष्ठ होती है।

Obligation is more important than life for virtuous people.

1983. **सुहकज्ज-संकप्पो पदिण्णा।**

शुभकार्यों का संकल्प प्रतिज्ञा कहलाती है।

Resolve for good deeds is called obligation.

1984. **असुहपदिण्णा दुरग्गहो।**

अशुभ प्रतिज्ञा दुराग्रह कहलाती है।

Inauspicious obligation is called perversity.

प्रतिष्ठा

1985. **पदिट्ठा हु महासत्ती।**

प्रतिष्ठा ही महाशक्ति है।

Honour is the greatest power.

1986. **को सक्कारदि पदिट्ठाहीणं?**

प्रतिष्ठाहीन का कौन सत्कार करता है?

Who gives respect to dishonoured? No one.

1987. **धणादु अहिय-पदिट्ठं रक्खेज्ज।**

धन से अधिक प्रतिष्ठा की रक्षा करनी चाहिए।

Reputation should be protected more than money.

प्रत्यक्ष

1988. **विसद-णाणं पच्चक्खं।**

निर्मल ज्ञान प्रत्यक्ष है।

Clear knowledge is perceptual.

1989. **सव्व-यालेसु पच्चक्ख-पमाणं हु पहाणं।**

सभी कालों में प्रत्यक्ष प्रमाण ही प्रधान है।

Direct knowledge is chief all period.

1990. **अक्ख-पच्चक्खं णो परमट्ठेण संववहारिग-पच्चक्खं परं।**

इन्द्रिय प्रत्यक्ष परमार्थ से प्रत्यक्ष नहीं अपितु सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष है।

From ultimate view point empirical sense intuition is not direct but practical perception is direct.

प्रत्याख्यान

1991. **सावज्ज-किरिया-परिचागो पच्चक्खाणं।**

सावद्य क्रिया का परित्याग प्रत्याख्यान है।

Giving up sinful activities is *Pratyakhyan.*

1992. **दुहंउज्झिदुं अक्खाणं पच्चक्खाणं।**

प्रत्याख्यान दु:ख त्याग के लिए आख्यान है।

Pratyakhyan is an account of given up sorrows.

1993. **सव्व-सावज्जाणं पच्चक्खाणं करेज्ज।**

सभी सावद्यों का प्रत्याख्यान करना चाहिए।

All sins should be given up.

1994. **दोस-पच्चक्खाणं गुण-कारणं।**

दोषों का प्रत्याख्यान गुण का कारण है।

Giving up vices or faults is the cause of virtues.

प्रभावना

1995. **अपहावणा-चागो खु पहावणा।**

अप्रभावना का त्याग ही प्रभावना है।

Giving up promulgation of false doctrines is disclosing of religion.

1996. **आइरियादि-परमेट्ठी जत्थ धम्मपहावणा हु तत्थ।**

आचार्य आदि कोई भी परमेष्ठी जिस क्षेत्र में विद्यमान होते हैं वहाँ नियम से धर्म की प्रभावना होती है।

Where there is parmesthi, Acharya etc. feeling of religion definitely spreads there.

प्रभु

1997. **तच्चण्णू पहू हु हिद-मिद-पिय-भासगो य।**

तत्त्वज्ञानी ही प्रभु हित-मित-प्रिय भासक हैं।

Enlightened God preaches beneficent, limited and kindly.

1998. **सगगेह-पहू गेहसामी।**

गृहस्वामी अपने घर का प्रभु माना जाता है।

House holder is assumed to be the lord of his own house.

प्रभुता

1999. **सव्व-सुहंकरा हु सुपहुदा।**

वह सच्ची प्रभुता है जो सबको सुखकर है।

That is real paramountry, which is beneficent to all.

प्रमाण

2000. **सम्मणाणं हु पमाणं जिणागमे।**

जिनागम में सम्यग्ज्ञान ही प्रमाण है।

Right knowledge is the valid knowledge in the scriptures.

2001. **सगपरस्स अपुव्व-अत्थस्स ववसायिग-णाणं पमाणं।**

स्वपर के अपूर्व अर्थ का व्यवसायात्मक ज्ञान प्रमाण है।

Nature ascertainment of previously unrecognised object of self and others is valid knowledge.

2002. **हिद-लाहे अहिद-परिहारे समत्थं णाणं हु पमाणं।**

हित का लाभ और अहित का परिहार करने में समर्थ ज्ञान ही प्रमाण है।

Knowledge which is able to do good and able to eliminating inimical is valid knowledge.

2003. **अत्थस्स जहत्थ-णाणं पमाणं।**

पदार्थों का ज्यों की त्यों (यथा-तथा) ज्ञान ही प्रमाण है।

True knowledge of substances is called valid

knowledge.

2004. **अणूणमहिगं विवरिदं णाणं पमाणं।**

न्यूनता, अधिकता एवं विपरीतता से रहित ज्ञान प्रमाण है।

Knowledge free from small amount, abundance and contrariety is valid knowledge.

2005. **संसय-विपज्जय-अणज्झवसाय-णिराकरणे समत्थं णाणं पमाणं।**

संशय, विपर्यय और अनध्यवसाय के निराकरण में समर्थ ज्ञान ही प्रमाण है।

Knowledge which is able to remove doubts illusion and indecision is called valid knowledge.

2006. **अण्णाण-हाणि अपुव्वणाण-लाहो पमाण-फलं।**

अज्ञान की हानि और अपूर्वज्ञान का लाभ प्रमाण का फल है।

Loss of ignorance or gain of incomplete knowledge is the fruition of right knowledge.

प्रमाद

2007. **पुण्णस्स लुंटागो पमादो।**

पुण्य को लूटने वाला प्रमाद है।

Negligence is plunderer of merits.

2008. **पमादो हु महासत्तू।**

प्रमाद ही महाशत्रु है।

Negligence is the greatest enemy.

2009. **णिस्सीम-पमादी अप्पघादगो।**

नि:सीम प्रमादी आत्मा का घाती है।

Endless negligence is the destroyer of one's soul.

2010. **पमादो पमदा हु दुक्ख-कारणं।**

प्रमाद या प्रमदा (स्त्री) नियम से दु:ख का कारण है।

Negligence or woman is surely the cause of pain.

2011. **पमादो वि अहिसावो सुजणदिट्ठीए।**

सज्जनों की दृष्टि में प्रमाद भी अभिशाप है।

Negligence is also a curse in the eyes of virtuous person.

2012. **पमादो पराजय-अग्गजो।**

प्रमाद पराजय का अग्रज है।

Negligence is the elder brother of defeat.

2013. **पमादी णो लहदि कस्स वि सुगुणं।**

प्रमादी किसी भी सुगुण को प्राप्त नहीं करता।

Negligent doesn't get any virtue.

2014. **पमादी सगम्मि सगस्स भारोव्व।**

प्रमादी स्वयं पर स्वयं के भार की तरह है।

Negligent is like burden on oneself.

प्रमेय

2015. **णाणेण णेयो पमेयो।**

ज्ञान द्वारा जानने योग्य प्रमेय है।

Which is able to know by knowledge is knowable.

2016. **पमेय-भावो पमेयत्तं।**

प्रमेय का भाव प्रमेयत्व है।

Sense of knowable is knowability.

प्रयोजन

2017. **णिप्पयोजणं करेदि को कज्जं?**

कौन निष्प्रयोजन कार्य करता है?

No one does useless work.

2018. **सव्वकत्तू पयोजणधीणा।**

सर्वकर्ता प्रयोजन के अधीन होते हैं।

All doers depend on purpose.

प्रवचन

2019. **पगिट्ठ-मग्गस्स अप्पहियमग्ग-कारणभूदं वयणं वा पवयणं।**

प्रकृष्ट मार्ग के कारण अथवा आत्महित के मार्ग के कारणभूत वचन प्रवचन हैं।

Words or speech which are the cause of supreme way of welfare are called preachings.

2020. **सव्वहिदंकरं वयणं पवयणं।**

सबके हितकारी वचन प्रवचन हैं।

Benevolent words for all are preachings.

2021. **जिणाइ-परमेट्ठि-वयणं पवयणं।**

जिनादि परमेष्ठी के वचन प्रवचन हैं।

Words of Jina and other Paramesthi is preaching.

2022. **हिद-मिदप्पिय-वयणं पवयणं।**

हित-मित-प्रिय वचन प्रवचन हैं।

Beneficient, limited and loving words are sermon.

प्रवासी

2023. **सव्व-संसारी पवासी।**

सर्व संसारी प्रवासी हैं।

All worldly souls are migrant.

प्रशंसा

2024. **पसंसा वि सुट्ठु जदि कंखारहिदा।**

प्रशंसा भी श्रेष्ठ होती है यदि उसकी आकांक्षा न हो।

Praise is also good if there is no desire for it.

2025. **सगपसंसा-कंखी पडदि।**

जो स्वप्रशंसा की आकांक्षा करता है वह कालान्तर में गिरता है।

He who desires self praise falls.

2026. **महप्पा णो कंखदि सगपसंसं।**

महात्मा स्वप्रशंसा की आकांक्षा नहीं करते।

Great souls don't desire self praise.

2027. **सगपसंसं सुणिच्चा लज्जदि महप्पा।**

महात्मा स्वप्रशंसा सुनकर लज्जित होते हैं।

Great souls feel embarassed on listening to self praise.

2028. **परगुण-पसंसं सुणिय णंददि महप्पा।**

परगुणों की प्रशंसा सुनकर महात्मा आनन्दित होते हैं।

Great souls become happy by listening to others' virtues.

प्रशम

2029. **कसाय-भाव-उवसमो पसमो।**

कषायभावों का उपशम प्रशमभाव है।

Calmness of passion is serenity tranquil or

peacefulness.

प्रसन्नता

2030. **उच्छाहवड्ढगा महासत्ती पसायो।**

प्रसन्नता उत्साहवर्धनी महाशक्ति है।

Happiness is the great power which increases enthusiasm.

2031. **रोयी सिग्घं आरोग्गं लहंति पसायेण।**

प्रसन्नता से रोगी शीघ्र आरोग्य प्राप्त करते हैं।

Ailing become healthy soon from being blissful.

2032. **अंतरंग-पसायो धम्मज्झाण-लक्खणं।**

अभ्यंतर प्रसन्नता धर्मध्यान का लक्षण है।

Internal happiness is a sign of righteous concentration.

प्राज्ञ

2033. **कया वि ण सोअंति पण्णपुरिसा।**

प्राज्ञपुरुष कभी भी शोक नहीं करते।

Learned never become sorrowful.

2034. **कया वि णो अधीरा पण्णपुरिसा।**

जो कभी भी अधीर नहीं होते वे प्रज्ञ पुरुष हैं।

One who never becomes impatient is learned.

प्राण

2035. **अण्णं हु पाणो छुआवाहि-पीडिदाणं।**

क्षुधा व्याधि से पीड़ितों के लिए अन्न ही प्राण हैं।

Grain is life for them who are suffering from appetite's disease.

2036. **अण्णं धणं धम्मो वा पाणीणं एयारसम-पाणो।**

अन्न, धन अथवा धर्म प्राणियों का ग्यारहवाँ प्राण है।

Grains, wealth or religion is the eleventh vital breath of worldly souls.

2037. **वेरग्ग-संजम-तवा णाणं हु साहु-पाणा।**

वैराग्य, संयम, तप, ज्ञान ही साधु के प्राण हैं।

Detachment, restraint, austerity and knowledge are the vitalities of an ascetic.

2038. **पाण-संपत्तीए को ण होदि सुही?**

प्राणों के प्राप्त होने पर कौन सुखी नहीं होता है?

Who doesn't get happy after getting life?

2039. **मिच्चु-पसंगे अभिट्ठ-वत्थु-पत्ती लद्धपाणोव्व णंददा।**

मृत्यु के प्रसंग में अभीष्ट वस्तु की सम्प्राप्ति लब्धप्राण की तरह आनन्ददायक होती है।

At the time of death getting desired things, gives happiness like getting life.

2040. **जस्स चित्ते वसदि सो तस्स पाणोव्व।**

जो जिसके चित्त में बसते हैं वह उसके लिए प्राणों की तरह है।

One who dwells in one's heart is like one's life.

2041. **पाणेहिं विणा को जीवेदुं समत्थो लोयम्मि?**

प्राणों के बिना लोक में जीने के लिए कौन समर्थ है?

Who is able to live without vitalities in the world?

2042. **णिच्छयपाणेहिं विणा ववहारो असंभवो।**

निश्चय प्राणों के बिना व्यवहार प्राण असंभव है।

Practical vitalities are impossible without real vitality.

2043. **ववहारपाणेहिं विणा जीवा होंति जहा सिद्धो।**

व्यवहार प्राणों के बिना भी जीव होते हैं जैसे सिद्ध।

There are living beings without practical vitalities like emancipated soul.

प्रिय

2044. **महावणं वि पासादोव्व पिय-समागमे।**

प्रिय का समागम प्राप्त होने पर महावन भी महल जैसा प्रतीत होता है।

After associating with dear ones even dense forest also seems like palace.

2045. **को ण णंददि पिय-चच्चं सुणिय?**

प्रिय के समाचार सुनकर कौन मनुष्य आनन्दित नहीं होता?

Who doesn't get happy listening to the news of a beloved?

2046. **पियस्स किंचि वत्थुं वि णंद-कारणं।**

स्वप्रिय की किंचित् वस्तु भी आनन्द का कारण होती है।

Even a small thing of a dear person is a cause of happiness.

2047. **जस्स चित्तं सगपियेण सह तस्स णो वियोगो।**

जिसका चित्त स्वप्रियतम के साथ रहता है उसका वियोग भी वियोग नहीं होता है।

Whose heart remains with his beloved his seperation is not seperation too.

2048. **संयोगो वि वियोगोव्व जस्स चित्ते णो सगपियो।**

जिसके चित्त में स्वप्रियतम नहीं रहता है उसको संयोग भी वियोगवत् भासता है।

Whose beloved doesn't remain in his heart,

meeting them also appears like seperation to him.

2049. **जस्स दोसा वि गुणोव्व भासंति सो पियो।**

जिसके दोष भी गुण की तरह दिखते हैं वह ही प्रिय है।

Whose faults also look like virtues is dear.

2050. **गुणा हु सव्वपिया णो पियप्पिया लोए।**

लोक में मनुष्य न तो प्रिय है न अप्रिय किन्तु गुण ही सर्वप्रिय होते हैं।

Man is neither liked nor disliked in the world but virtues are dear to all.

2051. **जहाजाद-बालो हु सव्वप्पियो।**

यथाजात बालक ही सर्वप्रिय है।

Naked child is dear to all.

प्रीति

2052. **अदिपरिचिदस्स पीदी चागणीया।**

अतिपरिचित की प्रीति त्याज्यनीय होती है।

Affection of more acquianted is worth abandoning.

2053. **जो जं णिज्झदि तेण विणा ण संतिं लहदि सो।**

जो जिससे प्रीति करता है वह उसके बिना शान्ति प्राप्त नहीं करता।

One who loves someone, he doesn't get peace without him.

2054. **पुव्वजम्म-सक्कारेण होदि सहसा पीदी।**

पूर्वजन्म के संस्कार से सहसा प्रीति होती है।

Affection generates suddenly because of previous births.

2055. **पुव्वसक्कारादो कस्स केण सह णो होदि पीदी?**

पूर्व संस्कारों से किसकी किसके साथ प्रीति नहीं होती?

Who doesn't love someone because of previous births?

2056. **बंधू णिज्झदि इहलोयम्मि किंतु गुरू उहय-लोएसु।**

बंधु इहलोक मात्र में प्रीति करते हैं परन्तु गुरु उभयलोक में।

Friends show affection in one world but preceptor in both worlds.

2057. **बंधू गुरू य परम-पीदि-कारणं।**

बंधु और गुरु दोनों परम प्रीति के कारण हैं।

Friend and preceptor both are the cause of affection.

2058. **एगहा वि सहवासिणा सह पीदी होज्ज-सय सहवासीणं का कहा?**

जो एक दिन भी साथ रहता है उसकी प्रीति हो जाती है, बहुत काल तक साथ रहने वाले की क्या कथा?

One who stays together even for a day, affection takes place than what can be said if one lives together for a long time.

प्रार्थना

2059. **पत्थणा होज्ज कंखाहीणा।**

प्रार्थना आकांक्षाहीन होनी चाहिए।

Prayer should be desireless.

2060. **उक्किट्ठ-पद-अब्भत्थणा हु पत्थणा।**

उत्कृष्ट पद की अभ्यर्थना ही प्रार्थना है।

Postulation for supreme state is prayer.

2061. **तिजोगसुद्धि-सहिदा पत्थणा सहला।**

त्रियोग शुद्धि से सहित प्रार्थना सार्थक है।

Prayer with purity of three yogas (mind, voice & body) is significant.

प्रेम

2062. **अहो पहू! मम हिये सव्वं पडि सया पेम्मो होज्ज।**

हे प्रभो! मेरे हृदय में सबके प्रति सदा प्रेम हो।

O God! May my heart has affection for everyone.

2063. **पेम्मो णिट्ठुरो।**

प्रेम निष्ठुर होता है।

Love is harsh.

2064. **पेम्मस्स होदि सया अग्गि-परिक्खा।**

प्रेम की सदा अग्नि परीक्षा होती है।

Love is always ordealed by fire.

2065. **अग्गि-परिक्खं विणा पेम्मो समलो।**

अग्नि परीक्षा के बिना प्रेम समल होता है।

Love is impure without a difficult ordeal.

2066. **वियोग-तावो पेम्मफलं पचदि।**

वियोग की धूप प्रेम के फल को पकाती है।

Fruit of love ripes in the heat of seperation.

2067. **कडुगं पेम्मस्स अपक्क-फलं।**

प्रेम का अपक्व फल कड़वा होता है।

Unripe fruit of love is bitter.

2068. **णो जायदि किंतु देदि सया सच्च-पेम्मो।**

सच्चा प्रेम सदा देता ही देता है कभी याचना नहीं करता।

True love always gives, it never demands.

2069. **कवडेण सग-सुहाकंखा-सत्थभावणाहि य पेम्मो मरदि।**

कपट, निज सुख की वांछा और स्वार्थ भावना से प्रेम की मृत्यु हो जाती है।

Love dies from deceitfulness, desire of self happiness and selfishness.

2070. **सच्चो पेमालुओ सव्वं दादूण महासुहमणुभवेदि।**

सच्चा प्रेमी अपना सब कुछ देकर महासुख का अनुभव करता है।

Ture lover feels a great pleasure by giving his everything.

2071. **पेम्मावेगम्मि जीवो अंधो विवेगहीणो णिट्ठुरो होदि।**

प्रेम के आवेग में जीव अंधा, विवेकहीन एवं निष्ठुर हो जाता है।

Person becomes blind, thoughtless and harsh in the fit of love.

2072. **भमरोव्व पयंगोव्व य पेमालुअ-गदी।**

प्रेमी की गति भ्रमर और पतंगे सदृश होती है।

Movement of true lover is like a large black bee or insect.

2073. **पेमालुयेण गहिअ-पेम्मेण तं पेमालुओ उक्किट्ठसुहं लहेदि।**

स्वप्रेमी के द्वारा स्वीकृत प्रेम से प्रेमी को उत्कृष्ट सुख होता है।

Lover feels best pleasure when his love has been accepted.

2074. **सच्च-पेमालुस्स एगा णीदी, णो उज्झदि पेम्मं कया वि।**

सच्चे प्रेमी की एक नीति होती है, वह कभी भी प्रेमभाव का त्याग नहीं करता है।

There is one policy of a true lover that he never gives up his love.

2075. **उक्किट्ठ-पेम्मो कयावि पराजिदो ण होदि।**

उत्कृष्ट प्रेम कदापि पराजित नहीं होता है।

Supreme love never gets defeated.

2076. **सच्चो पेमालुओ सया सगपेमालुयेण पराजियं वंछदि।**

सच्चा प्रेमी सदा अपने प्रेमी से पराजित होने की वांछा करता है।

True lover always wants to get defeated by his own lover.

2077. **पराजयेण हु उक्किट्ठ-पेम्मो जयदि।**

पराजय से ही उत्कृष्ट प्रेम की जय होती है।

True love wins from defeat.

2078. **जायण-संसयहंकारेहि वा पेम्मो रोयी होदि।**

याचना भाव से, संशय भाव से अथवा अहंकार से प्रेम रोगी हो जाता है।

Love gets ill from entreaty, doubt and ego.

2079. **जहत्थ-पेमालुओ पुण्ण-समप्पणेण सगारज्झस्स चित्तं जयदि।**

यथार्थप्रेमी सम्पूर्ण समर्पण से अपने आराध्य के चित्त को जीत लेता है।

Real love wins the heart of his lord by his true devotion.

2080. **सच्चो पेम्मो सगलक्ख-पत्तीए सरलो सहजो लहू मग्गो।**

सच्चा प्रेम अपने लक्ष्य की प्राप्ति का सरल, सहज एवं लघु मार्ग है।

True love is the simple, natural and short way to achieve one's aim.

2081. **पेम्म-गदी सया विचित्ता।**

प्रेम की गति सदा विचित्र ही होती है।

Movement of love is always peculiar.

2082. **जदणेण लद्ध-वत्थुं हु णेह-कारणं।**

यत्नपूर्वक जो वस्तु प्राप्त की जाती है वो निश्चित ही प्रेम का कारण है।

Thing which is obtained effortly is surely the cause of love.

2083. **सत्तपदं वि सह चलदि तस्सिं होदि पेम्मो।**

सात कदम भी जो साथ चलता है उनमें प्रेम भाव हो जाता है।

Who walks even seven steps together, affection generates between them.

2084. **णेहरहिदो खलो लोए जह अअंख-तिलो।**

लोक में प्रेम से रहित व्यक्ति खल माना जाता है जैसे निस्नेह तिल।

Person devoid of affection is considered wicked as oilless sesame seed.

2085. **सगजण-संगमेण पेम्मो वड्ढदि पेमालुआण सुहं च।**

स्वजनों के संगम से प्रेम बढ़ता है और प्रेमीजनों के संगम से सुख बढ़ता है।

Meeting own people affection grows and meeting affectionate or loving people happiness grows.

2086. **छउमत्थे पेम्मो असंभवो।**

छद्मस्थ में प्रेमभाव असंभव है।

Affection in an ascetic is impossible.

2087. **पेम्मो वि पूया।**

प्रेम भी पूजा है।

Many people consider love as worship.

2088. **णो देक्खदि पेमालुओ जादि-वण्ण-वय-पंथ-संपदाया य।**

प्रेमी जाति, वर्ण, वय, पंथ और संप्रदाय नहीं देखता।

Lover doesn't see caste, class, age, cult and tsect.

2089. **पियमप्पियं कज्जं किच्चा वि पियो दिस्सदि।**

प्रिय, अप्रिय कार्य करके भी प्रिय दिखता है।

Dear person looks dear even after doing disliked work.

2090. **अकिट्टिमसुह-कारणं पेम्मो।**

अकृत्रिम सुख का कारण प्रेम है।

Love is the cause of natural bliss.

2091. **पेम्मो वि जीवाणं सहजो गुणो।**

प्रेम भी जीवों का सहज गुण है।

Affection is also a natural quality of living beings.

2092. **पेम्मम्मि गुणा णो वत्थुम्मि।**

प्रेम में गुण दिखते हैं न कि वस्तु में।

Virtues are seen in love not in things.

बंध

2093. **कम्मबंधणं खलु संसार-मूल-हेदू।**

कर्मबंधन ही संसार का मूल हेतु है।

Karmic bonds are the main cause of transmigration.

2094. **णाणाविहा बंधा।**

बंध अनेक प्रकार के होते हैं।

There are many kinds of bonds.

बंधु

2095. **पेम्म-बंधणे बंधिदुं समत्थो सो बंधू।**

जो प्रेम के बंधन में बंधने के लिए समर्थ है वह बंधु है।

One who is able to be fastened in the bond of love is a friend.

2096. **जस्स वियारो जस्स अलंघणीयो सो तस्स बंधू।**

जिसके विचार जिसके लिए अलंघनीय हैं वह उसका बंधु है।

Whose thought are not inviolable for whom is his friend.

2097. **परमट्ठबंधू सुह-मूलं।**

परमार्थ बंधु सुख का मूल है।

Virtuous friend is the root of pleasure.

2098. **सत्थवसेण जो बंधू दिस्सदि सो ण जहत्थबंधू।**

स्वार्थवश जो बंधु दिखते हैं वह यथार्थ बंधु नहीं हैं।

Friends who are friends because of selfishness are not real friend.

2099. **कवडि-बंधूदो णिच्छलो सत्तू सेट्ठो।**

कपटी बंधु से निश्छल शत्रु श्रेष्ठ है।

Honest enemy is better than deceitful friend.

बल

2100. **संजमीणं बलं वेरग्गं।**

संयमियों का बल वैराग्य है।

Strength of non-restrained is detachment.

2201. **वणिअ-बलं बुद्धी।**

वणिकों का बल बुद्धि है।

Strength of merchant is intelligence.

2202. **राय-बलं धणं।**

राजाओं का बल धन है।

Strength of kings is wealth (treasure).

2103. **जस्स मणोबलं णिब्बलं तस्स देहबलं वि।**

जिसका मनोबल निर्बल हो उसका देहबल भी निर्बल होता है।

Whose will power is weak his physical power is also weak.

2104. **सव्वबलेसु अप्पबलं अदिसुट्ठु।**

सर्वबलों में आत्मबल अतिश्रेष्ठ है।

Will power is the greatest in all powers.

2105. **मादु-संमुहे रुज्जं बलं बालाणं।**

माता के समक्ष बालकों का रोना ही बल है।

Weeping in front of the mother is the strength of children.

बसंत

2106. **के वि सीदं के वि गिह्मं किंतु सव्वा वसंतं वंछंति।**

कुछ लोग सर्दी चाहते हैं कुछ गर्मी परंतु सभी लोग बसन्त चाहते हैं।

Some people want winter, some people want summer but all people want spring.

2107. **भोगी वसंतम्मि काम-सेवणं सावया जिणच्चणं जोगी अप्पज्झाणं च करेज्ज।**

बसंत ऋतु में भोगी काम सेवन, श्रावक जिनार्चन और योगी

आत्मध्यान करते हैं।

Enjoyers work, laymen worship and ascetic self-meditate in spring season.

2108. **झाणच्चणाणं च सुट्ठु वसंतो।**

पूजा और ध्यान के लिए बसंत श्रेष्ठकाल है।

Spring is best for praying and meditation.

2109. **णो वसंतो किंतु चित्तसुद्धी हु णंद-कारणं।**

बसंतऋतु आनन्द का कारण नहीं है अपितु चित्त की शुद्धि ही आनन्द का कारण है।

Spring is not the cause of pleasure but purity of heart is the cause of pleasure.

2110. **भोगीणं चित्त-णीरसत्तं वसंतो हरदि तह जोगीणं चित्त-संकिलिट्ठं जिणसमवसरणं।**

जैसे बसंत भोगियों की चित्त की नीरसता को दूर करता है वैसे ही जिनसमवशरण योगियों की संक्लेशता को।

As spring removes the dullness of the heart of the enjoyers similarly congregation hall of Jina removes distress of ascetics.

2111. **वसंतादो सुट्ठु संतसमागमो।**

बसंत से श्रेष्ठ साधुजनों का समागम है।

Accomplishable beings like the company of the ascetics more than spring.

2112. **वसंतो कयाचि विगडि-कारणं परं संतो ण।**

बसंत कदाचित् विकृति का कारण हो सकता है पर संत नहीं।

Spring may become the cause of inconsistency but not an ascetic.

2113. **णो सया बुद्धी अक्खराणुसारिणी।**
बुद्धि सदा अक्षरानुसारिणी नहीं होती।
Mind is not always according to alphabets.

2114. **सइवाणं बुद्धी बलं।**
मंत्रियों की बुद्धि ही बल है।
Intelligence is the strength of minister.

2115. **धणादो जेट्ठा बुद्धी।**
बुधि धन से ज्येष्ठ होती है।
Intelligence is greater than wealth.

2116. **बुद्धिहीणाणं कज्जाणं णो सुफलं।**
बुद्धिहीनों के कार्यों का सुफल संभव नहीं है।
Good fruition of the deeds of ignorant people is not possible.

2117. **बुद्धिमंताणं किं दुल्लहं?**
बुद्धिमानों के लिए क्या दुर्लभ है?
What is difficult to obtain for wise men?

2118. **जहा सुवण्णं सुज्झदि अग्गीए तहा बुद्धी णाणेण।**
जैसे अग्नि से सुवर्ण शुद्ध होता है वैसे ही ज्ञान से बुद्धि।
As gold becomes pure from fire similarly mind from knowledge.

2119. **बुद्धिमंतो अणिट्ठेण बीहदि।**
बुद्धिमान् अनिष्ट से भय खाता है।
Wise man fears from evil or harm.

2120. **संसारे सुहं दुल्लहं विणा बुद्धिं।**
बिना बुद्धि के संसार में सुख दुर्लभ है।
Happiness is difficult in the world without intelligence.

2121. **सुहासुहकम्माणि हु मित्तं सत्तू धीमंताण।**
शुभ व अशुभ कर्म ही बुद्धिमानों के मित्र या शत्रु हैं।
Auspicious or inauspicious karma are the friend or enemy of wise men.

2122. **इंगिदाण गाहगा बुद्धी।**
बुद्धि इंगितों की ग्राहक होती है।
Mind is the receiver of inner impulse.

2123. **कसाय-समणेण संती वड्ढदि तहा बुद्धि णिम्मलचित्तेण।**
जैसे कषाय शमन से शान्ति बढ़ती है वैसे ही निर्मल चित्त से बुद्धि।
As tranquility is received by calmness of passions similarly mind gets peace from pure heart.

2124. **सव्वविवाद-णिवारगा सियावायठावगा बुद्धी।**
बुद्धि सर्वविवाद निवारक और स्याद्वाद स्थापिका होती है।
Mind is the destroyer of all disputes or arguements and a mordant of relativism.

2125. **दुरग्गह-विरोहगा बुद्धी।**
बुद्धि दुराग्रह की विरोधक है।
Mind is the opposer of misguided zeal.

2126. **लोए आयंसो अत्थदरिद्दो, ण दु बुद्धिदरिद्दो।**
अर्थदरिद्र लोक में आदर्श हो सकते हैं लेकिन बुद्धि से दरिद्र नहीं।
People poor because of money can be ideal but not the people poor from mind.

2127. **बुद्धिमंताणं ण को वि कज्जं असंभवो।**

बुद्धिमानों के लिए कोई कार्य असंभव नहीं है।

Nothing is impossible for wise men.

2128. **पुव्वामेव उत्तरं जाणदि बुद्धिमंतो।**

बुद्धिमान् पहले से ही उत्तर को देख लेता है।

One who comes to know the answer previously is wise.

2129. **कस्स वि भावं जाणेदुं समत्थो बुद्धिमंतो।**

बुद्धिमान् किसी भी जीव के भाव जानने के लिए समर्थ है।

Wise man is able to know the feelings of any living being.

2130. **पावकम्मं उज्झेदुं समत्थो हु बुद्धिमंतो।**

पापकर्म त्यागने में समर्थ ही बुद्धिमान् है।

Who is able to giving up sins is wise.

बुभुक्षु

2131. **णो तिप्पदि छुहालू पढिय णाय-वागरणं।**

बुभुक्षित न्याय-व्याकरण पढ़कर तुष्ट नहीं होता।

Hungry doesn't get satisfied from reading law and grammar.

2132. **अण्णट्ठ-काम-णाण-जसारोग्गाणं च बहुविहाणं बुभुक्खा।**

बुभुक्षा बहुत प्रकार की होती है जैसे अन्न, अर्थ, काम, ज्ञान, यश, आरोग्य आदि की।

There are many kinds of hunger like hunger of food, money, lust, knowledge, fame, health etc.

ब्रह्मचर्य

2133. **बंभचेरं चेयणा-भोगो।**

ब्रह्मचर्य चेतना का भोग है।

Celibacy is the enjoyment of soul.

2134. **तिजोग-वियडि-परिहारो हु बंभचेर-वदं।**

त्रियोग की विकृति का परिहार ही ब्रह्मचर्य व्रत है।

Elimination of deviation from the three yogas (mind, speech & body) is celibacy vow.

2135. **बंभचेर-सेवगो हु अमरो।**

जो ब्रह्मचर्य का सेवन करता है वही देव माना जाता है।

Only the one who endures celibacy is considered to be God.

ब्राह्मण

2136. **तव-सुद-जादी य बंभण्णय-कारणं।**

तप, श्रुत और जाति ब्राह्मणत्व के कारण हैं।

Austerity, scriptures and caste are the cause of brahmanhood.

2137. **तव-सुद-वदहीणो जादीए बंभणो।**

तप, श्रुत और व्रतहीन केवल जाति से ब्राह्मण होता है।

One who is devoid of penance, scriptures and vows is brahman only from caste.

भक्त/भक्ति

2138. **परमप्प-पयस्स पुव्वे पत्तेगं जीवो भत्तो होज्ज।**

परमात्मा के पूर्व प्रत्येक जीव को भक्त होना चाहिए।

Every soul should be devotee before being God.

2139. **जिणभत्ती वड्ढदि णिम्मलसम्मत्तेण।**

सम्यक्त्व के निर्मल होने से जिनभक्ति में निर्मलता बढ़ती है।

Devotion to Jina always gets pure by clearness of perception.

2140. **जिणभत्तीए इट्ठसिद्धी सया।**

जिनदेव की भक्ति से सदा इष्टसिद्धि होती है।

Adoration of Jinendra fulfills desire.

2141. **कुत्थ कुडिलचित्तस्स जिणधम्मभत्ती?**

कुटिलचित्त वाले के जिनेन्द्र और धर्म में भक्ति कहाँ?

Where is devotion towards Jina and religion in the heart of deceitful people?

2142. **कामधेणुव्व गुरुभत्ती सव्वकंखा-पूरगा।**

निश्चय से गुरुभक्ति कामधेनु के समान सर्व आकांक्षा पूरी करने वाली है।

Worship to preceptor fulfills all desires like the cow of plenty.

2143. **विणा भत्तिमुल्लेण को लहदि मुत्ति-अंगणं?**

बिना भक्ति रूपी मूल्य के मुक्ति अंगना को कौन प्राप्त करता है?

Who can get salvation without adoration?

2144. **किं ण देदि विसुद्धभत्ती?**

विशुद्धभावों से की गई भक्ति किस फल को नहीं देती है?

What fruition does devotion not give when it is done with pure thoughts?

2145. **जिणभत्तिं विणा णो सुहं विउल-संपत्ति-णाणलद्धे वि।**

विपुल संपदा और ज्ञान प्राप्त होने पर भी जिनभक्ति बिना सुख नहीं है।

There is no happiness without devotion to Jina even after getting ample wealth and knowledge.

2146. **गुरुसेवं जिणभत्तिं विणा लोगिग-संपत्ती दुक्ख-हेदू।**

गुरुसेवा और जिनभक्ति के बिना लौकिक सम्पत्ति दुःख का कारण होती है।

Worldly wealth is the cause of grief without service to preceptor and devotion to Jina.

भगवान्

2147. **पुण्ण-णाणी हु भगवंतो।**

पूर्ण ज्ञानवान् ही भगवान् है।

Having complete knowledge is God.

भयभीत

2148. **भयेण वि कत्तव्व-मज्जादा-धम्मगुण-रक्खणं संभवो।**

भय से भी कर्तव्य, मर्यादा, धर्म, गुण का रक्षण संभव है।

Protection of duty, dignity, religion and virtues is possible from fear also.

भवन

2149. **सज्जण-णिवासठाणं भवणं।**

सज्जन पुरुष का निवास स्थान 'भवन' कहलाता है।

Residence of virtuous man is called a mansion.

2150. **भवणवासीण णिवासठाणं जम्मि अकिट्टिम-चेइय-चेइयालयाणि तं भवणं।**

भवनवासी देवों के आवास स्थान जिसमें अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय होते हैं उन्हें भवन कहते हैं।

Residence place of 'bhavanvasi deva' in which there are natural temples are called edifice.

भवितव्यता

2151. भावी सो होस्सदि।

जो भावी है वह होगा।

Only predestined will happen.

2152. जो जत्थ जेण जदा लहदि सो तत्थ तेण तदा हु लहदिइमा भविदमाव्वदा।

जो जहाँ जिसके द्वारा जब प्राप्त होता है वह उसके द्वारा वहाँ निश्चय से प्राप्त होता है यह भवितव्यता कही जाती है।

Thing which have to be obtained there and by him it will be obtained there and by him, it is called destiny.

2153. भव्वो सो हु होदि।

जो होने योग्य है वही नियम से होता है।

What is capable of happening will definitely happen.

2154. अभव्वो ण होदि कयावि।

जो होने योग्य नहीं है वह कभी भी नहीं होता।

What is not capable of happening will never happen.

2155. भविदव्वं विणा जदणे वि णियमेण होदि जहा जादस्स मिच्चू।

भवितव्यता बिना यत्न के भी नियम से होती है जैसे जन्मते की मृत्यु।

Destiny surely happens even without efforts like death of born.

भव्य

2156. भव्वा सहजा हु लहंते सुगुणा।

भव्य जीव सहज ही सुगुण प्राप्त करते हैं।

Accomplishable souls gain merits or virtues naturally.

2157. सव्व-हिदकर-वत्थु-णादू भव्वा।

भव्यजीव सर्व हितकारी वस्तु को जानने वाले होते हैं।

Accomplishable souls know all benevolent things.

2158. गुरुगुण-संजोगेण हु भव्वा सिद्धिं लहंति।

गुरु गुण के संयोग से भव्य नियम से सिद्धि को प्राप्त करते हैं।

Accomplished surely attain fulfillment with the help of great virtues.

2159. महावणे वि भव्वाणं होंति मित्ताणि सव्वदा।

हमेशा महावन में भी भव्यों के मित्र होते हैं।

Accomplishable have friends even in dense forest.

2160. भावेहि जिणं पुज्जंति भव्वा।

भव्य जीव ही जिनेन्द्र की भावसहित पूजा करते हैं।

Only accomplishable souls worship lord Jina with true feelings.

भाग्य (विधि)

2161. पुण्णपावरूवो भालालेहो भग्गो।

भाल का पुण्य-पाप रूप आलेख भाग्य है।

Forehead's display in the form of merits and demerits is fortune.

2162. **धि पुरिसत्थ-णासगं भग्गं।**

पुरुषार्थ को नष्ट करने वाले भाग्य को धिक्कार है।

Curse on that fate which destructs vigour.

2163. **भग्गपत्ति-जोग्गो हु उवकस।**

जो भाग्य से प्राप्ति योग्य है वह नियम से प्राप्त होता है।

Which is capable of being gained by destiny it is surely obtained.

2164. **इंदो वि ण समत्थो विहि-किदं अण्णहा-करेदुं।**

विधि के किये हुए को अन्यथा करने में इन्द्र भी समर्थ नहीं है।

Even Indra is not able to change fate.

2165. **पुण्णो विस्सो विहि-वसे।**

सम्पूर्ण विश्व विधि (भाग्य) के वश में है।

Whole world is under the control of destiny.

2166. **विही हु परमगुरू।**

विधि ही परमगुरु है।

Destiny is the supreme preceptor.

2167. **विहीए ण को वि अण्ण-वत्थुं बलिट्ठं।**

विधि से कोई भी अन्य वस्तु बलिष्ट नहीं होती।

Nothing is stronger than destiny.

2168. **सव्व-पहावेसु पहाणो विहि-पहावो।**

विधि का प्रभाव सभी प्रभावों में प्रधान है।

Effect of destiny is prime in all effects.

2169. **णो सज्झ-सिद्दी भग्गविवरीदे।**

भाग्य के विपरीत होने पर साध्यसिद्धि संभव नहीं है।

Achievement is not possible being contradictory to fortune.

2170. **भग्गाहीणो सुकुले जम्मो पुरिसत्थो मम अहीणो।**

अच्छे कुल में जन्म लेना भाग्य के अधीन है और पुरुषार्थ मेरे अधीन है।

Taking birth in good family depends on fortune and vigour depends on me.

2171. **पुरिसत्थ-भग्गोवरि सफलदा ठिदा।**

पुरुषार्थ और भाग्य के ऊपर नियम से सफलता स्थित रहती है।

Success is situated on efforts & fortune.

2172. **सुपुण्णवंतो भग्गसाली हु सया सुही।**

सुपुण्यवान् भाग्यशाली ही सदा सुखी रहता है।

Meritorious & fortunate always remains happy.

2173. **भग्गहीणस्स सुह-साहणं वि दुहकारणं।**

भाग्यहीन के लिए सुख के साधन भी दु:ख के कारण हैं।

Source of pleasure are the cause of pain for unfortunate.

भार

2174. **पडण-कारणं भारं हु वहेज्ज।**

जो भार व्यक्ति को गिराने में कारण हो वह वहन नहीं करना चाहिए।

One should not bear that weight which is able to bring a person down.

2175. **जं कज्जं णो रुच्चदि तं हु भारोव्व।**

जिस कार्य में जिसका चित्त नहीं लगता वही भारवत् है।

The work which we don't feel like doing is a burden.

2176. **तिव्वकंखिदभारो वि णो भारो।**

वह भार भार नहीं होता जिसकी तीव्र आकांक्षा हो।

That burden is not burden which is intensly desired.

2177. **समत्थाणं किं भारो?**

समर्थ के लिए क्या भार?

What is burden for capable?

2178. **अदिभारारोहणं सवर-दुह-कारणं।**

अतिभारारोहण स्वपर के दु:ख का कारण है।

Giving excessive burden is the cause of self & other's pain.

भारत

2179. **रित्तं भरेदि भारदं।**

जो रिक्त को भरता है वह भारत है।

Which fills the blank is Bharat.

2180. **जो अट्टपरिणामं भंजदि सो भारददेसो।**

जो आर्त्तपरिणामों को नष्ट करता है वह देश भारतदेश है।

That country which destroys painful feelings is Bharat.

2181. **जो सोहदि पेम्मभावेण सो भारददेसो।**

जो प्रेमयुक्त परिणामों से सुशोभित होता है वह भारत है।

Which is adorned with lovelyness is Bharat.

2182. **जत्थ पेम्मभावो वड्ढदे सो भारददेसो।**

जिस क्षेत्र में प्रेमभाव बढ़ता है वह भारत है।

Where love increases is Bharat.

2183. **जत्थ सच्चं जयदि मोसं ण सो मम देसो भारदं।**

जहाँ सत्य की जय होती है झूठ नहीं जीतता है वह मेरा देश भारत है।

Where truth wins and lie gets defeat that is my country Bharat.

2184. **सच्चसंपण्णा विणयजुत्ता धम्मणिट्ठा हु भारदियपया।**

सत्यसंपन्न, विनययुक्त और धर्मनिष्ठ ही भारतीय प्रजा है।

Indian citizens are truthful, polite and devout.

2185. **णाण-विण्णाण-संगीद-कला-धम्म-पेम्म-सवरहिदणिरवेक्ख-भावजुत्तं भारदं।**

ज्ञान, विज्ञान, संगीत, कला, धर्म, प्रेम, स्वपरहित और निरपेक्ष भावयुक्त ही भारत है।

Which is endowed with knowledge, science, music, art, religion, love, benevolent and impartial feelings is Bharat.

2186. **णाणाविहणेगपुप्फजुत्तारामोव्व बहुरयणजुत्तायरोव्व भारद-भूमी।**

नानाविध पुष्प युक्त उपवन और बहु रत्न युक्त खान के समान ही भारतभूमि है।

Bharat is like the garden with many flowers and a mine with many gems.

2187. **तित्थयर-उसहदेवस्स पढमपुत्त-चक्कि-भरह-णामादो भारददेसो।**

तीर्थंकर ऋषभदेव का प्रथम पुत्र चक्रवर्ती भरत के नाम से भारतदेश नाम हुआ।

The name of the country became Bharat from first son of Teerthankar Rishabh Deva named emperor Bharat.

2188. **तित्थयर-उसहदेवस्स-जणग-णाभिराय-याले भारददेसस्स णामो अजणाह-वरिसो।**

तीर्थंकर ऋषभदेव के पिता नाभिराय के काल में भारत देश का नाम अजनाभ वर्ष था।

Name of Bharat was Ajnabha varsha at the time of Nabhiraya, father of Teerthankar Rishabh Deva.

2189. **सक्किदि-सुसक्कारेहिं भारदं गारवजुत्तं।**

सुसंस्कृति और सुसंस्कारों के द्वारा भारत देश गौरव युक्त माना जाता है।

Bharat is considered glorious because of good culture and sacrament.

भार्या

2190. **भज्जा अज्जा होदुं समत्था।**

भार्या आर्यिका होने में समर्थ होती है।

Woman is able to become Aaryika (female ascetic).

2191. **भज्जाए विणा सग्गोव्व गिहं वि णिरयोव्व।**

भार्या के बिना स्वर्ग समान घर भी नरकवत् हो जाता है।

Home like heaven is also like hell without wife.

2192. **जस्सिं गेहे भज्जा णत्थि तं सुण्ण-अरण्णव्व।**

जिस घर में भार्या नहीं होती वह शून्यवन के समान है।

Where there is no wife in the house, it is like a forest.

2193. **पुरिसाणं भार-हरेदुं समत्था भज्जा।**

मनुष्यों का भार हरने में समर्थ भार्या कहलाती है।

One who is able to relieve a man is called a lady.

2194. **दुक्ख-सरिदाए णावव्व भज्जा।**

दु:ख सरिता से पार करने में समर्थ नाव के समान भार्या है।

Wife is like a boat for crossing the river of pain.

2195. **जस्सिं कज्जे समत्था भज्जा तस्सिं णो णरो।**

जिस कार्य को भार्या करने में समर्थ होती है उसको नर नहीं कर सकता।

A man cannot do the work which is capable of being done by a woman.

2196. **वाहि-आदुराणं सुभज्जा परमोसहीव।**

व्याधि से आतुर के लिए सुभार्या परमौषधि की तरह है।

Good wife is like a medicine for a diseased.

2197. **भज्जा हु भग्गदत्त-मित्तं।**

भाग्य प्रदत्त मित्र भार्या ही है।

A fortunate friend is wife.

2198. **धम्मसीला सुलक्खणजुदा भज्जा गुरुव्व परमं मित्तं।**

धर्मशील सुलक्षण युक्त भार्या गुरु की तरह परम मित्र है।

Good conducted righteous wife is a best friend like a preceptor.

भाव

2199. **अणिच्छा-भावो हु साहु-लक्खणं।**

अनिच्छा भाव ही साधुओं का लक्षण है।

Unwillingness is a sign of ascetic.

2200. **भव-सिव-अंतरे मज्झत्थ-भावो।**

मध्यस्थ भाव संसार और मोक्ष के बीच में रहता है।

Neutrality remains between world and liberation.

2201. **णो विणा भावेण धम्मो जहा विणा बीयेण अंकुरो।**

भाव के बिना धर्म नहीं जैसे बिना बीज के अंकुर।

There is no religion without feelings like sprout without seed.

2202. **सव्वसुद्धीण-उद्देसो भावसुद्धी।**

सभी प्रकार की शुद्धियों का उद्देश्य भावशुद्धि है।

Purpose of all purities is purity of heart.

2203. **भावपुंजो हु जीवो।**

जीव भावों का पुंज है।

Living being is a pile of feelings.

भावना

2204. **भावणाहीणो ण को वि लोयम्मि।**

लोक में भावना से हीन कोई भी जीव नहीं है।

There is no living being in the world without feelings.

2205. **जाव-भावणा ताव उवलद्धी।**

जैसी भावना होती है वैसी उपलब्धि होती है।

One attains according to one's feelings.

2206. **जहा भावणा तहा जीवो।**

जिस प्रकार की भावना उस प्रकार का जीव होता है।

As there are feelings, so there is living being.

भाषण

2207. **भासणे भासाए भोयणस्स य पहावो दिस्सदि।**

भाषण में भाषा और भोजन का प्रभाव दिखता है।

Effect of language and meal can be seen in speech.

2208. **भावहीणं भासणं णिरत्थं जहा मुत्तिहीणा सिप्पी सद्दहीणो संखो वा।**

भावहीन भाषण वैसा ही निरर्थक है जैसे मोती से विहीन सीप और शब्दहीन शंख।

Feelingless speech is meaningless like shell without pearl and conch shell without sound.

भाषा

2209. **भासा सगभाव-पडिणिही।**

भाषा स्वभावों की प्रतिनिधि है।

Language is the representative of nature.

2210. **हिंदि-सक्कद-पागदभासा गंगा-जमुणा-सरस्सदिव्व।**

हिन्दी, संस्कृत और प्राकृतभाषा गंगा, यमुना और सरस्वती के समान हैं।

Hindi, Sanskrit and Prakrit languages are like Ganga, Yamuna and Saraswati.

2211. **जहा मादु-दुद्धं विणा सिसु-देहो अपुट्ठो तहा भासाए विणा सक्किदी।**

जैसे माता के दूध के बिना बालक की देह अपुष्ट होती है वैसे भाषा के बिना संस्कृति।

Like child is unnourished without the mother's milk, similar is culture without language.

2212. **जहा कंतेण विणा कंता तहा पागदं विणा सक्कदा।**

जैसे पति के बिना पत्नी होती है वैसे प्राकृत के बिना संस्कृत भाषा।

Sanskrit without Prakrit is like wife without husband.

2213. **कप्पलदव्व सक्कदं असोग-रुक्खोव्व य पागदभासा।**

कल्पलता के समान संस्कृत भाषा है और अशोकवृक्ष के समान प्राकृत।

Sanskrit is like fulfillment tree and Prakrit is like ashoka tree.

2214. **पागदा सक्कद-भासाहारो।**

प्राकृत भाषा संस्कृत भाषा का आधार मानी जाती है।

Prakrit is considered the base of sanskrit.

2215. **पागद-सक्कद-हिंदि-कण्णड-उद्दु-आइ-भासा भारदिय-सक्किदीइ पाणोव्व।**

प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी, कन्नड़, उर्दू आदि भाषा भारतीय संस्कृति के प्राण रूप मानी जाती हैं।

Language like Prakrit, Sanskrit, Hindi, Kannad, Urdu etc. are considered the life of Indian culture.

2216. **णेउणं सच्चवादिदा य भासाए जाणेज्ज।**

निपुणता और सत्यवादिता भाषा द्वारा जानी जाती है।

Deftness and truth is known by language.

2217. **बहुभासाविदो सहाए आयरं लहदि।**

बहुभाषाविद् सभा में आदर प्राप्त करता है।

Multilingual is respected in the assembly.

भीरुता

2218. **धि थूलदेह-भीरु-चित्तं।**

स्थूल शरीर वाले भीरु मन को धिक्कार है।

Shame on fearful heart with thin body.

2219. **जम्मि चित्तम्मि ण भीरुदा पावेहिं तम्मि संती कुत्थ?**

जिस चित्त में पापों से भीरुता नहीं है उसके चित्त में शान्ति कहाँ?

Where is peace in his heart, whose heart doesn't fear from sins?

2220. **भीरू हु कत्तव्वठिदो।**

भीरुजन ही कर्त्तव्य में स्थिर होता है।

Only fearful is determined in his work.

भृत्य

2221. **सरल-सहज-संत-सेवासीलो हु भिच्चो।**

सरल, सहज, शान्त, सेवाशील ही भृत्य माना जाता है।

Simple, natural, calm devotee is a servant.

2222. **पुण्ण-समप्पिदो अदिविस्ससणीयो परिवारजणोव्व भिच्चो हु हिदंकरो सेवगो।**

पूर्ण समर्पित अतिविश्वसनीय परिवार के सदस्य के समान जो भृत्य (नौकर) होता है वह हितकर सेवक है।

Servant who is committed and trust worthy like a family member is a benevolent servant.

2223. **अलसरहिदो साहसी उज्जमी विणयी विवेगी य भिच्चो पियंगरो।**

आलस्यरहित, साहसी, उद्यमशील, विनयी, विवेकशील, नौकर ही प्रियंकर होता है।

Servant who is energetic, bold, active, courteous & discerning is dear.

2224. **कत्तव्वसीलो सामिणो मणोभावाणुगामी हु आयंसो भिच्चो।**

जो नौकर कर्त्तव्यशील तथा स्वामी के मनोभावों का अनुगामी है वह लोक में आदर्श भृत्य माना जाता है।

Servant who is conscientious and follower of his owner, is consider a noble servant in the world.

2225. **सुभिच्चो सगसामिणो सक्कारा ण उज्झदि।**

सच्चा भृत्य अपने स्वामी के सुसंस्कारों को नहीं त्यागता है।

True servant doesn't sacrifice his owner's morals.

2226. **जहत्थ-सेवगो सच्चवायि-सामिभत्तो धम्मपेम्मी य भिच्चो दुल्लहो।**

यथार्थसेवक, सत्यवादी, स्वामीभक्त और धर्मप्रेमी (कर्त्तव्य प्रेमी) भृत्य दुर्लभ है।

Genuine, truthful, devoted and dutiful servant is difficult to find.

2227. **भिच्चो सारभूदो होज्ज णो भारभूदो।**

भृत्य सारभूत होना चाहिए भारभूत नहीं।

Servant should be valuable not a burden.

2228. **बहुकयग्घा भिच्चादु एगो कयण्णू सुट्ठु।**

बहुत सारे कृतघ्न भृत्यों से एक कृतज्ञ भृत्य श्रेष्ठ है।

A thankful servant is better than many thankless servants.

2229. **जहा सामी सहावो तहा भिच्चाणं वि।**

जैसा स्वामी का स्वभाव होता है वैसा ही भृत्यों का भी।

As the nature of owner so is of servant too.

2230. **सामी सगभिच्चं पीडदि सो सगं घादेदि।**

जो स्वामी अपने भृत्य को पीड़ित करता है वह अपना घात करता है।

Owner who gives pain to his servant he harms himself.

भेदनीति

2231. **सुट्ठु पुरिसा भेयणीदी ण सोहदि।**

अच्छे पुरुषों को भेदनीति नहीं शोभती है।

Divide and rule policy doesn't suit virtuous people.

2232. **भेयबुद्धी पेम्म-घादगा।**

भेदबुद्धि प्रेम की घातक है।

Spirit of dissension is the destroyer of affection.

भोग

2233. **सव्वदा भुंजमाणं मेरुव्व कोसं वि झिज्जदि।**

हमेशा भोगते रहने पर मेरु के समान कोष भी क्षीण हो जाता है।

Even treasure like mount meru gets diminished from always enjoying pleasures.

2234. **बलिट्ठा हु थि-णिहि-संति-सत्ती य भुंजेज्ज।**

बलिष्ठ लोगों के द्वारा ही स्त्री, निधि, शान्ति और शक्ति भोगी जाती है।

Woman, wealth, peace and power is endured by strongest people.

2235. **जं भोत्तुं ण को वि समत्थो तं फलं णो मण्णदे।**

जिसको भोगने में कोई भी समर्थ नहीं होता वह फल नहीं माना जाता है।

That is not considered fruit which cannot be enjoyed by anyone.

2236. **सव्वत्थ ण भोया हेया किंतु णिस्सीमाकंखा हेया।**

भोग सर्वथा हेय नहीं होते हैं किन्तु उसकी निस्सीम आकांक्षा हेय है।

Worldly pleasures are not always despicable but its endless desire is despicable.

2237. **भोयो रोयजोगाण कारणं।**

भोग रोग और योग का कारण है।

Enjoyment is the cause of disease and meditation.

2238. **भोयाणं णियमेण वियोगो।**

भोगों का नियम से वियोग होता है।

Worldly pleasures gets seperated surely.

2239. **भोयादु हु पुण्णं झिज्जदि।**

भोग भोगने से नियम से पुण्य क्षीण होता है।

Merits surely diminish from enjoying worldly pleasures.

2240. **विणा तिव्व-पुण्णोदयेण मणोणुऊल-भोयो असंभवो।**

तीव्र पुण्योदय के बिना मनोनुकूल भोग असंभव है।

Desired enjoyments are impossible without rise of intense merits.

2241. **पडिऊल-वत्थूणि समभावेण-भुंजणेण पावं णिज्झरदि।**

प्रतिकूल वस्तुओं को समताभाव से भोगने से पाप क्षीण होता है।

Sins diminish from enjoying adverse things with equanimity.

भोजन

2242. **भयणेण विणा भोयणं णो रुच्चदे धम्मप्पाणं।**

धर्मात्माओं को भजन के बिना भोजन नहीं रुचता।

Pious people don't like food without hymns.

2243. **जं धम्म-कारणं तं सुट्ठु भोयणं।**

जो धर्म का कारण है वही श्रेष्ठ भोजन माना जाता है।

Food which is the cause of religion is considered best.

2244. **भोयणेण विणा भयणं साहणा कत्तव्व-पालणं च असंभवो।**

भोजन के बिना भजन, साधना और कर्त्तव्य पालन असंभव है।

Adoration, penance and obeying duty is impossible without food.

2245. **जदा खुम्मेज्ज तदा भुंजेज्ज।**

जब बुभुक्षा लगे तभी भोजन करना चाहिए।

When there is appetite then only food should be taken.

2246. **गिहत्था दिवसस्स बेवेलाए भुंजेज्ज।**

गृहस्थ दिन की दो बेलाओं में भोजन करे।

House holder should take food twice in a day.

2247. **कुभावेहिं सह णो भुंजेज्ज।**

कुभावों के साथ भोजन नहीं करना चाहिए।

Food should not be taken with bad feelings.

2248. **कुभावणा भोयणं कुच्छिदं कुणेदि।**

कुभावना भोजन को कुत्सित करती है।

Wicked feelings make the food base.

2249. **दाणं विणा अमियभोयणं वि विसोव्व गिहत्थाणं।**

गृहस्थों के लिए दान के बिना अमृत-भोजन भी विष के समान है।

Without donation, nector is also like poison for householders.

2250. **दाणेण अक्खीणं भोयणं।**

भोजन, दान से अक्षीण होता है।

Food become imperishable by giving it.

2251. **विणा भोयणदाणेण मत्तं सद्देण कस्स वि उयरं णो पूरदि।**

बिना भोजनदान के मात्र शब्ददान से किसी का पेट नहीं भरता।

Without giving food by talking only, no one's stomach gets filled.

2252. **जो भोयणं ओसहिव्व णो भुंजदि सो ओसहिं भोयणव्व भुंजेदुं बद्धो।**

जो औषधि की तरह भोजन नहीं करता है वह औषधि को भोजन के समान खाने के लिए बद्ध होता है।

He who doesn't take food as medicine he has to take medicine as food.

2253. **भोयणे जहा भत्ती तहा रसो।**

भोजन में जैसी भक्ति वैसा रस।

As there is devotion so there is taste in the meal.

2254. **जेहिं भावेहिं भोयणं दादि भुंजेदि पस्सदि तहा पहावो दिस्सदि।**

जैसे भावों से भोजन देता है, करता है और देखता है वैसा प्रभाव भोजन में दिखता है।

Feeling by which meal is given, taken and seen the same effect is seen in the meal.

2255. **विणा गुड-लवण-गोरसेहिं भोयणं मिदव्व।**

गुड़, नमक और गोरस के बिना भोजन मृत कहलाता है।

Food is called insipid without sugar, salt and milk etc.

भ्राता

2256. **भादुं पेक्खिय पसण्णो णो होदि सो भादुरूवेण सत्तू।**

जो भाई को देखकर प्रसन्न नहीं होता वह भाई के रूप में शत्रु है।

He who doesn't become happy seeing his brother, is an enemy in the form of brother.

2257. **सगकुलहिदेसि-भादु-उण्णदीए सहजोगं करेज्ज।**

उस भ्राता की उन्नति में सहयोग करना चाहिए जो स्वकुल का हित चाहता है।

One should help in the progress of that brother who wants good of his family.

मंगल

2258. **जेण पावं गलदि तं मंगलं।**

जिस कारण से पाल गलता है उसको मंगल कहा जाता है।

By which sins melt is bliss.

2259. **मंगल-कारणं हु मंगलं।**

मंगल का कारण ही मंगल होता है।

Cause of bliss is bliss.

2260. **दाणेण दायग-जाचगाण मंगलं होदि।**

दान से दाता और याचक का मंगल होता है।

By donation auspiciousness is possible of both donator and petitioner.

2261. **सगमंगलं को ण कंखदि?**

कौन अपना मंगल नहीं चाहता है?

Who doesn't want his good?

2262. **सव्वाणं मंगलं कंखदि महापुरिसो।**

महापुरुष सभी के मंगल की वांछा करता है।

Great man desires well-being for everyone.

2263. **विग्घं णट्ठेदुं मंगलं करेज्ज।**

विघ्न नष्ट करने के लिए मंगल किया जाता है।

Good should be done for destroying obstacles.

2264. सवर-मंगलं णो कंखदि सो ण धम्मप्पा।

जो स्वपर मंगल नहीं चाहता वह धर्मात्मा नहीं है।

One who doesn't think of self and other's welfare is not religious.

2265. चउविहं मंगलं णाम-ठवणा दव्वं भावो य।

मंगल चार प्रकार का है-नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव।

Mangal is of four types-Name, placing, substance & quality.

2266. कालो खेत्तं वि मंगलं।

काल और क्षेत्र भी मंगल हैं।

Time and place are auspicious too.

मंत्री मण्डल

2267. विवेकहीणो सइवो संपुण्ण-देस-घादगो।

विवेकहीन सचिव (मंत्री) सम्पूर्ण देश का घातक है।

Undiscerning minister is the destroyer of country.

2268. मंतिमंडलेण विणा णो को वि सुट्ठु आयंसो वा राया।

मंत्री मण्डल के बिना कोई भी श्रेष्ठ या आदर्श राजा नहीं होता।

No king is eminent and noble without the cabinet.

2269. जहा देहेण विणा पाणो ण जीवदि तहा रायेण विणा मंतिमंडलं।

जैसे देह के बिना प्राण जीवित नहीं रहते वैसे ही राजा के बिना मंत्रीमण्डल।

As there are no vitalities without body, there is no cabinet without king.

2270. मंतिमंडलं राय-चेयणाए देहो।

मंत्री मण्डल राजा रूपी चेतना का देह है।

Cabinet is the body of soul of king.

2271. मंतिमंडलं रायरूव-सेणिगस्स अत्थ-सत्थाणि।

मंत्री मण्डल राजा रूपी सैनिक का अस्त्र-शस्त्र है।

Cabinet is the weapon of soldier of king.

2272. मंतिमंडलं रायस्स जीविदो सुट्ठु दुग्गो।

मंत्रीमण्डल राजा का जीवित श्रेष्ठ दुर्ग है।

Cabinet is the best living fort of a king.

2273. जदि राया अण्णायं करेदि मंतिमंडलं ण तस्स विरोहदि तदा उहया हु समरूवेण अवरद्धो।

यदि राजा अन्याय करता है और मंत्रीमण्डल उसका विरोध नहीं करता तब दोनों ही समान रूप से अपराधी हैं।

If king does wrong and cabinet doesn't oppose him then they are equally faulty.

2274. रज्जविहवो मंतिमंडलं च राया-सरिदाए सुदढ-तडोव्व।

राज्यवैभव और मंत्रीमण्डल राजा रूपी नदी के सुदृढ़ तट के समान हैं।

Royal majesty & cabinet are like firm banks of the river of king.

मति

2275. कुडिला वक्का य मदी पंचमयाले बहु-णराणं।

पंचमकाल में बहुत से मनुष्यों की कुटिल और वक्र मति होती है।

Many people have crooked and sinful minds in the fifth period.

मधु-मांस-मद्य

2276. दयाधम्मो णो कयावि मंसासिण-चित्ते।

माँसभक्षियों के चित्त में दया धर्म कदापि नहीं होता।

There is no mercy in the heart of non-vegetarians.

2277. महु-मंस-मज्जादो जस्स णिवित्ती सुगदिं हु तस्स।

जिसकी मधु-माँस-मद्य से निवृत्ति है उसकी सुगति निश्चित है।

Who escapes from honey, meat and wine his good condition is sure.

2278. महु-मंस-मज्जं भुंजदि सो अहमो।

जो मधु-माँस-मद्य का सेवन करता है वह अधम नर है।

One who takes honey, meat and wine is wretched.

2279. बुद्धी विणस्सदि मज्ज-सेवणेण।

मद्य सेवन से बुद्धि नष्ट हो जाती है।

Mind gets destroyed by drinking liquor.

2280. महु-मज्ज-मंससेवणं अमाणुसिवित्ती।

मधु-मद्य और माँस सेवन अमानुषी वृत्ति है।

Having honey, liquor and meat is inhumane tendency.

2281. णो महु-मज्ज-मंसं जीवघादेण विणा।

मधु-मद्य और माँस जीवघात के बिना नहीं होते हैं।

Honey, liquor and meat doesn't exist without killing organisms.

2282. मंसासिणो कया वि णो लहदि सिवं।

माँसाहारी कभी भी मोक्ष प्राप्त नहीं करते हैं।

Carnivorous can never get liberation.

मन

2283. विचित्ता हु मणो वित्ती।

मन की वृत्ति विचित्र होती है।

Tendency of heart is peculiar.

2284. मणोभावा जाणेदुं कुसलो हु चदुरो।

मन के भावों को जानने में कुशल ही चतुर है।

One who is expert in knowing heart's feelings is clever.

2285. मणो णंददि दुक्खाणि विणस्संति।

जब मन आनन्दित होता है तब सर्व दु:ख नष्ट हो जाता है।

When heart is blissful then all sorrows get destroyed.

2286. पुण पुण मणो विवरीद-कज्जं करेदि।

मन पुन: पुन: विपरीत कार्य करता है।

Heart does opposite work again and again.

2287. णो मणोसुद्धी तस्स णिरत्था अण्ण-सुद्धी।

जिसकी मन शुद्धि नहीं है उसकी अन्य शुद्धि निरर्थक है।

Other purities are useless for him whose heart is not pure.

2288. मणो वि णाणस्स खाओवसमिओ भावो।

मन भी ज्ञान का क्षायोपशमिक भाव है।

Mind is also a disposition of destruction cum-suppression of knowledge.

2289. असण्णी णो कल्लाणपत्तं।

बिना मन वाले कल्याण के पात्र नहीं होते।

Irrational beings are not able to get welfare.

2290. **सुमणो देहसारो जहा रुक्खसारो सुमणं।**

अच्छा मन देह का सार है जैसे वृक्षों का सार सुमन है।

Good heart is the essence of body as tree's essense is flower.

2291. **मणो इंदियाणं राया।**

मन इन्द्रियों का राजा है।

Mind is the king of senses.

2292. **मणोजिदो हु इंदिय-जिदो।**

मन को जीतने वाला ही इन्द्रिय विजयी है।

Victor of heart is a conqueror of senses.

2293. **मणं भिण्णं कज्जं भिण्णं।**

मन से भिन्न होने से कार्य भिन्न दिखता है।

Many minds many works.

2294. **जदा मणो खिज्जदि तहा इंदियाणि कज्जं करेदुं असमत्थाणि।**

जब मन क्षुब्ध होता है तब इन्द्रियाँ कार्य करने में असमर्थ होती हैं।

When mind is restless then senses are unable to do work.

2295. **जहा भंगतडजुदा सरिदा वहदि तहा असंजमी मणस्स विट्टी।**

जैसे तटों को भंग कर सरिता बहती है वैसी ही असंयमी के मन की प्रवृत्ति होती है।

As shoreless river flows similar is the tendency of unrestrained.

मनस्वी

2296. **सुमणव्व हु मणंसी जहा सुमणं देवोवरि अप्पिदं होदि वणे-भूमोवरि वा।**

मनस्वी पुरुष सुमन के समान ही होते हैं जैसे सुमन या तो देवता के सिर पर रखे जाते हैं या वन में भूमि पर अर्पित हो जाते हैं।

Intellectual people are like flowers, flowers are either rendered on the head of god or entrusted on the earth.

2297. **मणंसी ण उज्झदि सगमज्जादं।**

मनस्वी पुरुष अपनी मर्यादा नहीं त्यागता।

Wise man never crosses his limits.

2298. **कत्तव्वं वंछदि मणंसी णो सुहं दुहं।**

मनस्वी सुख दु:ख नहीं अपितु कर्त्तव्य की वांछा करता है।

Ideal man desires for duty not joy and sorrow.

2299. **मणंसी पडिऊलदं सहदि ण मज्जादुल्लंघणं।**

मनस्वी प्रतिकूलता सहन करता है न कि मर्यादा का उल्लंघन।

Intellectual person tolerates adversity, not crosses the limits.

मनुष्य भव

2300. **भवेसु माणुसो अदिदुल्लहो।**

सभी भवों में मनुष्यभव अति दुर्लभ है।

Human life is very difficult to get in all lives.

2301. **अदिपुण्णेण जीवो लहदि माणुस-भवं।**

अतिपुण्य से जीव मनुष्यभव प्राप्त करता है।

Worldly soul gets human life by merits.

2302. **णरजम्मो मुत्तीए।**

मनुष्य जन्म मुक्ति के लिए है।

Human life is for getting liberation.

महात्मा

2303. **महप्पाणं अचिंत-धीरिमो।**

महात्माओं की धीरता अचिन्त्य होती है।

Great soul's patience is unimaginable.

2304. **सव्वखेमंकरा महप्पाणं धम्मदेसणा।**

महात्माओं की धर्मदेशना सभी के लिए क्षेमंकर होती है।

Preachings of great soul is auspicious for all.

2305. **कामदुहव्व महप्पाण आसी।**

कामधेनु के समान महात्माओं का आशीर्वाद होता है।

Blessing of great souls is like the cow of plenty.

2306. **सिग्घं फलदि महप्पुवयारो।**

महात्माओं का उपकार शीघ्र ही फलित होता है।

Beneficence of great souls become fruitful soon.

2307. **सम्मत्त-णाण-वयाइ-महप्पकुडुंबं।**

सम्यक्त्व-ज्ञान-व्रतादि महात्माओं का कुटुम्ब है।

Right perception, knowledge and conduct etc. are the family of great souls.

महापुरुष

2308. **विणा छत्तेण ण छाया तहा महापुरिसं विणा णो सरणं।**

जिस प्रकार बिना छत्र के छाया नहीं होती है उसी प्रकार बिना महापुरुष के शरण नहीं मिलती।

As there is no shadow without canopy similarly there is no shelter without great man.

2309. **महापुरिसाणं पदिट्ठा हु सेट्ठा णो वित्तं जीवणं च।**

महापुरुषों की प्रतिष्ठा ही श्रेष्ठ होती है धन और जीवन नहीं।

Prestige of great men is the most eminent not wealth or life.

2310. **बहुकलाजुत्तचंदोव्व महापुरिसगुणा।**

जिस प्रकार चन्द्रमा बहुत सी कलाओं से युक्त होता है वैसे ही महापुरुष के गुण।

As there are many phases of moon similarly virtues of great man.

2311. **लहूणं जोग्गं कज्जं महापुरिसेण णो करिज्जदि।**

लघु पुरुषों के योग्य कार्य महापुरुषों को नहीं करना चाहिए।

Great men shouldn't do the work which is worthy of lowly people.

2312. **महापुरिस-जोग्गं कज्जं लहूणं ण करेज्ज।**

महापुरुषों द्वारा योग्य कार्य लघुपुरुष को नहीं करना चाहिए।

Lowly people shouldn't do the work which is worthy of great man.

2313. **महापुरिसो सव्वं कल्लाणमग्गस्स पेरदि।**

महापुरुष सबको ही कल्याणमार्ग की प्रेरणा देते हैं।

Great man is an inspiration for the way of welfare for all.

2314. **णाणा-कट्ठं सहिदूणं वि ण उज्झंति सुकज्जाणि महापुरिसा।**

महापुरुष नाना कष्ट सहन करके भी अच्छे कार्य को नहीं छोड़ते।

Even after bearing pains, great men don't leave good works.

2315. **महापुरिसाणं मज्झत्थ-भावो वि जणाणं ताव-कारणं।**

महापुरुषों का माध्यस्थ भाव भी लोगों के संताप का कारण है।

Indifference of great men is the cause of anguish for the people.

2316. **रयणेसु मालिण्णं हु णस्सदि सहजेण तहा महापुरिसाणं वि।**

जैसे रत्नों पर विद्यमान मलिनता सहज ही नष्ट हो जाती है वैसे ही महापुरुषों की भी।

As dirt of jewels get destroyed naturally similar are of great men also.

2317. **सुह-दुक्खेसु वि महापुरिसस्स चेट्ठा पाय समाणा।**

सुख-दु:ख में भी महापुरुषों की चेष्टा प्रायश: समान ही होती है।

Activities of great men are generally alike in joy and sorrow.

2318. **को ण वंछदि महापुरिस-दंसणं?**

महापुरुषों के दर्शन कौन नहीं चाहता?

Who doesn't want to have a vision of great souls.

2319. **महापुरिसस्स अंतरकरण-पवित्ती लोगेसणाहीणा।**

महापुरुष के अन्त:करण की प्रवृत्ति लोकेषणा विहीन ही होती है।

Inner tendency of great man is devoid of desire of worldly pleasures or glory.

2320. **सव्वजीवाणं पोसणं रक्खणं च महाजणाणं रुच्चदे।**

सभी जीवों का पोषण और रक्षण महापुरुषों को अच्छा लगता है।

Great man like nourishment and protection of all living beings.

2321. **बहिरेण अदि-लुक्ख-महापुरिसो वि अंतरेण अदि-मिदू सहजो सरलो।**

बाहर से अति रूक्ष दिखने वाले महापुरुष भी अन्तरंग से अतिमृदु सहज और सरल होते हैं।

Even great man seem very harsh from outside but are very soft, natural and simple internally.

2322. **महापुरिसाण हत्थ-दाणेण भालं पंचगुरुभत्तीए मुहं सच्चवयणेण हिदयं सुद्धभावेण कण्णा धम्मसत्थ-सवणेण चरणा तित्थवंदणेण य सफला महापुरिसाणं।**

महापुरुषों का हाथ दान से, मस्तक पंचगुरुभक्ति से, मुख सत्य वचन से, हृदय शुद्धभाव से, कर्ण धर्मशास्त्र श्रवण से, पैर तीर्थ वंदना से सफल होते हैं।

Hands of great men become significant from donation, forhead from adoration of five parmeshthis, mouth from true words, heart from pure feelings, ears from listening to scriptures and legs from going on pilgrimage.

2323. **रुक्ख-पासाण-मिदिगा-जल-पवण-अग्गि-आयासुवयारो ससीमो किंतु महापुरिसस्स असीमो।**

वृक्ष, पाषाण, मिट्टी, जल, वायु, अग्नि, आकाश का उपकार सीमित होता है किन्तु महापुरुष का उपकार निस्सीम होता है।

Kindness of trees, stone, soil, water, air, fire and sky is limited but kindness of great man is unlimited.

2324. **पणभूद-किदुवयारो लोगिगो किंतु अलोगिगो वि महापुरिसेणं।**

पंचभूतों से कृत उपकार लौकिक होता है किन्तु महापुरुष से कृत उपकार अलौकिक भी होता है।

Kindness shown by five elements is worldly but kindness shown by great man is transcendental.

2325. **धणे णिम्मदो णाणे णदो जोव्वणे गंभीरो पभुत्ते वि उम्मत्तो य महापुरिसो।**

धन होने पर भी निर्मद, ज्ञान होने पर भी विनम्र, यौवन होने पर भी गंभीरता, प्रभुत्व होने पर भी उन्मत नहीं होता वह महापुरुष है।

One who is devoid of arrongance even after being rich, courteous even after being learned, serious even after being young, insane even after having sovereignty is a great man.

2326. **घंसण-दहण-छिंदण-भिंदणेण वि चंदणंसो सुगंधं देदि तहा हु महापुरिसो।**

घिसने, अग्निदहन, छेदन, भेदन से भी चंदन का किंचित् अंश भी सुगंध देता है वैसे ही महापुरुष।

Even a little part of sandal gives fragrance even after rubbing, burning, piercing and cutting similar are great man.

2327. **लहु-कज्जे वि हीणभावं ण लहदि महापुरिसो जहा अज्जुण-सारही कण्हो।**

लघुकार्य करने पर भी महापुरुष हीन भावना प्राप्त नहीं करते हैं जैसे अर्जुन का सारथी नारायण कृष्णदेव।

Greatmen don't feel inferiority even after doing lowely works like Arjun's charioteer Krishna.

2328. **महापुरिस-रोसो वि कालंतरे सुह-कारणं तहा अक्क-तावो वरिसाए।**

महापुरुष का रोष भी कालान्तर में सुख का कारण है जैसे सूर्य की प्रचण्डता वृष्टि का कारण होती है।

Rage of great man is the cause of happiness in time like burning heat of sun is the cause of rain.

2329. **महापुरिसस्स चरियं गूढं आयरणीयं विचित्तं जहा रयणागरो।**

महापुरुष का चरित्र गूढ़, आदरणीय और विचित्र होता है जैसे रत्नाकर।

Character of a great man is mysterious, honourable and strange like (source of jewels) ocean.

2330. **विपत्तीए धीरिमो कोह-णिमित्ते खमा विहवे दाणं, पहुदाए उवयारो परक्कमे धम्मरक्खा णाणे सुकज्ज-रुई महापुरिसाणं सहज लक्खणाणि।**

विपत्तिकाल में धैर्य, क्रोध का निमित्त होने पर क्षमा, वैभव होने पर दान, प्रभुता होने पर उपकार, पराक्रम होने पर धर्मरक्षा, ज्ञान होने पर सुकर्म में रुचि महापुरुषों के सहज लक्षण हैं।

Patience in adversity, forgiveness even after getting the cause of warth donation after having wealth, benevolence after having sovereignty, protecting religion being vigorous, interest in good deeds having knowledge are the natured signs of great men.

2331. **संपत्तीए णदवित्ती मद्दवं च, आपदे धीरिमो धम्मदढदा महापुरिस- लक्खणं।**

सम्पत्तिकाल में नम्रवृत्ति और मार्दव, आपदकाल में धैर्य और धर्मदृढ़ता महापुरुषों का लक्षण है।

Courtesy and softness in prosperity and patience and devoutness in adversity are signs of great men.

2332. **महापुरिसेण सह सामण्णजणा वि लहंते उक्कस्सं जहा जलबिंदू सिप्पीए मुत्ता।**

महापुरुष के साथ सामान्य जन भी उत्कर्ष प्राप्त करते हैं जैसे जलबिन्दु सीप के साथ मोती बन जाती है।

General people also progress with great man as a drop of water become pearl in the shell.

2333. आपदे वि सीहो जिण्णतिणं ण भक्खदि तहा महापुरिसो वि दीणभावं णो।

जैसे शेर आपदकाल में भी जीर्ण तृण नहीं खाता वैसे महापुरुष भी दीनभाव नहीं रखता।

As lion doesn't eat decayed straw even in adversity similarly great man doesn't show lowliness.

2334. जदि महापुरिसा दुट्ठ-संसग्गं कंखंति बक-मज्झे हंसोव्व गणंते ते।

यदि महापुरुष दुष्टपुरुषों के संसर्ग की वांछा करते हैं तो वे वकों के मध्य हंस की तरह गिने जाते हैं।

If great men want company of wicked people then they are counted like goose among stork.

2335. वत्थूणं पसिद्धिकारणं महापुरिसा।

वस्तुओं की प्रसिद्धि का कारण उसके धारक महापुरुष होते हैं।

Cause of glory of the things are great men.

2336. धण्णा भारदवसुंधरा महापुरिस-जम्मेण।

महापुरुषों के जन्म से ही भारत वसुंधरा धन्य है।

India became blessed from the birth of great men.

2337. पंके कमलं, सायरे रयणं आयारे वज्जं तहा सामण्णजणेसु महापुरिसो।

कीचड़ में कमल, सागर में रत्न और खान में हीरा जैसे होता है वैसे सामान्यजनों के मध्य महापुरुष।

As there is lotus in mud, gems in ocean, diamond in mine similarly great man among general people.

2338. तं णो उज्झदि जत्थ चलदि कयावि जहा उसह-संगं।

महापुरुष जिस मार्ग पर चलते हैं उसको कभी भी त्यागते नहीं है जैसे बैल के सींग।

When great man walk on a way, they never leave it like horns of bullock.

2339. महापुरिसा महापुरिसाणं वि आसयंति जहा सायरो रयणाणि।

महापुरुष महापुरुषों को भी शरण देते हैं जैसे सागर रत्नों को।

Great men shelter great men too like ocean to gems.

2340. महापुरिसाणं लहुकज्जं वि जेट्ठं।

महापुरुषों का लघु कार्य भी महान् होता है।

Even a small work of great men is also great.

2341. महापुरिसो सरद-सरोवरं व बहिसीयलो अंतरे उण्हो।

महापुरुष शरदकाल के सरोवर के समान बहिरंग से शीतल और अन्तरंग में ऊष्ण होते हैं।

Great men are cool from the outside and warm from the inside like a pond in autumn.

2342. भत्तीए तिप्पंति महापुरिसा ण धणेण।

भक्ति से महापुरुष संतुष्ट होते हैं न कि धन से।

Great men get satisfied by devotion not by money.

2343. अक्विंकदु-रुक्खोव्व उरालो महापुरिसो।

सूर्य, चन्द्र और वृक्ष के समान महापुरुष उदार होते हैं।

Great men are generous like sun, moon & trees.

2344. महापुरिसेहिं पदिट्ठिद-पासाणो वि देवो।

महापुरुषों द्वारा प्रतिष्ठापित पाषाण भी देवता है।

Stone is also God once consecrated by great men.

2345. **महापुरिसा किं गणंते खुद्दोव्व खुद्दवत्थुं।**

क्षुद्र पुरुषों की तरह से महापुरुष छोटी बातों को क्या गिनते हैं।

Do great man count small things like lowly people.

2346. **महागुण-संजुत्ता महापुरिसा।**

महापुरुष महान्गुणों से युक्त होते हैं।

Great men are endowed with great virtues.

2347. **महापुरिसस्स दिट्ठी वित्ती अच्चा चच्चा गुणा य महा।**

महापुरुष की दृष्टि, वृत्ति, अर्चना, चर्चा, गुण महान् होते हैं।

Views, tendency, adoration and virtues of great men are great.

2348. **महापुरिसो हु महापुरिसाणं आहारो आहेयो य।**

महापुरुष ही महापुरुषों का आधार और आधेय है।

Great men are the supporter and supported by great men.

2349. **सवर-पदिट्ठं चिंतंति महापुरिसा ण धणं भोयं च।**

महापुरुष स्वपर प्रतिष्ठा का चिंतन करते हैं न कि धन और भोग का।

Great man thinks over self and others dignity not over wealth and worldly pleasure.

2350. **सुकित्तिमज्जणत्थं संघसंति महापुरिसा।**

महापुरुष सुकीर्ति अर्जन के लिए संघर्ष करते हैं।

Great man struggle for getting reputation.

महाव्रत

2351. **सव्व-पाव-किरियादो भावादो वा णिवित्ती महव्वदं।**

सभी पाप क्रिया या भाव से निवृत्ति महाव्रत है।

Release from all sinful deeds and emotions is great vow.

मातृभूमि

2352. **मादुभूमी वि मादुव्व वंदणीया।**

मातृभूमि भी माता की तरह वंदनीय है।

Motherland is also venerable like mother.

2353. **सग्गादो वि वरा मादू मादुभूमी य।**

माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी उत्कृष्ट होती है।

Mother and motherland are superior than heaven.

मात्सर्य

2354. **मच्छर-भावेण पुण्णं खयदि।**

मात्सर्य भाव से पुण्य क्षीण होता है।

Merits diminishes by envy.

2355. **सुपहगामी ण कुव्वदि कया वि मच्छरं।**

सुपथ के गामी कभी भी मात्सर्य नहीं करते।

Right conducted person never envy.

2356. **सवण्णजादीसु मच्छरं।**

सवर्ण सजातियों में मात्सर्यभाव रहता है।

Envy remains in similar castes and classes.

मान

2357. **अद्धुवुवलद्धीए धुवोव्व पुट्ठी माणो।**

अध्रुव की उपलब्धि से ध्रुव के समान पुष्टि अहंकार या मान है।

Proving wrong attainments right is ego.

2358. **माणो हु पडण-हेदू।**

मान निश्चय से पतन का हेतु है।

Ego is the cause of downfall.

2359. **इट्ठलद्धीए माणो।**

इच्छित वस्तु की प्राप्ति से मान भाव जाग्रत होता है।

Egoism generates from getting desired things.

2360. **को ण पडदि माणी?**

ऐसा कौन अहंकारी है जो पतित नहीं होता।

Which egoistic person doesn't suffer from down-fall?

2361. **अप्पलद्धि-वसेण अहंकारो माणो।**

अल्पलब्धि को पाकर जो अहंकार होता है वह गर्व या मान है।

Ego on attaining a few things is arrogrance or pride.

2362. **विणयस्स मिच्चुकारणं णिरय-दुआरं वि माणो।**

मान विनय की मृत्यु का कारण है और नरकगति का द्वार भी।

Ego is the cause of death of humbleness and gates for hell too.

2363. **अकारणं चित्तुव्विग्गदा हु माणो।**

अकारण चित्त की उद्विग्नता ही मान है।

Non-casual anxiousness of the heart is ego.

2364. **जाचणा णो फलेदि तदा ण खेमं माणीणं।**

जब याचना फलान्वित नहीं होती है तब मानी को क्षेम नहीं होता।

When petition becomes fruitless then there is no happiness to arrogrant.

2365. **णाण-चक्खू आवरित्ता अंधोव्व करेदि माणो।**

मान ज्ञान चक्षुओं को ढककर अंधे के समान कर देता है।

Pride makes us like blinds by covering the eyes of knowledge.

2366. **माणहीणा सव्वप्पिया।**

मानहीन सर्वप्रिय होते हैं।

Courteous is dear to all.

2367. **कुत्थ सुहं माण-भंगेण?**

मान खण्डन से सुख कहाँ?

Where is pleasure in disgrace?

2368. **तिणव्व माणी।**

मानी तृण के समान होता है।

Egoist is like a straw.

माया

2369. **वंचणा कवड-भावो वा माया।**

वंचना या कपट भाव माया है।

Deception or swindling is perversion.

मायाचारी

2370. **णिअडी हु महावियदी।**

निकृति (मायाचारी) ही महाविकृति है।

Deceit is great perversion.

मार्ग

2371. **जहा मग्गो तहा लक्खो।**

जैसा मार्ग वैसा लक्ष्य।

As there is way, so there is aim.

2372. **सम्ममग्गेण विणा सम्मलक्खं असंभवो।**

सम्यक्मार्ग के बिना सम्यक्लक्ष्य असंभव है।

Right aim is impossible without right way.

2373. **कइवय-जणा लक्खं कंखंति ण मग्गं।**

कुछ लोग लक्ष्य चाहते हैं न कि मार्ग।

Some people want aim not way.

2374. **सिद्धत्तं जिण-सासण-मग्ग-लक्खं।**

जिनशासन के मार्ग का लक्ष्य सिद्धत्व है।

Aim of way of Jainism is accomplishment of reality.

2375. **मग्गे लक्खे य बीय-फल-संबंधो।**

मार्ग और लक्ष्य में बीज और फल का सम्बन्ध है।

Relation between way and aim is like seed and fruit.

मित्र

2376. **अमियठाणं भासदे अभिट्ठिअ-मित्त-लद्धीए।**

अभीष्ट मित्र के प्राप्त होने पर अमृत का स्थान प्रतिभासित होता है।

Getting a desired friend, appears like a place of nector.

2377. **जस्स कट्ठं हरदि सो तस्स मित्तं सस्सदं।**

जो जिसका कष्ट हरता है वही उसका शाश्वत मित्र है।

One who removes the others pain is his true friend.

2378. **दुहादो रक्खगो धम्म-मग्ग ठावगो सच्च-मित्तं।**

दु:खों से रक्षा करने वाला और धर्ममार्ग पर स्थापित करने वाला सच्चा मित्र है।

He who protects from pain and established the way of religion is a true friend.

2379. **मणोणुऊलं मित्तं कस्स ण वल्लहो?**

मनोनुकूल मित्र किसका प्यारा नहीं होता?

To whom desirous friend is not dear?

2380. **हत्था देहं, णिमेसा णेत्तं रक्खेज्ज तहा सहजेण मित्तं मित्तं।**

जैसे हाथ देह की, पलक आँख की रक्षा करती है वैसे ही मित्र-मित्र की सहज भाव से रक्षा करता है।

As hand protects body and eye lashes protects eyes similarly a friend protects friend naturally.

2381. **सुहे दुहे वच्छलं धरदि समेण सो हु मित्तं।**

सुख-दु:ख में जो समरूपता से वात्सल्य भाव धरता है वह ही मित्र कहा जाता है।

One who loves equally in joy & sorrow is called a friend.

2382. **सहजेण दोसं भणदि सो हु जहत्थं मित्तं।**

जो सहजभाव से दोष को कह दे वही यथार्थ मित्र है।

Who can say my faults to me spontaneously is a real friend.

2383. **मित्तुक्कस्सं पस्सिदूण णंददि सो जहत्थं मित्तं जहा अक्को-कमलं च।**

मित्र का उत्कर्ष देखकर जो प्रसन्न होता है वह यथार्थ मित्र है जैसे-सूर्य कमल की मित्रता।

One who becomes happy by seeing the progress of a friend is a real friend like the friendship of sun and lotus.

2384. **परमट्ठमित्तं परमट्ठबंधू।**

परमार्थ मित्र परमार्थ बंधु है।

Spiritual friend is a spiritual brother.

2385. मित्तं सुलहं तहा णो मित्ती।

जैसे मित्र सुलभ है वैसे मैत्री नहीं।

Benevolence is not easy like a friend.

2386. मित्तं वि पुत्तादो वरं जदि परमट्ठिअं।

मित्र भी पुत्र से श्रेष्ठ है यदि पारमार्थिक है।

Friend is also better than a son if he is virtuous.

2387. परमट्ठिअ-मित्त-दंसणं हु परमप्पदंसणव्व।

पारमार्थिक मित्र का दर्शन ही परमात्म दर्शन की तरह है।

Even a sight of virtuous friend is like a vision of supreme being.

2388. सज्जणाणं णो मित्त-अभावो।

सज्जनों के लिए मित्रों का अभाव नहीं है।

There is not lack of friends for virtuous person.

मिथ्यात्व

2389. मिच्छत्तं हु भव-जणगो।

मिथ्यात्व ही संसार का जनक है।

Falsehood is the father of transmigration.

2390. मिच्छत्तं अप्पस्स महासत्तू।

मिथ्यात्व आत्मा का महाशत्रु है।

Falsehood is the arch-enemy of soul.

2391. पावाणं मूल-कारणं मिच्छत्तं।

मिथ्यात्व पाप का मूल कारण है।

Misbelief is the main cause of sin.

2392. मिच्छत्त-दूसिदं चित्तं णो धम्मं सद्दहदि।

जिसका चित्त मिथ्यात्व से दूषित है वह धर्म में श्रद्धा नहीं रखता।

He has no faith in religion whose heart is corrupted with misbelief.

मिथ्यादृष्टि

2393. मिच्छाइट्ठी दीह-कालादो भमदि भवे।

मिथ्यादृष्टि संसार में दीर्घकाल तक भ्रमण करता है।

Misbeliever transmigrates in the world for a long time.

2394. मिच्छादिट्ठीए सह संभासणं णो करेज्ज महाणाणी।

महाज्ञानी को मिथ्यादृष्टि के साथ संभाषण नहीं करना चाहिए।

Learned shouldn't converse with misbeliever.

मुमुक्षु

2395. मुमुक्खू हु लहदि मोक्खं ण बुभुक्खू।

मुमुक्षु ही मोक्ष प्राप्त करता है बुभुक्षु नहीं।

Aspirant of liberation gets liberation not desirous of worldly pleasures.

2396. मुमुक्खू सव्वमुज्झदि मोक्ख-लद्धीए।

मुमुक्षु मोक्ष प्राप्ति के लिए सबको त्यागते हैं।

Aspirant of liberation gives up everything.

मूर्ख/मूढ़

2397. चंडं वेरं ण मुंचदि सो महामूढो।

जो चण्ड वैर को नहीं छोड़ता वह महामूर्ख होता है।

A person who doesn't leave violent enmity is foolish.

2398. जस्स णाणजोदी आवरिदा सो मूढप्पा बहि-अत्थेहिं तिप्पदि

जिसकी ज्ञान ज्योति ढकी हुई है वह मूढ़ात्मा बाह्य पदार्थों से संतुष्ट हो जाता है।

Whose knowledge's radiance is hidden that ignorant soul gets contented from outer substances.

2399. **सुहावसरेण चुक्कदि सो मूढो।**

जो शुभ अवसर से चूक जाता है वह मूर्ख माना जाता है।

A person who misses good opportunity is considered fool.

2400. **एग-पक्ख-णेहो मूढ-कज्जं।**

एक कोटि का प्रेम मूर्खों का ही काम है।

One side love is foolish's work.

2401. **अंधस्स दीवो बहिरस्स गीदं विथा तहा मूढाणं णीदि-सत्थं।**

जैसे अंधे के लिए दीपक और बधिर के लिए गीत व्यर्थ है वैसे ही मूर्खों के लिए नीतिशास्त्र व्यर्थ है।

Like lamp for blind and song for deaf is useless similarly ethics for the foolish.

2402. **णो जाणेदि सगविपत्तिं सम्पत्तिं वा सो मूढो।**

जो अपनी विपत्ति या सम्पत्ति को नहीं जानता वह मूढ़ है।

One who doesn't know their adversity and prosperity is foolish.

2403. **णो जाणदि हिदमहिदं सो मूढो।**

जो हित-अहित को नहीं जानते वह मूढ़ माने जाते हैं।

People who don't know beneficial and inimical are considered foolish.

2404. **णो वत्थुं इट्ठणिट्ठं मूढो तहा वि मण्णदे।**

वस्तु इष्ट अनिष्ट नहीं है फिर भी मूढ़ ऐसा मानते हैं।

Things are not desired or undersired still foolish considered it like that.

2405. **कहं पवट्टेज्ज मूढा सवरहिदमग्गे?**

स्वपर हित के मार्ग में मूर्ख कैसे प्रवृत्ति कर सकते हैं?

How can foolish move on the path of everyone's benevolence.

2406. **मूढेसु होदि विकिरिया अप्पसंपत्तीए विपत्तीए य।**

अल्पसम्पत्ति विपत्ति प्राप्त होने से मूढों में ही विक्रिया (विशेष क्रिया) पाई जाती है।

Peculiar behaviour is found only in foolish after getting little adversity and prosperity.

2407. **मूढो ण जाणदि अप्पसद्देहिं।**

अल्प शब्दों द्वारा मूर्ख जानने में समर्थ नहीं होता।

Foolish is not able to learn in little words.

2408. **मूढाणं दुव्ववहारेण णो खोभंति सज्जणा।**

मूर्खों के दुर्व्यवहार से सज्जन क्षोभ को प्राप्त नहीं होते।

Virtuous person doesn't get irritated from misbehaviour of foolish.

2409. **माण-कडुभासण-दुरग्गह-कलहपियदप्पपसंसादी मूढस्स लक्खणाणि।**

मान, कटु भाषण, दुराग्रह, कलहप्रियता, आत्मप्रशंसा आदि मूर्ख के लक्षण हैं।

Ego, speaking ill-words, perversity, quarrelsome, self praise etc. are the signs of foolish.

2410. **णिच्छये अइपवीणो वि ववहारे मूढो।**

जो निश्चय के क्षेत्र में अतिप्रवीण है वह व्यवहार के क्षेत्र में मूर्ख भी होता है।

Even proficient in reality can be a foolish in practical.

2411. **दुट्ठस्स ण को वि ओसही तिलोयम्मि।**

तीन लोक में भी दुष्ट या मूर्ख की कोई भी औषधि नहीं है।

There is no medicine for wicked or foolish anywhere in three worlds.

2412. **तावइओ णो हिंसग-पसू घादेदि जावइओ दुट्ठो मूढो वा।**

उतना तो हिंसक पशु भी घात नहीं करता जितना की दुष्ट या मूर्ख।

Even violent animals don't do as much harm as a wicked or foolish.

2413. **सप्पोव्व भासदे मूढस्स पुप्फहारो वि।**

मूर्ख के लिए पुष्पहार भी सर्प की तरह प्रतिभासित होता है।

Even garland appears like serpent for foolish.

2414. **णिप्पाण-देह-सिंगारोव्व मूढ-सेवा।**

प्राणविहीण देह के श्रृंगार के समान मूर्ख की सेवा है।

Adornment of corpse is similar to the service of foolish.

2415. **णिरत्थो वणे रुण्णं बहिरुवएसो अंध-दप्पणो तहा मूढसेवाफलं।**

वन में रोना, बधिर का उपदेश, अंधे का दर्पण निरर्थक होता है वैसे ही मूर्ख की सेवा का फल।

As weeping in the forest, preachings for deaf, mirror for blind is useless similar is the fruition of service of foolish.

2416. **मोणमूढो पंडिदोव्व।**

मौन मूर्ख पण्डित की तरह प्रतिभासित होता है।

Silent foolish appears like scholar.

2417. **बहिरप्पा हु मूढो।**

बहिरात्मा ही मूढ़ होता है।

The one living in outer-self is foolish.

मूर्च्छा

2418. **मुच्छा परदव्वेसु तिव्वासत्ती।**

पर द्रव्यों में तीव्र आसक्ति मूर्च्छा है।

Intense attachment to alien substances is infatuation.

2419. **अइमुच्छा मिच्छत्तकारणं।**

अति मूर्च्छा मिथ्यात्व का कारण है।

Infatuation is the cause of falsity.

मूलगुण

2420. **मूलगुणं विणा उत्तरगुणा ण चिट्ठंति।**

मूलगुणों के बिना उत्तरगुण ठहरते नहीं हैं।

Secondary duties don't settle without primary virtues.

मृत्यु

2421. **दव्व-पाण-विजोग-किरिया मिच्चू।**

द्रव्य प्राण के वियोग की क्रिया मृत्यु है।

Activity of seperation of material vitalities is death.

2422. **जम्मदि सो हु लहदि मिच्चुं।**

जो जन्म लेता है वह नियम से मृत्यु को प्राप्त होता है।

The one who takes birth, his death is sure.

2423. **आसण्णमिच्चू जस्स तस्स पयडी परिअट्टदि।**

जिसकी आसन्न मृत्यु होती है उसकी प्रकृति बदल जाती है।

Whose death is near, his nature becomes change.

2424. **वज्जाघादेण वि ण मरदि मिच्चुं विणा।**

मृत्यु के बिना कोई भी वज्र के आघात से भी नहीं मरते हैं।

No one dies even from the injury of thunderbolt without death.

2425. **अमियं वि विसोव्व मिच्चुयाले।**

मृत्युकाल में अमृत भी विषवत् लगता है।

Even nectar seems like poison at the time of death.

2426. **रयणत्तय-जुत्तो णो बीहदि मिच्चुणा।**

रत्नत्रय से सम्पन्न मृत्यु से नहीं डरता है।

One who is endowed with the three gems (right faith, right knowledge, rigth conduct) doesn't fear from death.

2427. **को ण डरदि मिच्चूदो?**

संसार में कौन प्राणी है जो मृत्यु से नहीं डरता?

Which living being doesn't fear from death?

2428. **मिच्चुं विणा जम्मो असंभवो।**

मृत्यु के बिना जन्म असंभव है।

Birth is impossible without death.

2429. **भवे णो जम्मदि सो मिच्चू दुल्लहो।**

जिस मृत्यु से संसार में जन्म न हो वह दुर्लभ है।

Death from which there is no rebirth is very difficult.

2430. **पावं वि मिच्चू मण्णंते पण्णा।**

प्रज्ञपुरुष पाप को भी मृत्यु मानते हैं।

Learned people consider even sin as death.

2431. **णिप्पावदेहणासो वरं मरणं।**

पाप से रहित देह का नष्ट होना श्रेष्ठ मरण है।

Destruction of sinless body is the best death.

2432. **कालागदे हु मिच्चू।**

काल के आने पर मृत्यु निश्चित है।

When end moment of the life comes, then death is definite.

2433. **पज्जाय-परिवट्टणं हु मिच्चू।**

पर्याय परिवर्तन ही मृत्यु है।

Change of mode is death.

2434. **णो जम्मो सासयो णो जरा रोया मरणं।**

न जन्म शाश्वत है और न जरा, रोग और मरण।

Neither birth is immortal nor old age, disease & death.

2435. **जम्मेण णंददि सो मिच्चुणा परितप्पदि।**

जो जन्म से आनन्दित होता है वह मृत्यु से दु:खी होता है।

One who is happy from birth, is sad from death.

2436. **मिच्चुणा देहं णस्सदि णो अप्पा।**

मृत्यु से देह नष्ट होती है न कि आत्मा।

Body is destroyed by death not soul.

मृदु

2437. **चित्तं पडिसादि मिदुभावेण।**

मृदुभाव से चित्त शान्त होता है।

Peace of heart is possible with soft feelings.

2438. **मिदु-भावेण सव्वकज्जं सिज्झदि।**

मृदुभाव से सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

All works are accomplishible by softness.

2439. **सगाणुसासणे मिदू सक्को।**

मृदुजन ही स्वानुशासन करने के लिए समर्थ हैं।

Only soft people are able to control themselves.

मेघ

2440. **रुक्खियरो पाणो मेहो।**

बादल वृक्षों के इतर प्राण हैं।

Clouds are the life givers of trees.

2441. **मेहो हु ण सव्वसुहकारणं जहा पहाणपुरिसो।**

मेघ ही सर्वसुख का कारण नहीं होता जैसे प्रधान पुरुष।

Only clouds are not the cause of all pleasures like prime man.

2442. **मेहो अकारणेण हु अक्कसंताविद-देहीणं तावं हरदि अग्गिदाहं समदि य।**

मेघ अकारण ही सूर्य से संतापित जीवों का आताप हरता है और अग्निदाह को शमन करता है।

Clouds unreasonably take away the heat of the organisms burning up from the sun and cool down the burn.

2443. **सहावेण मेहा धवला, जलसंचयेण हु किण्हवण्णस्स होंति जहा किपण-धणी।**

स्वभाव से मेघ धवल ही होते हैं लेकिन जलसंचय से ही कृष्णवर्ण के हो जाते हैं जैसे कृपण धनी लोग।

Clouds are naturally white but become black after collecting water like miser rich.

2444. **मेहो परतावं हरिदुं सव्वं उज्झदि तह ण को वि।**

परताप को हरने के लिए जैसे मेघ सर्वस्व छोड़ देते हैं वैसे कोई भी समर्थ नहीं है।

Like clouds give up everything for destroying others heat, no one is capable of this.

2445. **मेहोरालत्त-फलं सायरजलं।**

सागर का जल मेघ की उदारता का ही फल है।

Water of the ocean is the fruition of generosity of clouds.

2446. **मेहोव्व कामरूवो ण अण्णो।**

मेघ के समान कामरूप अन्य कोई भी नहीं है।

There is nothing more lusty than clouds.

2447. **सव्व-णंद-कारणं मेहो।**

मेघ सबके आनंद का कारण है।

Clouds are the cause of everyone's joy.

2448. **विणा मेहेण हरिद-वसुहा णो संभवो।**

बिना मेघ के हरी-भरी धरती संभव नहीं है।

Greenery is not possible without clouds.

2449. **मेहो हु पाणाहारो।**

मेघ ही प्राणाधार हैं।

Clouds are the base of life.

2450. **संपुण्णजीविगा मेहेण हु संभवो।**

मेघ से ही सम्पूर्ण जीविका संभव है।

Whole livelihood is possible only from clouds.

2451. **णो किसी वाणिज्जं उज्जोगो विज्जा कला य विणा सुहवसरमेहेण।**

शुभावसर के मेघ के बिना कृषि, वाणिज्य, उद्योग, विद्या और कला नहीं होते।

Agriculture, trade, industry, knowledge and art is impossible without rain of good opportunity.

2452. **मेहवस्सं विणा को चिरं जीविदुं समत्थो?**

मेघवर्षण के बिना दीर्घ काल तक कौन जीवित रह सकता है?

Who can live long without rainfall?

2453. **अइमेहवस्सा हु पलय-कारणं।**

अतिमेघवर्षा ही प्रलय का कारण है।

Excessive rain is the cause of catastrophe.

2454. **वरिसंति सुहवसरमेहा सुब्भिक्खं हि तत्थ।**

जहाँ शुभावसर के मेघ बरसते हैं वहाँ सुभिक्ष निश्चय से है।

Where there rains of opportunity there is well-being surely.

2455. **मेहं विणा णो ओया तेओ णाणं सुहं संती य।**

ओज, तेज, ज्ञान, सुख, शान्ति आदि मेघ के बिना असंभव है।

Brilliance, energy, knowledge, pleasure, tranquility etc are impossible without clouds.

मैत्री

2456. **परेसु दुहाणाकंखा मित्ती।**

दूसरों के प्रति दु:खों की अनाकांक्षा मैत्री है।

Not desiring pain for others is benevolence.

2457. **सव्व-जीवाणं सुहहिलासा मित्ती।**

सर्वजीवों के सुख की अभिलाषा मैत्री भावना है।

Desire of bliss for all living beings is benevolence.

2458. **मित्ति-आइ-भावणा अप्पसुह-कारणं।**

मैत्री आदि भावना आत्मसुख का कारण है।

Feeling of benevolence etc. are the cause of our own pleasure.

2459. **तिरिओ वि धरेदि मित्तिं सगबंधूसुं णरस्स का कहा?**

तिर्यंच भी स्वबन्धुवर्ग में मैत्री को धारण करते हैं तो मनुष्य की क्या कथा?

Animals keep friendliness in their friends then what can be said for the people.

2460. **मित्ती वि सग-सत्तूणं सगाणं भयंकरा।**

स्वशत्रुओं की मैत्री भी स्वजनों के लिए भयंकर होती है।

Friendship with our enemies is also terrible for our people.

2461. **मित्ती मे सहजा पयडी ण दुब्बलियं।**

मैत्री मेरी सहज प्रकृति है न कि दुर्बलता।

Benevolence is my nature not weakness.

2462. **सव्वसत्तेसु मित्तिं होज्ज सज्जणाण।**

सज्जनों की सभी प्राणियों के प्रति मैत्री भावना होनी चाहिए।

Virtuous person should be benevolent to everyone.

मोक्ष

2463. **सव्वकम्मविहीणप्प-दसा मोक्खो।**

सभी कर्म से विहीन आत्मदशा मोक्ष है।

State of soul devoid of karmas is salvation.

2464. **मुत्ती सुद्धप्प-सहयरी।**

मुक्ति शुद्धात्मा की सहचरी है।

Liberation is the companion of pure soul.

2465. **णागणियं खु मोक्खमग्गो सा सेट्ठा दसा लोए।**

नग्नता ही मोक्षमार्ग है वही दशा लोक में श्रेष्ठ है।

Nakedness (Digamber state) is the path of liberation and that state is the best in the world.

2466. **मोक्ख-मग्गे फद्दो फद्दे य मोक्खमग्गो णो चलदि।**

मोक्षमार्ग में स्पर्धा का भाव और स्पर्धा के भाव में मोक्षमार्ग नहीं चलता।

There are no feelings of competition on the path of liberation and there is no path of liberation in the feelings of competition.

2467. **णो मेत्तं भग्गेण जीवा लहंति मोक्खं।**

केवल होनहार के बल से ही जीव मोक्ष नहीं प्राप्त करता।

Living being doesn't get salvation by only destiny.

2468. **सम्म-रयणत्तयेण विणा ण इयरो मोक्खमग्गो।**

सम्यक्रत्नत्रय के बिना कोई दूसरा मोक्षमार्ग नहीं होता।

There is no other path of liberation without three jems (right faith, right knowledge & right conduct).

2469. **सम्मत्तणाण-वदाणि हु मोक्खमग्गो।**

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-व्रत ही मोक्षमार्ग है।

Right faith, right knowledge & right conduct is the path of liberation.

2470. **पुव्वबंधदुहं लहेदि सम्मजदणेण सो मोक्खं वि।**

जो पूर्वबन्ध के दु:ख को प्राप्त करता है वह सम्यक् यत्न से मोक्ष भी प्राप्त करता है।

One who gets pain from previous bondage karmas, also gets emancipation from right efforts.

2471. **धम्मट्ठ-काम-चागेण मोक्खो।**

व्यवहारिक धर्म, अर्थ व काम त्याग से मोक्ष संभव है।

Liberation is possible by giving up religious merit, wealth & desires.

2472. **उक्किट्ठ-संजमो सुद्धप्पणुभूदी वा मोक्ख-जणणी।**

मोक्ष की जननी उत्कृष्ट संयम या शुद्धात्मानुभूति है।

Supreme self restraint or pure realisation of soul is the mother of emancipation.

2473. **सव्व-विअप्पा उज्झेदुं असमत्थो णो लहदि मोक्खं।**

जो सभी विकल्पों को त्यागने के लिए असमर्थ है वह मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता।

He who is unable to sacrifice all abstractions can not get liberation.

2474. **मोक्खो सगप्पपदेसे।**

स्वात्मप्रदेश में मोक्ष रहता है।

Emancipation exists in our own soul.

2475. **मोक्खो मोह-खयेण विणा असंभवो।**

मोह के क्षय के बिना मोक्ष असंभव है।

Salvation is impossible without erradicating affection.

2476. **सव्वकम्मरहिदवत्था मोक्खो सिद्धत्तं वा।**

सर्वकर्मरहितावस्था मोक्ष है या सिद्धत्व है।

State, free from all karmas, is liberation or infinite perfection.

2477. **आसण्ण-भव्वाणं मोक्खो णो असंभवो णो य दुल्लहो।**

आसन्न भव्यों का मोक्ष न असंभव है और न दुर्लभ।

Emancipation of adjacent accomplishables is

neither difficult nor impossible.

2478. **संपुण्ण-णाणाइ-गुणाणं वित्तिकरणं मोक्खो।**

सम्पूर्ण ज्ञानादि गुणों का वृत्तिकरण मोक्ष है।

Collection of all knowledge etc. attributes is liberation.

2479. **णो खयदि मोक्खे चेयणाए एगो वि सहाविअ-गुणो।**

मोक्षावस्था में चेतना का एक भी स्वाभाविक गुण नष्ट नहीं होता।

No natural attributes of conscience get destroyed in state of liberation.

2480. **संपुण्ण-वेभाविय-गुणहीणवत्था हु मोक्खो।**

सम्पूर्ण वैभाविक गुणहीन अवस्था मोक्ष है।

State free from all unreal attributes is salvation.

मोह/मोही

2481. **मोहोव्व सत्तू णो को वि।**

मोह के समान कोई शत्रु नहीं है।

There is no enemy like affection.

2482. **परट्ठेसु सग-सत्ता मण्णदे मोहो।**

मोह पर पदार्थों में स्व अस्तित्व मानता है।

Considering self existence in alien-substances is infatuation.

2483. **मोहं खयिय अप्पसिद्धिं लहेज्ज।**

मोहभाव को नष्ट कर आत्मसिद्धि को प्राप्त करना चाहिए।

By destroying infatuation one should achieve self attainment

2484. **दुग्गमा मोह-संतती।**

मोह की संतति दुर्गम है।

It is very difficult to know chain of infatuation.

2485. **अहो मोहादो जीवो पडदि भवकूवे।**

अहो! मोह के महात्म्य से जीव भवकूप में पड़ता है।

Oh! greatness of infatuation by which worldly soul falls in well of world.

2486. **मोहो दुज्जयो पाविट्ठाणं।**

पापियों का मोह दुर्जय है।

Infatuation of sinners is very difficult to conquer.

2487. **मोहो हरदि णाणा-सम्मगुणा।**

ज्ञानादि सम्यग्गुणों को मोह हर लेता है।

Infatuation seizes virtues like knowledge etc.

2488. **मोहादो जीवो मण्णदि दुक्खकारणं सुहस्स।**

मोह के वश में जीव दुःख के कारण को सुख का कारण मानता है।

Living being assumes the cause of pleasure to be cause of sorrow under the spell of infatuation.

2489. **मोहणीय-कम्मक्खयेण भव्वा लहंति खइय-सम्मत्तं।**

मोहनीय कर्म क्षय से जीव क्षायिक सम्यक्त्व को प्राप्त करते हैं।

After destroying charm functional (feeling of infatuation) living being attains kshayik samyaktva (True perception achieved by the destruction of darsan moha)

2490. **सवर-घादी धम्म-विरोही य मोही।**

मोही स्वपर घाती और धर्म विरोधी है।

Infatuated is irreligious and harmful to self and others.

2491. जदि छिंदमिच्छसि छिंदेज्ज मोहं भिंदं वंछसि भिंदेज्ज अण्णाणं।

यदि तुम छेदना चाहते हो तो मोह को छेदो यदि तुम भेदना चाहते हो तो अज्ञान को भेदो।

If you want to cut off something then cut off infatuation and if you want to knock down something then knock down ignorance.

2492. एगंते ठाणे ण कयावि वसदि मोही।

मोही कभी भी एकान्त स्थान पर रहने में समर्थ नहीं होते।

Infatuated are never able to live at quiet place.

2493. मोहो सगलक्खादो चुद-कारणं।

मोह स्वलक्ष्य से च्युत होने का कारण है।

Infatuation is the cause of straying from one's aim.

2494. सवर-कल्लाणस्स पहाणबाहगो मोहो।

स्वपर कल्याण का प्रधान बाधक मोह है।

Infatuation is the prime obstructor of self and other's welfare.

2495. कणगोव्व विसयरंजगो हु मोही।

धतूरे के समान विषयों में रंजायमान ही मोही जीव है।

The one who enjoys worldly pleasures like the fruits of harebell is an infatuation soul.

2496. अचिंता हु मोहमहिमा।

मोह की महिमा अचिंत्य है।

Power of infatuation is unimaginable.

मौन

2497. मोणं हिदंकरं मूढ-संगदीए।

मूर्खों का सान्निध्य प्राप्त होने पर मौन ही हितकारक है।

Silence is beneficial after getting the company of foolish people.

2498. मोणं सदा पालेज्ज सगट्ठ-सिद्धीए।

अपने प्रयोजन की सिद्धि के लिए मौन ही सदा पालना चाहिए।

One should remain silent for attaining one's purpose.

2499. मोणं सव्वत्थाणं सिद्धीए सहायं।

मौन सर्वप्रयोजनों की सिद्धि में सहायक है।

Silence is helpful in achieving all purposes.

2500. केवलणाणं वि पारंपरेण मोणफलं।

परम्परा से केवलज्ञान भी मौन का फल है।

Omniscience is also the fruition of silence.

2501. मोणं गुणदंसगं दोसाच्छादग-मावरणं च

मौन गुण दर्शायक और दोष को ढकने वाला आवरण है।

Silence is the cover of faults and highlighter of virtues.

2502. वरं मोणं ण मोसं।

मौन रहना श्रेष्ठ है न कि झूठ बोलना।

Keeping silent is better than lieing.

2503. मोणं कलह-विणासगं।

मौन कलह का विनाशक है।

Silence is the destroyer of strife.

2504. **णाणाइ-गुण-वड्ढगं मोणं।**

मौन ज्ञानादि गुणों का वर्धक है।

Silence increases virtues like knowledge etc.

2505. **मोणं महाणाणीण लक्खणं।**

मौन महाज्ञानी का लक्षण है।

Silence is a sign of learned.

2506. **अंतर-विहव-दंसण-कारणं मोणं।**

आभ्यन्तर वैभव के दर्शन का कारण मौन है।

Silence is the cause of realisation of inner wealth.

2507. **अंतरमुहि-चेयणा-लक्खणं मोणं।**

मौन अन्तर्मुखी चेतना का लक्षण है।

Silence is a sign of introverted consciousness.

2508. **मोणं वि पहुपत्थणंगं।**

मौन भी प्रभु प्रार्थना का अंग है।

Silence is also a part of God's prayer.

2509. **मोणं हु पुज्ज-सम्मुहे।**

पूज्य पुरुषों के सम्मुख मौन रहना चाहिए।

One should keep silence in front of venerable men.

2510. **संतचित्तस्स मोणं धम्मज्झाणं।**

शान्त चित्त का मौन धर्मध्यान है।

Silence of peaceful heart is righteous concentration.

2511. **तिजोग-गहीदं मोणं सुक्कज्झाण-कारणं।**

त्रियोग से गृहीत मौन शुक्लध्यान का कारण है।

Silence by three yogas (body, speech & mind) is the cause of shukla concentration.

2512. **घाइकम्म-रहिदा णो वदंति कया वि।**

घाती कर्म से रहित, मुख से कभी नहीं बोलते हैं।

Destroyer of destructive karmas, never speak from mouth.

2513. **मोणेण अप्पसत्ती वड्ढदि।**

मौन से आत्मशक्ति बढ़ती है।

Will power increases by silence.

2514. **मोणादो वरो ण को वि उवएसो।**

मौन से श्रेष्ठ कोई भी उपदेश नहीं है।

There is no sermon better than silence.

2515. **संपुण्ण-णाणी परमप्पा मोणं सया।**

सम्पूर्ण ज्ञानी परमात्मा मौन ही रखते हैं।

Omniscient God remain silent.

2516. **कसायुव्वेगे वि मोणं किंचि सुहंकरं।**

कषाय के उद्वेग में भी मौन कुछ सुखकर होता है।

Silence is little beneficent even in flame of passions.

2517. **वायालदा लहुमुद्दा मोणं जेट्ठा जहा सिक्का रुवगाणि य।**

वाचालता लघु मुद्रा है मौन उससे बड़ी जैसे सिक्का और रुपये।

Garrulousness is a small wealth and silence is bigger like coin and rupees.

यत्न

2518. **अकालस्य जदणं ण फलेदि।**

अकाल में किया यत्न फल नहीं देता।

Efforts done at improper time doesn't give fruition.

2519. सगजदण-फलं लहिच्चा णवुच्छाहो जायदे।

स्वयं के यत्न का फल प्राप्त कर नवोत्साह मिलता है।

Fruition of our own efforts gives us enthusiasm.

2520. कज्जाणि हु सिज्झंति जो सुजदणेण करेदि।

जो सम्यक् यत्नपूर्वक कार्य करते हैं उन्हें नियम से कार्य में सिद्धि प्राप्त होती है।

Who works with right efforts, they surely get fulfillment of work.

2521. केवलं संती एगमग्गो जदि जदणेण णो सिद्धी।

यदि यत्न से सिद्धि प्राप्त न हो तो शान्ति ही एक मात्र मार्ग है।

If there is no achievement by efforts then peace is the one & only way.

2522. सगजदणेण हु जीवो बंधदि मुंचदि य।

स्वयत्न से ही जीव बंधता है और मुक्त होता है।

Soul gets bonded or liberated by own efforts.

2523. जदणं विणा णो कज्जं सिज्झदि।

यत्न के बिना कार्य सिद्ध नहीं होता।

Work doesn't get completed without efforts.

2524. सम्मजदणेण संसारस्स पत्तेगं कज्जं संभवो।

सम्यग्यत्न से संसार के प्रत्येक कार्य संभव हैं।

Every work is possible by right efforts.

यश

2525. कस्स ण सुह-कारणं णिम्मलो जसो?

निर्मल यश किसके सुख का कारण नहीं है?

For whom glory is not a cause of pleasure?

2526. जाव चंदक्का ताव णिम्मलो जसो।

निर्मलयश तब तक जीता है जब तक चन्द्र सूर्य।

Glory remains as long as sun and moon.

2527. सज्जणा णिम्मल-जसं अज्जेज्ज सया।

सज्जनों को निर्मल यश सदा अर्जित करना चाहिए।

Virtuous people should earn true glory.

2528. णिम्मलजसो सया विज्जदे लोए णो धण-संपदा।

निर्मल यश लोक में सदा विद्यमान रहता है धन-सम्पदा नहीं।

Glory always exists in the world not wealth.

2529. सुकज्जेण विणा को वि जसं लहिदुं ण समत्थो।

सुकार्य के बिना कोई भी यश प्राप्त करने में समर्थ नहीं होता।

No one is able to achieve glory without good deeds.

2530. धण्णा सुद्धचित्त-णिम्मलजसधारगा संता।

शुद्धचित्त और निर्मल यश धारक संत धन्य हैं।

Pure hearted and glorious saints are blessed.

2531. सुजसरूव-देवं णासिदुं मिच्चू वि ण समत्थो।

सुयश रूपी देह को नष्ट करने में मृत्यु भी समर्थ नहीं है।

Even death is unable to destroy the body of glory.

2532. जसो हु पाणो मण्णदे महप्पा।

महात्मा यश को भी प्राण मानते हैं।

Great men assume fame as life.

2533. जसघादो पाणा-हरणव्व पावं।

यश का घात प्राण हरण के समान पाप है।

Sin of destroying fame is like killing.

2534. **सज्जणेण जसजुदकज्जं करणीयं।**

सज्जनों के द्वारा यश युक्त कार्य करना चाहिए।

Glorious work should be done by virtuous people.

2535. **मज्जादा-पालणाय जसं अज्जेज्ज।**

मर्यादा के पालन के लिए यश अर्जन करना चाहिए।

Glory should be earned for protecting customs.

2536. **सुजसो कुत्थ धम्महीणस्स जहा गय-संगं।**

धर्महीन के सुयश कहाँ? जैसे हाथी के सींग।

Where is glory for irreligious? as horns of elephant.

याचक

2537. **तिणादो वि लहू जाचगो।**

याचक तृण से भी लघु होता है।

Petitioner is even smaller than a straw.

2538. **जायणया हु अहिसावो माणवजादीए।**

याचना ही मानव जाति के लिए अभिशाप है।

Petition is curse upon humans.

2539. **कण्णाजायणयं मंगलं मण्णंते के वि।**

कुछ लोग कन्या याचना को मंगल मानते हैं।

Some people consider petition for girls, auspicious.

2540. **धणजाचणा णो मंगलं कया वि।**

धन याचना कभी भी मंगल नहीं है।

Begging for money is never auspicious.

2541. **लहुचित्तवित्ती जायगेसु।**

याचकों में लघुचित्त वृत्ति रहती है।

Small hearted tendency is found in petitioner.

2542. **जायगभावेण णो चित्तसुद्धी।**

याचक भाव से चित्त की विशुद्धि संभव नहीं है।

Purity of heart is not possible with the feelings of petition.

2543. **जायणयावित्ती साहिमाणं णस्सदि।**

याचनावृत्ति स्वाभिमान को नष्ट कर देती है।

Tendency of petition destroys self respect.

2544. **सया णीया जायगवित्ती जहा मेहस्स।**

याचक की वृत्ति सर्वदा नीचे रहती है जैसे मेघ।

Tendency of petitionner always remains below like clouds.

2545. **तेजहीणो किण्णवण्णो य जायगो।**

याचक तेजहीन और कृष्णवर्ण का होता है।

Beggar is dull and dark.

2546. **ण को वि वत्थुं लोए जं णो कंखदि जायगो।**

लोक में ऐसी कोई वस्तु नहीं है जिसको याचक नहीं चाहता।

There is nothing in the world which petitioner doesn't want.

योग

2547. **जोगो मणवयण-काय-कम्माणि।**

मन-वचन-काय के कर्म योग हैं।

Vibratory activities of mind, speech & body is yoga.

2548. **रयणत्तयजुद-जोगो मोक्खुवायो।**

मोक्ष का उपाय सम्यक् रत्नत्रय से युक्त योग ही है।

Yoga endowed with right gems is the means of salvation.

2549. **जोगो पहाणो धम्मेसुं झाणसिद्धीए मणोणिग्गहे वि।**

योग धर्म, ध्यान की सिद्धि और मनोनिग्रह में भी प्रधान है।

Yoga is chief in religion, meditation and in restraint also.

2550. **धम्मज्झाणस्स अवरणाम-जोगो।**

योग धर्मध्यान का अपरनाम है।

Yoga is also another name for righteous concentration.

2551. **णाणफलं धीमाणाणं जोगस्स सुपवित्ती ण धण-संचयो।**

बुद्धिमानों की विद्या का फल योग की सम्यक् प्रवृत्ति है न कि धन संचय।

Fruition of knowledge of wise people is the right tendency of yoga not collecting money.

2552. **जोगत्तयस्स सहज-सरल-वित्ती विसुद्धी।**

योगत्रय की सहज सरल वृत्ति ही विशुद्धि कहलाती है।

Natural and simple tendency of three yogas (mind, speech & body) is called purity.

योगी

2553. **जोगीहिं उज्झणीया लोगिगजण-संगदी।**

योगी के द्वारा लौकिकजनों की संगति का परित्याग करना चाहिए।

Company of worldly people should be given up by an ascetic.

2554. **अप्पा अप्पम्मि रज्जदे सो जोगी।**

जो आत्मा को आत्मा में लीन करता है वह योगी है।

A person who engrosses soul in soul is called a meditator.

2555. **जाइ सव्वंगे दोसा जोगीहिं चागणीया इत्थी।**

जिनके सभी अंगों में दोष रहता है वे स्त्रियाँ योगियों के द्वारा त्याज्य हैं।

Ladies whose every part is faulty or sinful should be given up by an ascetic.

2556. **भोगादो विरज्जंतो सगदेहादो वि णिप्पिहो जोगी।**

योगी भोगों से विरक्त होते हुए निज देह से भी विरक्त रहता है।

While being detached from worldly pleasures one who also remains detached from own body is called an ascetic.

2557. **सिसुव्व सहजदाइ-गुणा जोगीसुं वि होज्ज।**

शिशुओं के समान सहजता आदि गुण योगियों में भी होने चाहिए।

As simplicity etc. virtues exist in children, ascetics should be endowed with the same.

2558. **ण रत्तो सहजुवलद्ध-विसयेसु किंतु विरत्तो सो महाजोगी।**

सहजोपलब्ध विषयभोगों में जो रत नहीं है अपितु विरत है वही महायोगी है।

One who is not engrossed in easily attained worldly pleasures and is detached from them is a great ascetic.

2559. लद्धमुक्किट्ठ भोगवत्थुं उज्झदि विरत्तीए सो महाजोगी।

प्राप्त हुई उत्कृष्ट विषयभोग वस्तु को जो विरतभाव से त्यागता है वही महायोगी है।

While being detached one who renounces supreme worldly pleasures is a great ascetic.

2560. जस्स चित्तं संजमजुदं सो जोगी।

जिसका चित्त संयम से युक्त होता है वह योगी है।

Whose heart is endowed with self restraint is an ascetic.

2561. असुहजोग-णिवत्तगो जोगी।

योगी अशुभ योग का निवर्तक होता है।

Ascetic is detached from inauspicious yogas (vibratory activity).

2562. जोगी जोग-साहगो।

योगी योग साधक होता है।

Ascetic is yoga restraint.

योद्धा

2563. बेसत्तू जोहस्स पमादो किलंतदा य।

प्रत्येक योद्धा के प्रमाद और क्लान्तता ये दो शत्रु होते हैं।

Every warrior has two enemies-laziness and tiredness.

2564. बेमित्ताणि जोहस्स सुसमो सतक्कदा य।

प्रत्येक योद्धा के दो मित्र भी होते हैं जिसमें प्रथम है-सम्यक् परिश्रम और द्वितीय सतर्कता।

Every warrior also has two friends diligence and alertness.

यौवन

2565. खणधंसी जोव्वणं।

यौवन क्षणध्वंसी है।

Youth is ephemeral.

2566. जोव्वण-भारेण विवेगहीणो पराजिदो होदि।

यौवन के भार से विवेकहीन पराजित हो जाते हैं।

Indiscriminate gets defeated by youth.

2567. जिण्ण-सिण्ण-जरा तारुण्णं हरदि तदा पुरिसो णो समत्थो णिज्जरं करेदुं।

जीर्ण शीर्ण जरा जब यौवन को हर लेता है तब वह पुरुष निर्जरा करने में समर्थ नहीं होता।

When old age destructs penance & youth then that man is not able to shed karmas.

2568. विणस्सदि जोव्वणं पुप्फकंतिव्व खिप्पं।

तरुणावस्था पुष्पकान्ति की तरह शीघ्र ही विलीन हो जाती है।

Youth gets destroyed as quickly as brightness of flowers.

2569. जरा-गसिदं जोव्वणं।

यौवन जरा से ग्रसित होता है।

Youth is influenced by old age.

2570. जीवणं जोव्वणं धणं च णस्सरं।

जीवन, यौवन और धन नश्वर है।

Life, youth and money is transitory.

2571. थिरजीवण-जोव्वण-धणं जस्स पुण्णपुरिसो।

जीवन, यौवन और धन जिसका स्थिर होता है वह पुण्यपुरुष है।

Whose life, youth and wealth is stable is a meritorious man.

2572. सया जोवणजुत्ता धणिगा।

धनिक सदा यौवनयुक्त माने जाते हैं।

Rich are always considered young.

रक्षा/संरक्षण

2573. जो जस्स रक्खं वंछदि सो तं कया वि ण हणदि।

जो जिसकी रक्षा करना चाहता है वो उसका कदापि हनन नहीं करता।

He never harms which he wants to protect.

2574. विणा रुक्ख-रक्खं को वि रुक्खो फलिदुं ण समत्थो।

वृक्ष के संरक्षण के बिना कोई भी वृक्ष फल देने में समर्थ नहीं है।

No tree is able to give fruits without its protection.

2575. धणेण तणं रक्खेज्ज, तण-मोहं उज्झिय मज्जादं य धम्म-रक्खेदुं सव्वं।

धन देकर तन की रक्षा करनी चाहिए, तन का मोह त्यागकर मर्यादा का रक्षण करना चाहिए और सब त्यागकर धर्म की रक्षा करनी चाहिए।

Body should be protected by giving up money, customs by giving up infatuation but everything should be given up to protect religion.

2576. जदणेण रुक्खं संरक्खेज्ज ण जीवणं तेण विणा।

वृक्षों के बिना जीवों का जीवन असंभव है इसलिए यत्न से वृक्षों की रक्षा करना चाहिए।

Life of living beings is impossible without trees so trees should be protected.

2577. पत्तेगं णागरियो देसरक्खाए सव्व-समप्पेज्ज जहा दाणवीरो भामासाहो।

प्रत्येक नागरिक को अपने देश की रक्षा में सर्व समर्पण करना चाहिए जैसे दानवीर भामाशाह।

Every citizen should devote everything for the protection of his country like Danveer Bhamashah.

2578. जो सगदेस-रक्खणे ण समप्पिदो सो ण देसभत्तो।

जो अपने देश के रक्षण में समर्पित नहीं है वह देशभक्त नहीं है।

Who is not devoted for the protection of his country, is not a patriot.

2579. मूल-रक्खाए फल-रक्खा।

मूल की रक्षा से फल की रक्षा होती है।

Fruit gets protected by protection of root.

2580. पुण्ण-रुक्ख-रक्खणं मूलेण संभवो।

मूल के रक्षण से पूर्ण वृक्ष का रक्षण संभव है।

Protection of whole tree is possible by protection of its root.

रत्न

2581. सरे णो जादे रयण-समूहो।

रत्नों का समूह तालाब में उत्पन्न नहीं होता।

Cache of jewels does not evolve in a pond.

2582. जत्थ कमलाणि जंते तत्थ णो रयणाणि।

जिसमें कमल उत्पन्न होते हैं उसमें रत्न प्राप्त नहीं होते हैं।

Where lotus is there jewels do not occur.

2583. बहुमुल्ल-रयण-पत्तीए विसेसो णंददि।

बहुमूल्य रत्न राशि मिलने पर विशेष आनन्द होता है।

After getting precious jewels, special pleasure generates.

2584. दिव्व-रयणाणि सया दिव्व-पुरिसा हु पप्पोंति।

दिव्य रत्नों को सदा दिव्य पुरुष ही प्राप्त करते हैं।

Divine gems are always obtained by divine people.

2585. लहिच्चा चिन्तामणि-रयणं को वंछदि सीसं?

चिन्तामणि रत्न को प्राप्त कर काँच को कौन चाहता है?

Who wants a mirror after getting the 'chintamani' stone?

2586. सीसं विणा णो रयणाण सम्ममुल्लं।

काँचखण्ड के बिना रत्नों का सम्यक् मूल्य नहीं होता।

There cannot be right value of jewels without glass piece.

2587. रयणं व वरं वि रयणं।

जो रत्न के समान श्रेष्ठ होता है वह भी रत्न माना जाता है।

One who is most eminent like gems is also considered a gem.

2588. सुवण्णे हु सायरुप्पण्ण-रयण-सोहा।

समुद्र में उत्पन्न होने वाले रत्नों की शोभा सुवर्ण के मध्य ही दिखती है।

Beauty of gems obtained from ocean looks good in gold.

2589. रयणाणि बहुगुणजुत्ता तत्तो रयणपुण्णा हु वसुंधरा।

बहुगुणयुक्त लोग ही रत्न कहे जाते हैं इसलिए वसुंधरा रत्नपूर्णा ही है।

Virtuous people are called gems, therefore earth is filled with gems.

2590. बहुरयणजुत्ता हु वसुंधरा।

वसुंधरा रत्नयुक्त ही है।

Earth is endowed with gems.

2591. णाणी दाणी तवसी भत्तो वीरो धीरो उवयारगो संतो कला-संपण्णो य वसुंधराए रयणाणि।

ज्ञानी, दानी, तपसी, भक्त, वीर, धीर, उपकारक, संत, कलासम्पन्न मनुष्य आदि वसुंधरा के रत्न हैं।

Learned, donator, penancer, devotee, vigorous, patient, saint and skilled people etc. are gems of the earth.

2592. णो रयणाणि परं णरा ढुंढुल्लंति रयणाणि।

रत्न किसी को नहीं ढूंढते किन्तु लोग रत्नों को खोजते हैं।

Gems doesn't look for anyone but people look for gems.

2593. रयणं सोहदे सुवण्णे णो लोहम्मि।

रत्न सुवर्ण के बीच शोभित होता है न कि लोहे के मध्य।

Gems get adorned among gold not among iron.

2594. रयणं व णरो हु कंखदि गुण-रयणाणि।

जो नर रत्न के समान होते हैं वे ही गुण रत्न चाहते हैं।

Men who are like gems want gem-like virtues.

रत्नत्रय

2595. रयणत्तयं हु महोसही जीवाणं।

रत्नत्रय ही जीवों की महाऔषधि है।

Triple gems (right faith, right knowledge & right conduct) is the greatest medicine for living beings.

2596. **रयणत्तयं महातित्थं।**

रत्नत्रय महातीर्थ है।

Three gems are great pilgrimage.

2597. **सव्वुक्किट्ठ-रयणत्तय-दाणं हु वरो।**

रत्नत्रय ही सर्वोत्कृष्ट है उसका दान ही वरदान है।

Donating supreme triple gems is a boon.

2598. **धिय लोगेसणं जदा रयणत्तयधारगो वि सगजसं कित्तिं वा वंछदि।**

जब रत्नत्रयधारक भी स्वयश या कीर्ति चाहता है तो धिक्कार है ऐसी लोकेषणा को।

When saint endowed with triple gems wants glory then curse on this desire of world.

2599. **रयणत्तयं परमप्पसिद्धीए परम-रसायणं।**

सम्यक्त्वादि तीन रत्न परमात्मसिद्धि के लिए परम रसायन हैं।

Triple gems like right faith etc. are supreme gems for getting liberation.

2600. **सम्मदंसण-णाण-चरित्ताणि रयणत्तयं।**

सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र रत्नत्रय है।

Right faith, knowledge & conduct are the triple gems.

रम्य

2601. **रम्म-वत्थुं णो हरदि कस्स चित्तं?**

रम्य वस्तु किसका चित्त नहीं हरति?

Whose heart is not stolen by well pleasing things?

2602. **अइरम्मं वत्थुं वि णो सव्वाणं अइरम्मं।**

अति सुन्दर वस्तु भी सभी को अतिसुन्दर नहीं लगती।

Even a very beautiful thing doesn't look beautiful to everyone.

रसना

2603. **रसणा वि विणासस्स विगासस्स य कारणं।**

रसना भी विनाश का और विकास का कारण है।

Tongue is also the cause of destruction & developement.

2604. **विस-अमियाहारो रसणा।**

विष और अमृत का आधार रसना है।

Tongue is the base of poison & nector.

राग

2605. **परत्थेसु रदी रागो।**

पर पदार्थों में रतिभाव का होना राग है।

Attachment to alien-substances is 'Raga'.

2606. **रागरंजिद-चित्तं दूभदि।**

राग से रंजित चित्त दु:खी होता है।

Affectionate hearted become sad.

2607. **राय-परिचागो अइदुल्लहो लोए।**

राग का परित्याग करना लोक में दुर्लभ है।

It is difficult to give up affection in the world.

2608. **रायो रायस्स कारणं।**

राग राग का कारण है।

Love is the cause of love.

2609. **जीवा रायवसेण हु पवट्टंति संसारे।**

सभी जीव रागवश ही संसार में प्रवर्तन करते हैं।

All living beings transmigrate because of attachment.

2610. **रायो हि सेय-कारणं मण्णदे रायंधो।**

राग ही कल्याण का कारण है ऐसा रागांध सर्वदा मानते हैं।

Attachment is the cause of welfare, as considered by people blin attachment.

2611. **देहग्गी कयाचि णो पज्जालेज्ज चित्त-रायग्गी ण मुंचदि कयावि।**

देह में विद्यमान अग्नि कदाचित् न जलाए, चित्त में विद्यमान राग रूपी अग्नि कभी भी जलाए बिना नहीं छोड़ती।

Fire existing in the body may not burn but fire of attachment existing in the heart doesn't leave without burning.

2612. **रायंधो हु महंधो।**

राग में अंधा ही महाअंध है।

Blind in affection is the greatest blind.

2613. **दरिद्दो वि रायं ण उज्झदि।**

यदि व्यक्ति राग में दरिद्र भी हो जाये तो भी नहीं छोड़ता।

Even if a person becomes wretched in attachment then also he doesn't leave it.

2614. **णो बीहदि सग-णिंदाए सो दुग्गदिं लहेदि।**

जो अपनी निंदा से नहीं डरता है वह रागी दुर्गति को प्राप्त करता है।

One who doesn't fear his censure that affectionate gets abjection.

2615. **रायो हु संसारो।**

राग ही संसार है।

Attachment is world.

राग-द्वेष

2616. **राय-दोसो कम्म-बंधण-पच्चया।**

रागद्वेष कर्म बंधन के प्रत्यय हैं।

Love & malice are cause of binding karmas

2617. **राय-दोसं णियमेण दुक्ख-हेदू।**

रागद्वेष नियम से दु:ख का हेतु है।

Love & malice are surely the cause of sorrow.

2618. **विणा राय-दोसेण ण को वि समत्थो कम्म-बंधणे।**

बिना राग द्वेष के कोई भी कर्मों को बांधने में समर्थ नहीं है।

No one is able to bind karmas without attachment and malice.

2619. **को कस्स बंधू सत्तू वा जदि चित्ते ण विज्जदे राय-दोसो।**

यदि चित्त में राग और द्वेष नहीं रहता है तो कौन किसका बंधु या शत्रु है।

If there is no love and malice in the heart then who is whose friend or foe.

2620. **अप्प-राय-दोसो वि वियडि-कारणं।**

अल्प राग-द्वेष भी विकृति का कारण है।

Even a little attachment and malice is a cause of deformity.

राजधर्म

2621. **रायधम्मो माणवधम्मादो वरो।**

राजधर्म मानवधर्म से श्रेष्ठ होता है।

Royal duty is better than human law.

2622. **जत्थ रायधम्मो विणस्सदि तत्थ पलयो संभवो।**

जहा राजधर्म लुप्त हो जाता है वहाँ प्रलय संभव है।

Where royal duties gets destroyed, catastrophe is possible.

2623. **रायधम्मो विणस्सदि तत्थ सव्वधम्मो वि।**

जहाँ राजधर्म नष्ट हो जाता है वहाँ सर्वधर्म लुप्त हो जाते हैं।

Where royal duties gets destroyed all duties also vanishe.

2624. **रायधम्मो हु महाधम्मो जदि राया जाणदि तं।**

राजधर्म ही महाधर्म है यदि राजा उसको जानता है।

Royal duty is the highest religion if king knows it.

राजा

2625. **णायप्पिओ पयावच्छलो महाविक्कमी णीदिकुसलो धम्मसीलो, लोए पुज्जो राया।**

न्यायप्रिय, प्रजावत्सल, महाविक्रमी, नीतिकुशल, धर्मशील, लोक में पूज्य ऐसा राजा होता है।

A person who is righteous, affectionate towards his subject, valiant, politic, virtuous, venerable in the world is the king.

2626. **सामणीदि-पहाणो कुसलो राया।**

कुशल राजा सामनीति प्रधान होता है।

Chief of incantation is a skilful king.

2627. **दाम-णीदि-पहाणो मज्झमो राया।**

दामनीति प्रधान मध्यम राजा होता है।

Chief of bribery is an average king.

2628. **दंडणीदि-पहाणो जहण्णो राया।**

दण्डनीति प्रधान जघन्य राजा होता है।

Chief of threat is a low king.

2629. **भेयणीदि-पहाणो अहमो राया।**

भेदनीति प्रधान अधम राजा होता है।

Chief of discrimination is an inferior king.

2630. **सेट्ठ-रायस्स छब्बलं णायो सगपरक्कमो समप्पिदा पया, सिक्खिद-वाहिणी सवर-हिदेसि-मंतिमंडलं, धम्मे विस्सासो य।**

श्रेष्ठ राजा के 6 बल होते हैं-न्याय, स्वपराक्रम, समर्पित प्रजा, शिक्षित सेना, स्वपर हितैषी मंत्रीमण्डल और धर्म के प्रति विश्वास।

There are six strengths of the greatest king-just, self vigour, devoted subjects, literate army, benevolent cabinet and belief towards religion.

2631. **रज्जासत्तो राया पयाघादगो अप्पघादगो य।**

राज्य में आसक्त राजा प्रजा का घातक तथा स्वघातक होता है।

The king who is indulged in his kingdom is destructor of self and others.

2632. **सेट्ठ-रायाणं पालेज्ज सव्वदा।**

श्रेष्ठ राजा की आज्ञा का सर्वदा पालन करना चाहिए।

One should always obey the most eminent king.

2633. **दंडो वि रायणो रायणीदीए वा अभिण्णंगो।**

दण्ड भी राजा का या राजनीति का अभिन्न अंग माना जाता है।

Punishment is also assumed to be an unseparated part of king of politics.

2634. **विणा दंडणीदीए को वि सासगो णायं करेदुं असमत्थो।**

बिना दण्डनीति के कोई भी शासक न्याय करने में असमर्थ होता है।

Any ruler is unable to act justly without harsh policy.

2635. **राया अवरद्धगो तत्थ पजा कहं सुही?**

जहाँ राजा अपराधी होता है वहाँ प्रजा सुखी कैसे हो सकती है?

How can subjects be joyful where the king is guilty?

2636. **जत्थ राया अवरद्धगं णो दंडदि तत्थ खेमो कुत्थ?**

जहाँ राजा अपराधी को दण्ड नहीं दे उस क्षेत्र में कुशलता कहाँ हो सकती है?

How well being can be there where king doesn't punish the guilty?

2637. **मज्जादा-मूलं राया।**

राजा मर्यादा का मूल होता है।

King is the root of customs.

2638. **राया वि णडोव्व कयाचि।**

कभी-कभी राजा भी नट की तरह होता है।

Sometimes king is also liked a acrobat.

2639. **महासायरोव्व गंभीरो राया सव्वासयो य।**

महासागर के समान राजा गंभीर और सबको शरण देने वाला होता है।

King should be serious like an ocean and a shelter for everyone.

2640. **सेट्ठ-रायस्स पया समा।**

श्रेष्ठ राजा के लिए प्रजा समान होती है।

Everyone is equal for the most eminent king.

2641. **पयाए राया ण मेत्तं रज्जविहवेण।**

प्रजा द्वारा मानने से राजा है न कि मात्र राज्यवैभव से।

King is king because of acceptance by subjects not only by royal majesty.

2642. **सग-पयाए हिअये वसदि सो सेट्ठ-राया।**

जो अपनी प्रजा के हृदय में रहता है वह ही श्रेष्ठ शासक है।

One who lives in the heart of one's subject is best ruler.

2643. **सायरोव्व गंभीरो राया होज्ज ण सरिदव्व चंचलो।**

राजा सागरवत् गंभीर होना चाहिए न कि नदी की तरह चंचल।

King should be earnest like a sea not fickle like a river.

2644. **पासाण-रेहव्व रायाणा जदि सा सव्व-हिदंकरा।**

पत्थर की रेखा के समान राजा की आज्ञा होती है यदि वह सर्वहितकारी है।

Royal verdict is like a line on stone if it is benevolent for all.

2645. **रायचित्ते रहस्सं जाणिदुं को समत्थो?**

राजा के चित्त में विद्यमान रहस्य को जानने के लिए कौन समर्थ है?

Who is able to know the mystery which exists in the heart of the king?

2646. **रायेण णिदिट्ठा णीदी रायणीदी।**

राजा द्वारा निर्दिष्ट नीति ही राजनीति है।

Policy indicated by king is called politics.

2647. **रट्ठपदी हु राया वट्टमाणे।**

वर्तमानकाल में राष्ट्रपति ही राजा माना जाता है।

President is considered a king in present.

2648. **भिण्णो राय-सहावो जणादो।**

शासक का स्वभाव सामान्य नर के स्वभाव से भिन्न होता है।

Nature of ruler is different from the nature of ordinary people.

2649. **जणचिंतणादो राय-चिंतणं वरं।**

शासक का चिंतन जनसामान्य के चिंतन की अपेक्षा उत्कृष्ट है।

Thoughts of ruler are better than those of ordinary people.

2650. **बुद्धि-धीरिम खमा-उरालिम-सत्ति-आइ-गुणविहीण-राया वि सामण्णोव्व।**

बुद्धि, धैर्य, क्षमा, उदारता, शक्ति आदि गुण विहीन राजा भी सामान्य मनुष्य के समान है।

King who is devoid of intelligence, patience, forgiveness, strength and other virtues is like a ordinary person.

2651. **मिदू कढोरो णारिएलं व राया।**

नारियल के समान शासक सदा मृदु और कठोर होता है।

Ruler like a coconut is both soft and hard.

2652. **सवरं वंचदि णडोव्व राया।**

जो राजा नट की तरह हैं वे स्वपर को ठगते हैं।

King like dupes himself and others like juggler.

2653. **राया विदियो पहू लोए।**

लोक में राजा को दूसरा प्रभु माना जाता है।

King is assumed to be another lord in the universe.

2654. **पाण-भंगे वि ण अइवयदि मज्जादं सो लोकपुज्जो राया।**

प्राणभंग होने पर भी जो मर्यादा भंग नहीं करता वह लोकपूज्य राजा होता है।

One who doesn't cross limits even at the time of death is a widely respected king.

2655. **दुट्ठ-णिग्गहो सिट्ठ-पालणं च रायस्स महाधम्मो।**

दुष्टों का निग्रह और शिष्टों का पालन राजा का महाधर्म है।

Subduing wicked people and protecting cultivated people is the highest religion of the king.

2656. **असमत्थ-रायप्पिय-धम्माणिट्ठाण होज्ज राया सहाई।**

जो असमर्थ राजप्रिय और धर्मनिष्ठ होते हैं राजा को उनका सहायक होना चाहिए।

King should be protector of those who are incapable and devout.

2657. **सगधम्मं पालेदि राया तदा पया वि।**

यदि राजा स्वधर्म का पालन करता है तब प्रजा भी।

If king performs his duties then subjects too.

2658. **दीण-कायर-सत्थत्थहीण-इत्थीसु य णो सारदि बलिट्ठो सूरो राया।**

बलिष्ट और शूरवीर राजा दीन, कायर, अस्त्र-शस्त्र से विहीन और स्त्रियों पर प्रहार नहीं करते।

Strong & vigorous king doesn't stike on women and the people who are wretched, coward & devoid of weapons.

2659. **णियासिदं णिंदंति ते ण पसंसणीया राया गुरूवा।**

जो शासक या गुरुजन निजाश्रितों की निंदा करते हैं वे प्रशंसनीय नहीं होते।

Ruler and preceptors who censure sheltered people are not praise-worthy.

2660. **आयंस-रायस्स सत्तलक्खाणि-धम्मरक्खा, पयापालणं, देससमिद्धी, उक्किट्ठभोया, गंभीरं, खमा, सोरिअं च।**

आदर्श राजा के सात लक्षण हैं-धर्मरक्षण, प्रजापालन, देश की समृद्धि, उत्कृष्टभोग, गंभीरता, क्षमा और शूरता।

There are seven characteristics of an ideal king-protection of religion and subjects, prosperity

of country, supreme pleasure, seriousness, forgiveness and vigour.

2661. **चंदक्क-सायरोव्व राया संतो परक्कमी गंभीरो य होज्ज।**

चंद्र, सूर्य और सागर के समान राजा को शान्त, पराक्रमी और गंभीर होना चाहिए।

King should be peaceful vigorous and serious like moon, sun and ocean respectively.

2662. **कुसलो राया हु खेमंकरो णो मूढो दुट्ठो अइभोयी य।**

कुशल राजा ही क्षेमंकर होता है न कि जड़बुद्धि, दुष्ट और अतिभोगी।

Skilful king is the cause of happiness not foolish, wicked and indulgent.

2663. **गुणी माणेदि सेट्ठ-राया ण माणि-कोहण-दुट्ठा।**

श्रेष्ठ राजा गुणीजनों का सम्मान करता है न कि मानी, क्रोधी और दुष्टों का।

Eminent king respects virtuous people not egoistic and wicked.

2664. **गुणि-णिंदग-राया णिंदणीयो।**

गुणीजनों का निंदक राजा ही निंदनीय है।

King who censures virtuous people is reprehensible.

2665. **पया-खेमे सगकुसलं मण्णदे राया।**

राजा प्रजा की क्षेम कुशलता में ही अपना हित मानता है।

King considers his prosperity in the well being of his subjects.

2666. **जहा पदीहीणा इत्थी तहा रायहीणा पया।**

जैसे पतिहीन स्त्री है वैसे ही राजा से रहित प्रजा।

Like a wife without husband, subjects without king.

2667. **रायविहीण-खेत्ते कुत्थ इत्थी धणं च?**

शासकहीन क्षेत्र में कहाँ स्त्री और कहाँ धन?

Where is lady and wealth in an area without king.

2668. **रायहीणं रट्ठं मिदोव्व।**

राजा से हीन राष्ट्र मृत के समान है।

Nation without king is like dead.

2669. **पया-सेवगो राया दुल्लहो।**

प्रजा-सेवक राजा दुर्लभ है।

Subject-serving king is rare to find.

राज्य

2670. **तिणग्ग-बिंदुव्व णस्सरं रज्जं।**

तृण के अग्र भाग के बिन्दु के समान राज्य नश्वर होता है।

Kingdom is transitory like the foremost point of a straw.

रात्रि भोजन

2671. **रत्ति-भोयणं मंसाहारोव्व दोसकरं।**

रात्रि भोजन माँसभक्षण के समान दोषकर है।

Taking meal at night is sinful like eating flesh.

2672. **सज्जणो रत्ति-भोयण-मुज्झेज्ज।**

सज्जन को रात्रि भोजन का त्याग कर देना चाहिए।

Virtuous people should give up eating food at night.

2673. **रत्ति-भोयण-चागी सया अहिंसं पालदि।**

जो रात्रि भोजन त्रियोग से छोड़ते हैं वे सदा अहिंसा को पालते हैं।

People who gives up taking food at night by three yogas, they always believe in non-violence.

2674. **उववासं कुव्वदि अद्धजीवणं रत्ति-भोयण-चागी।**

जो रात्रि भोजन को त्यागते हैं वह आधा जीवन उपवास करते हैं।

He who gives up taking meal at night, keeps fast half of his life.

रासायनिक पदार्थ

2675. **रसायणियत्थेसु णाणा-विह-सत्ती विज्जंति।**

रासायनिक पदार्थों में नानाप्रकार की शक्ति विद्यमान है।

Many kinds of power exists in the chemicals.

2676. **पंचमयाले रसायणियत्थाणं पुण्ण-सत्तिं जाणिदुं ण को वि समत्थो।**

आज इस पंचमकाल में रासायनिक पदार्थों की पूर्णशक्ति को जानने में कोई भी समर्थ नहीं है।

In this fifth period no one is capable of knowing the complete power of chemicals.

रूप

2677. **सरूवादो रूवो णो महाणो।**

रूप स्वरूप से महान् नहीं होता है।

Beauty is not greater than nature.

2678. **सरीरस्स सुंदराकिदी रूवो।**

शरीर की सुन्दर आकृति रूप है।

Beautiful appearance of body is beauty.

2679. **रूवे चित्त-लीणदा संसार-कारणं।**

रूप में चित्त की लीनता संसार का कारण है।

Absorption of heart in beauty is cause of the world.

रोग

2680. **अपत्थ-चागेण विणा रोयो ण णस्सदि कयावि।**

अपथ्य का त्याग किये बिना रोग कदापि नष्ट नहीं होता।

Without giving up indigestibles, diseases are never cured.

2681. **सोगाकुलो रोयजुत्तो य अइभोयी।**

अतिभोगी शोकाकुल होता है और नियम से रोगयुक्त भी।

Voluptuous person is surely distressed and diseased too.

2682. **रोयं सुहेण णस्सेज्ज आरंभे।**

आरंभकाल में रोग को सुखपूर्वक नष्ट किया जा सकता है।

Disease can be cured easily in the starting.

2683. **बहिरंग-रोयस्स बहिरंगुवयारो ओसही वा विसिट्ठा।**

बहिरंग रोग का बहिरंग उपचार या औषधि विशिष्ट होती है।

External treatment or medicine is distinctive for external diseases.

2684. **अंतरंगरोये अंतरंगुवयारो ओसही विसिट्ठा।**

अंतरंग रोग होने पर अंतरंग उपचार या औषधि विशिष्ट होती है।

If suffering from internal disease, internal treatment or medicine is distinctive.

2685. **मणोवियडी हु सव्व-रोय-कारणं।**

मनोविकृति ही समस्त रोग का कारण है।

Mental derangement is the cause of all disease.

2686. **भोयणस्स असंजमो सव्व-रोग-कारणं।**

भोजन का असंयम सभी रोगों का कारण है।

Non-restraint of food is the cause of all diseases.

2687. **पयडि-विरुद्धाहार-भोयी सुहं संतिं लहिदुं णो समत्थो।**

प्रकृति विरुद्ध आहार जो करता है वह सुख शान्ति प्राप्त करने में समर्थ नहीं होता।

One who takes nature-opposed food can not get tranquility.

2688. **अभक्ख-भुंजणं महारोयस्स दुक्खस्स च कारणं।**

अभक्ष्य भक्षण महारोग और दु:ख का कारण है।

Taking non-eatable is the cause of disease and sorrow.

2689. **भोय-लीणदा रोग-कारणं।**

भोग में लीनता रोग का कारण है।

Absorbedness in worldly pleasures is the cause of disease.

रोगी

2690. **रोयि-चित्तं ण रज्जदि धम्मखेत्ते।**

रोगी नर का चित्त धर्म क्षेत्र में लीन नहीं रहता।

Heart of ailing doesn't remain engrossed in religion.

2691. **जम्म-जरा-मिच्चुवाणो वि महारोयी।**

जन्म-जरा-मृत्युवान् ही महारोगी है।

One who takes birth, become old and dead is ailing.

लक्षण

2692. **बहु-अत्थेसु एगं-भिण्ण-कारग-हेदू लक्खणं।**

बहुत पदार्थों में से एक को भिन्न कराने वाले हेतु को लक्षण कहते हैं।

A cause by which a substance can be differentiated from many substances is called a symptom.

2693. **पत्तेगं वत्थुम्मि उभयाणि लक्खणाणि गुणो अवगुणो य।**

प्रत्येक वस्तु में उभय लक्षण होते हैं गुण और अवगुण।

Every substance has both symptoms virtues & vices.

2694. **लक्खणेण वत्थु-परिचयो जहा दयादि-लक्खणेण महापुरिसा।**

किसी भी वस्तु का परिचय लक्षण से होता है जैसे महापुरुष दयादि लक्षण से जाने जाते हैं।

Anything is known by its symptom like mercy etc are considered the symptom of a great man.

2695. **सामण्णदो पत्तेय-वत्थुम्मि अणादभूदादभूदाणि बे-लक्खणाणि।**

सामान्यत: प्रत्येक वस्तु में दो लक्षण होते हैं प्रथम आत्मभूत और द्वितीय अनात्मभूत।

Generally, there are two symptoms in everything inseperable and seperable differentia.

2696. **वत्थूदो अभिण्णविणाभावी लक्खणं आदभूदं जहा अग्गिणो उण्हत्तं।**

जो लक्षण वस्तु से अभिन्न या अविनाभावी रूप होता है वह आत्मभूत लक्षण है जैसे अग्नि का लक्षण ऊष्णता।

Symptoms which are inseparable charasteristics of a thing are inseparable differentia like symptom of fire is heat.

2697. **वत्थूदो भिण्णं लक्खणं अणादभूदं लक्खणं जहा दंडि-पुरिसस्स दंडं।**

जो लक्षण वस्तु से भिन्न होने में समर्थ है वह लक्षण अनात्मभूत लक्षण है जैसे दण्डीपुरुष का लक्षण दण्ड।

Symptoms which can be seperated from the things are seperable differentia like symptom of macbearer is mace.

लक्ष्मी

2698. **जल-बुब्बुदोव्व जोव्वणं लच्छी य।**

यौवन और लक्ष्मी जल के बुदबुदे के समान हैं।

Youth and wealth are like bubble of water.

2699. **ख-चवलव्व लच्छी।**

आकाश में चमकने वाली बिजली के समान लक्ष्मी होती है।

Wealth is like a flash of lightening in the sky.

2700. **जुवदीए कडक्खोव्व चंचला लच्छी।**

लक्ष्मी युवति के कटाक्ष के समान चंचल है।

Wealth is as fickle as the glance of a woman.

2701. **सरिदा कल्लोलोव्व चंचला लच्छी।**

लक्ष्मी नदी की जलतरंग के समान चंचल है।

Wealth is transient like wave of a river.

2702. **कागच्छि-गोलगोव्व चंचला लच्छी।**

लक्ष्मी कौअे के आँख के गोलक के समान चंचल है।

Wealth is inconstant like the eye-ball of a crow.

2703. **पुण्णवंताणं अलसाणं वि सेवया लच्छी।**

लक्ष्मी पुण्यवानों और आलसियों की भी सेविका होती है।

Wealth is a servant of meritorious and lazy people also.

2704. **पुण्णेण विणा लच्छि-रक्खाए को समत्थो?**

पुण्य के बिना लक्ष्मी की रक्षा करने में कौन समर्थ है?

Who is able to protect wealth without merits?

2705. **सव्वलच्छीसु अइसेट्ठा मोक्खलच्छी।**

मोक्ष लक्ष्मी सर्वलक्ष्मियों में अतिश्रेष्ठ है।

Wealth of emancipation is the most eminent in all wealth.

2706. **गणिगव्व लच्छी सुहदा किंतु णो सस्सद-सहाई, कुलंगणव्व सुहदा सरस्सदी ण छड्डुदि अणेगभवेसु वि।**

लक्ष्मी गण अंगना की तरह सुखद तो होती है परन्तु शाश्वत सहायिका नहीं अपितु सरस्वती कुल अंगना की तरह सुखद भी होती है और अनेक भवों में भी नहीं छोड़ती।

Wealth is cause of happiness like prostitute but not immortal helper although knowledge is cause of happiness like wife and doesn't leave in many birth too.

लक्ष्य

2707. **विचित्तो विस्सरदि सगलक्खं।**

जो मानव विचित्र होता है वह अपने लक्ष्य को भूल जाता है।

Man who is unusal, forgets his own aim.

2708. **ण लहदि णिय-लक्खं णिट्ठाए परिस्समेण रहिदो।**

जो निष्ठा और परिश्रम से रहित होता है वह निज लक्ष्य को प्राप्त नहीं करता।

One who is not devoted and laborious he never achieves his aim.

लघु

2709. **जदि णीरयं लहु-गेड्ढे जादो तह वि पंके णो लिंपदि।**

यदि कमल छोटे से गड्ढे में भी उत्पन्न हो जाए तब भी कीचड़ से लिप्त नहीं होता।

Even if lotus blossoms in a small pit then also it doesn't get covered by mud.

2710. **णो मिदिगा लहु-आयर-रयणाणि।**

लघु खान में विद्यमान रत्न मिट्टी नहीं होता।

Jewel which exist in small mines doesn't become soil.

2711. **लहू लहूणरा णो आसयंति वि जहा सुक्क-सरिदा दद्दुरं।**

लघु पुरुष लघुपुरुषों को भी शरण देने में समर्थ नहीं होते जैसे शुष्क सरिता मेंढक को।

Lower man is unable to give shelter to lower men like dried river to a frog.

2712. **महापुरिसो महापुरिसा वि आलंबंति जहा सायरो रयणाणि।**

महापुरुष महापुरुषों को भी शरण देते हैं जैसे सागर रत्नों को।

Great man gives shelter to great men like ocean to gems.

2713. **सायरे थूल-मगरा अवगाहंति किंतु लहुगड्डुम्मि ससगा वि णो।**

सागर में विशालकाय मगर अवगाहन करते हैं किन्तु छोटे गड्ढों में खरगोश भी तैरने में समर्थ नहीं होते।

Crocodile of huge body dive in the ocean but even rabbits are not able to swim in small holes.

लेश्या

2714. **तिव्व-कोहो अइ-संकिलिट्ठ-परिणामो किण्ह-लेस्सा।**

तीव्र क्रोध युक्त अति संक्लिष्ट परिणाम कृष्ण लेश्या है।

Highly malevolent mode endowed with high rage is black complex.

2715. **कसायभावेहिं धम्मभाव-हाणी णील-लेस्सा।**

कषाय भावों से धर्मभाव की हानि नील लेश्या है।

Loss of religious feelings from passionate feelings is blue complex.

2716. **कसाय-मंदुदयेणं पीद-लेस्सा।**

कषायों के मन्द उदय से पीत लेश्या होती है।

Mild rise of passion is yellow complex.

2717. **सवर-हिदे समत्थ-परिणामो पउम-लेस्सा।**

स्वपर हित में समर्थ परिणाम पद्म लेश्या है।

Feelings which are able to do good to self and others is red complex.

2718. **कसाय-अइमंदुदयेणं उप्पण्णो धवल-परिणामो सुक्क-लेस्सा।**

कषायों के अतिमन्दोदय से उत्पन्न धवल परिणाम शुक्ल लेश्या है।

Feelings generated everymild rise of passion is white complex.

2719. **पंचमयाले बहु-जीवा असुहलेस्सासुहपरिणाम-पावभावजुत्ता य।**

पंचमकाल में बहुत से जीव अशुभलेश्या, अशुभपरिणाम और पापभाव युक्त होते हैं।

Many worldly beings are endowed with inauspiciuos complexion, inauspicious feelings and sins.

लोकतन्त्र

2720. **लोगतंते मयं अइमुक्खं।**

लोकतन्त्र में मत अतिमहत्वपूर्ण माना जाता है।

Opinion is considered very important in democracy.

लोभ

2721. **लोहो गुण-णासगग्गी।**

लोभ गुण विनाशक अग्नि है।

Greed is a virtue destroying fire.

2722. **लोह-रज्जू अइदढा।**

लोभ की रस्सी अति दृढ़ है।

String of greed is firm.

2723. **लोह-बीयं अइ-सुहुमं।**

लोभ का बीज अतिसूक्ष्म है।

Seed of greediness is subtle.

2724. **किं अणत्थो ण होदि लोहेण?**

लोभ से क्या अनर्थ नहीं होता?

What harm doesn't happen from greed.

2725. **लोहेण पुप्फे अच्छंतो भमरो वि अण्णत्तं गच्छदि, धिय लोहं एरिसं।**

यदि पुष्प पर बैठा भंवरा भी लोभ से अन्यत्र जाना चाहता है तो धिक्कार है ऐसे लोभ को।

If a large black bee on flower wants to go else where by greed then curse on that greed.

2726. **लोही सगकल्लाणं करेदुं ण समत्थो।**

लोभग्रस्त व्यक्ति अपना कल्याण करने में समर्थ नहीं है।

Greedy is unable to do his welfare.

2727. **दुह-संगहकरा लोहबुद्धी।**

लोभबुद्धि सदा ही दु:ख का संग्रह करने वाली है।

Greedy mind always collects pain.

लोभी

2728. **कुत्थ लोहिणो सुई?**

लोभी की पवित्रता कहाँ?

Where is holiness in greedy?

2729. **सायरो बहुसरिदा-आसयो तहा लोही अवगुण-पिंडो।**

जैसे सागर बहुत सी नदियों का आश्रय होता है वैसे ही लोभी अवगुणों का पिण्ड होता है।

As sea is shelter of many rivers similarly greedy

is the lump of vices.

2730. **णो एरिसं पावं लोए जं णो लोही करेज्ज।**

संसार में ऐसा कोई पाप नहीं है जिसको लोभी करने के लिए समर्थ नहीं है।

No sin is there in the world which cannot be done by greedy.

2731. **लोहीणं अत्थो अणत्थमूलं।**

लोभियों का अर्थ अनर्थ का मूल है।

Wealth of greed is the root of harm.

वंदना

2732. **एग-तित्थयरं पडि थुदी णमोक्कारो वा वंदणा।**

एक तीर्थंकर के प्रति स्तुति या नमस्कार वंदना है।

Prasing or bowing to a Teerthankar is Vandana.

2733. **णिग्गंथ-वंदणा कम्मक्खय-कारणं।**

निर्ग्रन्थों की वंदना कर्मक्षय का कारण है।

Devotion to digamber saints is the cause of destruction of karmas.

2734. **जिण-वंदणव्व ण पुण्णं भूवीढे।**

जिनवंदना के तुल्य इस भूतल पर कोई पुण्य नहीं है।

There is no merit on earth like worship of God.

वक्ता

2735. **पमाणिद-वत्ताणं सिक्खा पमाणिदा।**

वक्ता प्रमाणित होने से उसकी शिक्षा प्रमाणित होती है।

Education gets authentic by authentic orator.

2736. **वत्ता-वयणं उत्तेजगक्कामग-दीणं ण होज्ज।**

वक्ता के वचन उत्तेजक, आक्रामक और दीनता युक्त नहीं होने चाहिए।

Words of an eloquent person shouldn't be stimulative, aggressive and dejected.

वचन

2737. **परपीडाजुत्तं वयणं जदणेण उज्झेज्ज।**

परपीड़ायुक्त वचन यत्नपूर्वक त्याग देना चाहिए।

Words which cause pain should be given up effortly.

2738. **सगपर-घादी मोसभासी।**

मिथ्याभासी स्वपर घाती होता है।

Liars are self & others hurting.

2739. **पुप्फव्व मिदू कंता-वयणं।**

स्त्री के वचन पुष्प के समान कोमल होते हैं।

Words of woman are soft like flower.

2740. **हियं मियं पियं वयणं सिट्ठा हु भासेज्ज।**

शिष्टों को हित-मित-प्रिय वचन ही बोलने चाहिए।

Well-mannered should speak beneficent, limited and loving words.

2741. **जीवपाण-रक्खगं असच्चवयणं वि सच्चवयणं।**

जो जीव के प्राण की रक्षा करते हैं वे असत्यवचन भी सत्यवचन हैं।

False words which protect the life of living beings are also true.

2742. **जोग्गं वयणं सव्व-पियं।**

योग्यवचन सबके प्रिय होते हैं।

Suitable words are dear to all.

2743. **अइतिक्खो कुवयण-पहारो।**

कुवचनों का प्रहार अतितीक्ष्ण होता है।

Attack of ill words is very shrill.

2744. **मिट्ठवयणव्व ण को वि मिट्ठो लोयम्मि।**

मीठे वचनों के समान कोई भी मीठा संसार में नहीं है।

Nothing is sweet like sweet words in the world.

2745. **सव्वहिदंकरं साहुवयणं।**

साधुओं के वचन भी नित्य ही सभी के लिए हितकर होते हैं।

Words of saints are always beneficent for everyone.

2746. **मिट्ठ-फलादो वि अइमिट्ठं वयणं।**

मिष्ट फलों से भी अतिमिष्ट वचन होते हैं।

Words are sweeter than sweet fruits.

2747. **मूढुत्तं कुवयणं वि खमंते साहू जहा सिगंदरो कल्लाणमुणी।**

मूर्ख द्वारा कहे हुए कुवचन को भी साधुजन नित्य ही क्षमा करते हैं जैसे सिकन्दर राजा और कल्याण मुनि।

Saints readily forgive the ill words said by foolish like alexander and kalyan muni.

2748. **सज्जणाणं जहा वयण-महुरिमा रुच्चदे तहा सक्कराए महुरिमा णो।**

जैसे सज्जनों के वचन की मिठास अच्छी लगती है उतनी शक्कर की मिठास नहीं।

Sweetness of words of virtuous people feels good like sweetness of sugar.

2749. **गुणदोसा जाणिय वयणं भासेज्ज।**

गुण और दोष का परिज्ञान कर वचन बोलने चाहिए।

One should speak after knowing the qualities and faults.

2750. **जे ठाणुद्देस-कालणुसारेण य भासगो लोय-ववहारे णिउणो।**

जो स्थान, उद्देश्य और काल (समय) के अनुसार बोलता है वह ही लोकव्यवहार में निपुण होता है।

One who speaks according to place, purpose and time, is skilled in public behaviour.

2751. **गयदंतोव्व सच्चवयणं णो सगठाणादो पडिक्खलदि।**

हाथी के दांत के समान सत्यवादियों के वचन स्वस्थान से हटते नहीं हैं।

Words of truthful people are firm like tusk of an elephant.

2752. **विदु-वयणं वि मूढ-सोऊणं णिरत्थगं जहा अंधकंतस्स सुभज्जा।**

ज्ञानी वक्ता के सुवचन भी मूर्ख श्रोताओं के लिए निरर्थक होते हैं जैसे अंधे पति के लिए सुन्दर स्त्री।

Good words of learned speaker are useless for foolish listeners. As beautiful wife of blind husband.

वर

2753. **वरो वरो होज्ज।**

वर (दुल्हा) को श्रेष्ठ होना चाहिए।

Bride groom should be the most eminent.

2754. **वराणं णव-सुगुणा।**

वर (दुल्हों) के नौ सुगुण हैं।

There are nine qualities of bride grooms.

2755. **वरो कण्णाणुरूवो होज्ज।**

वर कन्या के अनुरूप ही होना चाहिए।

Bride groom should be according to a girl.

वस्तु

2756. **पाय णव-वत्थूसु अइपेम्मो होदि।**

प्रायशः नवीन वस्तुओं में अधिक प्रेम होता है।

Generally there is more love for new things.

2757. **सगुणवत्थूसु णिज्झंति सुजणा णवेसु णो।**

सज्जन गुणयुक्त वस्तुओं से प्रेम करते हैं नवीन वस्तुओं से नहीं।

Virtuous people love virtuous things not new things.

2758. **सव्व-किट्टिम-वत्थुं विणस्सरं।**

सभी कृत्रिमवस्तु विनश्वर हैं।

All man-made things are mortal.

2759. **लोगिगवत्थुं विणस्सरं।**

लोक में विद्यमान सभी पदार्थ विनश्वर हैं।

All substances exisiting in the world are mortal.

2760. **सुट्ठाणे दत्तं वत्थुं सहस्सगुण-फलं देदि।**

सुस्थान पर दी गई वस्तु सहस्रगुणा फल देती है।

Thing given at good place gives better fruition thousand times.

2761. **गुणजुत्त-वत्थूसु वि दुज्जणा दोसा पस्संति।**

गुणयुक्त वस्तुओं में भी दुर्जन दोष देखते हैं।

Scoundrel sees faults in virtuous things too.

2762. **सव्वा इट्ठवत्थुं पुरिसं वा वंछदि णो अणिट्ठं।**

सभी लोग इष्ट वस्तु या पुरुष को चाहते हैं अनिष्ट को नहीं।

All people want desired thing or person not undesired.

2763. **को चिंतदि णट्ठदव्वं विवित्तो?**

नष्ट द्रव्य के प्रति कौन विवेकी सोचता है?

Which discering person thinks for destroyed thing?

2764. **सव्व-पुराणवत्थुं ण सुट्ठु मण्णदे।**

सभी पुरानी वस्तुएँ अच्छी नहीं मानी जाती हैं।

All old things are not considered good.

2765. **सारहीणं सुंदरं वत्थुं चित्तं रंजदि।**

सारहीन सुंदर वस्तु चित्त को रंजित करती है।

Senseless beautiful thing gives enjoyment to the heart.

वाचाल

2766. **वायाला पाय असच्चं सारहीणं च वदंति।**

वाचाल लोग प्रायशः असत्य और सारहीन बोलते हैं।

Generally, garrulous people speak false and senseless.

2767. **वायाला साहु-मज्झे तिरक्कारं लहंति।**

वाचाल सज्जनों के मध्य तिरस्कार प्राप्त करते हैं।

Garrulous people get disrespect among virtuous people.

वाणी

2768. **कस्स वि कज्ज-पेरगा वाणी।**

किसी भी कार्य की प्रेरक वाणी होती है।

Voice is the inspirator of any work.

वात्सल्य

2769. **गुण-गुणीहिं पीदी वच्छल्लं।**

गुणी और गुणों से प्रीति वात्सल्य है।

Affection with virtuous and virtues is vatsalya.

2770. **धम्मीणं गुणाणुरायो वच्छल्लं।**

धर्मात्माओं के गुणों में अनुराग वात्सल्य है।

Affection to qualities of virtuous people is vatsalya.

2771. **साहम्मीसु गुणपीदी वच्छल्लं।**

समान धर्म वालों में गुणप्रीति रूप प्रेम ही वात्सल्य भाव है।

Love of virtues among the people of same religion is vatsalya.

2772. **साहम्मीसु वच्छल्लं उक्किट्ठ-णेह-कारणं।**

साधर्मियों में वात्सल्य उत्कृष्ट स्नेह का कारण है।

Affection towards pious people is the cause of eminent love.

2773. **सवरगुणेसु समभाविल्लो वच्छल्लजुद-धम्मप्पा।**

स्व-पर गुणों में समान भाव रखने वाला वात्सल्य भाव युक्त धर्मात्मा है।

Person who consideres virtues of self and others equal is affectionate pious person.

वासना

2774. **परत्थेसु अप्प-तुट्ठि-भावणा वासणा।**

पर पदार्थों में आत्मतुष्टि की भावना वासना है।

Feeling of self satisfaction in alien substances is passion.

2775. भवणस्स मुक्खदारं पुरत्थिमाए उत्तराए वा होज्ज।

भवन का मुख्यद्वार पूर्व या उत्तरदिशा में होना चाहिए।

Main gate of home should be in east or north.

2776. विणा वत्थुसत्थणाणेण को वि गिहत्थो सकुसल-णिवसेदुं ण समत्थो।

वास्तुशास्त्र के ज्ञान के बिना कोई भी गृहस्थ सकुशल रहने में समर्थ नहीं होता।

No householder is able to live successfully without knowledge of architecture.

2777. सगभवणस्स ईसाणकोणम्मि इट्ठदेवं ठावेज्ज।

अपने घर के ईशानकोण में इष्ट देव को स्थापित करना चाहिए।

Adored God should be in north east of the house.

2778. भवणस्स णेरइये भवणसामी वसेज्ज।

घर के नैऋत्य कोण में भवन के स्वामी को रहना चाहिए।

Owner of house should live in south-west of house.

2779. भवणस्स वायव्वकोणम्मि अदीही सम्माणपुव्वं ठावेज्ज।

घर के वायव्य कोण में अतिथि को सम्मानपूर्वक ठहराना चाहिए।

Guests should be quartered respectfully in the north-west of the house.

2780. जस्स ईसाणकोणं वुड्ढिगयं तं सुभवणं।

जिस घर का ईशान कोण वृद्धिंगत है वह भवन अच्छा माना जाता है।

The house whose north-east direction is increased is considered good.

2781. भवणस्स कोणं हीणं ण होज्ज।

घर का कोई भी कोण हीन नहीं होना चाहिए।

No corner should be less in the home.

2782. भवणस्स अग्गेयम्मि पागसाला विज्जुदठाणं हु होज्ज।

घर के आग्नेय कोण में पाकशाला विद्युतस्थान ही होना चाहिए।

Kitchen and electricity place should be in south east of the home.

2783. सव्वविह-अग्गि-उवयरणं हु अग्गेये।

सभी प्रकार के अग्नि उपकरण आग्नेयकोण में ही होने चाहिए।

All electronics items should be in south-east.

2784. भवणस्स बंभठाणं कया वि अइगुरू ण णिम्मावेज्ज।

घर का ब्रह्मस्थान कभी भी अतिभारी नहीं बनवाना चाहिए।

Center of the house shouldn't be built heavier.

2785. सव्ववत्थु-दोस-रहिदं भवणं हु खेमंकरं हिदंकरं च।

सभी वास्तुदोष से रहित घर ही क्षेमंकर और हितकर है।

House devoid of all architectural faults is prosperous and beneficent.

विद्या

2786. अज्झप्प-विज्जा हु अप्प-हिदंकरा ण लोगिग-विज्जा।

अध्यात्म विद्या ही नियम से आत्महितकारी होती है न कि लौकिक विद्या।

Spiritual knowledge is always self benevolent not worldly knowledge.

2787. अज्झप्प-विज्जाए विणा अप्प-संती असंभवो।

अध्यात्म विद्या के बिना आत्मा की शान्ति असंभव है।

Peace of soul is impossible without spiritual knowledge.

2788. सुविज्जाजुत्ता सया सव्वत्थ माणं लहदि।

सुविद्या से युक्त नारी सदा सर्वत्र समादर को प्राप्त होती है।

Well-educated lady always become revered everywhere.

2789. णिद्दोस-विज्जा सया सुहंकरा।

निर्दोष विद्या सदा सुखकर होती है।

Faultless knowledge is always beneficent.

2790. सुसमेण अज्जिदा विज्जा सव्वत्थ हु फलावहा।

सम्यक्श्रम से अर्जित की गई विद्या सर्वत्र ही फलावह होती है।

Eduction obtained by right efforts yield fruits everywhere.

2791. अपुण्ण-विज्जा हु अवण्णा-कारणं।

अपूर्ण विद्या ही अवज्ञा का कारण है।

Incomplete knowledge is the cause of disregard.

2792. विणयेण णिट्ठाए य अज्जिदा विज्जा किं किं ण सुहंदेदि?

विनय और निष्ठा से अर्जित विद्या क्या-क्या सुख नहीं देती?

Knowledge attained by courtesy and faith provides every pleasure.

2793. गुरुसेवा हु विज्जज्जण-कारणं ण अण्ण-साहणं।

गुरु सेवा ही विद्यार्जन का कारण है न कि अन्य साधन।

Service of preceptor is the cause of getting knowledge not any other source.

2794. धणवंता वि पुज्जंते विज्जावंता।

धनवान् भी सुविद्याधारी नर की पूजा करते हैं।

Richest also adore the learned.

2795. सुविज्जा सव्वपुरिसत्था फलंति।

सुविद्या से सर्वपुरुषार्थ फलित होते हैं।

Good education gives fruit of all efforts.

2796. करेज्ज कज्जं जेण अविज्जा होदि विज्जामया।

वही कार्य करना चाहिए जिससे अविद्या विद्यामय होती है।

Only that work should be done by which ignorant become wise.

2797. थिरचित्ता हु पविसंति विज्जा-धम्मखेत्तेसु य।

विद्या और धर्मक्षेत्र में स्थिरचित्त वाले ही प्रवेश करते हैं।

Only steady people enter the area of knowledge & religion.

2798. जहा इत्थि-लावण्णं अण्णाणं पीदि-कारणं तहा विज्जा वि।

जैसे स्त्री का लावण्य अन्य की प्रीति का कारण है वैसे विद्या भी।

As charm of the woman is the cause of others affection similarly knowledge too.

2799. विज्जा सत्ती धणं मित्तं च सेय-कारणं।

विद्या, शक्ति, धन और मित्र कल्याण का कारण है।

Knowledge, strength, wealth and friend are the cause of welfare.

2800. विज्जावंतो लोए सव्वेहिं आयरं लहदि।

विद्यावान् पुरुष लोक में सभी के द्वारा आदर प्राप्त करता है।

Learned gets honour from every person in the world.

2801. सुविज्जव्व ण अण्ण-रम्मवत्थुं लोए।

लोक में सुविद्या के समान अन्य कुछ भी रमणीय वस्तु नहीं है।

Nothing is as lovely as knowledge in the world.

2802. धणिगा सुलहा किंतु विज्जावंता दुल्लहा लोए।

लोक में धनवान् सुलभ हैं किन्तु सुविद्यावान् दुर्लभ हैं।

Richest are easier to find in the world but learned are difficult.

2803. अमिय-णदिव्व इहपरलोयम्मि सुहत्थ-विज्जा।

इस और परलोक में सुखार्थ विद्या अमृत की नदी के समान मानी जाती है।

Knowledge seeking happiness is considered like river of nector in this and next world.

2804. कामत्थकरी हु होज्ज परं विज्जा जा विमुत्तिं दाएज्ज।

विद्या भले ही कामार्थकारी हो परन्तु विद्या वही है जो विमुक्ति प्रदान करे।

Even if knowledge is for the sake of worldly pleasures & wealth but knowledge is only that which releases from rebirth.

2805. विज्जा णरस्स तिदियं णेत्तं।

विद्या मनुष्य का तृतीय नेत्र है।

Knowledge is the third eye of a human.

2806. विज्जा अक्खया अप्पणिब्भरा णिही जा दाणेण चागेण वड्ढदि।

विद्या अक्षय आत्मनिर्भर निधि है जो दान से और त्याग से बढ़ती है।

Knowledge is imperishable and self-sufficient wealth which increases by donation and sacrifice.

2807. वयेण वड्ढदि विज्जा संगहेण य विणस्सदि।

व्यय से विद्या बढ़ती है और संग्रह से क्षीण होती है।

Knowledge increases by giving and diminishes by accumulating.

2808. विज्जा पुरिसस्स अक्खीणं धणं उक्किट्ठ-मित्तं विणय-हेदू गुणागरिसगागरिसगो।

विद्या पुरुष का अक्षीण धन, उत्कृष्ट मित्र, विनय का हेतु और गुणों को आकर्षित करने वाली चुम्बक है।

Knowledge is undecaying wealth, best friend cause of courtesy and a magnet which attracts

virtues of a person.

2809. सुविज्जा कला य संत-पाणा।

सम्यक् विद्या और कला सज्जनों के प्राण हैं।

Right knowledge and art are the life of virtuous people.

2810. जसकरी सुहंकरी भोयंकरी खेमंकरी य विज्जा णरस्स अज्झप्पुण्णदि-कारणं।

यशकरी, सुखकारी, भोगकरी और क्षेमंकरी विद्या नर के आध्यात्मोन्नति का कारण भी मानी जाती है।

Knowledge cause for glory, happiness, pleasure and welfare is also considered the cause of spiritual progress of a person.

2811. विज्जं विणा इहपरलोयम्मि किंचि वि ण सुहं।

विद्या के बिना इस और परलोक में कुछ भी सुख नहीं है।

There is no pleasure for a person without knowledge in this and the next world.

2812. विज्जा-सुइ-धण-जस-सुह-मोक्ख-कारणं।

विद्या पवित्रता, धन, यश, सुख और मोक्ष का कारण है।

Knowledge is the caues of holiness, wealth, fame, happiness and emancipation.

2813. अविज्जा मिच्चू विज्जा अमियं।

जहाँ अविद्या ही मृत्यु है वहाँ विद्या अमृत मानी जाती है।

Where ingnorance is death, knowledge is considered nector.

2814. सयायारी विज्जावसणी हु देवोव्व।

सदाचारी विद्याव्यसनी देवतुल्य ही माना जाता है।

Good conducted and desirous of learning is assumed similar to god.

2815. विज्जावंताणं सुभावा लोयोत्तर-सद्दातीद-खेमंकरा।

विद्यावानों के शुभभाव लोकोत्तर, शब्दातीत और क्षेमंकर हैं।

Good thoughts of learned are super natured, beyond the words and benevolent.

2816. दुसइवेण राया दुराइणा रज्जं, अहम-संगदीए सयायारो तहेव विणस्सदि जहा अणब्भासेण विज्जा।

दुष्ट सचिव से राजा, दुष्ट राजा से राज्य, अधम की संगति से सदाचार वैसे ही नष्ट हो जाता है जैसे अनभ्यास से विद्या।

As king get destroyed from wicked minister, kingdom from wicked king & good conduct from company similarly knowledge from not practicing.

2817. अणंत-सत्थं बहु-विज्जा।

अनंत शास्त्र होते हैं और बहुत सारी विद्याएँ।

There are many scriptures and a lot of arts.

2818. गहेज्जा सारभूदा विज्जा।

सारभूत विद्या ही ग्रहण करनी चाहिए।

Only sensible knowledge should be attained.

विधाता

2819. पत्तेगं पाणी हु सगविहाई।

प्रत्येक प्राणी ही स्वविधाता है।

Every soul is self creator.

2820. जीवा सगकम्माणुसारेण फलं लहदि ण विहाइअणुसारेण।

सर्व जीव स्वकर्मानुसार ही फल प्राप्त करते हैं न कि विधाता के अनुसार।

All living beings endure the fruition according to their karmas not according to lord.

विनय/विनयी

2821. विणयो गुणाआगरिसंति।

विनय से गुण आकर्षित होते हैं।

Courtesy attracts the virtues.

2822. विसुद्धो णदो विणयो।

विशुद्ध नम्रीभूत ही विनयी है।

A person who is virtuous modest is courteous.

2823. धम्मो इदरगुणा वि विणयं विणा णो चिट्ठंति।

विनय के बिना धर्म और अन्य गुण भी नहीं ठहरते।

Religion and other virtues don't remain without politeness.

2824. विज्जावंतो सव्वत्थ आयरं लहदि जदि विणीदो।

विद्यावान् नर यदि विनयी हो तो सर्वत्र आदर पाता है।

If learned people are humble then he becomes honourable everywhere.

2825. सुविज्जा-लाहो ण विणयं विणा।

बिना विनय के सुविद्या का लाभ किसी को भी नहीं होता।

No one gets good education without courtesy.

2826. विणयहीणा ण जाणंति जोग्गाजोग्गं गुणावगुणं।

विनयहीन योग्य-अयोग्य और गुण-अवगुण को नहीं जानते हैं।

Immodest don't know appropriate inappropriate and virtues-vices.

2827. सव्वगुणेसु विणयो हु महागुणो।

सभी गुणों में विनय ही महागुण है।

Courtesy is the greatest virtue in all virtues.

2828. विणयो ण केवलं धण-कारणं परं गुणस्स वि।

विनय न केवल धन का कारण है अपितु गुण का भी कारण है।

Courtesy is not only the cause of wealth but also of virtues.

2829. सया विणयो पुण्णवंत-चित्ते।

पुण्यवान् पुरुष के चित्त में सदा विनय रहती है।

There is always courtesy in the heart of meritorious person.

2830. अइवद-विज्जा-तव-वयवंतेसु णदायरणं विणयो।

अधिक व्रत-विद्या तप और आयु वालों में नम्र आचरण विनय है।

Polite conduct towards vowers, learned, penance and elders is courtesy.

विनाश

2831. विणासयाले वि सगहढं ण छड्डुदि हढी।

हठाग्रही विनाशकाल में भी अपनी हठ नहीं छोड़ता।

Unyielding doesn't leave his obstinacy even at the time of annihilation.

2832. विणासे बुद्धी वि तहेव अणुवच्चदि।

विनाशकाल आने पर बुद्धि भी तदनुकरण करती है।

At the time of destruction mind works according to that.

2833. विणास-वारिदुं को समत्थो पावुदये?

पापोदय काल में कौन विनाश-निरोध करने के लिए समर्थ होता है?

Who is able to prevent destruction during the rise of demerits?

2834. को जाणदि विणास-खणं देहीणं।

संसारियों के विनाश के क्षण कौन जानता है?

Who knows the moment of destruction for worldly soul?

वियोग

2835. दुस्सहो दुल्लह-वत्थुणो विजोगो।

बहुत यत्न से प्राप्त वस्तु का वियोग दुस्सह होता है।

Seperation of things which have been attained by effort is intolerable.

2836. विजोग-दुक्खं सया तावदि।

वियोग का दु:ख हमेशा संताप देता है।

Grief of seperation always gives sufferings.

2837. संजोगो हु विजोगमूलं।

संयोग ही वियोग का मूल है।

Connection is the root of seperation.

विरह

2838. विरहयाले सग्गोव्व सुहं वि णिरयोव्व भासदे।

विरहकाल में स्वर्ग के तुल्य सुख भी नरक के समान प्रतिभासित होते हैं।

Pleasure similar to heaven appears like hell at the time of seperation.

2839. परविरहवेयणं जाणिदुं को समत्थो?

पर की विरह-वेदना को जानने में कौन समर्थ है?

Who is able to know others pain of separation.

विरोध

2840. पत्तेगं किरियाए विरोहो ण संभवो।

प्रत्येक क्रिया का विरोध संभव नहीं है।

Opposition to every activity is not possible.

2841. कयावि धम्म-विरोहं ण करेज्ज।

कभी भी धर्म का विरोध नहीं करना चाहिए।

One should never oppose religion.

2842. विरोहेण सत्तू सगसत्तिं संचिणेदि।

विरोध से शत्रु अपनी शक्ति संग्रह करता है।

Enemy collects his strength from opposition.

2843. बलिट्ठा वि बहुजणाण विरोहं ण करेज्ज।

बलवानों को भी बहुत लोगों का विरोध नहीं करना चाहिए।

Strong people shouldn't oppose many people too.

2844. धूलि-विरोहेण सा सिरे चिट्ठदि।

धूल का विरोध करने से वह सिर पर बैठ जाती है।

One should never oppose any virtuous person because hitting the dust makes it sit on the head.

विवेक

2845. कज्जेसुं सुपवित्ती विवेगो।

प्रत्येक कार्य में सम्यक् प्रवृत्ति विवेक है।

Proper tendency in every work is discrimination.

2846. विवेकहीणा णेत्तजुत्ता वि णेत्त-हीणा।

विवेकहीन चक्षु होने पर भी चक्षुहीन कहे जाते हैं।

Even after having eyes, thoughtless people are said to be blind.

2847. विवेगहीणो सहसा पडदि दुक्ख-कुंडे।

विवेकहीन सहसा ही दु:ख के कुण्ड में गिर जाता है।

Indiscriminating falls down in the pond of sorrows.

2848. इहपरलोयस्स खेमंकरो देहीणं सुविवेगो।

संसारियों का सम्यक् विवेक इह-परलोक के लिए क्षेमंकर है।

Right discrimination of worldly souls is auspicious for this and next world.

2849. विवेगभट्ठो सयमग्गादो दुहगड्ढे पडदि।

विवेक से स्खलित लोग सौ मार्गों से दु:खों के गड्ढे में गिर जाते हैं।

People devoid of discrimination fall down in the hole of pain by hundred ways.

विवेकी

2850. विवेगी कम्मि वत्थुम्मि ण संमुज्झंति।

विवेकीजन किसी भी वस्तु में मोहित नहीं होते।

Discriminating person doesn't get infatuated by anything.

2851. अण्ण-भूसणं णिरत्थगं विवेगभूसिदाणं।

विवेक से भूषित लोगों के अन्य आभूषण निरर्थक हैं।

Other ornaments are useless for the people who are adorned with discrimination.

2852. विवेगसीलो देहं जीवं च भिण्णो हु मण्णदे।

विवेकशील पुरुष देह और जीव को भिन्न ही मानते हैं।

Discriminating people consider body and soul seperate.

2853. विवेगी कज्ज-पुव्वं तस्स फलं चिंतंति।

विवेकीजन कार्य से पूर्व उसका फल विचारते हैं।

Discriminating people think of the fruition before doing any work.

विश्वस्थ जन

2854. सव्वाणंद-कारगा वीसत्था।

विश्वस्त लोग सभी के लिए आनन्दकारक होते हैं।

Believable people are cause of happiness to all.

विष

2855. अजिण्णे भोयणं विसं।

अजीर्णता में भोजन विष होता है।

Food is poison in indigestion.

2856. विसकूवो ण होदि अमियकुंडं णाममत्तेण।

विषकूप नाममात्र से अमृत कुण्ड नहीं हो जाता।

Poison's well doesn't become nectar's well just by name.

2857. विसवल्लिव्व भोय-संपदा।

भोग सम्पदा विषबेल के समान है।

Worldly pleasure is like poison-vine.

2858. दुल्लहं अमियं लहिच्चा को भुंजदि कालकूड-विसं?

दुर्लभ अमृत को प्राप्त कर कालकूट विष को कौन पीता है?

Who takes poison after gaining nector?

2859. विसकणेण सायरो ण विसमइओ।

विषकण से सागर विषाक्त नहीं होता।

Ocean doesn't get poisoned by a particle of poison.

विषय

2860. जम्मि अक्खाणि पवट्टंति ते विसया।

जिसमें इन्द्रियाँ प्रवृत्ति करती हैं वे विषय हैं।

In which senses act are their objects.

2861. विसयभोगेहिं तुट्ठो णो को वि।

विषयभोगों से कोई संतुष्ट नहीं होता।

No one get satisfied from enjoyment of senses.

2862. खारणीरं पिबिय अइपिवासा वड्ढदि तहा हु विसया।

जिस प्रकार खारा पानी पीने से अति प्यास बढ़ती है उसी प्रकार विषयों को मानना चाहिए।

Just like thirst increases by salty water, worldly pleasures should be assumed similar.

2863. विसयणिवित्ती हु महासुहं तं वंछंति को विदू।

विषय निवृत्ति ही महासुख है उसको ही विद्वान चाहते हैं।

Release from worldly pleasure is the greatest happiness. A learned only wants that.

2864. विसव्व विसया को धीमंतो सेवदे?

विष के समान विषयों को कौन बुद्धिमान सेवता है?

Which wise man enjoys the worldly pleasure which are like poision?

2865. भोययाले सुहाभासं देंति विसया हु दुहदा।

जो विषय भोगकाल में सुखाभास देते हैं वे नियम से दु:ख-दायक होते हैं।

Worldly pleasures which give pleasure only for a period of time, surely give pain afterwards.

2866. वरो विसयचागो हु विसयसेवणं सुट्ठु ण कयावि।

विषयों का त्याग ही श्रेष्ठ है विषय सेवन कदापि श्रेष्ठ नहीं है।

Renouncing worldly pleasure is the best not enjoying them.

2867. मुहु विसयसेवणेण अणंतयालम्मि वि ण को वि तिप्पदि।

बार-बार विषय सेवन से अनंतकाल में भी कोई संतुष्ट नहीं होता है।

No one gets satisfied even after enjoying worldly pleasure again and again for an endless time.

2868. विणा वेरग्गेण विसयचागो केवलं किलेसवड्ढगो।

बिना वैराग्य के विषयत्याग केवल संक्लेशता वर्धक है।

Renouncement without detachment increases distress in mind.

2869. विसव्व दुहदा विसया केवलं भोगयाले हु रसदा।

विष के समान दारुण दु:ख देने वाले विषय केवल भोगकाल में ही रस देने वाले होते हैं।

Worldly pleasures which give poison like pain give joy only at the time of enjoyment.

2870. विसयाणुभव-सुहं कया वि ण सगाहीणं।

विषयानुभव सुख कदापि स्वाधीन नहीं होता।

Enjoyment of worldly pleasure is never independent happiness.

2871. पराहीणं सबाहो दुहमइयं हु विसयसुहं।

विषयसुख पराधीन बाधासहित दु:खमिश्रित ही होते हैं।

Luxury is always dependent, with obstacles and painful.

2872. विसयचागो बालवत्थाए महापुरिसाणं वि दुल्लहो।

बाल्यावस्था में विषय त्याग महापुरुषों के लिए भी दुर्लभ है।

Renouncing worldly pleasures in the childhood is difficult even for the greatest men.

2873. मणोण्ण-विसयसेवणं वि केवलं तण्हा-विड्ढीए ण चित्त-तत्तीए।

मनोज्ञ विषयसेवन भी केवल तृष्णा वर्धन के लिए हैं न कि चित्त की तृप्ति के लिए।

Enjoyment of delightful worldly pleasures is only for increasing desires, not for the satisfaction of heart.

2874. अग्गिव्व अक्ख-विसय-तावो भासदे।

इन्द्रिय विषयों का संताप अग्नि की तरह प्रतिभासित होता है।

Grief of sensual pleasure is like fire.

2875. बहुरोगजुत्तदेहेण वि विसयवासणा दुच्चागणीया?

बहुरोगयुक्त देह द्वारा भी विषयवासना दुष्त्याज्य है।

Sensual pleasures are difficult to give up even by diseased body.

2876. संजमजलेण धोवेज्ज विसय-कसायमलपुंजं।

विषयकषाय रूपी मलपुंज को संयम रूपी जल से धोना चाहिए।

Dirt of worldly pleasures & passions should be washed by water of self-restraint.

विषयासक्त

2877. विसयंधस्स कुत्थ सुहं?

विषयांध को सुख कहाँ?

Where is pleasure for the one blind to worldly pleasures?

2878. विसयेसु अइ-आसत्ताणं वेरग्गं महादुल्लहं।

विषयों में अति आसक्त व्यक्तियों को वैराग्य महादुर्लभ है।

Detachment is very difficult for the people who are infatuated with worldly pleasures.

2879. पाय विसयासत्तण सव्व-गुणा विणस्संति।

प्रायश: विषयासक्त पुरुषों के सभी गुण नष्ट हो जाते हैं।

Generally all virtues of the people infatuated with worldly pleasures get destroyed.

विषाद

2880. कया वि णो कुणेदि विसादं सो सूरो।

जो कभी भी विषाद नहीं करता है वह शूरवीर माना जाता है।

One who never become sad is said to be a valiant.

2881. णाणी सूरवीरो ण विसूरंति कया वि।

ज्ञानी और शूरवीर को कभी भी विषाद नहीं होता।

Learned and valiant never sorrow.

वीतराग/वीतरागी

2882. चिंतदि सया वीयरायत्तं सो हु होज्ज वीयरायी।

जो सदा वीतरागता का चिंतन करता है वह नियम से वीतरागी होगा।

One who meditates over passionless will surely become dispassionate.

2883. चित्ते ण किं चि वि रायो सो वीयरायो।

जिस चित्त में किञ्चित् भी राग नहीं रहता है वह ही वीतरागी है।

The one in which even a little attachment doesn't remain is dispassionate.

2884. जस्स रायो वीदं सो वीयरायो।

जिसका राग चला गया है वह वीतराग है।

Whose affection has been destroyed is dispassionate.

2885. वीयरायेण विणा को समत्थो सहावं जाणेदुं?

वीतराग के बिना स्वभाव को जानने में कौन समर्थ है?

Who is able to know the nature without being dispassionate?

वृक्ष

2886. रुक्खो वि णरोव्व जम्मदि मरदि।

वृक्ष भी नरवत् जन्मता और मरता है।

Even a tree takes birth and dies like a person.

वृद्ध/वृद्धावस्था

2887. अइवुड्ढत्तस्स दीह-जीवणादो णिरोयिअ-वत्थाए अप्पजीवणं हु वरं।

अतिवृद्धावस्था के दीर्घ जीवन से निरोगी अवस्था का अल्पजीवन ही श्रेष्ठ माना जाता है।

Short healthy life is better than long life of old age.

2888. अइवुड्ढवत्थाए पाय मदिमंदा।

प्रायशः अतिवृद्धावस्था में मतिमंद हो जाती है।

Generally, people become slow-witted in old age.

2889. वुड्ढ-समीवे बहुमुल्ल-अणुभवधणं होदि।

वृद्धों के पास बहुमूल्यवान् अनुभव धन होता है।

Old people have precious wealth of experience.

2890. णाण-तव-वद-अणुभव-आउ-अवेक्खाए वुड्ढा समाजस्स बहुमुल्ल-कोसा।

ज्ञान, तप, व्रत, अनुभव, आयु की अपेक्षा जो कोई भी वृद्ध होते हैं वे समाज के अतिमूल्यवान् कोष माने जाते हैं।

People who are old regarding knowledge, austerity, vows, experience and age are considered precious wealth of the society.

2891. वुड्ढत्ते पुत्तो वि सत्तुव्व भासदि परमप्पं विणा ण को वि सहाई।

जिस वृद्धावस्था में पुत्र भी शत्रु के समान लगते हैं तब परमात्मा के बिना कोई सहायी नहीं है।

In the old state where even sons seem like enemies, there no one is the protector except God.

2892. लहुवयो दोसजुदो वुड्ढत्तं गुणजुदं णो एरिसो को वि णियमो।

लघुवय दोषयुक्त और वृद्धावस्था गुणयुक्त होती है ऐसा कोई नियम नहीं है।

There is no such a law that young age is faulty and old age is virtuous.

2893. जदा जोवणजुत्तो वि णाणी होदि तदा वुड्ढत्तस्स किं महच्चं?

जब यौवनयुक्त भी ज्ञानी होता है तब वृद्धावस्था का क्या महत्त्व?

When younger person is also learned then what is the importance of old age?

वेदना

2894. वेगजुद-णदिव्व णर-वेयणा अइतिव्वा जह णदी तडा धंसदि तह वेयणा हिअयं।

मनुष्य की वेदना अतितीव्र वेगयुक्त नदी के समान होती है जैसे नदी तटों को तोड़ती है वैसे ही वेदना हृदय को।

Pain of a person is like an intense river just like the river breaks the bank similarly pains break the heart.

वेदनीय कर्म

2895. वेयणीय-कम्म-खयेण विणा को वि जोगी णो समत्थो अव्वाबाह-गुणं लहेदुं।

वेदनीय कर्म के क्षय के बिना कोई भी योगी अव्याबाध गुण प्राप्त करने में समर्थ नहीं होता।

No ascetic is able to attain unperturbed quality without destroying feeling producing karmas (pathos functional).

2896. असादासादाकम्मंअणुभवावदि तं वेयणीयकम्मं।

जो साता या असाता कर्म का अनुभव कराने में समर्थ होता है वह वेदनीय कर्म है।

Karma which is able to produce feelings of delight and sorrow is feeling producing karmas or pathos functional.

वैभव

2897. विहवे मदजुत्तो दुहे पडणसीलो।

वैभव में मदयुक्त ही दु:ख में पतनशील होता है।

One who indulges in wealth receives decline.

2898. उरालत्तं विहव-भूसणं।

उदारता वैभव का आभूषण है।

Generosity is an ornament of prosperity.

2899. विसणहीणो हु विहवसीलो।

व्यसनहीन ही वैभवशील है।

Free from bad habits is prosperous.

2900. अंतरंग-एसज्जं विणा बहिरं णिरत्थगं।

अंतरंग ऐश्वर्य के बिना बाह्य ऐश्वर्य निरर्थक है।

Outer supremacy is useless without inner supremacy.

2901. जहेच्छ-धणाइजुत्तो हु विहवसीलो।

यथेच्छ धनादियुक्त ही वैभवशील है।

One who has desired money etc. is wealthy.

2902. परप्पर-चच्चेण जाणिज्जदि बुद्धि-विहवो।

परस्पर चर्चा से ही बुद्धि का वैभव जाना जाता है।

Power of mind is known only by conversing with one-another.

वैय्यावृत्ति

2903. वेय्यावच्चं तवेसु सेट्ठं।

वैय्यावृत्ति तपों में श्रेष्ठ है।

Service to the saints is best in all penances.

2904. वैय्यावच्चं पाण समो तवो सव्व तव देहेसु।

सभी तपरूपी देहो में वैय्यावृत्ति तप प्राण के समान है।

To serve a saint is like a soul in body of penance.

वैराग्य

2905. वेरग्गं सुह-साहणं।

वैराग्य सुख का साधन है।

Detachment is the cause of happiness.

2906. भव-देह-भोयादो विरत्ती हु वेरग्गं।

संसार, शरीर व भोगों से विरक्ति वैराग्य है।

Refrain from world , body and worldly pleasures is detachment.

2907. वेरग्गं हु मोक्ख-बीयं।

वैराग्य ही मोक्ष का बीज है।

Detachment is the seed of libration.

2908. वेरग्ग-पहिगस्स को समत्थो बाहं देदुं?

वैराग्य मार्ग पर चलने वाले को बाधा देने में कौन समर्थ है?

No one is able to block a detached person.

2909. वेरग्गं हु तव-मूलं जहा सम्मत्तस्स संजमो।

वैराग्य ही तपस्या का मूल है जैसे सम्यक्त्व का मूल संयम।

Detachment is the base of penance like restraint is of perception.

2910. वेरग्ग-बलं सव्वसेट्ठं।

वैराग्य का बल सर्वश्रेष्ठ बल है।

Power of detachment is the strongest power.

2911. भोये रोयभयं, धणे रायभयं, गुणे दुट्ठभयं, सत्थे वादभयं किंतु वेरग्गे ण कं वि भयं।

भोग में रोग भय, धन में राज्य भय, गुण में दुष्ट भय, शास्त्र में वाद भय किन्तु वैराग्य में कोई भी भय नहीं है।

There is fear of disease in enjoyments, kingdom in wealth, wicked in virtues and dispute in scriptures but there is no fear in detachment.

2912. वेरग्गिओ णाणी संजमजुदो तवसी।

वैराग्य युक्त ज्ञानी संयमयुक्त तपस्वी है।

One who is endowed with detachment is learned and endowed with restraint is an ascetic.

व्यय

2913. आयणुरूवेणं वयं ववत्थिदं करदि सज्जणा।

आय के अनुसार व्यय को सज्जन व्यवस्थित करता है।

Virtuous manages expends according to income.

2914. आय-वयस्स णिरवेक्खो णाणी हु मूढो।

आय व्यय के निरपेक्ष ज्ञानी ही मूर्ख है।

Indifferent knower of income and expense is foolish.

2915. सगायणुसारेण विच्चेज्ज।

अपनी आयानुसार व्यय करना चाहिए।

One should expend according to one's income.

व्यर्थ

2916. विहा णह-छेदग-तिणस्स परसु-पओगो।

नख से छेदने में समर्थ तृण के लिए परशु का प्रयोग व्यथा ही माना जाता है।

Halberd is useless in piercing straw which can be pierced by nails.

2917. विहा सुक्क-खेत्ते मेहविट्ठी।

धान्यखेत के सूख जाने पर मेघवृष्टि व्यर्थ है।

Rain is useless in the dry field.

व्यवहार

2918. लोगववहारं णो विरोहेज्ज।

लोकव्यवहार का विरोध नहीं करना चाहिए।

One should not oppose public behaviour.

2919. आदाण-पदाणस्स माप-भिण्णदा ववहारं दूसदि।

आदान-प्रदान के मापकों की भिन्नता व्यवहार को दूषित कर देती है।

Divergence of measure of give and take pollutes the behaviour.

2920. बंधुवग्गे अणुचिद-ववहारं कयावि णोचिदं।

बंधुवर्ग में अनुचित व्यवहार कभी भी उचित नहीं है।

Unpleasant behaviour among friends is never fair.

2921. विणा विसेसववहारेण ण जणा कया वि तिप्पंति।

बिना विशेष व्यवहार के लोग कभी भी संतुष्ट नहीं होते।

People never get satisfied without special behaviour.

2922. विणा सामण्ण-विसेसववहारेण णो लोय-ववहारो।

बिना सामान्य, विशेष व्यवहार से लोक व्यवहार नहीं चलता।

Public behaviour don't go on without general and special behaviour.

व्यसन

2923. वसण-चागं विणा सव्व-वद-सुद-तवा णिप्फला।

व्यसन के त्यागे बिना सभी व्रत-तप-श्रुत निष्फल होते हैं।

All vows, austerity and scriptures are useless without giving up bad addictions.

2924. एगेण वि जणो णस्सदि सुगुणा बहुवसणाण का कहा?

एक व्यसन से भी व्यक्ति सुगुणों को नष्ट कर देता है अनेक व्यसनों की क्या कथा?

Person destroyes his virtues with a bad habit also then what can be said for many bad habits?

2925. वसणेण को ण लहदि दुग्गदिं।

व्यसन से कौन दुर्गति प्राप्त नहीं करता।

Who doesn't have a bad condition from bad addictions?.

2926. जूअं वसण-मूलं।

जुआ सभी व्यसनों का मूल माना जाता है।

Gamble is considered root of all bad habits.

2927. महापावरूव-वसणाणि उज्झदि सो सुही।

महापाप व्यसनों को जो त्यागता है वह सुखी होता है।

He who gives up bad habits which are the cause of heinous sin remains happy.

2928. जिणपूया गुरुसेवा उवयारो विज्जज्झणं सुपत्तदाणं च पंचवसणाणि हु सुहाणि इहलोयम्मि।

इस लोक में पाँच व्यसन शुभ हैं-जिनपूजा, गुरुसेवा, उपकार, विद्याध्ययन और सुपात्रदान।

Five addictions are auspicious in the world-worshiping jina, serving preceptor, studying scriptures & donating to recipients.

व्रत

2929. हिंसाइ-पाव-भाव-वज्जणं हु वदं।

हिंसादि पाप भावों का वर्जन ही व्रत है।

Destroying inauspicious deeds like violence etc. is vow.

2930. सावयस्स पंचणुव्वदं सत्तसीलव्वदं च।

श्रावक के पंचाणुव्रत और सप्त शीलव्रत होते हैं।

There are five atom vows and seven sheel vrit (rules of conduct) of a layman.

2931. सीलव्वदं अणुव्वद-रक्खाए गुणवड्ढग-कारणं च।

शीलव्रत अणुव्रत के रक्षक और गुणवर्धक कारण माने जाते हैं।

Sheel vrit (Rules of conduct) are considered cause in protecting atom vows and increasing virtues.

2932. विणा वदेण को वि पाव-कारणं उज्झिदुं ण समत्थो।

बिना व्रत के कोई भी महापुरुष पाप के कारण त्यागने में समर्थ नहीं होता।

No greatman is able to give up sins without vows.

2933. वरो पाणचागो वदभंगजीवणादो।

व्रतभंग के जीवन से प्राण त्याग श्रेष्ठ है।

Sacrificing life is better than breaking vows.

2934. विणा वदेण जीवणं णिरत्थगं।

बिना व्रत के जीवन निरर्थक होता है।

Life is useless without vows.

व्रती

2935. हिंसाइ-पंच-पावादो विरत्तो वदी।

हिंसादि पाँचपापों से जो विरक्त है वह व्रती है।

One who is detached from five sins like violence etc. is a vower.

शक्ति/समर्थ

2936. उहयलोयम्मि हिदंकरा सत्ती हु परमत्थिय-सत्ती।

उभयलोक में हितकारी शक्ति ही पारमार्थिक शक्ति है।

Beneficent power is a spiritual power in both worlds.

2937. अइसमत्थ-पुरिसाण दोसं देदुं को वि ण समत्थो।

अति सामर्थ्यवान् पुरुष को दोष देने में कोई भी समर्थ नहीं है।

No one is able to blame capable person.

2938. बहु-असमत्था पुरिसा सत्तिमंताणं किं चि वि ण अहिदं करिदुं समत्था।

बहुत से असमर्थ पुरुष शक्तिमान् का कुछ भी अहित करने में समर्थ नहीं होते हैं।

Many incapable men aren't successful in doing wrong with strong people.

2939. समत्थस्स किं भारो असमत्थस्स किं सहजो य? ण किं वि।

समर्थ को क्या भार है और असमर्थ को क्या सहज है? कुछ भी नहीं।

What is hard for capable and what is simple for incapable? Nothing!

2940. सत्तिमंतो हणदि दुब्बलं।

शक्तिमान् दुर्बल का हनन करता है।

Powerful harms weak.

2941. जदा जस्स उक्किट्ठो समयो सो हु बलवंतो।

जब जिसका उत्कृष्ट समय होता है तब वह ही बलवान् माना जाता है।

One is assumed strong only at one's good time.

शक्तिहीन

2942. सत्तिहीणस्स को मित्तं?

बलहीन का कौन मित्र है? कोई नहीं।

Who is a friend of weak? No one!

शत्रु

2943. जाणिच्चा सत्तु-वियारं करेज्ज पडिकिरियं।

शत्रुओं के विचार को जानकर प्रतिक्रिया करना चाहिए।

One should react after knowing about the thoughts of enemy.

2944. जाव सत्तू मित्तं ण होदि ताव सत्तू।

जब तक शत्रु मित्र नहीं होता तब तक शत्रु शत्रु ही रहता है।

Until enemy doesn't become a friend till then enemy remains an enemy.

2945. जाव सत्तू सत्तुत्तं ण मुंचदि ताव जागरुओ होज्ज।

जब तक शत्रु शत्रुता नहीं छोड़ता तब तक उससे सचेत रहना चाहिए।

Until enemy doesn't leave enmity till then one should be alert from him.

2946. मद-कोह-मच्छर-अविवेगाइ-भावा परमट्ठेण जीवाणं सत्तू।

परमार्थ से अहंकार, क्रोध, मात्सर्य, अविवेक आदि भाव संसारियों के शत्रु होते हैं।

From ultimate point of view ego, anger, envy and imprudence etc. are the enemies of worldly souls.

2947. लोए मित्तस्स सत्तू वि सत्तू सत्तुणो मित्तं वि।

लोक में मित्र का शत्रु भी शत्रु होता है शत्रु का मित्र भी शत्रु होता है।

Enemy of friend is also an enemy and friend of enemy is also an enemy in the world.

2948. रिण-रिउ-रोय-हीणो सुही।

ऋण, शत्रु और रोग से विहीन सुखी है।

Devoid of debt, enemy & disease is blissful.

2949. रिणं वि रिउव्व।

ऋण भी रिपु (शत्रु) की तरह है।

Debt is also like an enemy.

2950. जस्स गुणा वि दोसोव्व दिस्संति सो सत्तू।

जिसके गुण भी दोष की तरह दिखते हैं वह शत्रु है।

Whose virtues also look like faults he is an enemy.

शराबी

2951. सुह-सायरे जिणवाणि-पिया बूडंति भवसायरे वारुणि-पिया।

जिनवाणी प्रिय सुख सागर में डूबते हैं और शराब प्रिय भव सागर में डूबते हैं।

Scripture loving attain pleasure and drinker falls down in the ocean of the world.

2952. को ण लहदि दुग्गदिं वारुणि-पियो।

कौन शराबी दुर्गति नहीं प्राप्त करता है?

Which drinker doesn't receive catastrophe?

शांति

2953. विअप्पेहिं आउलचित्तं संति ण लहदे कया।

विकल्पों के द्वारा आकुल चित्त कभी शांति प्राप्त नहीं करता।

Anxious heart never gets peace from alternatives.

2954. कसायाणं समदसा संती।

कषायों की साम्यावस्था शान्ति है।

Soft state of passions is tranquility.

2955. जत्थ कलहो तत्थ ण संती।

जहाँ कलह रहती है वहाँ शान्ति संभव नहीं है।

Where there is strife, tranquility is not possible.

2956. जत्थ सव्व-वण्ण-जादीणं णरा पेम्म-पुव्वगं वसंति तत्थ सुह-संती य सव्वदा।

जिस स्थान में सर्व वर्ण और जाति के नर प्रेमपूर्वक रहते हैं उस स्थान पर नियम से सुख शान्ति होती है।

The place where people of all classes and castes live lovingly, tranquility is surely there.

2957. जत्थ जीववहो णो सुह-संती तत्थ।

जिस स्थान पर जीववध होता है वहाँ सुख शान्ति नहीं रहती है।

Where creatures are killed, there is no tranquility.

2958. जत्थ खेत्ते अग्गजाण सम्माणो बालाणं वच्छल्लं बुड्ढाणं सेवाभावो समवयाणं अकारण-पेम्मो तत्थ सुह-संती वड्ढदि।

जिस स्थान पर अग्रेजों के प्रति सम्मान, बालकों के प्रति वात्सल्यभाव, वृद्धों के प्रति सेवाभाव तथा समवयों के प्रति अकारण प्रेम होता है वहाँ नियम से सुख-शान्ति बढ़ती है।

Where there is respect for elders, affection for children, service for old people and unreasonable love for other people, tranquility surely increases.

2959. जत्थ बहु-कला-विज्जा-अभिविज्जा वड्ढंति तत्थ सुह-संती।

जहाँ अनेकविध कला, विद्या, अभिविद्या बढ़ती है उस क्षेत्र को सुख शान्ति नहीं त्यागती है।

Where there is many types of arts, cognition, literacy increases tranquility doesn't give up that place.

2960. सस्सद-संती णिय-चितम्मि विज्जदि ण हु अण्णत्त लोए।

शाश्वत शांति निज चित्त में विद्यमान है लोक में अन्यत्र नहीं।

Eternal peace exists in one's own heart and no where else in the world.

2961. पर-दिट्ठंतो वि सग-संति-कारणं।

दूसरे का दृष्टान्त भी स्वकीय शान्ति का कारण होता है।

Example of others is also the cause of self peace.

2962. पत्तेगं णरे त्तं संती सुई अज्झप्पुण्णदी य होज्ज।

प्रत्येक मनुष्य में आरोग्य, शान्ति, पवित्रता और आध्यात्मोन्नति होनी चाहिए।

Progress of health, tranquility, holiness and spiritual mind should be in every person.

2963. जो विस्सम्मि संतिं ठाविदुं समत्थो सो हु संतव्व।

जो विश्व में शांति स्थापित करने में समर्थ होता है वह ही संत पुरुष के समान है।

One who is able to establish peace in the universe, is like an ascetic.

2964. असंतचित्तस्स कुत्थ संती?

अशांतचित्त के लिए कहाँ शान्ति?

Where is peace for restless mind?

शास्त्र

2965. णाणप्पदं कसायहारगं इंदियदमण-कारगं सुहसंतिहेदू य सम्म-सत्थं।

ज्ञानप्रद, कषायहारक, इन्द्रिय दमन के कारण और सुख शान्ति के हेतु ही सम्यक्शास्त्र हैं।

Scriptures which give knowledge, destroy passions are the cause of repressing senses and give tranquility, are right scriptures.

2966. संसारीणं मादुव्व हिदंकरं हु परमट्ठेण सत्थं।

संसारी प्राणियों का माता के समान हित करने वाले परमार्थ से शास्त्र हैं।

From ultimate point of view, scriptures are those which do good to other people like a mother.

2967. वीयरायि-सव्वण्हु-सव्वहिदंकर-जिणदेवेण उवदिट्ठं सत्थं।

जो वीतरागी सर्वज्ञ सर्वहितंकर जिनदेव द्वारा उपदिष्ट हैं वे सम्यक्शास्त्र हैं।

Right scriptures are those which are said by jina who is dispassionate, omniscient and benevolent to all.

2968. जोदिस-वत्थु-सिद्धंत-अज्झप्पगंथो कयावि कस्स वि किं चि वि याले मिच्छा ण होंति।

ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, सिद्धांतशास्त्र, अध्यात्म ग्रंथ कभी भी किसी के भी किञ्चित् काल में भी मिथ्या नहीं होते।

Astronomy, architecture, siddhant and spiritual scriptures are never false.

शिक्षा

2969. सिट्ठ-सयायारिणो सुसिक्खा हु आहारो।

शिष्ट सदाचारी नर के लिए सद्शिक्षा ही आधार होती है।

Ture education is the base of good conducted people.

2970. विणा सुसत्थेण को वि सुसिक्खं लहिदुं ण समत्थो।

बिना सम्यक्शास्त्रों के कोई भी सुशिक्षा प्राप्त करने में समर्थ नहीं होता।

No one is able to get true education without right scripture.

2971. सुसिक्खा सुहिद-समिद्ध-संत-जीवणाहारो य।

सुशिक्षा सुहित, समृद्ध व शान्त जीवन का आधार होती है।

Good education is the base of benevolent, prosperous and peaceful life.

2972. विणा सुसिक्खाए णरा पसुव्व।

बिना सुशिक्षा के सभी नर पशुवत् माने जाते हैं।

All persons are assumed like animals without good eduction.

2973. बालाणं वच्छलेण सुसिक्खं दाएज्ज।

बालकों को वात्सल्यपूर्वक सुशिक्षा देनी चाहिए।

Good education should be given affectionately to the children.

2974. जुवाणं अणुसासणेण जोग्ग-सिक्खं दाएज्ज।

युवाओं को अनुशासन पूर्वक योग्य शिक्षा देनी चाहिए।

Youth should be given eminent and disciplined education.

2975. बुड्ढाणं आयरेण भावणाजुत्त-सिक्खं दाएज्जा ।

वृद्धों को आदरपूर्वक भावनायुक्त शिक्षा देनी चाहिए।

Education should be given respectfully and emotionally to old people.

2976. जुवदीण सक्किदि-रक्खाए सिक्खं दाएज्ज।

युवतियों को संस्कृति की रक्षा हेतु शिक्षा देनी चाहिए।

Education for the protection of culture should be given to young girls.

2977. बुड्ढीणं ईसोवासणा-पुव्वं सहजपरिणाममय-सक्किदिवड्ढग-सुसिक्खं दाएज्ज।

वृद्धाओं को ईशोपासनापूर्वक सहजपरिणाममय संस्कृति वर्धक शिक्षा देनी चाहिए।

Culture growing education should be given with worshipping God to old women.

2978. जदि वच्छलेण सिक्खं दाएज्ज ता पसु-पक्खीण वि सिक्खा संभवो।

यदि वात्सल्यपूर्वक शिक्षा दी जाए तो पशु-पक्षियों के लिए भी शिक्षा संभव है।

If education is given affectionately then it can be given to animals and birds also.

2979. सगासिदा जदणेण सिक्खंति पसंसणीया गुरु-जणग-मित्ताइ-जणा।

वे गुरु, जनक, मित्रादि प्रशंसनीय होते हैं जो निज आश्रितों को यत्नपूर्वक सुशिक्षा देते हैं।

Preceptor, father and friends are praise worthy who give education to the one's dependant on them.

2980. पओगेसु सिक्खाए परिक्खणं होज्ज पडिपलं।

प्रयोगों में शिक्षा की प्रतिपल परीक्षा होती है।

Education is examined every monent during usage.

2981. अप्पओगी सिक्खा णिरत्थगा।

अप्रयोगी शिक्षा निरर्थक है।

Non-experimental education is useless.

शिव

2982. सव्व-कम्म-रहिदा सिद्धा हु सिवा।

सभी कर्मों से रहित सिद्ध ही शिव कहे जाते हैं।

Emancipated souls, devoid of all karmas are called shiva.

2983. सिव-णामं वि लोक-कल्लाणकरं।

शिव नाम भी लोक कल्याणकारी माना जाता है।

Shiva is also considered auspicious for the

world.

शिष्य

2984. जदा सिस्सो समत्थो तदा गुरू वि णिराउलो।

जब शिष्य समर्थ होता है तब गुरु भी निराकुल होता है।

When disciple is capable then preceptor is also devoid of distress.

2985. सिस्सुण्णदीए गुरू णंददि।

शिष्यों की उन्नति से सुगुरु भी आनन्दित होते हैं।

Preceptor gets bliss from the progress of disciples.

2986. गुरु-देसणाए संपुण्ण-फलं लहिदुं मेत्तं सिस्सो हु समत्थो।

गुरु की देशना का सम्पूर्ण फल प्राप्त करने में मात्र शिष्य ही समर्थ है।

Only disciple is able to get the fruition of all preachings of a preceptor.

2987. सुपत्तस्स संपत्ती, सुसिस्सस्स विज्जा, सज्जणस्स सुकिदि-आदी ण खयंति।

सुपात्र को दी गई सम्पत्ति, सुशिष्य को दी विद्या, सज्जन को दी गई सुकृति आदि क्षीण नहीं होती।

Wealth given to good recipient, knowledge given to good disciple, good composition given to gentle man never diminish.

शील

2988. सीलवंतस्स सीलं हु भूसणं वरं।

शीलवान् नर का शील ही श्रेष्ठ भूषण है।

Conduct is the best ornament of a conducted person.

2989. उहयलोए पसंसणीयो सीलवाणो ।

उभयलोक में शीलवान् प्रशंसनीय है।

Good conducted person is admirable in both worlds.

2990. सीलस्स पहावेण जलं थलं अग्गी वि सीयलजलं।

शील के प्रभाव से जल स्थल और अग्नि भी शीतल जल हो सकती है।

Water may become earth and fire may also become cool from the effect of good conduct.

2991. सीलजुत्तो मिदो सुहं लहदि भवे-भवे।

शीलयुक्त मृतक प्राणी भव-भव में सुख प्राप्त करता है।

Good conducted person attains pleasure even after death in many birth.

2992. सीलसिद्धी पहाणा सव्वसिद्धीसुं।

सर्वसिद्धियों में शील की सिद्धि प्रधान है।

Accomplishment of conduct is prime in all accomplishments.

2993. सीलं चित्तसुद्धि-कारणं तं सिवस्स णंदस्स च कारणं।

शील चित्त की पवित्रता का कारण है इसीलिए शील ही शिवत्व और आनन्द का कारण है।

Good conduct is the cause of purity of the heart so it is the cause of liberation and bliss.

2994. सीलवंत-सम्मुहे देवा असुरा णरा वि दासत्तं लहंति।

शीलवान् के सम्मुख देव, असुर और नर भी दासत्व प्राप्त करते हैं।

The gods, demons and people also become slave in front of the good conducted.

2995. सयायार-सुगुण-बंभचेर-पालणं सीलवदं।

सदाचार, सद्गुण और ब्रह्मचर्य का पालन करना शीलव्रत है।

Observing good conduct, virtues and chastity is supplementary vows.

2996. वद-पव्व-दिणेसु य सीलं पालेज्ज णियमेण।

व्रत और पर्व के दिनों में नियम से शील का पालन करना चाहिए।

One should observe chastity in the days of vows and festivals.

2997. सव्वसीलवंतेसु जेट्ठो जो संतुट्ठो।

जो संतोष का पालन करता है वह सभी शीलवंतों में बड़ा है।

One who is contented is eldest among all conducted people.

2998. विहव-भूसणं सज्जणदा सोरिअस्स खमा, णाणस्स विणयो धणस्स पत्तदाणं तवस्स य संती तहा सव्वपाणि-भूसणं सीलधम्मो।

जैसे वैभव का आभूषण सज्जनता, शूरता का क्षमा, ज्ञान का विनय, धन का पात्रदान, तप का शान्ति है वैसे सभी प्राणियों का आभूषण शीलधर्म है।

As goodness is an ornament of wealth, forgiveness of bravery, donating to recipient of money, tranquility of austerity similarly good conduct is an ornament of all living being.

2999. सीलधम्म-पहावेण अग्गी सीयलो, जलं थलोव्व, भयंकरो सीहो मिगरोव्व विसं च अमियव्व होज्ज।

शील धर्म के प्रभाव से अग्नि शीतल रूप, जल स्थल रूप, भयंकर सिंह मृगरूप और विष अमृत रूप होते हैं।

Fire may become cool, water may become land, dangerous lion may become like deer and poi-

son may become like nector from the effect of good conduct.

शुद्ध

3000. सदासय-हेदुभूदकिरिया असुद्धे वि महासुद्धा।

सद् आशय की हेतुभूत क्रिया अशुद्ध होने पर भी महाशुद्ध कहलाती है।

If work is done by good intention then even being impure it is considered highest form of purity.

3001. सुद्धभावजुत्तो सव्वत्थ सोहदे।

जो शुद्धभावों से युक्त हो वह सर्वत्र शोभता है।

One who is endowed with pure thoughts splendid everywhere.

3002. जस्स चित्तं सुद्धं तस्स सव्ववत्थुं सुद्धि-कारणं।

जिसका चित्त शुद्ध होता है उसके लिए सभी वस्तु शुद्धि का कारण हैं।

All things are the cause of purity for him whose heart is pure.

3003. जस्स कुलं सुद्धं तस्स पुत्तो वि सयायारी कुलीणो य।

जिसका कुल शुद्ध होता है उसका पुत्र भी सदाचारी और कुलीन होता है।

Whose family is pure, his son is also become good conducted and well mannered.

शुभ

3004. एगच्छिल्लो काणो ण सुहो मण्णे लोए।

एक आँख वाला काणा कहलाता है वह लोक में शुभ नहीं माना जाता है।

One eyed man is not considered auspicious in

the world.

3005. णियसुहकम्मं हु महारक्खगं देहीणं।

प्राणियों के निज शुभ कर्म ही महा रक्षक होते हैं।

Only auspicious karmas are the protectors of the living beings.

शूरवीर

3006. सूरो रणे पिट्ठं ण देदि कयावि।

शूरवीर युद्ध में कभी पीठ नहीं देता।

Valiant never turns his back from the battle.

3007. सूरिंदोव्व सूरवीरो भूमंडले भंति।

सूर्य और इन्द्र के समान शूरवीर भूमण्डल पर चमकते हैं।

Vigorous shine on the earth like sun & moon.

3008. जस्स सूरस्स दक्खिणे हत्थे परक्कमो तस्स वामहत्थे हु विजयो।

जिस सुभट के दाहिने हाथ में पराक्रम है उसके वाम हाथ में विजय रहती है।

Which valiant has vigour in right hand,victor remains in his left hand.

3009. आपदे सूरा पाणा उज्झंति किंतु ण कुव्वंति अहमकज्जं।

आपदकाल में वीर पुरुष अपने प्राण दे देते हैं किन्तु अधम कार्य नहीं करते हैं।

Courageous people abandon their lives at the time of adversity but don't do low deeds.

शोक

3010. सज्जणा सोगं हु महाविसं मण्णंते।

सज्जन शोक को ही महाविष मानते हैं।

Gentle men consider sorrow a poison.

3011. **सोगो हु महापिसल्लो सुहसंतिं णस्सदि जो।**

शोक ही महापिशाच है जो सुख शान्ति को नष्ट करता है।

Sorrow is the greatest demon which destroys tranquility.

शोभा

3012. **रायहंसेण माणसरोवरं सोहदि णो सयबयेहिं।**

एक राजहंस से मानसरोवर की जो शोभा होती है हजारों वकों से नहीं।

As much Maansarovar looks beautiful from a swan that is impossible from thousands of herons.

3013. **पुप्फभारेण लया सीलभारेण इत्थी जहा सोहंति तहेव अत्थभारेण कव्वं।**

जैसे पुष्प के भार से लता और शील के भार से स्त्री शोभती है वैसे अर्थ के भार से काव्य शोभित होता है।

As vine seems beautiful with flowers and woman with good conduct similarly meaningful poem looks graceful.

3014. **सुकव्वं विणा सहा कुलंगणं विणा गिहं ण सोहेज्ज तह सुपत्तदाणं विणा धम्मो।**

जैसे सुन्दर काव्य के बिना सज्जनों की सभा और कुलंगना के बिना घर नहीं शोभता वैसे सुपात्रदान के बिना धर्म नहीं शोभता।

Like assembly of virtuous men doesn't look graceful without good poetry and house without good conducted wife similarly religion without donating to good recipient.

3015. **जहा चंदं विणा णिसा अक्कं विणा दिणं ण सोहेज्ज तहा साहुं विणा समाजो।**

जैसे चन्द्र के बिना रात्रि और सूर्य के बिना दिन नहीं शोभता वैसे साधु के बिना समाज नहीं शोभता।

As night doesn't look graceful without moon and day without sun similarly society doesn't look good without saints.

श्रद्धा

3016. **सद्धाए विणा अत्थ-णाणं सुभावेहि विणा च पुरिसस्स कल्लाणं असंभवो।**

श्रद्धा के बिना पदार्थ का ज्ञान तथा सुभावों के बिना पुरुष का कल्याण असंभव है।

Knowledge of substances without faith and welfare of a person without the good feelings is impossible.

3017. **सुसद्धा सया वंदणीया सा पाणीणं इयर-चेयणा।**

सम्यक्श्रद्धा सदा वंदनीय है वह ही प्राणियों की इतर चेतना है।

Right faith is always worthy of honour, it is the second conscience of living beings.

3018. **सद्धा-रज्जं जत्थ सुहाणुभूदी तत्थ।**

जहाँ श्रद्धा का राज्य होता है वहाँ नियम से सुखानूभूति होती है।

Where there is rule of faith, there is realisation of happiness.

श्रम

3019. **समज्जिद-धण-बल-विज्जा सुह-कारणं।**

श्रम में अर्जित धन, बल और विद्या सुख का कारण ही है।

Money, strength and knowledge gained by efforts are the cause of happiness.

श्रमण

3020. **रयणत्तय-जुत्तो जहाजादो दियंबरो समणो।**

रत्नत्रय से युक्त यथाजात दिगम्बर श्रमण हैं।

Monk with three jewels is Digamber ascetic.

3021. राय-दोस-विमुत्तो समणो हु पुरिसुत्तमो।

राग द्वेष विमुक्त श्रमण ही पुरुषोत्तम हैं।

Saint devoid of attachment and malice is the supreme being.

3022. सग-देसुण्णदीए समणो समिगो य सच्चजुदो होज्ज।

स्वयं और देश की उन्नति के लिए श्रमण और श्रमिक को सत्ययुक्त होना चाहिए।

Saints and workers should be truthful towards self & country's progress.

3023. असुह-सुह-णिवित्ति-मग्गो समण-धम्मो।

अशुभ-शुभ निवृत्ति मार्ग श्रमण धर्म है।

Inauspicious & auspicious cessation is ascetic religion.

श्रावक

3024. सुसद्धाए सविवेगेण धम्मकारगो सावयो।

सम्यक् श्रद्धा-विवेक के साथ धर्मक्रिया करने वाला श्रावक है।

Doer of religious activities with right belief and discrimination is layman.

3025. अप्पहिदत्थीण सावय-धम्मो रुच्चदे।

आत्महितार्थियों के लिए श्रावक धर्म रुचता है।

Self-beneficiary likes religion of layman.

श्रीमान

3026. किं ण लहंति सज्जणा सिरीमंताणं आसयेण?

श्रीमंतों के आश्रित रहने से सज्जन क्या प्राप्त नहीं कर सकते?

What virtuous people can not attain from leaning on wealthy?

3027. धीमंतो सिरीमंतादो अइपुज्जो।

धीमान् श्रीमान् की अपेक्षा अधिक पूज्य होता है।

Learned is more venerable than wealthy person.

श्रृंगार

3028. साहु-सरीरोवरि जल्लमलं साहु-सिंगारो।

साधुओं के शरीर पर जमा जल्ल-मल ही साधुओं का श्रृंगार है।

Dirt exist on the body of ascetics is their adornment.

3029. साहु-सेवाए तणं सिंगारेज्ज मणं य तच्च-चिंतणेण।

तन का श्रृंगार साधु सेवा से और मन का तत्त्वचिंतन से करना चाहिए।

Body should be adorned by the service to saints and heart should be adorned by thinking over reality.

3030. वेरग्गं संजम-सिंगारो।

वैराग्य संयम का श्रृंगार है।

Detachment is the adornment of restraint.

3031. जिणभत्ती सम्मत्त-सिंगारो।

जिनभक्ति सम्यक्त्व का श्रृंगार है।

Devotion to jina is an ornament of right faith.

श्रेयस्कर

3032. णो सया कडुदा ण सरलदा सम्मा।

न तो सदा कठोरता उचित है न ही सरलता।

Neither harshness nor simplicity is always good.

3033. मुहुत्ते दहणं सेयकरं णो चिरं धूमाणं।

एक मुहूर्त में जलना ही श्रेयस्कर है न कि चिरकाल तक धुआँ करना।

Burning in a moment is better than not smoking till long time.

संकल्प

3034. असुह-संकप्पेण को ण लहदि संकडं?

अशुभ संकल्प से कौन संकट प्राप्त नहीं करता?

Who doesn't get dire difficultly from inauspicious determination?

संक्लेशता

3035. संकिलेसो भवसायरे पडणस्स जिण्णणावा।

संक्लेशता संसार सागर में डुबाने वाली टूटी नाव है।

Passionate thought activity is broken boat which drowns in world sea.

3036. बहुपरिग्गहो परिचओ य संकिलिट्ठ-कारणं।

बहु परिग्रह और परिचय नियम से संक्लेशता का कारण है।

Accumulation and acquaintance is the cause of passionate thought activity.

3037. जत्थ विगिद-परिणामो तत्थ हु संकिलिट्ठ-भावो।

जहाँ विकृत परिणाम होते हैं वहाँ नियम से संक्लेशित भाव होते हैं।

Where there is mutilated thoughts, there is distressed feelings.

3038. विसंवादो संकिलिट्ठ-कारणं।

विसंवाद संक्लेशता का कारण है।

Argument is the cause of passionate thought activity.

संगति

3039. सुवण्णं होदि अयं पारस-संजोगेण।

पारसमणि के संयोग से लोहा सोना हो जाता है।

Iron becomes gold by touching the elixir.

3040. कुसंगेण जीवणादो मरणं वरं।

कुसंग के साथ जीने से मरना अच्छा है।

Death is better than bad company.

3041. साहुसंगदि-जोगेण भव्वो लहदि सुगदिं।

साधुसंगति के योग से भव्य सुगति को प्राप्त करते हैं।

Accomplishable soul gets good transit from the company of saint.

3042. गुणा दोसा हु वत्थु-संसग्गेण।

गुण दोष वस्तु के संसर्ग से ही दिखाई देते हैं।

Qualities and faults become visible from association with the things.

3043. खलेण सह जीवा दुक्खं लहंति जहा खलिणा सह चक्खू।

दुष्ट के साथ रहने से जीव दु:ख प्राप्त करते हैं जैसे खली के साथ चक्षु।

Living with wicked people, worldly souls get pain as eyes with oil-cake.

3044. साहु-संगदिं करेज्ज हु भव्वा।

भव्यों को नियम से ही साधु और सज्जनों की संगति करनी चाहिए।

Accomplishable souls should accompany the saints and virtuous people.

3045. चंदणरुक्खेहिं सह सामण्णरुक्खो वि गंधजुत्तो होदि तहा साहुसंगदी।

चंदन के वृक्ष के साथ सामान्य वृक्ष भी सुगंधयुक्त हो जाता है

वैसे ही साधुसंगति।

Normal trees also become fragrant with sandal tree similar is the company of ascetic.

3046. पारसेण सह लोहं वि सुवण्णं होज्ज तहा सुसंगेण सामण्णजणो वि सज्जणो।

पारसमणि के साथ जैसे लोहा सुवर्ण हो जाता है वैसे सत्संगति से सामान्य जन भी सज्जन हो जाता है।

As iron becomes gold with elixir similarly ordinary people become virtuous with good company.

3047. धणिणा सह णिद्धणो धणी ण होदि तहा सुवण्णेण सह लोहं ण सुवण्णं।

धनी के साथ निर्धन धनी नहीं होता जैसे सुवर्ण के साथ लोहा सुवर्ण नहीं होता।

Poor doesn't become rich by being with the wealthy as iron doesn't become gold by being with gold.

3048. साहुसंगदी सुह-मंगल-वच्छल्ल-जसाणं च कारणं।

साधुसंगति सुख, मंगल, वात्सल्य और यश का कारण होती है।

Company of an ascetic is the cause of pleasure, welfare, affection & glory.

3049. किं साहुसंगदी-मंगलं ण करेदि?

साधु की संगति क्या मंगल नहीं करती?

Does company of an ascetic not do welfare?

3050. जहा संगदी तहा आयरो।

जैसी संगति वैसा आदर।

As there is company, so there is honour.

3051. साहुसंगदी हु दुल्लहा।

साधु की संगति ही दुर्लभ है।

Company of an ascetic is rare.

3052. पुण्णोदयेण विणा सज्जणाणं सज्जणेहिं संसग्गो ण।

पुण्योदय के बिना सज्जनों का सज्जनों से संसर्ग नहीं होता।

Virtuous people don't meet virtuous people without rise of merits.

संगीत

3053. सव्व-कलासुं संगीदं सुरम्मं।

सर्व कलाओं में संगीत सुरम्य है।

Music is pleasing among all arts.

3054. दुक्खं हरदि गायणं।

गायन दुःख दूर करता है।

Singing removes pain.

3055. कस्स चित्तं णो हरदि संगीदं?

संगीत किसका चित्त नहीं हरता है?

Whose heart is not stolen by music?

संतति

3056. बहुसंततिजुत्तो मण्णे संघस्ससीलो।

बहुसंततियुक्त संघर्षशील माना जाता है।

A person who has many children is considered struggler.

3057. गुणहीणाणं बहुसंतती दुह-कारणं।

गुणहीनों के लिए बहुसंतति दुःख का कारण है।

Many children are cause of sorrow for people without virtues.

3058. गुणजुत्ता बहुसंतती हु लोगपुज्जा किंतु णो गुणहीणा।

गुण युक्त बहुसंतति ही लोकपूज्य है किन्तु गुणहीन उसके विपरीत है।

Virtuous many children are venerable in the world but devoid of virtues its opposite.

3059. भवसुहस्स दुहस्स वा मूलकारणं कम्मं ण बहुसंतती।

भव सुख या दु:ख का मूल कारण कर्म है न कि बहु संतति।

Main cause of joy or sorrow of the world is karma not many children.

सन्तोष/संतोषी

3060. परदव्वेसु णिराकंखी संतोसी।

परद्रव्यों में निराकांक्षी सन्तोषी है।

A person who is free from desire of alien substances is a contented person.

3061. जस्स भूसणं संतोसो देवा वि सेवगा तस्स।

संतोष जिसका आभूषण है उसके देव भी सेवक बन जाते हैं।

Devas serve him whose ornament is patience.

3062. दिव्व-णिहीए लाहं लहिच्चा को जणो ण तिप्पदि?

दिव्यनिधि के लाभ को प्राप्त करके कौन संतुष्ट नहीं होता?

Who doesn't get satisfied by getting the divine wealth?

3063. इहलोयम्मि धीमंताण बहि-अत्थेहिं तुट्ठी दुल्लहा।

इस लोक में सुधीजनों की बाह्य पदार्थों द्वारा तुष्टि दुर्लभ है।

Making virtuous people satisfied by worldly pleasure is difficult in the world.

संयम/संयमी

3064. महव्वदी दमी वा संजमी।

महाव्रत धारक या इन्द्रियों का दमन करने वाला संयमी होता है।

Saint who observes great vows for his whole life or represses senses is restraint.

3065. परिग्गह-विहीणो संजमी।

परिग्रह विहीन संयमी होता है।

A person who is without accumulation is self restraint.

3066. अण्णाणेण किदं पावं संजमेण विणस्सदि।

अज्ञान से कृत पाप संयम से विनष्ट हो जाता है।

Sins done in ignorance get destroyed by self-restraint.

3067. संजमेणं मिच्चू वि मरदि।

संयम से मृत्यु की भी मृत्यु हो जाती है।

Death is also dies by self-restaint.

3068. जहा संजमो संजमिणो पाणो तहा दया धम्मस्स।

जैसे संयम संयमीजन का प्राण होता है उसी प्रकार धर्म का प्राण दया होती है।

As restraint is the life of restrained similarly compassion is the life of religion.

3069. संजम-साहणाए कमसो अप्पसंति-समाहि-सिव-सुह-फलाणि।

संयम साधना के क्रमश: आत्मशान्ति, समाधि और शिवसुख ये फल होते हैं।

Gradual fruits of self-restraint and penance are self peace, transe and liberation.

3070. धम्मीणं संजमो एगमत्तं आहरणं।

धर्मात्माओं का संयम ही एकमात्र आभूषण है।

Restraint is the only ornament of pious person.

3071. जहा जहा लोगिग-साहणं वड्ढदि तहा तहा संजम-साहणा विणस्सदि।

जैसे-जैसे लौकिक साधनों की वृद्धि होती है वैसे-वैसे संयम साधना नष्ट होती है।

As worldly means increase, restraint and penance get destroyed.

3072. लोगिग-साहणेसु आसत्तो जोगी संजमादो विरत्तो।

जो योगी लौकिक साधनों में आसक्त होता है वह संयम से विरक्त माना जाता है।

Ascetic who is engrossed in worldly means, he is alienated from restraint.

3073. संजमेसु आसत्तो साहगो लोगिग-साहणादो विरत्तो।

जो साधक संयम में आसक्त होता है वह लौकिक साधनों से विरक्त होता है।

One who is engrossed in restraint, is alienated from expedient.

3074. सय-असंजमि-मित्तादो एगो संजमी मित्तं वरं।

सौ असंयमी मित्रों से एक संयमी मित्र अच्छा है।

One self-restraint friend is better than hundred non-restraint friends.

3075. विणा सम्मणाणेण को समत्थो संजमं लहिदुं?

सम्यग्ज्ञान के बिना संयम प्राप्त करने में कौन समर्थ है?

No one is able to get restraint without right knowledge.

3076. संजमो सव्वत्थ पुज्जो लोए।

लोक में सर्वत्र संयम पूजा जाता है।

Restraint is worshipped everywhere in the world.

3077. किसीवलो पलालस्स ण करेदि किसिकज्जं तहा संजमं ण गहेदि भवसुहस्स को वि।

जैसे किसान कृषिकार्य भूसे के लिए नहीं करता वैसे कोई भी भवसुख के लिए संयम ग्रहण नहीं करता।

Like farmer doesn't cultivate for husk similarly, no one becomes restrained for worldly happiness.

3078. संजमहीणा पाढगा णो पवित्ता।

संयमहीन पाठक पवित्र नहीं होते।

Non-restraint readers are not sacred.

3079. वेरग्गं पण्णा य फलगोव्व संजमीणं।

वैराग्य और प्रज्ञा संयमियों के लिए ढाल के समान है।

Detachment and knowledge is like a shield for selfrestrained.

संयोग

3080. सिविणं व सव्व-सुसंजोगा।

सभी सुसंयोग स्वप्न के समान हैं।

All good coincidences are like dreams.

3081. जहा अयं पारस-जोगेण सुवण्णत्तं लहदि तहा भव्वो रयणत्तयेण सिद्धिं हु।

जैसे तांबा उचित पारस रस के संयोग से सुवर्णत्व को प्राप्त करता है निश्चय ही वैसे भव्य रत्नत्रय के योग से सिद्धि को प्राप्त करते हैं।

As iron becomes gold associating with parasras similarly getting endowed with triple gems accomplishable beings get liberation.

3082. जो गहदि आसयं सुद्ध-दव्वस्स सो हु सुद्धिं लहदि जहा भव्वो सिद्धाणं।

जो शुद्ध द्रव्य का आश्रय ग्रहण करता है वह नियम से शुद्धता को प्राप्त करता है जैसे भव्य सिद्धों का।

One who takes support of pure substance, gets purity surely as accomplishable being of emancipated soul.

संवर

3083. संवरेण विणा मुत्ती, मुत्तीए विणा कुत्थ सुहं?

संवर के बिना मुक्ति और मुक्ति के बिना सुख कहाँ है?

There is no pleasure without liberation and no liberation without stoppage of karmas.

3084. संवर-णिज्जरा य भव्वाणं सिव-सुह-कारणं।

संवर और निर्जरा भव्यों के शिव सुख का कारण है।

Stoppage and shedding of karmas are the causes of liberation for accomplishable souls.

संवेग

3085. धम्मे अणुरागो संवेओ।

धर्म में अनुराग संवेग है।

Affection in religion is samvega.

3086. जीवस्स सुवेओ धम्म-भावो वा संवेओ।

जीव का समीचीन वेग या धर्म का भाव संवेगभाव होता है।

Proper impulse of a living being or feelings for religion is samvega.

संसार

3087. चवलव्व संसारो।

बिजली की चमक की तरह यह संसार है।

This world is like a flash of lightening.

3088. अणाइ-संसारे को वि कस्स णो बंधवो।

अनादि संसार में कोई किसी का बांधव नहीं है।

No one is one's friend in this eternal world.

3089. इट्ठणिट्ठं किंचि वि णो संसारे।

एकान्तत: संसार में कुछ भी इष्टानिष्ट नहीं है।

There is nothing desired or undesired in the world from a single view.

3090. रूढीसु जीविदो जगो।

जगत् रूढ़ियों में जीता है।

The world lives in stereotypes.

3091. चवलव्व संसार-संपदा।

आकाश में चमकने वाली बिजली के समान जगत् की सम्पदा है।

World's wealth is like lightening in the sky.

3092. भवादु छुट्टिदुं धण-विहव-संबंध मुंचेज्ज।

संसार से छूटने के लिए धन वैभव का सम्बन्ध छोड़ देना चाहिए।

One should leave connection with wealth for leaving transmigration.

3093. लोयम्मि सव्वा दिस्संति सुहं दुहं वा लहुं गुरुं वा पुण्णं पावं वा रत्ती दिणो वा जीवो अजीवो वा।

लोक में सुख या दु:ख, लघु या गुरु, पुण्य या पाप, रात्रि या दिन, जीव या अजीव सभी दिखते हैं।

Joy or sorrow, low or high, merits or demerits, day or night, living or non-living all is there in this world.

3094. लोगो विचित्तचेट्ठा-जुदो।

यह लोक विचित्र चेष्टाओं से युक्त है।

This world is endowed with peculiar activities.

3095. भूवीढे को जो कयावि णो विस्सरदि?

संसार में ऐसा कौन मनुष्य है जो भूलता नहीं है?

Where is a person in this world who doesn't forget?

3096. अणाहि-णिहण-संसारे को कस्स वल्लहो?

अनादिनिधन संसार में कौन किसका प्रिय है?

Who is whose loving in this world which has neither beginning nor end?

3097. संसारो अइ-दुक्खपूरिदो।

संसार अत्यन्त दु:खों से पूरित है।

World is filled with extreme pains.

3098. लोयम्मि ण को वि णियो परो।

संसार में कोई भी न अपना है न कोई पराया।

No one is ours or strange in this world.

3099. पत्तेयं परिक्खा-दिणं संसारे।

संसार में प्रत्येक दिन परीक्षा का दिन माना जाता है।

Every day is considered an examination day in the world.

3100. ण समाणा सव्वा जहा हत्थंगुली।

विश्व में सभी जन समान नहीं हैं जैसे हाथ की अंगुलियाँ।

All people are not similar in the world like finger of the hand.

3101. बहुविहपुप्फजुत्त-उववणं व विस्सो।

यह विश्व बहुविधपुष्प युक्त उपवन की तरह है।

This world is like a garden endowed with many types of flowers.

3102. विस्सो सय ण अमिय-रूवो ण य विस-रुवो।

यह संसार सर्वथा न अमृत रूप है और न विष रूप।

This world is neither always like nectar nor like poison.

3103. कत्थ ण समो खेदो विसादो दुक्खं सोगो च संसारे?

संसार में श्रम, खेद, विषाद, दु:ख और शोक कहाँ नहीं है?

Where is no effort, grief, dejection, sorrow and mourning in the world? everywhere!

3104. विचित्ता हु संसार-गदी।

संसार की विचित्र ही गति है।

Motion of world is strange.

3105. णाणा-विचित्तदा-जुत्तो संसारो।

संसार नाना विचित्रताओं से युक्त है।

World is endowed with various peculiarities.

3106. सगेण वपिदं रुक्खं लोयम्मि को णस्सदि?

अपना बोया हुआ वृक्ष लोक में कौन नष्ट करता है?

Who destroys a self-sown tree?

3107. पत्तेयं दव्वं सस्सदं लोए।

लोक में प्रत्येक द्रव्य शाश्वत है।

Every substance is immortal in the world.

3108. सया परिवट्टण-सीलो संसारो।

संसार सदा परिवर्तनशील है।

World is always prone to change.

संस्कार

3109. चित्तम्मि गुण-वासणा सक्कारो।

चित्त में गुणों की वासना का नाम संस्कार है।

Impression of virtues in the heart is Sanskar.

संस्कृति

3110. सक्कारीणं किदी हु सक्किदी।

संस्कारियों की कृति ही संस्कृति है।

Actions of ritualistic person become culture.

3111. गदकाल-सज्जणेहिं णिप्फण्ण-सुकिदी सक्किदी।

गतकाल के सज्जनों द्वारा निष्पन्न सुकृति संस्कृति है।

Good work done by the virtuous people of ancient time is culture.

3112. पुरादण-सक्किदिं पुरातत्तं च रक्खेज्ज।

पुरातन संस्कृति और पुरातत्त्व की रक्षा करनी चाहिए।

Ancient culture and ancient things should be protected.

3113. पाणोव्व सक्किदी वि माणवजादीए।

संस्कृति भी मानवजाति के प्राण की तरह है।

Culture is also like a life of human.

3114. सक्किदी महाणिहिव्व पाणादो सेट्ठा।

संस्कृति महानिधि के समान प्राण से श्रेष्ठ है।

Culture is the greatest wealth and is above life.

3115. कइवि वीरपुरिसेहिं सग-सक्किदिं रक्खेदुं पाणचागो किदो।

कई वीरपुरुषों ने अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए प्राणों का परित्याग कर दिया।

Many people have sacrificed their lives for protecting their culture.

सच्चरित्र/चरित्र

3116. सच्चरित्तं हु णिम्मलो धम्मो।

सच्चरित्र ही निर्मल धर्म है।

Only good conduct is holy religion.

3117. सच्चरित्तादो चुदो जीवो जीविदो वि मिदव्व।

सच्चारित्र से च्युत जीव जीवित भी मृत के समान है।

Even a living characterless person is like a dead corpse.

3118. पाव-णासगं पुण्णदायगं जिण-चरित्तं।

जिनेन्द्र का चारित्र पापनाशक और निश्चित ही पुण्य को देता है।

Conduct of lord jina is sin-destructor and surely gives merits.

3119. जिण-चरित्तं लोग-कल्लाणं।

जिनेन्द्र का चरित्र लोककल्याणकारी होता है।

Couduct of jinendra is for world's well being.

3120. सुचरित्तवंतो हु पमाणभूदो इहपरलोगेसु।

इहलोक और परलोक में सच्चरित्रवान् ही प्रमाणभूत है।

Good conducted are authentic in this and the other world.

सज्जन

3121. इंदिय-मणं णिरुंभदि सज्जणो।

सज्जन इंद्रिय और मन का निग्रह करता है।

Virtuous person control senses and mind.

3122. दव्व-खेत्त-कालणुसारेणं सज्जणा कज्जं करेज्ज।

द्रव्य, क्षेत्र, कालानुसार ही सज्जनों को कार्य करना चाहिए।

Virtuous people should work according to sub-

stance, place and time.

3123. सम्मासम्म-जाणगो सज्जणो।

सम्यक् तथा असम्यक् जानने वाला पुरुष सज्जन है।

Knower of authentic and unauthentic is a virtuous man.

3124. खंडिदं मणं जोजदि सो सज्जणो।

जो खण्डित मनों को जोड़ता है वह सज्जन पुरुष है।

He who joins divided hearts is a meritorious man.

3125. सज्जणो पत्तेगं कज्जं उज्जमेण सिज्झेज्ज।

सज्जन को प्रत्येक कार्य उद्यम के साथ सिद्ध करना चाहिए।

Every work should be done with efforts by virtuous person.

3126. सज्जणा मुंचंति धणं तणं सगजणं परिजणं च किंतु णो सगवयं संजमं धम्मं च।

सज्जन पुरुष धन, तन, स्वजन और परिजन तो छोड़ सकते हैं किन्तु अपना व्रत, संयम और धर्म के नियम को नहीं छोड़ सकते।

Virtuous people can leave their wealth, body, family and relatives but they cannot leave their vows, restraint and religious laws.

3127. सज्जणा कयावि कस्स वि दोसा ण पसारेज्ज।

सज्जनों को कभी भी किसी के दोषों को प्रसारित नहीं करना चाहिए।

Virtuous people should never expose anybody's faults.

3128. सेयत्थं हु सज्जणा चेट्ठंति ण लोगरंजणस्स।

सज्जन कल्याणार्थ ही चेष्टा करते हैं न कि लोक रंजन के लिए।

Virtuous people act for only welfare, not for entertainment.

3129. सग-पसंसं सुणिय अइणदो सज्जणो।

स्वप्रशंसा सुनकर जो अतिनम्र होता है वह सज्जन है।

Listening to their own praise, who becomes modest is also virtuous.

3130. अणुवयारीणं वि जस्स चित्ते करुणा सो वि सज्जणो।

अनुपकारी मनुष्य के प्रति भी जिसके चित्त में करुणा रहती है वह भी सज्जन माना जाता है।

Compassion remains in whose heart even for the discompassionate is also considerd virtuous.

3131. सज्जणा रक्खंति जस-कायं ण णस्सरं ओरालियं सरीरं।

सज्जन यश रूपी शरीर की रक्षा करता है न कि नश्वर औदारिक शरीर की।

Virtuous person defends body of glory not transitory physical body.

3132. तिव्व पावकम्मुदये सज्जणा वि खुभंति।

तीव्र पाप कर्म के उदय होने पर सज्जन भी क्षुभित हो जाते हैं।

Even virtuous people become perturbed in the rise of intense sinful karmas.

3133. गुणीणं गुणा गहिय बहुगुणी होज्ज सज्जणा।

गुणीजनों के गुणों को ग्रहण करके सज्जन बहुगुणी होते हैं।

By accepting virtues of virtuous person, gentle man becomes more virtuous.

3134. गुणगाहगा सज्जणा।

गुणग्राहक सज्जन होते हैं।

People who are apperciator are gentleman.

3135. सगासिदा ण दुहंति सज्जणा।

जो अपने आश्रितों को दु:ख नहीं देते वे सज्जन हैं।

People who don't give pain the one's depen-

dant on them, are gentlemen.

3136. सज्जण-पवित्ती पच्चक्खे परोक्खे य समा।

सज्जन की प्रवृत्ति प्रत्यक्ष व परोक्ष में समान ही होती है।

Tendency of gentle man is similar apparently or non-apparently.

3137. कप्परुक्खोव्व फलंति पाय सज्जणा।

प्रायशः सज्जन कल्पवृक्ष की तरह फलते हैं।

Generally, virtuous people prosper like wish-fulfilling tree.

3138. अजोग्गे-विसयेसु वत्थूसु य ण रच्चंति सज्जणा।

अयोग्य विषय और वस्तुओं में सज्जन रंजायमान नहीं होते हैं।

Virtuous people don't get delighted in inappropriate pleasures and things.

3139. सुहासुहयालं-जाणगा लहंति सिद्धिं।

जो शुभ-अशुभ काल को जानते हैं वे सज्जन सिद्धि को प्राप्त करते हैं।

Virtuous people who know auspicious and inauspicious time, achieve accomplishment.

3140. महुरभासणं हु सज्जणाणं कुलपरंपरा।

मधुरभाषण ही सज्जनों की कुल परम्परा है।

Speaking softly is the heritage of virtuous people.

3141. सज्जणाण संणिज्झं लहिय मणो तिप्पदि।

सज्जनों का सान्निध्य पाकर मन संतुष्ट होता है।

After getting the shade of virtuous people, heart surely get satisfied.

3142. कया वि सगसीलं ण मुंचदि सज्जणो।

सज्जन कभी भी अपने शील को नहीं छोड़ते हैं।

Virtuous people never leave their conduct.

3143. जीवाणुग्गहत्थं हु सज्जण-चेट्ठा।

सज्जन की चेष्टा सर्व जीवों के अनुग्रह के लिए ही होती है।

Activities of virtuous people are only for obliging others.

3144. सज्जणो ण चुदि णियसीलादो।

सज्जन अपने स्वभाव से च्युत नहीं होते।

Virtuous people don't get strayed away from their nature.

3145. सरिदाए मिट्ठं णीरं लवणसायरे मिलिय अपेअं होदि तहा सज्जण- गुणा।

सरिता का मधुर जल लवण सागर में मिलकर अपेय हो जाता है वैसे ही सज्जन के गुण माने जाते हैं।

Sweet water become undrinkable after mixing with the salty ocean similar are the virtues of a gentle man.

3146. जलदोव्व सज्जण-चेट्ठा।

जल देने वाले बादलों के समान सज्जन की चेष्टा होती है।

Activity of virtuous person is like water giving clouds.

3147. सज्जण-चेट्ठा लोय-सुहदा।

सज्जनों की चेष्टा लोक के लिए सुखप्रद होती है।

Activities of virtuous people are cause of happiness for the world.

3148. दुहसुहेसु वा सय कयण्णू सज्जणो ।

सज्जन सुख-दुःख में सदा कृतज्ञ रहता है।

Virtuous person always remains grateful in joy or sorrows.

3149. दूरत्था सज्जणा गुणी गुणा णो छड्डुंति।

सज्जन दूर भी हो तो गुणीजन गुणों को नहीं छोड़ते।

If gentle man is far then also virtuous people don't give up virtues.

3150. धम्म-विवरिय-वित्तीए मज्झत्थभावो सज्जणस्स।

धर्म के विपरीत वृत्ति वालों में सज्जन का माध्यस्थ भाव होता है।

Gentle man becomes neutral towards them who act irreligiously.

3151. सज्जणा विरोह-विणासगा।

सज्जन विरोध के विनाशक होते हैं।

Virtues are destroyer of opposition.

3152. विउल-गुणा लहिच्चा सोहंते खलु सज्जणा।

विपुल गुणों को प्राप्त कर ही सज्जन शोभित होते हैं।

Getting ample virtues virtuous people adores.

3153. सज्जणेण सह वणवासो वरो किंतु दुट्ठेण सह णो भवणे।

सज्जन के साथ वन में रहना श्रेष्ठ है किन्तु दुष्ट के साथ भवन में रहना भी उचित नहीं है।

Living in forest with virtuous person is better but living in edifice is not good with wicked person.

3154. दिवसुत्तरद्ध-छायव्व सज्जण-मित्ती।

दिन के उत्तरार्द्ध की छाया के समान सज्जन की मैत्री होती है।

Friendship of virtuous person is like the shadow of noon.

3155. सज्जण-वच्छल्लं सुक्कपक्ख-चंदोव्व वड्ढदि।

सज्जनों का वात्सल्य शुक्लपक्ष के चंद्र के समान बढ़ता है।

Affection of virtuous people grow like the moon of bright fortnight.

3156. अक्क-तावेण छाया वि छायं वंछदि जहा सज्जणो सज्जणत्तं।

सूर्य के आताप से छाया भी छाया चाहती है जैसे सज्जन सज्जनता।

Even shadow wants shadow from the heat of the sun like virtuous man wants goodness.

3157. सहावेण हु सज्जणो लुक्खववहारेण विणा दोसजुत्तं वि सज्जणरूवं करेदि।

स्वभाव से रूखे व्यवहार के बिना सज्जन दोष युक्त को भी सज्जन रूप कर देता है।

Without behaving harsh, virtuous person makes the faulty like him.

3158. सज्जण-सहायेण किं कज्जं णो सिज्झदि?

सज्जनों के सहयोग से कौन सा कार्य सिद्ध नहीं होता?

Which work cannot be done by the help of virtuous people?

3159. अण्णायेण दुट्ठवहेण वि दुक्खं अणुभवदि सज्जणो।

अन्यायपूर्वक किये गये दुष्ट के वध से भी जो दु:खों का अनुभव करता है वह ही सज्जन है।

One who feels pain even from unjust murder of a wicked person is a gentle man.

3160. खमासीलो हु सज्जणुत्तमो।

सज्जनों में उत्तम ही क्षमाशील होते हैं।

Supreme in virtuous people are forgiving.

3161. उत्तम-पुरिसा पडि कदा जायणा ण कयावि णिप्फला।

उत्तम पुरुषों के प्रति की गई याचना कभी भी निष्फल नहीं होती।

Petition towards eminent people never goes waste.

3162. सज्जणा तिप्पंति परोवयारेण दुज्जणा अवयारेण।

सज्जन परोपकार से संतुष्ट होते हैं और दुर्जन अपकार से।

Virtuous get satisfied by doing benevolence and scoundrel by harming.

3163. दिणस्स भूसणं अक्को रत्तीइ चंदो सरोवरस्स कमलं तहा विस्स-भूसणं सज्जणो।

दिन का आभूषण सूर्य, रात्रि का चाँद और सरोवर का कमल है वैसे विश्व का आभूषण सज्जन है।

Ornament of day is sun, moon of night, lotus of pond similarly ornament of universe is virtuous person.

3164. दुज्जणेण सह वि सज्जणो ण मुंचदि सगसीलं जहा चंदणरुक्खो।

दुर्जन के साथ भी सज्जन अपना स्वभाव नहीं छोड़ता जैसे चंदन के वृक्ष।

Being with scoundrel, virtuous doesn't leave his nature like sandalwood trees.

3165. सज्जणाभावो तं खेत्तं सुण्णं करेदि जहा वडो।

सज्जन का अभाव उस क्षेत्र को शून्य कर देता है जैसे वटवृक्ष।

Non-existent of virtuous person makes that area void like banyan tree.

3166. इत्थीसु आपदे य सज्जणाण परिक्खणं।

स्त्रियों में और आपदकाल में सज्जनों की परीक्षा होती है।

Virtuous people are examined by women and at the time of adversity.

3167. अक्क-चंद-मेह-रुक्ख-सायराणं च उवयारुवरि सज्जणो।

सूर्य, चंद्र, मेघ, वृक्ष और सागर के उपकार से ऊपर सज्जन होता है।

Virtuous are upper than the favour of sun, moon, clouds, trees & ocean.

3168. पाय मिदुचित्तजुदा सज्जणा।

प्रायशः मृदुचित्तयुक्त ही सज्जन होते हैं।

Generally virtuous people are soft hearted.

3169. परगुणा पसंसंति सज्जणा।

सज्जन पर के गुणों की प्रशंसा करते हैं।

Virtuous people praise other's virtues.

3170. उवयारभावेण सज्जणा हु दुज्जणं पडि गच्छदि जहा तत्तधराए मेहवरिसणं।

उपकार भाव से सज्जन ही दुर्जन के प्रति जाता है जैसे तप्तधरा पर मेघवर्षण।

Virtuous person go towards wicked for benevolence as rain towards heated earth.

3171. दुट्ठाहडो रूक्खो वि मिट्ठफलं दादि तहा सज्जणा।

दुष्टों के द्वारा आहत वृक्ष भी मिष्ट फल ही देता है वैसे ही सज्जन।

Even a tree hurted by wicked person gives sweet fruits just like virtuous people.

3172. सज्जण-धम्मो जीवरक्खणं ण सर-घादो।

सज्जन का धर्म जीवरक्षा है न कि 'तीर से घात'।

Religion of virtuous person is to protect living being not killing by arrow.

3173. जहा दिणं रत्ती तहा सज्जणो दुज्जणो य।

जैसे दिन-रात होते हैं वैसे ही सज्जन दुर्जन।

As there is day and night similarly virtuous & scoundrel.

3174. **सुवण्णस्स वि अग्गिपरिक्खा होदि तहेव सज्जणाणं वि।**

स्वर्ण की भी अग्नि परीक्षा होती है वैसे ही सज्जनों की भी।

Like gold is tested by fire, similarly virtuous people too.

3175. **सूरो सत्थाणि किवणो धणं कुलंगणा लज्जं ण मुंचंति तहा सज्जणा उवयारं।**

जैसे वीर शस्त्रों को, कृपण धन को, कुलंगना लज्जा को नहीं छोड़ते वैसे सज्जन उपकार को।

As warrior don't leave weapons, misers money, lady of good family shyness similarly virtuous person doesn't leave benevolence.

3176. **सज्जणा माणेण लहंति णाणं जसं समाहिं च।**

सज्जन सम्मान पूर्वक ज्ञान, यश और समाधि प्राप्त करते हैं।

Virtuous people attain knowledge, fame and transe by respect.

3177. **दुहीणं दुक्खहरणं सज्जणुद्देस्सो।**

दु:खियों का दु:ख हरना सज्जनों का उद्देश्य है।

Taking away pains of sorrowful person is the motive of virtuous people.

3178. **सुवियारा गहेज्ज सज्जणा।**

सज्जनों को सुविचारों को ग्रहण करना चाहिए।

Virtuous people should accept good thoughts.

3179. **वच्छलभावजुदा सज्जणा।**

सज्जन वात्सल्यभाव से युक्त होते हैं।

Virtuous people are endowed with affection.

3180. **वयदूसिदो दिट्ठिदूसिदो य सज्जणेहिं णो माणं लहदि।**

जिसके व्रत और दृष्टि दूषित है वह सत्पुरुषों द्वारा सम्मान प्राप्त नहीं करता है।

Person whose vows & views are bad doesn't get respect from virtuous people.

3181. **लोगववादेण तक्काले सज्जणो वि दुज्जणोव्व।**

लोकापवाद से उस काल में सज्जन भी दुर्जन की तरह माना जाता है।

Virtuous are also considers wicked from accusation in that period.

3182. **खमासीलो सहिण्हू धीरो णाणी सज्जणो हु पसंसणीयो।**

क्षमाशील, सहिष्णु, धीर, ज्ञानी सज्जन ही प्रशंसनीय है।

Virtuous person who is forgiving, tolerant, patient and learned is praise worthy.

3183. **धम्मपक्खं लहंति सया सज्जणा।**

सज्जन सदा धर्मपक्ष को ग्रहण करते हैं।

Virtuous people always favour religion.

सत्य

3184. **सच्चं सयल-धम्माहारो।**

सत्य सकल धर्म का आधार है।

Truth is the foundation of all religions.

3185. **णिरवज्जं अणुवीइवयणं हु सच्चवदं।**

निरवद्य अनुवीचि वचन ही सत्य व्रत है।

Speaking non-violent and harmless words is truth.

3186. **सव्व-दव्वाणं जहा तहा उग्घाडणं सच्चं।**

सभी द्रव्यों का यथा तथा उद्घाटन सत्य है।

Disclosure of all substances in any way is truth.

3187. **सच्च-वयणं हु सस्सद-सुह-हेदू।**

सत्य वचन ही नियम से शाश्वत सुख के हेतु होते हैं।

True speech is definitely the cause of eternal bliss.

3188. अप्पियं अहिदकरं जीववह-कारणं च सच्चवयणं वि णो सच्चं।

वह सत्यवचन भी सत्य नहीं है जो अप्रिय, अहितकर और जीववधकारक है।

Those true words are also not true which are unloving, unfavourable and hurting.

3189. चेयणंधकार-णासगं जहत्थसच्चं।

जो चेतना के अंधकार को नष्ट करने में समर्थ होता वह ही यथार्थ सत्य है।

Which is able to destroy the darkness of conscience is real truth.

सदाचार/सदाचारी

3190. सवर-सयायाराहारो उत्तमायारो।

स्वपर सदाचार का आधार उत्तमाचार है।

Self & other's good conduct is the base of supreme conduct.

3191. सयायारी उवयारी णिच्चं।

सदाचारी नियम से उपकारी होते हैं।

Good conducted are surely beneficent.

3192. लोगमण्णा सुहायरणं सयायारो।

लोकमान्य शुभ आचरण सदाचार है।

Widely popular good behaviour is gentlemently conduct.

3193. कुल-धम्म-णाणहीणो हु चुदि सयायारादो।

कुल धर्म के ज्ञान से रहित निश्चित ही सदाचार से रहित हो जाता है।

One who has no knowledge of family's tradition, he surely becomes bad-conducted.

3194. विणा सयायारेण बहुसत्थज्झयणं वि णिरत्थगं अरहट्ट-घडिगा।

सदाचार के बिना बहुशास्त्राध्ययन भी निरर्थक है जैसे अरहट घटिका।

Studying many scriptures are useless without good conduct like a persion wheel.

3195. सयायारो गुणागारो।

सदाचार गुणों का आगार है।

Good conduct is a treasury of virtues.

सभ्य

3196. धम्मप्पा-सहा-जोग्गो सब्भो।

जो धर्मात्मा के सभा के योग्य है वह सभ्य है।

A person who is right for a pious assembly is cultivated.

समता

3197. समदाए अप्पसत्ती वड्ढदि।

समता भाव से आत्मशक्ति बढ़ती है।

Strength of mind increases by equanimity.

3198. समत्तं वि मोक्ख-कारणं।

एक समता गुण भी नियम से मोक्ष का कारण है।

Even one equanamic virtue is also the cause of emancipation.

3199. समदाए विणा सव्वा गुणा सुण्णोव्व।

समता के बिना सभी गुण शून्य की तरह ही माने जाते हैं।

All virtues are nil without equanimity.

3200. लाहालाहे सुहे-दुक्खे सत्तुम्मि-मित्तम्मि समबुद्धी समदा।

लाभ अलाभ में, शुभ अशुभ में, शत्रु-मित्र में समबुद्धि समता है।

Balance in profit and loss, joy and sorrow, friend and enemy is equanimity.

3201. **जोगी समदाए-अद्धखणे सव्वकम्म-णासिदुं समत्थो।**

योगी समता भाव से अर्द्ध क्षण में सभी कर्मों को नष्ट करने में समर्थ होता है।

An ascetic is capable of destroying all karmas in half a moment by equanimity.

3202. **अखिलविस्से वि समदाए विणा किंचि वि सारभूद-वत्थुं णत्थि।**

अखिल विश्व में समता बिना कुछ भी सारभूत वस्तु नहीं है।

Nothing is significant in the world except equanimity.

3203. **जहा धम्मेसु अहिंसाधम्मो पहाणो तहा साहूसु समदागुणो।**

जैसे धर्मों में अहिंसाधर्म प्रधान है वैसे ही साधुओं में समता गुण।

Just as non-violence is prime in all religions similarly equanimity in ascetics.

3204. **जहा सव्व-सावयाणं दाणं पूया मुक्ख-गुणा तहा वि साहूणं अहिंसा समदा य।**

जैसे सभी श्रावकों का दान और पूजा मुख्यगुण है वैसे ही साधुओं का अहिंसा और समता भाव।

As donation & adoration are the chief virtues of lay man similarly non-violence & equanimity of ascetics.

3205. **पसरिअ-हिमखंड-संगहो अइदुक्करो तहेव जोगीणं समदा वि।**

जैसे बिखरे हुए बर्फ के टुकड़ों का संग्रह अति दुष्कर है वैसे ही योगियों की विशाल समता का संचयन भी अतिदुष्कर है।

Just like collecting scattered pieces of ice is difficult, collecting equanimity of ascetics is very difficult.

समाज

3206. **कत्तव्वसीलो सुसमाजो।**

सुसमाज कर्त्तव्यशील होती है।

Good society is conscientious.

3207. **अक्खर-णाणेण विणा णो को वि णर-जूहं समाजो।**

अक्षरज्ञान के बिना कोई भी नरसमुदाय समाज नहीं होता।

No group of men become society without literacy.

3208. **जणो समाजादो अभिण्णो होदि समाजो जणादो य।**

व्यक्ति समाज से अभिन्न होता है और समाज व्यक्ति से।

Person is unseperated from society and society from a person.

3209. **समदाइ-गुण-जुदो समाजो।**

जिसमें सम्यक्त्वादि गुण विद्यमान हैं वह समाज है।

In which virtues like right faith etc. exist is society.

3210. **णाणावग्गाणं सुजण-जूहं समाजो।**

अनेक वर्गों का सुजन समूह समाज कहलाता है।

Group of many classes is called a society.

3211. **कयाइ समजो वि समाजंगं।**

कदाचित् समज (पशु समूह) भी समाज का अंग है।

Some what cattle is also a part of the society.

समाधि

3212. **चिंता-सोग-भय-किलेसाइ-भावविहीणा पवित्ती समाही।**

चिंता, भय, शोक, क्लेशादि भावविहीन प्रवृत्ति समाधि कही जाती है।

Tendency devoid of distress, fear, grief and strife etc. is called transe.

3213. **सव्वचेट्ठा हु साहूणं केवलं समाहि-सिद्धीए।**

साधुओं की सभी चेष्टाएँ केवल समाधि सिद्धि के लिए होती हैं।

All activities of saints are only for transe.

3214. **समाहिमरणं हु सम्ममरणं।**

समाधिमरण ही सम्यग्मरण है।

Only transe death is right death.

समिति

3215. **समणस्स अप्पमाद-पवित्ती समिदी।**

श्रमण की प्रमाद रहित प्रवृत्ति समिति है।

Non-careless tendency of an ascetic is carefulness (Samiti).

समृद्धि

3216. **खेत्ते ण वसंति पसू पक्खी जत्थ तत्थ णो समिद्धी।**

जिस क्षेत्र में पशु-पक्षी नहीं रहते उस स्थान पर समृद्धि नहीं होती।

That area never prosperous where animals and birds don't live.

सम्मान

3217. **सम्माणसहिदं सुक्कभोयणं वरं ण अवमाणेण खीराइ-वंजणं।**

सम्मान के साथ शुष्क भोजन भी श्रेष्ठ है किंतु अपमान सहित खीरादि व्यंजन नहीं।

Dried food of respect is better than dish of dishonour.

सम्यक्त्व

3218. **सम्मत्तेण विणा को लहदि सिद्धिं?**

सम्यक्त्व के बिना सिद्धि को कौन प्राप्त करता है?

Who can get self-attainment without perception?

सम्यग्ज्ञान/सम्यग्ज्ञानी

3219. **सवरप्प-णादू सण्णाणी।**

स्वपर आत्मा का ज्ञाता ही सम्यग्ज्ञानी है।

Knower of own and other's soul is a true learned.

3220. **सम्मणाणं महाणावा दुहण्णवं-णित्थरेदुं।**

दु:ख के सागर से तरने के लिए सम्यग्ज्ञान महान् नौका है।

Right knowledge is a great ship to across the see of pains.

3221. **सम्मणाण-दाणेण जीवा लहंति मोक्खपहं।**

सम्यग्ज्ञान दान से जीव मोक्षपथ प्राप्त करता है।

By giving right knowledge living beings get liberation.

3222. **सव्वण्हु-जिणदेवेहिं भासिदं णाणं सम्मणाणं।**

सर्वज्ञजिनदेव द्वारा भाषित ज्ञान ही सम्यग्ज्ञान है।

Speech of omniscient is right knowledge.

3223. **सुधम्मेण विणा ण सम्मणाणं।**

सद्धर्म बिना सम्यग्ज्ञान नहीं होता है।

There is no right knowledge without religion.

3224. **पवणेण अग्गी वड्ढदि तहा सम्मणाणेण वेरग्गं संजमो तवो वि।**

जैसे वायु से अग्नि परिवर्धित होती है वैसे ही सम्यग्ज्ञान से वैराग्य, तप और संयम।

Just like fire developes from air, detachment, austerity and restraint developes from right knowledge.

सम्यग्दृष्टि

3225. जो जिणदेव-गी-धम्म-तवासत्तो सम्मदिट्ठी।

जो जिनेन्द्र देव, जिनवाणी, जिनधर्म व तपस्या में आसक्त है वह सम्यग्दृष्टि है।

One who is engrossed in jina, jinvani, jina religion and penance is true believer.

3226. सम्मदिट्ठी धम्माहारो।

सम्यग्दृष्टि धर्म का आधार है।

True believer is the base of religion.

3227. सम्मणाणस्स अविणाभावी सम्मत्तं।

सम्यग्ज्ञान का अविनाभावी सम्यग्दर्शन है।

Right belief is con-cominant of right knowledge.

सहिष्णु

3228. सफलो सया सहिण्हू।

सहिष्णु सदा सफल है।

Tolerant is always successful.

साधु

3229. दारिद्दे वि सच्चवादी ईसुपासगो साहुसेवगो णियमेण साहुव्व आयरणीयो।

जो कोई पुरुष निर्धन अवस्था में भी सत्यवादी, ईशोपासी, साधुसेवी होता है वह नियम से साधु के समान आदरणीय है।

A person who is truthful, devotee and follower of preceptor even in poor condition is surely venerable like an ascetic.

3230. णिग्गंथ-साहू भूवीढ-देवो।

निर्ग्रन्थ साधु भूतल का देवता होता है।

Digamber saint is the God of the earth.

3231. लोयम्मि दियंबर-साहूणं तवो अइ-उच्चो।

लोक में दिगम्बर साधुओं का तप अति उच्चकोटि का माना जाता है।

Austerity of Digamber saint is assumed to be of high category in the world.

3232. पाय साहु-समागमो हु सव्व-कल्लाणकरो।

प्रायशः साधु समागम ही सभी को कल्याणकारी होता है।

Generally, association with the saints is auspicious for everyone.

3233. साहू गोवदि सगगुणा।

साधु अपने गुणों का गोपन करते हैं।

Ascetics hide their virtues.

3234. साहु-दंसणेण पुण्णं होदि।

साधुओं के दर्शन से पुण्य होता है।

One gets merits from having a vision of saints.

3235. साहु वि तित्थभूदा।

साधु भी तीर्थभूत हैं।

Saints are like pilgrimage.

3236. कराघादेण कंदुओ उवरि गच्छदि तहा जीवो साहुसंसग्गेण उच्चगदिं।

जैसे हाथ के आघात से गेंद ऊपर जाती है वैसे साधु के संसर्ग से जीव उच्चगति को जाता है।

As ball goes up by blow of an hand similarly living beings go to high transits from the company of an ascetic.

सामायिक

3237. सव्वत्थेसुं सम-भावो सामाइयं।

सर्व पदार्थों में समता भाव सामायिक है।

Equanimity in all substances is 'Samayika' (periodical concentration).

सावद्य

3238. **पावकम्मेसुं पवित्ती सावज्जं।**

पाप कर्मों में प्रवृत्ति सावद्य है।

Acting in sinful deeds is sin.

3239. **पाव-पवित्ती सावज्जं।**

पापरूपी प्रवृत्ति सावद्य है।

Sinful tendency is sin.

3240. **सावज्जं सुह-विघादगं।**

सावद्य सुख का घातक है।

Sin is the destructor of pleasure.

3241. **सावज्जं दुह-कारणं।**

सावद्य दुःख का कारण है।

Sin is a cause of sorrow.

सिद्ध

3242. **सिद्धपरमेट्ठी सव्वयाले सिद्धलोयम्मि चिट्ठंति।**

सिद्ध परमेष्ठी सर्वकाल में सिद्धलोक में ही रहते हैं।

Emancipated souls always exist in the topmost part of the universe.

3243. **सव्व-परभावा मुंचेदुं समत्थो भावी सिद्धो।**

जो सर्वपरभावों को छोड़ने में समर्थ है वही भावी सिद्ध है।

One who is able to leave all alien-qualities is a future pure soul.

सुकथा/जिनकथा

3244. **सुकहा सज्जणाणं रोइदा।**

सुकथा सज्जनों के लिए रुचिकर है।

Virtuous people like good tales.

3245. **सुकहव्व को वि ण मिट्ठत्थो।**

सुकथा के समान कोई भी मिष्ट पदार्थ नहीं है।

There is no sweet like good tales.

3246. **जिणकहा सवणेण हु पावं णस्सदि।**

जिनकथा सुनने से निश्चित ही पाप क्षीण होते हैं।

Sins surely get destroyed by listening to the tales of jina.

3247. **जिणकहा वि मोक्खमग्ग-कारणं।**

जिनकथा भी मोक्षमार्ग का कारण मानी जाती है।

Jina-tales are also assumed to be the cause of liberation.

3248. **जिणकहा अण्णकहा-विरोही।**

जिनकथा अन्य जन की कथा की विरोधी है।

Jina-tales are opposer of others tales.

सुख

3249. **पुण्णोदयेणं लहदि भव-सुहाणि।**

पुण्योदय से जीव भव के सभी सुखों को प्राप्त करता है।

Worldly soul attains all pleasure of the world by rise of merits.

3250. **समत्थासयेण किं सुहं ण पप्पोदि?**

समर्थवान् के आश्रय से जीव कौन सा सुख प्राप्त नहीं करता?

Which pleasure does a living soul not get through capable man?

3251. **णो काय-दंडेण कसाय-दंडेण लहदि सुहं णिच्चं।**

काय के दण्ड से सुख नहीं है किन्तु कषाय के दण्ड से निश्चित सुख मिलता है।

No pleasure can be attained by punishing the body but pleasure can be attained by punishing passions.

3252. अप्पुप्पण्णं सुहं अपुव्वं हु भासदे।

आत्मोत्पन्न सुख अपूर्व ही भासित होता है।

Pleasure which generates from soul seems unprecedented.

3253. भवसुहसाहणेहिं सिवसुह-साहणा णो।

भवसुख के साधनों से शिवसुख की साधना नहीं होती।

Practice of penance for liberation cannot be done by the means of worldly happiness.

3254. भवत्थ-रदाणं कुत्थ णिराउलं सुहं?

संसार के पदार्थों में रत रहने वालों को निराकुल सुख कहाँ है?

Where is joy devoid of distress to the people who indulge in worldly substances?

3255. णो लहदे परगिहवासी साहीण-सुहं।

परगृहवासी किंचित् स्वाधीन सुख प्राप्त नहीं करता।

Person who lives in other's home doesn't get the happiness of independence.

3256. सुहकंखी सज्जणा अणुवच्चेज्ज।

सुखाकांक्षी को सज्जनों का अनुकरण करना चाहिए।

One who wants pleasure should imitate the virtuous people.

3257. सगपुण्णहीणं सुहिं करेदुं ण को वि समत्थो।

स्वपुण्य-हीन को सुखी करने में कोई भी समर्थ नहीं है।

No one is able to make demeritorious person happy.

सुबुद्धि

3258. सुबुद्धिं विणा को लहदि पदिट्ठं?

सुबुद्धि के बिना प्रतिष्ठा कौन प्राप्त करता है?

Who receives dignity without wisdom? No one!

3259. णिम्मला बुद्धी हु महारयणं।

निर्मल बुद्धि ही महारत्न है।

Holy mind is the greatest gem.

सूर्य

3260. सव्वा णमंति उदीयमाणं सूरं।

उदीयमान सूर्य को सभी नमस्कार करते हैं।

Every one bows to the rising sun.

3261. जत्थ सूर-पयासो तत्थ कुत्थ तमो।

जहाँ सूर्य का प्रकाश विद्यमान है उस क्षेत्र में अंधकार कहाँ?

There is no darkness, where sun light exists.

3262. तावेण पवणे य सायरस्स अप्पजलं सुक्कदि णो सयलसायरो।

सूर्य के ताप और वायु से सागर का अल्पजल मात्र ही सूखता है सम्पूर्ण समुद्र नहीं।

Only little water of the ocean dries from the heat of the sun and air not the whole ocean.

3263. खज्जोदेहिं अभेज्ज-तमो अक्केण सिग्घं हु णस्सदि।

जुगुनुओं के द्वारा अभेद्य अंधकार सूर्य के द्वारा शीघ्र नष्ट कर दिया जाता है

Indivisible darkness by firefly, gets quickly destroyed by the sun.

3264. सूर-पयासो जत्थ को तत्थ आयरदि दीवं?

जिस क्षेत्र में सूर्य प्रकाश देता है उस क्षेत्र में दीपक को आदर कौन देता है?

Who pays respect to lamp, where sun gives light.

सेनापति

3265. **महापरक्कमो, अइसाहसी, उज्जमसीलो, णिब्भयो, अप्पबली, सुट्ठु सेणाणायगो।**

महापराक्रमी, अतिसाहसी, उद्यमशील, निर्भय, आत्मबली श्रेष्ठ सेनानायक होता है।

Best commander-in-chief is adventurer, brave, energetic, fearless and has powerful soul.

सेवा

3266. **णो णिप्फला कप्पतरु-सेवा।**

कल्पतरु की सेवा निष्फल नहीं जाती है।

Service of wishfulfilling tree doesn't become fruitless.

3267. **जदि इच्छदि दीहाउं सत्थं च पाणी अणुवज्जेज्ज सय।**

यदि दीर्घआयु और स्वास्थ्य चाहते हो तो सदा प्राणियों की सेवा करो।

If you want long life & health then serve living beings.

सौन्दर्य

3268. **जणस्स सोगं किलेसं च हरेदि पयडि-सुंदरियं।**

प्रकृति का सौन्दर्य मनुष्य का शोक और क्लेश हरता है।

Beauty of nature destroys sorrows and afflictions of a person.

स्तवन

3269. **चउवीस-तित्थयरं पडि थुदी णमोक्कारो वा थयणं।**

चौबीस तीर्थंकरों के प्रति स्तुति या नमस्कार स्तवन है।

Praising or bowing to twenty four Teethankaras is 'stavan'.

स्त्री

3270. **सगित्थिं जंतं वा ण दाएज्ज कया वि।**

अपनी स्त्री या यंत्र कभी किसी को नहीं देना चाहिए।

One should never give one's wife or instrument to anyone.

3271. **सयायारी इत्थी सया धम्म-सेवगा।**

सदाचारी नारी सदा धर्म की सेविका होती है।

Righteous woman is always a devotee to religion.

3272. **कत्थ वि पह-गच्छेदुं इत्थी णराहारो।**

किसी भी मार्ग पर गमन करने के लिए नारी नर का आधार होती है।

Lady is the base of a man for going on any path.

3273. **चित्तमोहि-चेट्ठा सहावेण विज्जदे इत्थीए।**

चित्त को मोहित करने वाली चेष्टा स्त्रियों के चित्त में स्वभाव से होती है।

Acitivity of charming heart is surely there in the heart of women.

3274. **जोग्गपदं लहदि सुगुणी इत्थी।**

सुगुणों को धारण करने वाली नारी योग्य पद को प्राप्त करती है।

Lady who is endowed with good virtues gets an eminent post.

3275. **धम्मियरमग्गेसु वि इत्थी णर-सहायी।**

नारी, पुरुष की धर्म मार्ग में सहायक है और इतर मार्ग में भी।

Woman is a helper of man on the way of religion and other also.

3276. **सुसक्कारिय-इत्थी इहलोयम्मि पुज्जा।**

सुसंस्कारयुक्त नारी इस लोक में पूज्य होती है।

Cultural woman is venerable in the world.

3277. **संजमिद-इत्थी सया वंदणीया।**

जो नारी संयम से युक्त है वह सदा वंदनीय है।

Woman who is restrained is always praise worthy.

3278. **इत्थीणं णो छट्ठमइ-गुणट्ठाणं।**

छठा आदि गुणस्थान नारियों के संभव नहीं है।

Sixth etc. spiritual stages are not possible of woman.

3279. **अइ-वच्छल्ल-दया-खमा-सहणसीलदा य इत्थीसु।**

वात्सल्य, दया, क्षमा और सहनशीलता नारियों में अधिक पाई जाती है।

Affection, mercy, forgiveness and tolerance power is more in woman.

3280. **इत्थिं विणा सुरम्म-भवणं वि वणं व भासदे।**

स्त्री के बिना सुरम्य भवन भी वन की तरह लगते हैं।

Even a splendid palace seems like a forest without a woman.

3281. **मिदुवयणं मद्दवं च इत्थीण सहजा गुणा।**

मृदुवचन और मार्दव स्त्रियों के स्वाभाविक गुण हैं।

Soft words and courtesy are natural qualities of woman.

3282. **इत्थी सगकुल-मज्जादं णो लंघदि।**

नारी स्वकुल की मर्यादा का उल्लंघन नहीं करती।

Woman doesn't cross the limits of her family.

स्मृति

3283. **पुरिसस्स सुई वि सत्थं व।**

पुरुष की स्मृति भी शास्त्र के समान है।

Memory of a man is also like a scripture.

3284. **विणा सुइं णरो सकुसलं जीविदुं ण समत्थो।**

स्मृति के बिना मनुष्य सकुशल जीवन जीने में समर्थ नहीं होता है।

A person is not able to live happily without memory.

स्याद्वाद

3285. **सव्व-संदेह-समाहाणं सियवायो।**

स्याद्वाद समस्त संदेहों का समाधान है।

Relativisim is the solution of all doubts.

स्वपरघाती

3286. **मिट्ठभासी विस्सासघादी पिसुणा सवरघादगा।**

मिष्टभासी, विश्वासघाती, चुगलखोर स्वपरघाती होते हैं।

Sweet speaker, treacherous and snitchers are harmful to self & others.

स्वभाव (प्रकृति)

3287. **जहा सहावो तहा मित्तं।**

जैसा स्वभाव वैसे मित्र।

As one's nature, so one's friends.

3288. **सगपयडिं ण मुंचदि ण को वि समत्थो णासिदुं।**

जो स्वप्रकृति को नहीं छोड़ता उसको नष्ट करने में कोई भी समर्थ नहीं है।

Noone is able to destroy him who doesn't leave his nature.

3289. **जणा आकिदीए समा पयडीए भिण्णा किंतु विवरिया पसू।**

सर्वजन आकृति से समान लेकिन प्रकृति से भिन्न हैं किन्तु पशु उससे विपरीत हैं।

All people are similar in shape but different from nature but animals are opposite.

3290. **सहाव-परिहारो किंचि वि कया वि ण संभवो।**

स्वभाव का कहीं भी किंचित् भी परिहार नहीं होता।

Nature is never avoidable any where.

3291. **सहाव-चागो दुल्लहो लोए।**

स्वभाव त्याग लोक में दुर्लभ है।

Giving up nature is rare in the world.

3292. **सहावेण सज्जण-कुडिलाण मित्ती चिरं ण जहा धणुम्मि सरो।**

स्वभाव से सज्जनों और कुटिलों की परम्परा में मैत्री दीर्घकाल तक नहीं चलती जैसे धनुष के ऊपर बाण।

Friendship of virtuous and deceitful doesn't go on for a long time, just as arrow on the bow.

3293. **खिप्पं कुप्पंति पडिसामंति वि जलं व।**

जो शीघ्र कुपित होते हैं वे शीघ्र शान्त भी होते हैं जैसे जल।

People who get angry quickly, cool down quickly too like water.

3294. **विलंबेण जूरंति पडिसामंति वि जहा लोहखंडं।**

जो विलम्ब से क्रोधित होते हैं वे विलम्ब से शान्ति प्राप्त करते हैं जैसे लोहखण्ड।

People who get angry late, cool down late like a piece of iron.

3295. **विवरिय-सहाव-जुदो चिरं ठाणेगे ण चिट्ठदि जहा कमलपत्तम्मि जलबिंदू।**

विपरीत स्वभाव युक्त प्राणी दीर्घकाल तक एक स्थान पर नहीं ठहरते जैसे कमलपत्र पर जलबिंदु।

People of contradictory nature don't stay at one place for a long time, like a drop of water on a petal of lotus.

3296. **सहावो मूलादो कयावि ण णस्सदि।**

स्वभाव मूलतः कभी भी नष्ट नहीं होता।

Nature never gets destroys completely.

3297. **भिण्ण-धादुव्व णर-सहावो वि भिणणो।**

भिन्न धातुओं के समान मनुष्यों का स्वभाव भी भिन्न होता है।

Just like different metals have different nature similar are the people.

स्वरूप

3298. **अप्पस्स चेयणाए वा सहजावत्था सरूवो।**

आत्मा या चेतना की सहजावस्था स्वरूप है।

Natural state of soul or conscience is nature.

3299. **सरूवे चित्त-लीणत्तं मोक्ख-कारणं।**

स्वरूप में चित्त की लीनता मोक्ष का कारण है।

Absorption in nature is the cause of liberation.

स्वाधीनता

3300. **सातंतं ण वंछदि ण मणंसी।**

जो स्वाधीनता नहीं चाहता वह मनस्वी नहीं है।

He who doesn't want independence is not high minded.

3301. **पक्खी वि सातंतं वंछदि जं सातंतं हु आणंदो।**

पक्षी भी स्वाधीनता चाहता है क्योंकि स्वाधीनता ही आनंद है।

A bird also wants freedom because freedom is pleasure.

3302. **सातंतं हु परमसुहं।**

स्वाधीनता ही परमसुख है।

Freedom is supreme pleasure.

स्वाध्याय

3303. **सगस्स सगेणं सगहिदाय अज्झयणं सज्झायो।**

स्वयं का स्वयं से स्वहित के लिए अध्ययन स्वाध्याय है।

Self study for self good is 'swadhyaya'.

3304. **सज्झायो हु परमो तवो।**

स्वाध्याय ही परम तप है।

Study of scriptures is supreme austerity.

3305. **जिणागमे सज्झाय-फलं समदा केवलणाणं पारंपरेण च मोक्खं वि।**

आगम ग्रन्थों में स्वाध्याय का फल समता और परंपरा से केवलज्ञान व मोक्ष भी है।

Fruition of study of scriptures is equanimity, infinite knowledge and salvation also.

3306. **अणुवासरं करेज्ज सज्झायं।**

स्वाध्याय प्रतिदिन करना चाहिए।

Scriptures should be studied daily.

3307. **तेण सुद-सज्झायेण किं ण रज्जदि धम्मे?**

उस श्रुत के स्वाध्याय से क्या जो धर्म में नहीं लगाता?

What is the use of that scripture which doesn't associate with religion?

3308. **वर-संती सज्झायेण।**

स्वाध्याय से उत्तम शान्ति होती है।

Ultimate peace is attained by studying scriptures.

3309. **सज्झायं विणा उत्तम-कुलं वि णीयं।**

स्वाध्याय के बिना उत्तमकुल भी नीच है।

Good family is also inferior without studying scriptures.

स्वार्थ/स्वार्थी

3310. **दहणे वणं मुंचंति वणासिदा धिय आयंभरं।**

वनाश्रित प्राणी वन दहन पर उसे छोड़ देते हैं, स्वार्थी संसारियों को धिक्कार है।

Living beings dependent on forest leave after buring it, curse on those selfish worldly being.

3311. **पत्तेयं काले अहमा आयंभरा वि।**

प्रत्येक काल में स्वार्थी अधम मनुष्य भी होते हैं।

Selfish people are always there at every peroid of time.

3312. **आयंभरो महाबलिट्ठो।**

स्वार्थी नर महाबलवान् होता है।

Selfish man is the strongest.

3313. **सत्थ-चुदो खु महामूढो।**

स्वार्थ से च्युत ही महामूर्ख है।

Deviated from selfishness is foolish.

3314. **णो पस्सदि दोसा आयंभरो।**

स्वार्थी दोषों को नहीं देखता।

Selfish doesn't see faults.

हिंसक

3315. कसायावेइओ हु हिंसगो।

कषाय के आवेग से युक्त नियम से हिंसक होता है।

One who is filled with passions is violent.

3316. हिंसा हु भव-मूलं।

हिंसा ही भव का कारण है।

Violence is the cause of transmigration.

3317. हिंसुवदेस-वयणं णो जिण-वयणं।

हिंसोपदेश वचन जिनेंद्र के वचन नहीं हैं।

Preachings of violence are not the words of jina.

3318. जिण-धम्मे णो कयावि हिंसा-ठाणं।

जिनेन्द्र के धर्म में हिंसा को कदापि स्थान नहीं है।

There is no place for violence in the religion of jinendra.

3319. जत्थ ण वहो ताणि पुराण-धम्मसत्थाणि।

पुराण और धर्मशास्त्र वे हैं जिसमें वध विद्यमान नहीं है।

Ethics and scriptures are those in which there is no violence.

3320. जत्थ हिंसा ण धम्मो तत्थ।

जहाँ हिंसा रहती है वहाँ धर्म नहीं है।

Where there is violence, there is no religion.

3321. भीदा ण कया वि हिंसेज्ज।

डरे हुए की कभी हिंसा नहीं करनी चाहिए।

One should never hurt frightened person.

3322. ठाणेगे हिंसगाहिंसगाणं संवड्ढणं असंभवो जहा करीरो-कदली।

एक ही स्थान पर हिंसकों, अहिंसकों का संवर्धन असंभव है जैसे करीर-केर के वृक्षों का।

Rearing of violents and non-violents at one place is impossible as trees of acacia & banana.

3323. दुट्ठ-बलं हिंसा।

हिंसा दुष्टों का बल है।

Violence is the strenght of wicked people.

3324. हिंसारदो दुही सस्सदो।

हिंसा में रत हमेशा दु:खी रहता है।

Engrossed in violence is always sorrowful.

हित

3325. कुसलबुद्धी सवरहिद-मग्गे पवट्टंति।

कुशल बुद्धि वाले लोग हमेशा स्वपर हित के मार्ग में प्रवर्तन करते हैं।

Learned always move on the way of self and others benevolence.

हीनता/हीन

3326. हीण-भावो वि हीणदा-कारणं।

हीनता का भाव भी नियम से हीनता का कारण है।

Even the thought of inferiority is surely the cause of inferiority.

हेतु

3327. हेदू णियामग-कारणं।

नियामक कारण हेतु है।

Determinate reason is cause.

3328. पक्ख-धम्म-वड्ढगो हेदू।

पक्ष धर्म का वर्धक हेतु होता है।

Paksa is the cause of formant of religion.

3329. सज्झाविणाभावी साहणं हेदू।

साध्य का अविनाभावी साधन हेतु है।

Concomitant probans with the probandum is cause.

हेयोपादेय

3330. हेयुवादेयं विणा विहा सुदे पवित्ती।

हेयोपादेय के बिना श्रुत में प्रवृत्ति करना व्यर्थ है।

Studying scriptures is useless without knowledge of what is to be avoided or accepted.

3331. सगप्पा हु उवादेयो सेसा हेया जिणागमे।

स्वकीय आत्मा ही उपादेय है शेष सभी जिनागम में हेय है।

Only one's own soul is acceptable and rest of all is abdicative in scriptures.

3332. आसण्ण-भव्वाणं पावं सव्वदा हेयं।

आसन्न भव्य जीवों के लिए पाप सर्वदा हेय है।

Sins are always avoidable for adjacent & potential souls.

3333. तच्च-णाण-जुत्ताणं सय णिक्कंख-पुण्ण-उवादेयं।

तत्त्वज्ञान युक्त मनुष्यों के लिए आकांक्षा रहित पुण्य सर्वदा उपादेय है।

Desireless merits are always acceptable for enlightened people.